







# MANUSAMHITA.

## CHAPTER II.

EDITED

WITH NOTES AND TRANSLATIONS

BY

**BIDHUBHUSHAN GOSWAMI, M. A.,**

SENIOR PROFESSOR OF SANSKRIT LITERATURE,

GOVT. COLLEGE, DACCA.

AND

**BASANTAKUMAR RAY, M. A. B. L.**

SOMETIME PROFESSOR, JAGANNATH COLLEGE,

DACCA.

2  
9



**KEDARNATH BOSE, B. A.**

28-4 AKHIL MISTRY'S LANE, CALCUTTA.

1910.



PRINTED BY S. BHATTACHARYA, AT THE BUCKLAND PRESS.  
28, BAITAKHANA ROAD—CALCUTTA.

SL NO. 075872

3051  
COMPUTERISED

C1404

# इतायाध्यायस्य विषयानुक्रमकथनम् ।



श्रीकाः

विषयाः

|     |     |     |   |
|-----|-----|-----|---|
| 1   | ... | ... | धर्मस्य लक्षणकथनम् ।  |
| 2—3 | ... | ... | कामस्य अपरिहार्यता ।  |
| 4   | ... | ... | कर्मणः काममूलता ।   |
| 5   | ... | ... | फलामिसम्भिरादित्येन कर्मकरणात् सकल्पसिद्धिः ।               |
| 6   | ... | ... | धर्मस्य प्रमाणनिरूपणम् ।                                    |
| 7   | ... | ... | मनोः सर्वज्ञत्वम् तदुक्तधर्मस्य सर्ववेदसारभूतत्वम् ।        |
| 8   | ... | ... | वेदं प्रमाणोक्तस्य धर्मकरणीयपदैः ।                          |
| 9   | ... | ... | श्रौतस्मार्तधर्मावरणस्य प्रशंसा ।                           |
| 10  | ... | ... | श्रुतेः स्मृतेश्च संज्ञानिरूपणम् ।                          |
| 11  | ... | ... | श्रुतिस्मृत्यवमानिनः कर्मण्यनधिकारः ।                       |
| 12  | ... | ... | वेदमूलतैव प्रमाणम् न स्मृतिश्रौतादि ।                       |
| 13  | ... | ... | धर्मो अधिकारिणः । धर्मो श्रुतेः प्रामाण्यम् ।               |
| 14  | ... | ... | श्रुतिर्हि धर्मनिरूपणम् ।                                   |
| 15  | ... | ... | तत्र दृष्टान्तः ।   |
| 16  | ... | ... | मानवधर्मो अधिकारिनिर्देशः ।                                 |
| 17  | ... | ... | ब्रह्मावर्तदेशनिरूपणम् ।                                    |
| 18  | ... | ... | ब्रह्मावर्तवासिनां सुतां चाचार एव सदाचारमन्वेन<br>संन्यते । |
| 19  | ... | ... | ब्रह्मविद्देशनिरूपणम्                                       |
| 20  | ... | ... | पूर्वोक्तदेशवासिनां ब्रह्मवात् चाचारविधीपदैः ।              |

श्रीका:

विषया:

|       |     |     |  |
|-------|-----|-----|--|
| 21    | ... | ... | मध्यदेशनिर्दपचम् ।                                 |
| 22    | ... | ... | चार्यावर्तनिर्दपचम् ।                              |
| 23    | ... | ... | अग्निदेशनिर्दपचम् ।                                |
| 24    | ... | ... | विज्ञानं प्रति उक्तदेशसमूहसमाश्रयोपदेशः ।          |
| 25    | ... | ... | वर्णस्य प्रतिकारचोलेखपूर्वकं वर्णधर्मं कथनप्रस्ताव |
| 26    | ... | ... | वैदिकसंस्कारकरचोपदेशः ।                            |
| 27    | ... | ... | वैदिकगार्भि कपापनाशोपायकथनम् ।                     |
| 28    | ... | ... | शरीरस्य ब्रह्मप्राप्तियोग्यतीपायकथनम् ।            |
| 29    | ... | ... | जातकर्म्मणः कर्त्तव्यता ।                          |
| 30    | ... | ... | नामकरणसंस्कारविधिः ।                               |
| 31—33 | ... | ... | नामकरणप्रकारोपदेशः ।                               |
| 34    | ... | ... | मित्र्यामित्रं चन्द्रप्राशनम् ।                    |
| 35    | ... | ... | चूडाकर्म्मविधिः ।                                  |
| 36    | ... | ... | विज्ञाते रूपनयनविधिः ।                             |
| 37—38 | ... | ... | मुष्यगौचकालनिर्दपचम् ।                             |
| 39    | ... | ... | यत ऊर्ध्वं विज्ञानां ब्राह्मणम् ।                  |
| 40    | ... | ... | ब्राह्मणां वैदिकता ।                               |
| 41    | ... | ... | ब्रह्मचारिणां चर्म्म ।                             |
| 42—43 | ... | ... | „ भिक्षुता ।                                       |
| 44    | ... | ... | „ उपवीतम् ।  |
| 45    | ... | ... | „ दण्डः ।  |
| 46—47 | ... | ... | „ दण्डप्रमाणम् ।                                   |
| 48    | ... | ... | „ भिक्षुचरणम् ।                                    |
| 49—50 | ... | ... | „ भिक्षुचरणप्रकारः ।                               |
| 51—55 | ... | ... | „ भोजनप्रकारम् ।                                   |

| श्लोकाः   | विषयाः                                     |
|-----------|--|
| 56 ...    | उच्छिष्टप्रदानविधिः                        |
| 57 ...    | वतिभोजनमिन्द्रा ।                          |
| 58—62 ... | उपसर्जनप्रकारोपदेशः ।                      |
| 63 ...    | उपवीतयाङ्गिणः अवस्थाभेदेन भिन्नसंज्ञाकथनम् |
| 64 ...    | भयमेखलादीनां पुनर्ग्रहणोपदेशः ।            |
| 65 ...    | केशान्ताख्यसंस्कारकथनम् ।                  |
| 66 ...    | स्त्रीणां जातकर्मादिविधिः ।                |
| 67 ...    | स्त्रीणां संस्कारः ।                       |
| 68 ...    | उपनयनविधेरुपसंहारः ।                       |
| 69 ...    | श्रीवाचारादिविषयं ब्रह्मचारिव्रतम् ।       |
| 70 ...    | अध्ययनार्थं प्रवृत्तस्य उपवेशनादिविधिः ।   |
| 71—72 ... | अध्ययनारम्भे प्रथमः ।                      |
| 73 ...    | „ गुरोर्वाक्यम् ।                          |
| 74 ...    | „ प्रथमविधिः ।                             |
| 75 ...    | ओङ्कारोच्चारणाधिकारः ।                     |
| 76—77 ... | ओङ्कारोत्पत्तिः ।                          |
| 78—84 ... | प्रथममाङ्गात्तम् ।                         |
| 84—87 ... | ओङ्कारसङ्कितगायत्रीजपप्रशंसा ।             |
| 88 ...    | इन्द्रियसंयमोपदेशः ।                       |
| 89—92 ... | एकादशीन्द्रियनिरूपणम् ।                    |
| 93—95 ... | इन्द्रियसंयमप्रशंसा ।                      |
| 96 ...    | इन्द्रियसंयमोपायः ।                        |
| 97 ...    | विषयसेविनः दोषकथनम् ।                      |
| 98 ...    | जिरेन्द्रियसंयमम् ।                        |
| 99 ...    | एकलोपि इन्द्रियस्य असंयमी संयमानाम्बः ।    |

श्रीकाः

विषयाः

|           |     |  |
|-----------|-----|--|
| 100 ...   | ... | पुरुषार्थसाधनोपायकवचनम् ।                                |
| 101 - 104 | ... | सम्मानुष्ठानविधिः ।                                      |
| 105 - 106 | ... | अनध्यायकाले उपनिषदाभावः ।                                |
| 107 ...   | ... | स्वाध्यायपाठस्य फलम् ।                                   |
| 108 ...   | ... | ब्रह्मचारिणः गुरुकुले समिदाहरणभिक्षासंग्रहादि<br>विधिः । |
| 109 ...   | ... | अध्ययनयोग्यतानिरूपणम् ।                                  |
| 110 - 111 | ... | अपूटेन उपदेशकरणदोषः ।                                    |
| 112 ...   | ... | अध्यापनानुष्ठाननिर्देशः ।                                |
| 113 - 115 | ... | अपावे विद्यादाननिषेधः ।                                  |
| 116 ...   | ... | दातुरज्ञानपूर्वं विद्यायश्च न निन्द्यम् ।                |
| 117 ...   | ... | बहुजनसमवाये विद्यादातुरेव अये अभिवादनम् ।                |
| 118 ...   | ... | संयतजनस्य प्रशंसा ।                                      |
| 119 - 120 | ... | विद्यावधौहृद्भ्यः सन्धानप्रदर्शनम् ।                     |
| 121 ...   | ... | अभिवादिनः प्रशंसा ।                                      |
| 121 - 124 | ... | अभिवादनकालीननामधेयादुच्चारणविधिः ।                       |
| 125 ...   | ... | प्रत्यभिवादनविधिः ।                                      |
| 126 ...   | ... | प्रत्यभिवादनानभिज्ञस्य अभिवादननिषेधः ।                   |
| 127 ...   | ... | कुशलप्रश्नविधिः ।  |
| 128 - 133 | ... | सम्भाव्याभिवादनगरीयस्त्वविधिः ।                          |
| 134 - 135 | ... | ज्येष्ठकनिष्ठनिर्णयः ।                                   |
| 136 - 137 | ... | ज्येष्ठत्वद्विगुणनिर्णयः ।                               |
| 138 - 139 | ... | ज्येष्ठत्वनिरूपणम् ।                                     |
| 140 ...   | ... | आचार्यसंज्ञाकवचनम् ।                                     |
| 141 ...   | ... | उपाध्यायसंज्ञा कवचनम् ।                                  |

| श्रीकाः       | विषयाः  |
|---------------|---|
| 142 ...       | गुरुसंज्ञाकरणम् ।                                       |
| 143 ...       | श्रुतिव्यसंज्ञानिरूपणम् ।                               |
| 144 ...       | वेदस्य दातुः अङ्गीकृत्यम् ।                             |
| 145 ...       | उपाध्यायाचार्यपितृमातृणां क्रमः श्रेष्ठत्वम् ।          |
| 146 ...       | जनकाचार्ययोर्मध्ये आचार्यः पूज्यतरः ।                   |
| 147 ...       | जननस्य पशुसामान्यत्वम् ।                                |
| 148 ...       | ब्रह्मजननः श्रेष्ठत्वम् ।                               |
| 149 ...       | वेदप्रदमात्रस्य गुरुत्वम् ।                             |
| 150 ...       | उपनयनप्रदस्य वेदाध्यापकस्य च कनिष्ठत्वेऽपि पित्रत्वम् । |
| 151 - 152 ... | उक्ताद्ये दृष्टान्तः ।                                  |
| 153 - 154 ... | ज्ञानेनैव श्रेष्ठत्वम् न वयसा ।                         |
| 154 ...       | वर्णानां ज्येष्ठत्वे कारणानि ।                          |
| 155 - 158 ... | अज्ञानस्य निन्दा ।                                      |
| 159 ...       | गुरोः शिष्यं प्रति सदयव्यवहारोपदेशः ।                   |
| 160 ...       | न केवलां गुरोः पुरुषमात्रस्यैव वाक्यनः संयमः विहितः ।   |
| 161 ...       | सर्वान् प्रति सदुत्तोपदेशः ।                            |
| 162 ...       | ब्राह्मणः सन्मानं मेच्छेत् ।                            |
| 163 ...       | अवज्ञातस्य ब्राह्मणस्य सुखम् ।                          |
| 164 ...       | गुरुकुले वासविधिरुपसंहारः ।                             |
| 165 ...       | सब्रतेश्च वेदः अधिगम्यः ।                               |
| 166 ...       | सदा वेदाभ्यासः कर्तव्यः ।                               |
| 167 ...       | वेदाध्ययनं तपसा ।                                       |
| 168 ...       | वेदं वर्णवित्ता ब्राह्मणराजैर्नुनिन्द्य ।               |
| 169 ...       | विविधं जन्म ।   |
| 170 ...       | वितीक्ष्यन्तानि मातापितृनिर्दोषणम् ।                    |

श्लोकाः

विषयाः

|           |     |     |  |
|-----------|-----|-----|--|
| 171       | ... | ... | वेदप्रमाणात् आचार्यः पिता गौतमः ।            |
| 172       | ... | ... | द्वितीयजन्मनः प्राक् वेदोच्चारणनिषेधः ।      |
| 173       | ... | ... | द्वितीयजन्मनः परं व्रतस्य वेदस्य च गृह्यम् । |
| 174       | ... | ... | व्रतकालेऽपि स्तवर्णविहितसूत्रादिधारणम् ।     |
| 175       | ... | ... | ब्रह्मचारिणः नियमवर्णनप्रस्तावः ।            |
| 176       | ... | ... | तर्पणदेवाह्वनसमिदाहरणानि ।                   |
| 177       | ... | ... | मधुमांसादिवर्जनम् ।                          |
| 178       | ... | ... | अभ्यञ्जनादिवर्जनम् ।                         |
| 179       | ... | ... | अचक्रीडादिवर्जनम् ।                          |
| 180       | ... | ... | रेतःस्रवणनिषेधः ।                            |
| 181       | ... | ... | अकामतो रेतःसिकस्य प्रायश्चित्तम् ।           |
| 182       | ... | ... | आचार्यार्थे अल-पुण्यादिसंयहः ।               |
| 183       | ... | ... | भिक्षायहृत्पथोभ्यपातनिरूपणम् ।               |
| 184 - 185 | ... | ... | भिक्षायहृत्पथार्हस्थानविशेषनिरूपणम् ।        |
| 186       | ... | ... | काष्ठाहरणं चातपे स्थापनञ्च ।                 |
| 187       | ... | ... | सप्तरात्रं भिक्षाकरणप्रायश्चित्तम् ।         |
| 188       | ... | ... | भैक्षभोजनप्रशंसा ।                           |
| 189       | ... | ... | एकस्य अन्नभोजनव्यवस्था ।                     |
| 190       | ... | ... | एकाग्रग्रहणं ब्राह्मणस्यैव नान्यस्य ।        |
| 191       | ... | ... | गुरुणा अप्रचोदितोऽपि पठेत् ।                 |
| 192 - 204 | ... | ... | गुरोः समीपे अवस्थानप्रकारः ।                 |
| 205       | ... | ... | गुरोर्गुरुसन्निधाने व्यवहारनियमः ।           |
| 206       | ... | ... | हितं उपदिश्यात्सु अन्येषु गुरुबहुव्यवहारः ।  |
| 207 - 209 | ... | ... | गुरुपुत्रादिषु कर्तव्यता ।                   |
| 210—217   | ... | ... | गुरुपत्नीषु व्यवहारः ।                       |

| श्लोकाः       | विषयाः  |
|---------------|---|
| 218 ...       | शुश्रूषा एव विद्याधिगमहेतुः ।   |
| 219 - 221 ... | ब्रह्मचारिणो निद्राविधिः ।  |
| 222 ...       | सन्ध्योपासनीपदेशः ।   |
| 223 ...       | स्त्रीशूद्राणां साधुकर्म्मणः अनुकरणम् ।   |
| 224 ...       | परुषार्थस्य श्रेयसः निर्णयः ।   |
| 225 - 226 ... | आचार्यजनकजननीमातृणां सम्माननम् ।  |
| 227 ...       | मातापितोः कृष्णशोधस्य असाध्यत्वम् ।   |
| 228 - 237 ... | उक्तानां वयाणां पुजाफलादि ।   |
| 238 - 240 ... | ब्राह्मणेतरान् वर्णादपि विद्यान्तरादियच्छणम् ।  |
| 241 ...       | अब्राह्मणगुरौ शुश्रूषाप्रकारः ।   |
| 242 ...       | नैष्ठिकब्रह्मचारिणां अब्राह्मणे गुरौ अवेदज्ञे ब्राह्मण-<br>गुरौ च वासनिषेधः ।                               |
| 243 ...       | नैष्ठिकब्रह्मचारिणः गुरुकुले आजीवनं वासविधिः ।  |
| 244 ...       | तस्य फलकीर्तनम् ।   |
| 245 ...       | उपकुर्व्याणस्य ब्रह्मचारिणः गार्हस्थ्यश्रमवृत्त्यर्थं<br>समावर्तनकालीनस्नानान् पूर्व गुरवे दान-<br>निषेधः । |
| 246 ...       | उपकुर्व्याणस्य गुरवे चेष्टादिदानविधिः ।   |
| 247 ...       | नैष्ठिकस्य गुरोरभावे गुरुपुत्रादिशुश्रूषाविधिनिर्णयः ।  |
| 248 ...       | तदभावे गुरुस्थापितस्य अग्नेः शुश्रूषा ।   |
| 249 ...       | नैष्ठिकब्रह्मचारिणो मरणान्ते ब्रह्मप्राप्तिः ।  |

*Note.* - उपसंहारश्लोके नैष्ठिकस्य ब्रह्मचारिणो ब्रह्मप्राप्तिफलोपदेशान् नैष्ठिको  
अवेत् ब्रह्मो सत्यामित्युपदेश इति । ( Vide कान्दोस्य भाष्यम् )



## मानवधर्मशास्त्रस्य विवरणम्

परमात्मा हि ब्रह्मापरनामधेयहिरण्यगर्भरूपेणावस्थितः पश्चात् स्वदेहं द्विधा चकार  
अर्द्धेन पुरुषः अर्द्धेन नारी च बभूव । तस्यां नार्त्यां मेषनधर्मेण स विराडितिसंज्ञितं  
पुरुषं जनयामास । विराडपि पुरुषो भगवानेव । स स्वयं विराट् पुरुषः मनुं सर्वं  
लोकस्य सृष्टारं जनयामास । मनुश्च मरीच्यविप्रभृतीन् दश प्रजापतीन् जनयामास ।  
ते च प्रजापतयः देवान् देवतानानि यक्षादींश्च जनयामासुः । तस्मात् मनुर्हि भगवान्  
देवतानां प्रजापतीनां च आदिभूतः हिरण्यगर्भात्मकः स्वयं भगवान् अवताररूपीति  
विनिर्णयः ।

तेनच मनुना स्वाश्रयेन इदं शास्त्रं कृतं तत्पुत्रेण भृगुणाच प्रजापतिना मुनिभ्यः  
उक्तम् ततश्च जगति प्रकाशं गतम् शिष्यपरम्परया । आदौ एतच्छास्त्रं लक्षश्लोकात्मकं  
ततः द्वादशसहस्रात्मकं ततः अष्टसाहस्रसमन्वितं ततश्चतुःसहस्रश्लोकात्मकं संक्षिप्तं  
कृतम् ।

तस्य प्रथमाध्याये — जगतः समुत्पत्तिः । द्वितीये — संस्कारविधिः व्रतचर्या ज्ञान-  
विधिः । तृतीये — विवाहः, विवाहानां लक्षणं मङ्गायज्ञविधानं याजुक्त्वः । चतुर्थाध्याये  
— ब्रह्मनां लक्षणं ज्ञातकव्रतानि भत्याभत्यानिर्णय-शौचद्रव्यशुद्धिः । पञ्चमे — स्त्रीणां  
धर्मः, षष्ठे — वानप्रस्थधर्मः सत्यासचर्यः । सप्तमे — दूतपतिधर्मः । अष्टमे —  
व्यवहारदर्शनम् । नवमे — स्त्रीपुंसयोर्धर्मः दायविभागः द्यूतविधानम् कष्टकरोधनं  
वैश्यादयोर्धर्मश्च । दशमे — सहरजातीनां उत्पत्तिः आपद्धर्मः । एकादशे —  
प्रायश्चित्तम् । द्वादशे — युभायुभक्त्यर्जनितविविधजन्मात्मज्ञानकर्तव्यां गुणदोषौ ।  
अनुबन्तमन्यदपि बहु निर्णीतम् ।

## द्वितीयोऽध्यायः

विद्वद्भिः सेवितः सद्भिर्नित्यमद्वेषरागिभिः ।

हृदयेनाभ्यनुज्ञातो यो धर्मस्तन्निबोधत ॥ १ ॥

PROSE.—अद्वेषरागिभिः सद्भिः विद्वद्भिः नित्यं सेवितः हृदयेन अभ्यनुज्ञातः यो धर्मः तं निबोधत ॥ १ ॥

A. B. About the different constructions of the sloka vide elucidation.

EXPLANATION.—ब्रह्मज्ञानमेव परमधर्मः । प्रथमाध्याये सृष्टिवर्णनव्यप-  
देशेन ब्रह्मज्ञानाख्यं परमधर्मं मुक्ता तस्य अङ्गीभूतं धर्मं ज्ञातकर्म-दानादिरूपं वक्तुं  
द्वितीयादयो अध्यायाः आरभ्यन्ते । धर्मलक्षणमज्ञात्वा धर्मो नैव ज्ञायते इति द्विती-  
यस्मिन् श्लोके धर्मलक्षणमाह विद्वद्भिरिति । अद्वेषरागिभिः द्वेषः विषयेषु द्वेषस्त्ववृत्तिः  
रागश्च विषयेषु आसक्तिरनुरागो वा तौ द्वेषरागौ विद्येते येषां ते द्वेषरागिणः न द्वेष-  
रागिणः अद्वेषरागिणः नञ्समानः । तेः सद्भिः धार्मिकैः नित्यं सततं सेवितः अनुष्ठितः  
हृदयेन मनसा करणेन अभ्यनुज्ञातः आनुकूल्येन प्रीतिजनकतया ज्ञातः अवगतः यो  
धर्मः अनुष्ठानात्मकः तं धर्मं निबोधत जानीत यूयं इति शेषः । अस्मिन् श्लोके वेद-  
विद्भिः हृदयेन अभ्यनुज्ञातः इति पदवचं प्राधान्येन धर्मलक्षणं निरूपयति तदर्थमहणे  
यवः कर्तव्य इति । लक्षणप्रकारस्तु वेदविद्भिः हृदयेन अभ्यनुज्ञातः यः सः धर्मः ।  
तं निबोधत इति । वेदविद्भिः ज्ञातः अर्थात् वेदात् ज्ञातः ज्ञातुं शक्य इत्यर्थः । हृदयेन  
अभ्यनुज्ञातः यो वेदज्ञानां हृदयं प्रीणाति अतः यो लोकानां ऐहिकपारलौकिकसङ्कलं  
करोति इत्यर्थः । तस्मात् यो वेदेन उक्तः मङ्गलकरश्च स धर्म इति लक्षणं उक्तं भवति ।  
अनेन लक्षणेन धर्मं ज्ञात्वा वक्ष्यमाणश्लोकमूढोक्तप्रकारेण धर्मं चरत यूयमिति  
निष्कर्षः ॥ १ ॥

ELUCIDATION.—This sloka has been construed by others  
in a different way. We stick to the commentary of Kulluka.  
विद्वद्भिः is regarded by some as the subject of सेवितः, and सद्भिः as  
the subject of अभ्यनुज्ञातः. It is for this reason that Sir W.

Jones and others translated “revered or followed by the learned in the vedas” (বিদ্বদ্ভিঃ সেবিতঃ) and “impressed on the heart of the pious” (সদৃশিঃ হৃদয়েন অম্ব্যনুজ্ঞাতঃ). But Kulluka Bhatta takes বিদ্বদ্ভিঃ as the subject both of সেবিতঃ and অম্ব্যনুজ্ঞাতঃ. He says in his commentary “বেদবিদ্বদ্ভিঃ জ্ঞাত ইতি বিশেষণাত্” &c. &c. &c. “হৃদয়েনামিসুখ্যেণ জ্ঞাত” ইতি । It is not বিদ্বদ্ভিঃ সেবিতঃ and অদ্বৈতরাগিণিঃ সদৃশিঃ নিত্যং হৃদয়েন অম্ব্যনুজ্ঞাতঃ, but বিদ্বদ্ভিঃ with its epithets সদৃশিঃ &c. &c. সেবিতঃ অম্ব্যনুজ্ঞাতায় (vide our prose order).

The words বিদ্বদ্ভিঃ হৃদয়েন অম্ব্যনুজ্ঞাতঃ are the most important ones in the text. It is out of these words that Kulluka Bhatta has evolved the definition of ধর্ম্ম which conforms to that given by Jaimini in his Dharma sutras or Purba Mimansa Philosophy. Bharat Siromany translates it as “যে ধর্ম্ম, রাগদ্বेषহীন সাধু বিদ্বাদেনরা একান্ত হৃদয়ে ধারণা করিয়াছিল।”

MEANING IN ENGLISH.—Learn that system of duty or sacred law which is followed and assented to in their heart by those who are learned in the Vedas, and free from hatred and inordinate affection.

PURPORT.—বেদজ্ঞা যং নিপেত্বানি হৃদয়েন অনজ্ঞাননিচ অর্থাৎ যৌ বেদেণ বিদ্বিতঃ লোকানাং শ্রেয়স্করং স এব ধর্ম্ম ইতি ধর্ম্মলব্ধম্ । তং ধর্ম্মং মনঃ সুখং প্রাপ্যত ॥ ১ ॥

BENGALI.—যাহা রাগদ্বৈশম্য ছাড়া ধার্মিক বেদজ্ঞগণ কর্তৃক অনুষ্ঠিত ও হৃদয়ানু-মোদিত সেই ধর্ম্ম অবগত হউন ॥ ১ ॥

BENGALI TRANSLATION.—রাগদ্বৈশম্য ছাড়া ধার্মিক বেদজ্ঞগণ যাহা নিত্য অনুষ্ঠান করেন, অর্থাৎ যাহা কেন্দ্র বেদে প্রাপ্ত হওয়া যায় অথচ যাহাতে বেদজ্ঞগণের চিত্ত অনুরক্ত, অর্থাৎ যাহা লোকের শ্রেয়স্কর, তাহাকে ধর্ম্ম বলে । আপনারা উক্ত লক্ষণ-বিশিষ্ট ধর্ম্ম আমার নিকট অবগত হউন ॥ ১ ॥

ENGLISH TRANSLATION.—Learn the *dharma* which is followed (and practised) by the learned (in the Vedas) and the pious and the good, who are ever free from spite and passion, and which is approved by the heart (*i. e.* to say conscience). (1).

KULLUKA.—প্রকটপরমাত্মজ্ঞানরূপধর্ম্মজ্ঞানায় জগৎকার্থ্যং ব্রহ্ম প্রতিপাদ্য অধুনা ব্রহ্মজ্ঞানাক্রমুতং সংস্কারাদিকং ধর্ম্ম প্রতিপাদয়িতুর্ধর্ম্মসামান্যলব্ধং প্রথমমাহ

विद्वद्विरिति । विद्वद्विद्वद्विद्विः सद्भिर्धार्मिकैरागद्वेषयुक्तै रनुष्ठितो हृदयेनाभिमुखोऽन  
 ज्ञात इत्यनेन श्रेयःसाधनमभिमतम् । तत्र हृदयेनेति स्वरसात् मनोऽभिमुखीभवति ।  
 वेदविद्विज्ञात इति विशेषणोपादानसामर्थ्यात् ज्ञातस्य वेदस्यैव श्रेयःसाधनज्ञाने कारणत्वं  
 विवक्षितं खड्गधारिणा हत इत्युक्ते धृतखड्गस्यैव हनने प्राधान्यम् अतो वेदप्रमाणकः  
 श्रेयःसाधनं धर्म्यं इत्युक्तम् एवांत्वधी यो धर्म्यस्तद्विबोधत । उक्तार्थसंशङ्गोक्ताः ।  
 वेदविद्विज्ञात इति प्रयुक्तानो विशेषणम् । वेदादेव परिज्ञातो धर्म्य इत्युक्तवान्मनुः ।  
 हृदयेनाभिमुखोऽन ज्ञात इत्यपि निर्दिष्टम् । श्रेयः साधनमित्याह तत्र ज्ञाभिमुखं मनः ।  
 वेदप्रमाणकः श्रेयःसाधनं धर्म्यं इत्यतः । ननुक्तमेव मुनयः प्रणिनुर्धर्म्यलक्षणम् । अत-  
 एव हारौतः—अथातो धर्म्यं व्याख्यास्यामः श्रुतिप्रमाणको धर्म्यः, श्रुतिश्च द्विविधावैदिकी  
 तान्त्रिकी च । भविष्यपुराणे—धर्म्यः श्रेयःसमाद्दष्टं श्रेयोऽभ्युदयलक्षणम् । स तु  
 पञ्चविधः प्रोक्तो वेदमूलः सनातनः । अस्य सव्यगनुष्ठानान् स्वर्गो मोक्षश्च जायते । इह  
 लोके सुखंश्चर्यमनुलक्ष्य खगाधिप । श्रेयः श्रेयःसाधनमित्यर्थः । जैमिनिरपि इदमपि  
 धर्म्यलक्षणसमूहयत् चोदनालक्षणोऽर्थो धर्म्य इति । उभयचोदनया लक्ष्यतेऽर्थः श्रेयः-  
 साधनं श्रौतिष्टोमादि, अनेन चोदनालक्षणेन अनर्थो, धर्म्य इति अधर्म्यलक्षणं सूचित-  
 मनर्थः प्रत्यवायसाधनं केनादिः तत्र वेदप्रमाणकं श्रेयःसाधनं श्रौतिष्टोमादि धर्म्य इति  
 सन्तर्थाः । स्यादप्येवमपि वेदमूलत्वेनैव धर्म्यप्रमाणमिति दर्शयिष्यामः । गाविन्द्रराजसु  
 हृदयेनाभ्यनुज्ञात इत्यन्तःकरणविविकित्साशुत्य इति व्याख्यातवान्, तस्मिन् वेदविद्विरनुष्ठितः  
 संश्रयराहित्य धर्म्य इति धर्म्यलक्षणं व्याप्तम् । एतच्च दृष्टार्थशामगमनादिसाधारणं धर्म्य-  
 लक्षणं विवक्षणा न शङ्कते । मेधातिथिस्तु हृदयेनाभ्यनुज्ञातः इति यत्र चित्तं प्रवर्तय-  
 ताति व्याख्याय अथवा हृदयं वेदः सत्यधोतो भावनादरूपेण कृतहृदयस्थितिः हृदय-  
 मित्युच्यते इत्युक्तवान् ॥ १ ॥

KULLUKA EXPLAINED.—“प्रकृतपरमात्मज्ञानरूपधर्म्यज्ञानाय जगत्कारणं  
 ब्रह्म प्रतिपाद्य अधुना ब्रह्मज्ञानाद्भूतं संस्कारादरूपं धर्म्यं प्रतिपिपादयिषु धर्म्यसामान्य-  
 लक्षणं प्रथममाह विद्वद्विरिति ।”

अस्मिन् कुल्लूकनाथे केचित् तर्का अतिसंक्षिप्ताः सन्ति। तान् परिष्कृत्य रूपेण  
 अज्ञात्वा कुल्लूकनाथं बोधुं न शक्यते इति तं तर्काः आदौ स्फुटौक्रियन्ते ततश्च वाक्यस्य  
 प्रतिपदव्याख्यानं भविष्यति । धर्म्यो हि द्विविधः परमधर्म्यः धर्म्यश्च । ब्रह्मज्ञानं परमात्म-  
 ज्ञानं वा परमधर्म्यः, जातकर्म—विवाहोपनयनधनदान-विद्यादान-वापी-कूपखनन-दीप-  
 दानादिरूपकर्माणि धर्म्यः । परमधर्म्य एव प्रकृतधर्म्यशब्देन उच्यते । परमधर्म्येण मोक्ष-  
 लाभः धर्म्येण ऐहिकसमृद्धिः पारलौकिकस्वर्गादिलाभश्च भवति । तस्मात् परमधर्म्यात्  
 धर्म्यः हीनतरः । तथासति मनुः परमात्मज्ञानरूपं परमधर्म्यं प्रकृतधर्म्यं वा अनुज्ञा कथं  
 हीनतरं धर्म्यं अस्मिन् शास्त्रे उक्तवान् ? मैत्रं प्रथमाध्याये हि मनुः संक्षेपेण ब्रह्मज्ञानं

उक्तवान् । मैवं प्रथमाध्याये ब्रह्मणः जगत् इदं जातमिति कथितवान् ननु ब्रह्मज्ञानम् । तस्य उत्तरमाह जगत्कारणं ब्रह्म प्रतिपाद्य इति अर्थात् ब्रह्मणः जगत् जातमिति वाक्येन ब्रह्म प्रतिपादितं भवति यतो जगत् जातं तद् ब्रह्म इत्येव ब्रह्मलक्षणम् । उक्तञ्च उपनिषत्सु यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते तद् ब्रह्म इति शेषः । तथा ब्रह्मप्रतिपादकब्रह्मसूत्रेण जन्मादस्य यत इति अर्थात् यतो यस्मात् सत्यवस्तुनः अस्य जगतः जन्मस्थितिप्रलया भवन्ति तत् ब्रह्म इति ब्रह्मलक्षणमुक्तम् । मनुनाऽपि तमेव प्रकाशेण यत् तत्कारणम् इति जगत्कारणत्वेन ब्रह्मलक्षणं उक्तम् । ब्रह्मलक्षणमथ ब्रह्म प्रतिपादनम् तदेव ब्रह्मज्ञानम् तदेव परमधर्मः । तस्मात् मनुना प्रथमाध्याये ब्रह्मप्रतिपादितम् । तव ब्रह्म प्रतिपाद्य हीनतरम् धर्मं द्वितीयादिषु अध्यायेषु प्रतिपादयिष्यति । तव प्रश्नः, प्रथमाध्याये परमधर्मो उक्ते इति हीनतरेण धर्म्येण किं प्रयोगनम् ? तदाह ब्रह्मज्ञानाद्भूतमिति । धर्मज्ञानं परमधर्मस्य अङ्गम्, धर्मज्ञानादृते परमधर्मज्ञानं न सम्भवति चित्तशुद्धेरभावात् । धर्म्येण हि चित्तशुद्धिः ततः परं परमात्मज्ञानरूपः परमधर्मः विद्युहे चित्तं पदं करोति । धर्म्यलक्षणात् विना धर्मो ज्ञातुं न शक्यते तस्मात् विद्वदभिरिति श्लोके मनुः धर्मस्य लक्षणं आह ।

अधुना प्रतिपदस्याख्यानम् सुबोधं भविष्यति । “प्रकृतपरमात्मज्ञानरूपधर्मज्ञानाय” परमात्मज्ञानरूपः श्री धर्मः स प्रकृतः धर्मः, तस्य ज्ञानाय ज्ञानार्थे प्रकृतधर्मस्य अवबोधाय इत्यर्थः “जगत्कारणं ब्रह्म प्रतिपाद्य” प्रथमाध्याये ब्रह्म जगतः कारणं इति उक्त्वा तेनैव वाक्येन ब्रह्मप्रतिपाद्यं निरूप्य तेन प्रकारेण वेदान्तेषु अपि ब्रह्मणः प्रतिपादितत्वात्, “अधुना” द्वितीयाध्यायारम्भे “ब्रह्मज्ञानाद्भूतम्” ब्रह्मज्ञानस्य प्रथमाध्याये उक्तस्य परमधर्मस्य अङ्गभूतं चित्तशुद्धिहेतुत्वात् आनुषङ्गिकम् “संस्कारादिरूपम्” संस्काराः उपनयनादिरूपाः षोडश आद्यो येषां ते संस्कारादयः अर्थात् षोडश संस्कार—कृपादि-खलन—द्वीपदान—धनदान—परोपकारादयः रूपं स्वरूपं यस्य सः तं धर्मं कर्मरूपं “प्रतिपिपादयिषुः प्रतिपादयितुं भिच्छुः सन् धर्मस्य सामान्यलक्षणं धर्मस्य साधारणं लक्षणं “प्रथमम्” आदौ आह मनुरिति शेषः “विद्वदभिरिति” विद्वदभिरिति श्लोकेन ।

After demonstrating Brahma as the First cause of the Universe, for the attainment of the knowledge of the Supreme Self which is technically styled as Paramadharma, the sage now intending to demonstrate dharma which is subsidiary to the knowledge of the Supreme Soul, and which consists in the performance of ten ceremonies and other duties prescribed by the Vedas, first of all defines “dharma” in the couplet commencing with the word *Vidvadbhi*.

“विद्वद्भिर् वेदविदभिः सदभिर् धार्मिकैः रागद्वेषाभ्याम् अनुष्ठितः ।”

विद्वद्भिः वेदविदभिः अर्थात् वेदं विद्वद्भिः इति वक्तव्ये विद्वद्भिरित्युक्तम् । विद्वत् शब्देन अत्र वेदविद् बोध्यते न तु पण्डितः । अवेदज्ञस्य धर्मज्ञानाभावात् । सदभिः धार्मिकैः धर्मं चरति इति पाणिनिवचनात् धार्मिकशब्देन धर्मानुष्ठानशील एव गम्यते न तु अन्यः । अत्र सत्शब्देन धार्मिक एव बुध्यते न तु पण्डितः धर्मस्य प्राकरणिकत्वात् । रागद्वेषाभ्यामेति अद्वेषरागिभि रित्यस्यार्थः । अनुष्ठित इति सेवित शब्दस्यार्थः ।

विद्वान् means learned in the Vedas, not learned in the general sense of the word. सदभिः means those who discharge the duties enjoined by the Vedas, and does not mean honest men generally. अद्वेषरागिभिः means persons exempt from hatred against and inordinate attachment for the objects of senses.

“हृदयेन अभिमुख्येन ज्ञात इत्यनेन श्रेयःसाधनमभिमतम् ।”

हृदयेन चित्तेन (अभि अनु) अभिमुख्येन अनुकूलतया इत्यर्थः ज्ञातः अवगतः इति अनेन अंशेन श्रेयःसाधनम् पुरुषार्थसाधनम् मङ्गलजनकत्वं अभिमतं मनोरिति शेषः । अर्थात् हृदयेन अभ्यनुज्ञात इति वार्त्तिकेन यत् श्रेयःसाधनं शुभकरं तत् वेदोक्ते कर्म धर्म इति मनोरभिप्रायः ।

“तत्र हृदयेनेति स्वरसात् मनोऽभिमुखी भवति ।”

अर्थात् श्लोकस्य हृदयेन इति पदेन इदमेव बुध्यते यत् यस्मिन् वेदोक्ते कर्मणि मनः स्वरसात् स्वभावेन अभिमुखीभवति अनुकूलं भवति यदभिलक्ष्य वेदज्ञस्य चित्तं प्रवणं लोलं भवति तत् धर्मः ।

“वेदविदभिर् ज्ञात इति विशेषणोपादानसामर्थ्यात् ज्ञातस्य वेदस्यैव श्रेयःसाधनज्ञाने कारणत्वं विवर्चितं, खड्गधारिणा हत इत्युक्ते धृतखड्गस्यैव प्राधान्यम्” ।

वेदविदभिः ज्ञात इति धर्मशब्दस्य विशेषणम्, एवमप्रकारस्य वेदविदभिर्ज्ञात इति-प्रकारकविशेषणस्य उपादानसामर्थ्यात् प्रयोगसामर्थ्यात् हेतोः ज्ञातस्य वेदस्य एव श्रेयःसाधनज्ञाने अनेन धर्म्येण एतत् श्रेयः ऐहिकपारविकमङ्गलं साध्यते इति ज्ञाने बोधे कारणत्वं हेतुत्वं विवर्चितं वक्तव्यमस्ति । यतः खड्गधारिणा गृहीतखड्गेन मनुष्येण स हतः इति केनचित् जनेन उक्ते कथिते सति धृतखड्गस्य धृतस्य हस्ते गृहीतस्य खड्गस्य एव न तु याहकस्य जनस्य प्राधान्यं प्रधानत्वं जननकर्षणि इत्यर्थः । अयं भावः यस्मिन् मनुवचने यो वेदविद्विर् ज्ञातः स धर्म इत्युक्तम् । वेदविद्विर्ज्ञात इति हि धर्मस्य विशेषणम् । को धर्मः ? वेदविद्विर् ज्ञातः यः स धर्म इति विशेषणप्रकारः । वेदविद्विर् ज्ञात इत्यनेन वेदेन ज्ञातः ( ज्ञातुं शक्यः ) इत्यर्थो भवति,

खड्गधारिणा देवदत्तेन हतः यज्ञदत्तः इत्युक्ते देवदत्तेन धृतो यः खड्गः स एव यज्ञदत्तस्य वधकर्त्र्यणि प्रधान आसीत् इति गम्यते ।

By the specification (वेदविद्विज्ञातः) "known by the learned in the Vedas" it is intended to convey that it is the known Veda (and not the knower of it) that plays the principal part in the acquisition of knowledge which leads to श्रेयः, welfare ; because when it is said "He was killed by a swordsman", we understand that the sword played the principal part in the act of killing. "*Dharma* known by the learned-in-the-Vedas" means *dharma* known through the Vedas. It is from the Vedas that *dharma* can be known, and from nothing else.

"अतो वेदप्रमाणकः श्रेयःसाधनं धर्म इत्युक्तम् ।"

अतः पूर्वोक्तान् कारणसमूहात् हेतोः वेदप्रमाणकः वेदाः प्रमाणं बोधकं मान-दृष्टो यस्य स वेदप्रमाणकः अर्थात् वेदे यो विहितः स धर्मः । ननु श्रेयसां कृत्वा श्रेयं इत्यात् इति वेदविधिरप्यस्ति स किं धर्मः ? भैवं यो वेदोक्तः तथा श्रेयः-साधनं मङ्गलकरः लोकस्य सधर्मः श्रेयसाग्रेण मनुष्यहननं न श्रेयस्करो किन्तु अनिष्ट-करं तस्मात् वेदविहितमपि तत् धर्मो न भवति किन्तु अधर्मा भवतीत्यर्थः ।

Therefore *dharma* is intended to be defined as follows:— That which is authorised by the Vedas, and is conducive to the welfare (of mankind) is *dharma*.

"एवम्बोधो यो धर्मः स निबोधत ।"

एवम्बोधः एवं विधा प्रकारः परिचयः लक्षणं यस्य सः पूर्वोक्तलक्षणविशिष्ट इत्यर्थः यो धर्मः ( नतु वेदवाक्यध्वनादिरचितशस्त्रोक्तः स्वकीयवृत्त्या उद्भाविता वा धर्मः ) तं वेदोक्तं धर्मं यज्ञ-संस्कार-दानादिरूपं निबोधत जानीत यूयम् । Know from me *dharma* (a system of duty) as defined above.

Those who are not controlled by the Vedas, have also a sort of *dharma* not sanctioned by the Vedas, such *dharma* is not discussed in this book.

"उक्तार्थसंग्रहश्लोकाः" ।

उक्तानां प्रतिपादितानां अर्थानां व्याख्यानानां संग्रहः समाहारः एकत्र स्थापनं येषु ते उक्तार्थसंग्रहाः । उक्तार्थसंग्रहायैते श्लोकाश्च ते उक्तार्थसंग्रहश्लोकाः । Couplets.

containing a summary of the foregoing discussions (are composed and put down below).

“वेदविदभिर्ज्ञात इति प्रयुञ्जानो विशेषणम् । वेदादेव परिज्ञातो धर्म इत्युक्तवान् मनुः ।”

मनुः वेदविदभिः अर्थात् विद्वद्भिः ज्ञातः अवगतः यः स धर्म इति धर्मशब्दस्य विशेषणं प्रयुञ्जानः योजयन् यस्मात् योजितवान् तस्मात् हेतोरित्यर्थः वेदात् एव न तु अन्यस्मात् यो ज्ञातः स धर्म इति उक्तवान् ।

“हृदयेनाभिमुख्येन ज्ञात इत्यपि निर्दिष्टम् । श्रेयःसाधनमित्याह तत्र अभिमुखं मनः ।”

मनुः हृदयेन अभिमुख्येन ज्ञातः (अर्थात् हृदयेन अभ्यनुज्ञातः) इति निर्दिष्टम् त्रोटके कथयन् यः श्रेयःसाधनम् हितसाधकः स धर्म इति आह धर्मलक्षणमाह । हि यस्मात् तत तस्मिन् धर्मो मनः धार्मिकाणां इत्यर्थः अभिमुखं लोलं भवति ।

“वेदप्रमाणकः श्रेयःसाधनं धर्म इत्युत । मनुक्तमेव मुनयः प्रशिन्युर्धर्मलक्षणम्”

सिद्धान्तमाह वेदप्रमाणक इति । तस्मात् वेदप्रमाणकः वेदमूलकः श्रेयःसाधनं ऐहिका-  
मुक्तिककल्याणकरः च यः स धर्म इति मुनयः अन्ये मुनयः व्यासवशिष्टादयः यत् धर्मस्य लक्षणं प्रशिन्युः प्रणीतवन्तः संस्मृहीतवन्तः तत् लक्षणं मनुक्तं धर्मलक्षणमेव । अर्थात् अन्ये मुनयः मनुक्तं धर्मलक्षणमेव स्वकीयसंहितासु प्रणीतवन्तः । अन्ये मुनयः मनुक्तं धर्मलक्षणं मनुक्तधर्मस्य सारं च स्वकीयसंहितासु उपनिबद्धवन्तः ।

“अतएव हारीतः अथातो धर्मं व्याख्यास्यामः । श्रुतिप्रमाणको धर्मः । श्रुतिश्च द्विविधा वैदिकी तान्त्रिकी च ।”

अतः अस्मात् एव हेतोः मनुक्तधर्मलक्षणानुसरणपरत्वात् इत्यर्थः । हारीतो मुनिः आह इति शेषः । किमाह तदुच्यते अथ शुभमस्तु इत्यर्थः अथ शब्दस्य मङ्गलार्थत्वात् आकारशाश्वतशब्दस्य माङ्गलिकौ इति वचनात् अतः अतः परं धर्मं व्याख्यास्यामः निरूपयि-  
ष्यामः । एकवचनार्थे बहुवचनप्रयोगः । व्याख्यानञ्च यथा श्रुतिप्रमाणकः वेदमूलकः यः स धर्मः । श्रुतेः द्विविध्यं आह वैदिकी वेदोक्ता तथा तान्त्रिकी तन्त्रोक्ता च । तन्त्राणा-  
माधर्वणिकत्वम् स्वामिपादप्रमुखैर्व्याख्यातम् । तन्त्रस्य शास्त्रस्य न स्वातन्त्र्येण प्रामाण्यं  
यावद्वेदमूलकत्वं तावत्प्रामाण्यं वेदाधीनत्वात् । उक्तञ्च भगवता भाष्यकारेण कथं  
तन्त्रस्य प्रामाण्यं शिवेन उक्तत्वात् । कथं शिवस्य प्रामाण्यं तन्त्रे तस्य प्रामाण्यस्याप-  
नात् तस्मात् अन्योन्मात्रश्रमेतत् अप्रमाणम् । भवति च प्रामाण्यं यावत् वेदमूलकत्वं ।  
वेदस्य स्वतः प्रामाण्यात् शिवादिवत् पुरुषविशेषेण अरचितत्वात् वेदाधीनत्वेन सर्वस्य  
प्रामाण्यम् ।



अतः हारोतोऽपि मनु मनुस्तवान् । तथा व्यासयेति व्यासोक्तपुराणे धर्म-  
लक्षणमाह—

‘Thus following Manu, the sage Harit says, “Blessings to all, now I shall explain *dharma*. *Dharma* is that which is authorised by *Śruti*. *Śruti* is divided into two classes what is recited in the Vedas, and what recited in the Tantras.”

“भविष्यपुराणे । धर्मः श्रेयः समुद्दिष्टं श्रेयोभ्युदयलक्षणम् । स तु पञ्चविधः प्रीती वेदमूलः सनातनः । अस्य सम्यगनुष्ठानात् स्वर्गो मोक्षश्च जायते । इहलोके सुखेश्वर्यं मनुलक्ष खगाधिप । श्रेयः श्रेयः साधनमित्यर्थः ।”

भविष्यपुराणे व्यासोक्ते भविष्याख्यपुराणेऽपि तथैव मनो रनुसरणं दृश्यते इत्यर्थः । धर्मः श्रेयः श्रेयःसाधनम् इति कुल्लूकस्य योजनायुक्तम् । श्रेयः श्रेयःसाधनं यत् उद्दिष्टं लिखितम् तत् धर्म इत्यर्थः । श्रेयः किं ? यत् अभ्युदयलक्षणम् अभ्युदयेन समृद्धिसमृद्धेन लभ्यते बुध्यते तत् श्रेयः । ऐहिकाभ्युदयः भोगादिः । पारलौकिकाभ्युदयः स्वर्गः मोक्षश्च । भाष्यकारस्तु अभ्युदयशब्देन भागं स्वर्गश्चाह ; मोक्षं निःश्रेयसशब्देन आह । स धर्मः वेदमूलः वेदप्रमाणकः सनातनः नित्यः पञ्चविधः पञ्चपकारः भवति । परमस्य पञ्चविधत्वं भविष्यपुराणोक्ते द्वितीयाध्यायीयपञ्चाविंशश्लोकस्य कुल्लूकटीकायां दृश्यम् । अस्य धर्मस्य वेदाक्तस्य सम्यक् अनुष्ठानात् आचरणात् स्वर्गो देवलोक-  
प्राप्तिः मोक्षश्च मुक्तिश्च जायते मरणात् परम् । जीवितकालेऽपि इह अस्मिन् मनुष्य-  
लोके अतुलं सुखैश्वर्यम् सुखञ्च ऐश्वर्यं सम्पत् च एकवद्भावः जायते । हे खगाधिप खगानां अधिप गच्छ त्वं शृणु । भविष्यपुराणोक्तवचनस्थितस्य श्रेयः शब्दस्य अर्थः माह श्रेयःसाधनमित्यर्थः । धर्मः साक्षात् श्रेयः न भवति किन्तु श्रेयसः कारणं साधनं भवति । धर्मोऽयं श्रेयः प्राप्यते नतु धर्मः एव श्रेयः । तस्मात् धर्मः श्रेयः इत्येव श्रेयःशब्देन श्रेयःसाधनम् इत्येव बुध्यते इति कुल्लूकाभिप्रायः ।

We have in the Bhabishyapurana also “*Dharma* is that which is conducive to welfare. Welfare is prosperity. Such *dharma* which has its source in the Vedas, and which is everlasting, is divided into five classes. By the thorough practice of it, one may derive celestial abode and final emancipation (after death). And even in this life one may attain incomparable happiness and wealth. O, king of the birds, hear from me. The word welfare (श्रेयः) in the couplet of Bhabishya-

purana quoted above implies "means to welfare" (श्रेयः साधनम्) (as श्रेयः and धर्मः are two different things, one cannot be the other.)

"जैमिनिरपि इदमेव धर्मलक्षणमस्त्वयत् चोदनालक्षणीऽर्थो धर्म इति ।"

न केवलं हारीता व्यासश्च मनु मनुस्मृतवान् धर्मस्त्वस्य पूर्वसौमासाख्यस्य दर्शनस्य वक्ता जैमिनिरपि इदमेव मनुस्मृतमेव धर्मलक्षणं अस्त्वयत् सूत्राकारेण उपनिबद्धवान् । स्वतन्त्रप्रकारमाह चोदनालक्षणीऽर्थो धर्म इति अभिनयः । अस्य सूत्रस्य व्याख्या कुल्लूकेनेव कृता अथ तामेव व्याख्यास्यामि ।

Jaimini also put this very definition in the form of an aphorism. His aphorism is "chodanalakshanartho dharmā". (explanation follows).

"उभयचोदनया लभ्यतेऽर्थः श्रेयःसाधनं ज्योतिष्टोमादिः" ।

सूत्रं व्याचष्टे ( explains ) उभयेति । चोदनालक्षणीऽर्थः धर्म इति हि जैमिनिस्त्वम् । तस्य सूत्रस्य व्याख्यानं कुल्लूकमहः करोति । चोदनालक्षणः चोदना प्रेरणा प्रवर्तना इति यावत् । चोदनया लभ्यते प्राप्यते इति चोदनालक्षणः ज्योत्स्नायां वहुलमिति कर्मणि ष्यट् । यजेत यजनं कुर्यात् इत्यादिरूपं वाक्यं चोदनाः मूलकं प्रवर्तनामूलकं । तथाभूतं वाक्यं कर्मणि यज्ञादिरूपं प्रेरयति प्रवर्तयति चोदयति वा । तथाभूतेन वाक्येन लभ्यते प्रदर्शने अर्थः हितकरः ज्योतिष्टोमादिनामक-यज्ञादिः । धर्मः । श्रेयःसाधनं ज्योतिष्टोमादिना हि श्रेयः ऐहिकामुष्मिककल्याणं साध्यते । वेदीकप्रवर्तनावान्धेन यत् कर्म कर्तव्यत्वेन ज्ञातं यच्च श्रेयस्करं तत् धर्मः । चोदना हि उभयविधा एव कुर्यात् इति विधिरूपा एवं न कुर्यात् इति निषेधरूपा च । ज्ञानविषया कर्मविषया च इति विविध्यश्च गम्यते । तस्मात् उक्तं कुल्लूकेन उभय-चोदनया लभ्यते इति । सविस्तरव्याख्यानान्तु शावरे द्रष्टव्यम् ।

अर्थ भावः वेदीकप्रवर्तनावान्धेन प्राप्तं ज्योतिष्टोमादिरूपं श्रेयस्करं कर्म एव धर्मः इति जैमिनिसूत्रार्थः । तस्मात् जैमिनिरपि मनुक्तधर्मलक्षणं स्वीचकार ।

Duties, such as the performance of sacrifices like Jyotishtom and others conducive to the welfare of man and known from Vedic injunctions both affirmative and negative, are called *dharma*.

"अनेन चोदनालक्षणे अनर्थोऽधर्म इति अधर्मलक्षणं सूचितम् । अनर्थः प्रत्यवाह-साधनं स्त्रीनादिः ।"

अनेन पूर्वोक्तप्रकारेण चोदनालक्षणे वेदोक्तप्रवर्तनारूपवाक्यात् लक्षिते प्राप्ते कर्मसमूहे अनर्थः अहितकरः यः सः अधर्मः ; अनर्थशब्दं व्याचष्टे प्रत्यवायसाधनं पापजनकं श्येनादिः श्येनयागादिः । वेदेन उक्ते सत्याप यत् कर्म अनिष्टजनकं तत् अधर्मः, वेदेनोक्तं यत् कर्म श्रेयस्करं पुण्यजनकं तत् धर्मः । श्येनाख्यं यज्ञं कृत्वा श्वं नाशयेत् इति वेदे उक्तम् । श्येनयागस्य उपदेशोऽपि वेदे एव प्राप्तः । तथापि स अधर्मः अनर्थकरत्वात् प्रत्यवायजनकत्वात् नरकफलत्वात् ।

From this we get a definition of a *dharma*. Duty which follows from the Vedik injunction, but is productive of injurious consequences, is not a *dharma*. From it sin arises, such as the performance of Syena sacrifice (for the destruction of enemies).

“तत्र वेदप्रमाणकं श्रेयःसाधनं ज्योतिष्टोमादि धर्म इति सूत्रार्थः ।”

Therefore the meaning of the sutra is “Duties which are authorised by the Vedas, and are conducive to good such as the performance of Jyotishtom and others, is *dharma*.”

The Vedik injunctions are to be interpreted strictly according to the rules laid down by Jaimini. The collection of these rules is called the Purva Mimamsa Philosophy of Jaimini. It is therefore necessary to show that Jaimini is merely a follower of Manu in the light of interpretation put upon by Harit, Vyas, Vashishtha &c. &c. Jaimini was a disciple of Vyas. He became proficient in the Sama Veda.

Thus in the Vishnupurana :—

अथ शिष्यान् स जग्राह चतुरो वेदपारगान् । ऋग्वेदशाबकः पैलं जग्राह स महासुनिः । वैशम्पायननामानं यजुर्वेदस्य आग्रहीत् । जैमिनिं सामवेदस्य तथैवाथर्व-वेदवित् सुमन्तुस्तस्य शिष्योऽभूत् वेदव्यासस्य धीमतः इति ।

कर्मसौमंसासकस्य जैमिने वाङ्मेन मनुवाक्यस्य विरोधे सर्वं विध्वंसं भवेत् मनुविद्वत्स्य वाक्यस्य अप्रामाण्यात् जैमिनिना च वैदिकानां कर्मणां अनुश्रितत्वात् व्याख्यातत्वात् । तस्मात् मनुवाङ्मेन सह जैमिनिवाक्यस्य एकवाक्यतास्थापनार्थं कुल्लूकस्य परिश्रमः ।

“कृत्वाद्योऽपि वेदमूलत्वेनैव धर्मो प्रमाणमिति दर्शयिष्यामः ।”

कृतिः स्मन्वादीनां धर्मविषयकाणि वाक्यानि चादि येषां ते स्मृत्यादयः कृतिः पुराणेतिहासादयः अपि वेदमूलत्वेनैव वेदाः मूलं येषां ते तद्यत्वेन एव धर्मं धर्मविषये प्रमाणं भवन्ति इति तत्र तत्र दर्शयिष्यामः । अयं भावः स्मृत्यादीनां स्वातन्त्र्येण न प्रामाण्यम् । किन्तु यतस्तु वेदमूलका अतर्क्या प्रामाण्यम् । वेदा एव मूलं प्रमाणं तदाश्रयत्वे सति अन्येषां शास्त्राणां प्रामाण्यम् ।

We shall show that treatises like Smṛiti ; Purāṇa &c. &c., are authorities on matters touching dharma only because they are based on the Vedas.

Now the commentator after explaining the text fully, criticises the explanation as furnished by Govindaraj and Medhatithi.

“गोविन्दराजस्तु हृदयेनाभ्यनुज्ञात इति अन्तःकरणविक्रित्सागुन्ध इति व्याख्यातवान् । तस्मिन्ने वेदविदभि रनुष्ठितः संशयरहितश्च धर्म इति धर्मलक्षणं स्यात् ।”

गोविन्दराजनामा कश्चित् टीकाकृत् हृदयेनाभ्यनुज्ञात इत्यस्य अर्थस्य अन्तःकरणविक्रित्सागुन्ध अन्तरिकमन्देहरहित इति व्याख्यातवान् तस्य टीकायाम् । अर्थात् हृदयेनाभ्यनुज्ञातः अन्तःकरणविक्रित्सागुन्ध अर्थात् मन्देहशून्य इति गोविन्दराजस्य व्याख्यानम् । तस्मात् तस्मिन्ने गोविन्दराजस्य मते वेदविदभिः अनुष्ठितः संशयरहितश्च धर्म इति धर्मस्य लक्षणं स्यात् । तच्च दोषावहम् । अयं भावः वेदज्ञै र्येत् अनुष्ठितं संशयशून्यञ्च तच्चेत् धर्मो भवेत् तदा सर्वं विध्वंसं भवेत् । वेदज्ञो हि जनः कामक्रीधादिभिः वशीभूतः वेदोक्तं वेदविच्छेदं च आचरति तस्मात् तदाचरणं धर्मप्रमाणं न भवति । संशयशून्यत्वमपि न लक्षणम् लोकानां भिन्नवृत्तित्वात् वेदविच्छेदादीं संशयरहितः सन् एव गोमांसाद्यभक्ष्यं भक्षयति । यदि वेदविच्छेदेन वेदो लप्यते तदा अस्मद्व्याख्यानमेव गृह्यतामिति कृत्वा काशयः । किञ्च वेदविद्धिः ज्योतिष्टोमादिः क्रियते तेन स्वर्गादिनामः स्यान्नवेति संशये वेद एव निराकर्तुं शक्तः नायः अप्रत्यक्षत्वात् कर्मफलानाम् । तस्मात् वेद एव धर्म प्रमाणम् ।

“Assented to by the heart” was explained by Govindaraja as “without doubt.” According to him the definition of dharma therefore amounts to this. “That which is performed by the learned in the Vedas, and about which there is no doubt or misgiving in the mind, is dharma.”

“एतच्च हृदयार्थयामगमनादिसाधारणं धर्मलक्षणं विशदयति न गृह्यते ।”

एतच्च धर्मलक्षणं गोविन्दराजोक्तं दृष्टार्थं प्रत्यक्षफलकं यत् यामगमनादि कर्त्तुं तेन साधारणं समानं धर्मलक्षणं स्यात् । यामि गमनं यामगमनं तद्वि दृष्टार्थं दृष्टः अर्थः फलं यस्य तत् । प्रत्यक्षफलककर्त्तव्यत् धर्मो भवति तच्च न पण्डितानां मनोज्ञम् ।

“मेधातिथित्तु हृदयेनाभ्यनुज्ञात इति यत् चित्तं प्रवर्त्तयतीति व्याख्याय अथवा हृदयं वेदः सञ्जाधीतो भावनादिरूपेण कृतहृदयस्थितिर्हृदयमुच्यते इत्युक्तवान् ।”

मेधातिथिर्नाम टीकाकृतं तु हृदयेनाभ्यनुज्ञात इति इत्यस्य यत् चित्तं प्रवर्त्तयतीति यत् हृदयं चित्तं प्रवर्त्तयति प्रेरयतीति व्याख्या पुनरपि उक्तवान् । किं ? हृदयं वेदः अर्थात् हृदयेनाभ्यनुज्ञात इत्यत्र हृदयशब्दस्य वेदः अर्थः । व्याख्याप्रकारं कथयति हृदयं वेदः, कथं हृदयशब्दस्य वेदः अर्थो भवितुमर्हति मेधातिथि राह, स वेदः अधीतः पठितः सन् भावनादिरूपेण संस्काररूपेण कृतहृदयस्थितिः कृता हृदये स्थिति यैव न अर्थात् हृदये स्थित्वा हृदयं उच्यते, वेद एव हृदयमधिकञ्च हृदयाकारिण तिष्ठति अतो वेदज्ञस्य हृदयं वेद एव इत्यर्थः । एतच्च अमनोज्ञं व्याख्यानम् । वेदो हि कदापि हृदयशब्देन बोध्यते लक्षणया तद्रूपार्थविधानमपि निष्प्रयोजनं विशद्विरिति शब्दस्य एव वेदज्ञ इति अर्थः वेदज्ञशब्देन वेदस्यैव प्रमाणत्वं आयाति यथा व्याख्यातं कुल्लूकभट्टैः । तस्मात् कुल्लूकव्याख्यानमेव सम्यक् ।

इति कृष्णपदार्थोक्तं भजता मनुजीविना ।

क्रियते वालवोधार्था कुल्लूकार्यविवोधिनी ॥

Medhatithi by way of explaining “assented to by the heart” says “that which the heart permits to do”; he adds “or the heart is the Veda ; because the Veda being well read, takes its seat in the heart in the form of impression ; hence heart means the Veda. This explanation is hardly tenable, says Kulluka.

ELUCIDATION. — अस्य श्लोकस्य व्याख्यानं उक्तं हि कुल्लूकभट्टैः— प्रकृत-परमात्मज्ञानरूप धर्मज्ञानाय जगत्कारणं ।

ब्रह्म प्रतिपाद्य इति । तत्र वयं धर्मो हि द्विविधः धर्मः परमधर्मश्च इति उक्तवान् । तत्र विषये आचार्याणां मतं संक्षेपेण विव्रियते । कुल्लूकभट्टा हि शाङ्करभाष्यमतानुसारी-यैव प्रायशः परमात्मविषयकसिद्धान्तं उपनिषद्वत् । तस्मात् प्राधान्येन धर्मविषये भगवत्कुराचार्यस्य मतं भाष्यानुरोधेन कथ्यते । तेन सर्वं विशदं भविष्यतीति । उक्तं हि भाष्ये—

“स भगवान् सृष्टेर्दं जगत् तस्य स्थितिं चिकीर्षुर्मरीचादीन् अथे सृष्टा प्रजापतीन्, प्रवृत्तिलक्षणं धर्मं यादृशमास वेदोक्तं ; ततोऽस्यां स जनकसनन्दादीन् उत्पाद्य निवृत्तिधर्मं ज्ञानवैराग्यलक्षणं यादृशमास ।”

अर्थात् भगवान् परमेश्वरः नारायणः इदं जगत् सृष्ट्वा सृष्टस्य जगतः पालनं कर्तुं निष्कृतः अये मरीचिं अत्रिं अक्षिरसं पुलस्त्यं पुलङ्गं कर्तुं प्रचेतसं वशिष्ठं नारदं भृगुं च प्रजापतीन् स्वायम्भुवमनुरूपेण उत्पाद्य स्वायम्भुवमनुरूपेण वेदोक्तं प्रवृत्तिलक्षणं श्रीदत्तात्रेयं प्रवर्तनालक्षणं वा धर्म्मं ग्राहयामास । तेषां दशानां प्रजापतीनां मध्ये भृगुर्नाम प्रजापतिः मनोरादेशेन अन्येभ्यो मुनिभ्यः पश्चात् उक्तवान् यं धर्म्मं तत् मनूकशास्त्रं कथयन्ति । किन्तु सर्व्वं मनुष्या न प्रवृत्तियुक्ताः केचित् वैराग्ययुक्ताः च सन्त्येव पूर्व्वोक्तैः भृग्वदिभिः तेषां अनुशासनं न स्यात् । ततः विषयेषु अनामकान् वैराग्यशीलान् जनान् मोक्षार्गं यथाशास्त्रं स्थापयितुं सकलसन्त-सनातनादि नामकान् चतुरो मानसान् महावैराग्यशालिनः लोकगुरुन् उत्पाद्य तान् निवृत्ति-धर्म्मं ज्ञानवैराग्ययुक्तं ग्राहयामास ।” भृग्वदिभिर्गृहीतो धर्म्मः । सकलादिभिः गृहीतः परमधर्म्मः । इति धर्म्मो वेदोक्तौ । उक्तञ्च भगवता भाष्यकारेण—

“हिविधो हि वेदोक्तो धर्म्मः । प्रवृत्तिलक्षणे निवृत्तिलक्षणश्च तत्र एको जगतः स्थितिकारणं प्राणिनां साक्षात् अभ्युदयनिग्रहसहेतुः यः स धर्म्मः ब्राह्मणायै वर्णिभिः राशिमभिः...अनुष्ठेयमानः दीर्घेण कालेन अधर्म्मेण अभिभूयमाने धर्म्मे...जगतः स्थितिं परिपिपालयिषुः स आदिकर्त्ता नारायणाख्यो विष्णुः...रक्षणार्थं देवक्या वसुदेवान् अंशेन कृष्णः किलः सम्भूय । इति ।

अर्थात् वेदोक्तः धर्म्मः हिविधः प्रवर्तनामयः धर्म्मेरूपः निवर्तनामयः परमधर्म्म-रूपश्च । तयोर्मध्ये एकः यो धर्म्मः सः प्राणिनां ऐहिकपारत्रिकश्रेयस्करः तस्मात् स्यात् । अन्यः परमधर्म्मेसु पारलौकिकमोक्षप्रदमात्रम् । स हि धर्म्मः ब्राह्मण-क्षत्रिय वैश्यशूद्रैरनुष्ठेयं ब्रह्मचारि गृहस्थवानप्रस्थ-भिक्षुकैश्च ।

एवं सति बहुकाले अतीते सति रागद्वेषातिशयेन अधर्म्मेण धर्म्मः पराभूतः अभवत् । अस्मिन् एव काले वापरयुगस्य अन्ते पुनरपि तं धर्म्मं स्थापयितुं जगतां सृष्टिस्थितिप्रलयकर्त्ता जगतां आदिकर्त्ता यस्मात् परतरः कर्त्ता कोऽपि नास्ति न बभूव न भविष्यति स नारायणसंज्ञः विष्णुः जगतां रक्षणार्थं यदुद्देशीय-वसुदेवान् देवक्या तस्य पत्न्या अंशेन मनुष्याकारेण इत्यर्थः (इति आनन्दगिरिः स्वामी च) कृष्णः कृष्णाख्यः जगतां परमगुरुः सम्भूय जातः किल सर्व्वेषु शास्त्रेषु प्रसिद्धत्वात् । नहि विभुवनगुरुं विना ईदृशं नित्यशुद्धबुद्धसुक्तम् अपार्पात्रज्ञं यद्वैश्वर्य्यमयं अन्य कस्यापि सम्भवतीति आनन्दगिरिप्रभृतयः ।

एतदेव भगवच्छ्रुत्वाचार्य्यस्य मतम् भाष्ये विषष्टं प्रतिपादितमिति ।

Q. Who was the Manu to whom the authorship of Manudharmashastra is attributed according to the orthodox view ?

*Ans.* मनवो हि चतुर्दश । तेषां मध्ये स्नायन्मुवाच्यो स चादिमनुः स एव इदं धर्मशास्त्रं ब्रह्मणः प्राप्तवान् ।

इदं शास्त्रं कृत्वाऽसौ मामेव स्वयमादितः । विधिवद् याज्ञथामास इति मनुः ।

स्नायन्मुवाच्यो मनु ब्रह्मणः सकाशात् प्राप्य तत्प्रतिपादकं धर्मं ययं कृतवान् कृत्वा च स्तुतवान् भृगुमरीच्यादीन् याज्ञथामास । भृगुस्तु मुनिश्च उवाच ।

परमात्मनः ब्रह्मा ब्रह्मणः निराट् विराजो मनुः । परमात्मानं चारभ्य मनुमूर्ति-  
पर्यन्तं सर्वं परमात्म-ब्रह्म-विराट्-मनवः एकस्यैव परमेश्वरस्य मूर्तिभेदाः । यथोक्तं  
कुल्लुकभट्टैः एनमेके वदन्त्यग्निं मनुमन्ये प्रजापतिं इति परमात्मन एव संसारस्थितये  
सात्त्विकैश्चर्यादिसम्पन्न मनुरूपेण प्रादुर्भावात् इति च तस्मात् जगत्पालनाय येन अवतारेण  
स्वयं परमेश्वरः आदौ मरीचिभृगुप्रभृतियः धर्मं कथितवान् स एव षडेत्यर्थशाली  
अवतारः मनुर्द्विंशांशं कृतवान् । अन्ये तयोदशसंख्यका मनवस्तु शक्तिशालिनो  
जीवाः ।

जातातप-वशिष्ठ-दत्तादयः प्रजापतयः सुनयश्च मनुकधर्मशास्त्रस्य व्याख्यानाय  
पृथक् पृथक् संहितां कृतवन्तः तस्मादुक्तं मन्वर्थनिपरीता या मा स्मृतिर्नैव शस्यते इति ।  
मनुकशास्त्रस्य मूलरूपत्वात् अन्येषां शास्त्राणां तस्य व्याख्यारूपत्वात् इति ।

*Q.* Who are the other thirteen Manus ?

*Ans.* स्तारोविष शौत्तमिष तामसो वैवत कथा । चाक्षुषश्च महावैजा  
विबस्वत् सुत एव च । मनुः । स्नायन्मुवाच मङ्ग एवं मन मनवः । वैवस्वतमनो वैमादिको  
भाता अष्टमः सावर्णा मनुः । नवमो देवसावर्णो मैत्रेय भविता मनुः । दशमो  
ब्रह्मसावर्णो भविष्यति मुने मनुः एकादशश्च भविता धर्मसावर्णिको मनुः । कद्रपवस्तु  
सावर्णो भविता द्वादशो मनुः । तयोदशो रोच्यनामा भविष्यति मुने मनुः । भीत्य  
चतुर्दशश्च मैत्रेय भविता मनुः इति विष्णुपुराणे ।

भागवते तु तयोदशो मनु देवसावर्णिव्युक्तम् । रोच्य एव देवसावर्णः । भीत्याश्च  
चतुर्दशो मनु भागवते द्वादसावर्णिरिति कथ्यते ।

एतयाश्च पुराणाक्तवर्गादिनिवरणं विस्मरभवात् न वर्णितमिति ।

MEANING OF WORDS.—विहृदमिः means वेदाविहृदमिः । सङ्गिः means  
धार्मिकः । धार्मिक means one who practises धर्मकर्म । हृदयनाथ्यनु-  
ज्ञातः = श्रेयःसाधनम् । *Q.* Show how Kulluka evolves this mea-  
ning. How does Govindaraj explain it ? How does मेधातिथि  
explain हृदयम् ? What is your own view of his explanation ?  
How has धर्म been defined ? *Ans.*—वेदप्रमाणकः श्रेयःसाधनं धर्मः ।

Q. Explain this definition. How does Jaimini define धर्मः ? Quote his definition, and explain it ? Explain the definition as given by Harit and Vyas. Criticise the definition of Govindaraja as stated by Kulluka. Explain in your own Sanskrit “प्रकृष्टपरमात्मज्ञानरूपधर्मज्ञानाय जगत्कारणं ब्रह्मप्रतिपाद्य संस्कारादिरूपं धर्मं प्रतिपिपादयिषुः धर्मसामान्यलक्षणं प्रथममाह”. Reproduce the couplets which summarise Kulluka's discussions leading to the definition of धर्मः । Explain the sloka in the manner of Mallinath. वेदविदभिः ज्ञात इति प्रयुक्तानां विशेषणम् । वेदादेव परिज्ञातो धर्म इत्युक्तवान् मनुः । Deduce this conclusion from the text as done by Kulluka. What is परमधर्मः ? How is it related to धर्मः ? How does धर्मः help परमधर्मः ? How मनु explains धर्मः ? Where is परमधर्मः demonstrated by मनु ? How is it demonstrated ? How Manu defines Brahma ? What is the object of परमधर्मः ? Give the meaning of the sloka in English.

GRAMMAR. 1. विदुर्दभिः विद् + शठ् तत्स्थाने वसुः । विद्वान् । 2. सेवितः—सेव + क्तः कर्मणि । सेवते सिषवे असेवित । 3. सदभिः—अस् + शठ् मन् । कर्तरि लृतीया । 4. निव्यम्—नि + व्यप् । मततम् । क्रियाविशेषणम् । 5. अक्षेपरगणिभिः—अक्षे रागश्च द्वेपरगौ हन्तः । द्वेपरगौ विद्येते एषां द्वेपरगणिभः । द्वेपरगणशब्दात् अक्ष्यर्थे हनिः । न द्वेपरगणिभः अक्षेपरगणिभः नञ् समासः । तैः । रज्ज + घञ् रागः । रज्जोर्भाषिकरणश्रीरिति करणं घञ् विधानात् नकारलोपः । रज्जते अनेनेति रागः । द्विप + घञ् हलयेति घञ् । 6. हृदयेन—करणं लृतीया । 7. अभ्यनुज्ञातः—प्रभि—अनु—ज्ञा + क्तः कर्मणि । जानाति अज्ञासीत् । 8. धर्मः—धरतीति धर्म इति धृवातो मन् । अस्मीति क्रिया । 9. तम्—निबोधत इत्यस्य कर्म । 10. निबोधत—नि—बोध (आदि) लोट् । त । बोधति ।

Change of voice—...सेविनेन...अभ्यनुज्ञातेन येन मूयते स निबुध्यताम् । १ ।

कामात्मता न प्रशस्ता न चेद्वास्तविकामता ।

काम्यो हि वेदाधिगमः कर्मयोगश्च वैदिकः ॥ २ ॥

PROSE—कामात्मता प्रशस्ता न (भवति) इह अकामता च नास्ति एव, हि वेदाधिगमः वैदिकः कर्मयोगश्च काम्यः ॥ २ ॥



EXPLANATION.—वेदविहितानि श्रेयःसाधनानि कर्माणि धर्म इति धर्म-  
लक्षणे उक्ते काम्यस्य वेदविहितस्य कर्मणोऽपि धर्मत्वात् काम्यकर्मरूपे धर्मे अत्यासक्ति  
मासूदिति वक्तुं काम्यं कर्म निन्दति कामात्मतेति । कामात्मता कामः फलकामना  
आत्मा स्वभावो यस्य स कामात्मा कर्मफलाभिलाषो तस्य भावः कामात्मता फलामिलाष-  
शीलत्वं न प्रशस्ता न उत्कृष्टा निन्दनीया इति भावः । फलकामनया कर्मणि  
कृते सति फलभोगार्थं पुनर्जन्य भवति ततश्च पुनर्जन्य इति फलानां वन्धकत्वम् ।  
भवतु काम्यं कर्म त्याज्यं वन्धकत्वात् नित्यनैमित्तिकानि तु कर्मणि कर्मव्यानि न वा  
इति प्रष्टव्ये सति वक्तव्यं नित्यनैमित्तिकानि कर्मव्यानि एव तेषां फलाभावात्, अक्षरणे  
च प्रत्यवायसमुत्पत्तेः । काम्ये कर्मणि कामात्मता निन्दनीया तथापि इहसंसारे  
अकामता कामनाशून्यता इच्छाशून्यता नास्ति हि यस्मात् वेदाधिगमः वेदस्य अधिगमः  
स्वीकारः गृहणमित्यर्थः उपनयनपूर्वकवेदगृहणम् तथा वैदिकः वेदोक्तः कर्मयोगः  
कर्मभिः योगः सम्बन्धः कर्मयोगः कर्मसम्बन्धस्य काम्यः कामनाविषयः इच्छाविषय एव ।  
नहि इच्छा विना कोऽपि कश्चिन् अपि कर्मणि प्रवृत्तो भवति । अभिलाषमात्र  
मेव न निषिध्यते फलाभिलाष एव निषिध्यते । नित्यनैमित्तिकेषु फलाभिलाषकारणं  
नास्ति तेषां फलाभावात् । तस्मात् ज्ञानस्य सहकारितया तानि कर्मव्यानि ॥ २ ॥

KULLUKA—कामात्मतेति । यथाभिलाषशीलत्वं पुरुषस्य कामात्मता सा न  
प्रशस्ता वन्धकत्वात् स्वर्गादिफलाभिलाषेण काम्यानि कर्मव्यानीयमानानि पुनर्जन्य  
कारणं भवन्ति नित्यनैमित्तिकानि तु आत्मज्ञानसहकारितया मोक्षाय कल्पन्ते न पुनरि-  
च्छामात्रमनेन निषिध्यते । तदाह न धैवेष्टाकामतेति । यतो वेदस्वीकरणं  
वैदिकसकलधर्मसम्बन्धेच्छाविषय एव ॥ २ ॥

KULLUKA EXPLAINED—“फलाभिलाषशीलत्वं पुरुषस्य कामात्मता” ।

Kulluka explains the word कामात्मता in the text as पुरुषस्य  
फलाभिलाषशीलत्वम् i. e. habit of performing action from a desire  
for rewards. पुरुषस्य धार्मिकस्य जनस्य फलाभिलाषशीलत्वं फलस्य स्वकृत-  
कर्मणां फलस्य अभिलाषः कामना फलाभिलाषः स एव शील स्वभावो यस्य स फलाभि-  
लाषशीलः तस्य भावः फलाभिलाषशीलत्वम् । अहं अस्य फलस्य लाभाय इदं कर्म  
करोमि इति मनसि निधाय यत् कर्मकरणं तदेव फलाभिलाषशीलत्वं तदेव कामात्मता  
इत्युक्तं मनुना । स्वर्गकामो यजेत अर्थात् यः स्वर्गं वाञ्छति स इमं यज्ञं कुर्यात् । तथा  
पुत्रकामो यजेत यः पुत्राकाङ्क्षी स यज्ञं कुर्यात् । इत्यादिदेवकामानि शुक्ला यो जन्म  
क्षत्तु स्वर्गपुत्रादिफलकामनया यज्ञादिकर्माणि करोति स कामात्मा फलाभिसन्धिपूर्वक-  
कर्मकरणात् । तस्मात् उक्तं कुलू केन फलाभिलाषशीलत्वं कामात्मता ।

“सा न प्रशसा बन्धहेतुत्वात्” ।

सा पूर्वं या व्याख्याता फलाभिलाषशीलतारूपा कामात्मता (Desire for rewards) न प्रशसा न प्रशस्या (not laudable). कथं न प्रशसा ? कारणमाहुः कुल्लुकभट्टाः (Kulluka assigns reasons as follows) :—बन्धहेतुत्वात् (Because it becomes the cause of bondage) बन्धस्य संसारबन्धनस्य हेतुः कारणं बन्धहेतुः तस्य भावः बन्धहेतुत्वम् तस्मात् हेतोः बन्धहेतुत्वात् ।

“स्वर्गादिफलाभिलाषेण काम्यानि कर्माणि अनुष्ठेयमानानि पुनर्जन्मने कारणं भवन्ति ।”

केन प्रकारेण कामात्मता बन्धहेतु भवति इति प्रश्नस्य उत्तरमाहु भट्टाः स्वर्गादीति । स्वर्गादिफलाभिलाषेण स्वर्ग-पुत्र-धन-पत्नी-सुखादिफललाभं च काम्यानि कर्माणि धर्मरूपानि अनुष्ठेयमानानि पुनर्जन्मने पुनरागमनाय पुनर्भवाय इति यावत् कारणं हेतुर्भवति । अयं भावः धर्मरूपं कर्म तावत् विविधम्, कार्यं नित्यं नैमित्तिकम् । सकृच्च विष्णुपुराणे नित्यां नैमित्तिकौ काम्यां क्रियां पुंसां मशेषत इति । पुंसां पुरुषाणां नित्या नैमित्तिकौ काम्या इति विविधा क्रिया वेदोक्ता । विविधक्रियासु सर्व्वकर्मसमाहारः । तत्र कार्यं कर्म कामाय हितं अग्निष्टोमादिकम् येन पुत्रादिवाञ्छितफलानि प्राप्यन्ते नित्यं कर्म यत् अहरहः क्रियते मन्वावन्दनादिरूपं एतस्य अकरणे प्रत्यवायः भवति । नैमित्तिकौ यत् कर्म बाहुदर्शनादिनिमित्ते जाते सति प्रत्यवायपरिहारार्थं क्रियते ज्ञानदानादि प्रायश्चित्तरूपम् । एतेषां विविधानां कर्मणां मध्ये कार्यं अग्निष्टोमादि फलाभिसम्बन्धपूर्व्वकं क्रियमाणं बन्धनस्य हेतु भवति । फलाभिलाषेण कार्ये कर्मणि कृते सति अष्टष्टनामकं फलबीजं जायते तच्च बीजं कदापि न नश्यति किन्तु फलदानार्थं पुनर्जन्म घटयति नूतने जन्मनि पुत्रादिरूपं फलं ददाति, कस्मिन् जन्मनि सर्व्वं फलं न ददाति पुनरन्यत् जन्म घटयति तस्मिन् तस्मिन् नूतने जन्मनि पुनरपि काम्यादि कर्म करोति पुनरपि जन्मकारणं जायते एवं अनन्तकालपर्यन्तं जन्ममरणं च भवति । एवं ये जन्ममरणे गमनागमने ते एव संसरणं चलनं संसार इत्यर्थः जन्ममृत्युरूपेण गमनागमने एव संसरणम् । संसरणमिव संसारश्चेन कथ्यते । तस्मात् फलाभिलाषेण कार्ये कर्मणि कृते सति संसाररूपात् बन्धनात् मोचनं मोचो न भवेत् अपि तु संसरणं जन्ममृत्युरूपं बन्धनं घटते । अत उक्तं फलाभिलाषेण कृतानि कर्माणि पुनर्जन्मने कारणं भवन्तीति ।

Actions technically called “actions of desire” when performed from a desire for rewards such as celestial abode and the like, lead to re-birth (and not to final liberation).

“नित्यनैमित्तिकानि तु चात्मज्ञानसङ्कारितया मोक्षावकल्पन्ते” ।

But duties technically called *nitya* (compulsory) and *naimittika*, being auxiliary to the knowledge of self lead to final liberation,

नित्यं नैमित्तिकञ्च कर्म व्याख्यातम् । नित्यानि नैमित्तिकानि च कर्माणि तु पञ्चान्तरे आत्मज्ञानसहकारितया आत्मज्ञानस्य आत्मतत्त्वज्ञानस्य इत्यर्थः सहकारितया सह युगपत् करोतीति सहकारौ तस्य भावः सहकारिता तथा सहभावित्वेन सहायत्वेन च हेतुना भोवाय सुकथे कल्पने भवन्ति । कृपि सन्ध्यमाने च इति चतुर्थी । अयं भावः फलाभिलाषयुक्तं काम्यं कर्म क्रियमाणं सत् बन्धनाय भवति । चेत् एवं, तर्हि नित्यं नैमित्तिकञ्च कर्म बन्धनाय भवति यतः तदपि कर्म एव । तस्मात् तदपि बन्धकं भवति । अतो नित्यं नैमित्तिकञ्च कर्म त्याज्यम् । वस्तुतस्तु नित्यं नैमित्तिकञ्च कर्म तदकरणे जातं पापं यत् नाशयति तदेव तस्य फलं तस्य अन्तर्गतं फलं स्वर्गादिप्रापकं जन्मान्तरघटकं वा नास्ति । तस्मात् तत् न त्याज्यम् । तत् हि आत्मज्ञानस्य सहकारि भवति । फलाभिसन्धिपूर्वककाम्यकर्मणां अकरणेन काम्यकर्मणः फलाभावात् पुनर्जन्मनः कारणं न जायते, नित्यनैमित्तिकानां कर्मणां करणात् तदकरणजनितं पापं न जायते, आत्मज्ञानं च नित्यनैमित्तिककर्मणां समकार्यं उत्पद्यते आचार्योपदेशात् । तस्मात् नित्यं नैमित्तिके च कर्मणि कृते सति पुनर्जन्मनः कारणाभावात् भोचो अनायास-लब्धो भवति । नित्यनैमित्तिककर्मणां अकरणे पापं जायते तेन च नरकादिगमनं दुर्जन्यं च भवति तच्च आत्मज्ञानस्य अरिर्भवति नित्यनैमित्तिककर्मकरणे तदकरणजनितपापा-भावात् नित्यनैमित्तिककर्म आत्मज्ञानस्य सहकारि अर्थात् सहाय एव भवतीति तत् न त्याज्यम् ।

It is held that performance of actions called नित्यनैमित्तिक produces no other result than the prevention of sin which would result from their non-performance. Thus the performance of नित्यनैमित्तिक as merely preventive of sin occurring from its non-performance, does not become a cause of bondage or rebirth. It is thus not only not inconsistent with the knowledge of self, but actually helps it, as a man burdened with sin resulting from non-performance of नित्यनैमित्तिक would not be fit for true knowledge.

“ न पुनरिच्छामात्रं अनेन निषिध्यते । तदाह न चैवेष्टास्वकामता इति ।” अर्थात् काम्यकर्मणां फलार्थं या इच्छा सा एव निषिध्यते वार्यते । सर्वथा इच्छा

इच्छामात्रम् सा न निबिध्यते । यतः इतः परमेष न चैवेहात्म्यकामता इति इच्छाक्षरे  
अनुमतिं करोति ।

The text prohibits the desire for rewards, but not desires generally. Because the sage immediately adds "yet exemption from desire is not to be found in this world."

"यतो वेदस्वीकरणं वैदिकसकलधर्मसम्बन्धश्च इच्छाविषय एव" ।

Because one's acceptance of the vedas as object of study, and his connection with the performance of vedic ceremonies is an object of desire *i. e.* a man entirely divested of desire can neither study the vedas nor perform actions prescribed by them.

यतः यस्मात् वेदस्वीकरणं वेदानां स्वीकरणं ग्रहणं वेदपाठ इत्यर्थः तथा वैदिक-  
सकलधर्मसम्बन्धश्च वैदिकाः वेदोक्ताः सकलधर्माः यज्ञदानादिरूपाः क्रियाः वैदिक-  
सकलधर्माः तेषां सम्बन्धः कर्तृत्वकर्मत्वादिरूपः इच्छाविषयः इच्छायाः अभिलाषस्य  
विषयः पदम् एव । इच्छारहितेन जनेन वेदपाठः वेदोक्तकर्मकरणश्च दुर्घट इत्यर्थः ।  
तस्मात् काम्यकर्मणः फलविपरिणामी इच्छा एव निषिद्धा न तु सर्वा इच्छाः इत्यर्थः ।  
सम्यावन्दनवेदपाठपितृयज्ञादनित्यकर्मणि प्रायश्चित्तादिरूपे नैमित्तिके कर्मणि आत्म-  
ज्ञानलाभे च इच्छा कर्तव्या ।

ELUCIDATION.—This sloka has been introduced rather abruptly. Two or three slokas introductory to this have been perhaps lost. "नित्यनैमित्तिकानि तु आत्मज्ञानसङ्कारितया भोवाय कल्पन्ते ।" This assertion of Kulluka Bhatta would not be acceptable to the Vedantists of Sankar's school whom Kulluka is supposed to have followed. Because according to Sankar's school neither काम्यकर्म nor नित्यनैमित्तिक कर्म can be सङ्कारि of ज्ञानम् । The सङ्कारिता of नित्यनैमित्तिक कर्म to ज्ञान is fiercely contested by Sankaracharya. Thus in his Bhashya "नापि ज्ञानस्य कर्मसाहाय्यापेक्षा, अविद्यानिवर्तकत्वेन च विरोधात्, नहि तमस्तमसो निवर्तकम् ; अतः केवलं ज्ञानं निश्चेय-  
सकरम्" *i. e.* knowledge of self does not require any help from any sort of action, action and knowledge are inconsistent with each other. Darkness cannot dispel darkness, hence action cannot lead to non-action and knowledge. He adds "निवात्ताच्च

कर्माणां पुण्यलोकफलमुतेः यथा आश्रमाश्च स्वकर्माणिष्टाः पुण्यलोकभावनीत्यादिकृतेषु कर्माद्ययानुपपत्तिः” *i. e.* it is incorrect to say that नित्यकर्म is productive of no other result than prevention of sin arising from its non-performance because we know from the Srutis that नित्यकर्म is productive of other results, *i. e.* it leads to the attainment of celestial bliss. The Smritis also lay down that *barnis* and *asramis* by the performance of their respective duties (*i. e.* नित्यकर्म) get celestial abode. Thus नित्यकर्म never leads to cessation of work. The great Vedantist lays down his conclusion with the greatest force he could command in the following passage : “तस्मात् ईषन्मात्रेण श्रौतेन ध्यातेन वा कर्मणा आत्मज्ञानस्य समुच्चयो न केनचित् दर्शयितुं शक्यः” ‘Therefore it is impossible on the part of any one to prove that the knowledge of self can ever be accumulated by any sort of action in any degree however slight.

Why does then कृष्णक explain the text by stating that नित्यनैमित्तिक कर्म may be सहकारि companion, auxiliary or a help to आत्मज्ञान, and lead to final liberation? The answer is this :—Kulluka Bhatta is a follower of the Mimamsa school of philosophy as expounded by Kumarila. According to this school there is समुच्चयवाद *i. e.* they maintain that आत्मज्ञान itself cannot give salvation, but that in order to attain liberation it must be supplemented by vedic action or karma. They hold that knowledge of self and नित्यनैमित्तिक कर्म are not inconsistent like light and darkness, and that they can and should accompany each other. The whole energy of Sankaracharya was directed to demolish this theory. He puts the views of this school in a nutshell. “केचित् आहुः सर्वकर्मसम्यासपूर्वकात् आत्मज्ञाननिष्ठामावात् एव कैवलात् कैवल्यं न प्राप्यते । किं तर्हि ? अग्निहोत्रादियौतस्मार्णकर्मसंहितात् ज्ञानं त् कैवल्यप्राप्तिरिति” Some (*i. e.* the Brittikar) hold that final liberation cannot be secured by abandoning all actions, and by adhering to the knowledge of self alone. How is

it then to be secured ? They answer the question by saying that final liberation is obtained by the knowledge of the self, accompanied by actions like sacrifices and so on as prescribed by the Vedas and Smritis. This is called ज्ञानकर्मसमुच्चयवाद । Sankaracharya holds that समुच्चयवाद has no leg to stand upon, it is wrong and mischievous. According to him ज्ञान and कर्म are as inconsistent as light and darkness. ज्ञान is light, it dispels ignorance, and every action or karma is the result of ignorance. One cannot accompany the other.

Therefore Kulluka is a follower of Brittika, and not of Sankar. We may however reconcile him to Sankar by supposing that Kulluka has not stated for the present the whole truth which he has in his mind, as it may create confusion at this stage. According to Sankar कर्म may prepare the way for ज्ञान, but no sooner ज्ञान makes appearance कर्म must withdraw altogether. Thus there can be no सहकारिता or co-operation of कर्म with ज्ञान ।

What is the meaning of कामाक्षता ? Explain fully कामाक्षता न प्रशस्ता giving reasons in support of your explanation. How can काम्यकर्म be rendered harmless as far as final liberation is concerned ? Into how many classes is vedic action divided ? What are they ? “नित्यनैमित्तिकानि तु आत्मज्ञानसहकारितया मोक्षाय कल्पन्ते ।” Give a thorough exposition of this view. Do you know the view of Sankar's school on this point ? State it briefly if you can. What is the meaning of अकामता ? With what object has limitation been put to कामाक्षता न प्रशस्ता ?

MEANING IN ENGLISH.—To perform actions (prescribed by the Vedas) from a desire for rewards only is not laudable, because such a disposition becomes the cause of bondage as it leads to rebirth ; yet exemption from desire altogether is not to be met with in this world ; because both the study of the

Vedas and the performance of actions prescribed by them, depend on desire.

GRAMMATICAL NOTES. (a) On the text. 1.—কামাক্ষতা—কাম. কামনা আত্মা স্বভাবো যস্য স কামাক্ষা বহুব্রীহি: তস্য ভাব: কামাক্ষতা । কাম পরতা কামনয়া সহ ফলস্বৈব সম্বন্ধাৎ কামনাশব্দেণ ফলাভিলাষো গম্যতে । তস্মাৎ কামাক্ষতা ফলাভিলাষশীলতেতি কুল্লুক: । Nom. to भवति understood. কাম + ঘञ্ কাম: । কাম্যতে ইতি কাম: ভাবে ঘञ্ । কামযতে কামযাশ্চক্রে অকমে । অচৌকমত্ অশকমত । কমেৰিণ্ড্ ইতি স্বার্থে ণিঙ্ প্রত্যয়াৎ কামযতে স্বা:ত্ । অততি অলতি মাধাবচ্ছিন্নজীবকপেচ জন্মমব্যুৎখ্যাং আত্মা । ন তস্য প্রাণা উত্কামন্যতীতিশ্রুতেরাত্মশস্য উত্ক্রমণাভাবশ্চযথাৎ পরমাশ্রয়িণী এব লভ্য ইতি । 2. প্রশস্তা—প্র শনৃস্ + ক্ত । ন প্রশস্তা নিন্দনীয় ইত্যর্থ: । শংসতি শশংস অশংসৌত । Qualifies (I.) 3. ন চ—অব্যয়ম্ । ন ইতি নজ্ নিষেধার্থক: । 4. এব—অব্যয়ম্ । অবধারণে । 5. ইহ—অব্যয়ম্ । ইদম্ + হ সপ্তমৌ স্থানে by ইদমৌহ । ইদম: স্থানে ইশাদেশ: + হ = ইহ । তদ্বিত্যশাস্ত্ববিভক্তি রিতি সূত্রেণ অব্যয়লম্ । ইহ অস্মিন্ জগতি দিগ্বাচিনামপি লঘুণ্যথা দেশবাচিতলম্ । 6. অসি—অস্ লট্ তিপ্ । বভূব ভবিষ্যতি অস্মুত । 7. অকামতা—ন বিদ্যতে কাম: ইচ্ছা যস্য স অকাম: বহুব্রীহি: । তস্য ভাব: অকামতা ইচ্ছাশূন্যতা ইত্যর্থ: । 8. বেদাধিগম:—বেদানাং অধিগম: গৃহণম্ বেদাধিগম: । বিদন্নি কৰ্ম্ম জ্ঞানশ্চ অনেন ইতি বেদ: । বিদ + ঘञ্ । বেদযতীতি বা বেদ: ণিজন্ম বিদ ধাতো: কৰ্ত্তব্যচ্ প্রত্যয়: । বেতৌতি বেদ: । অধি-গম + ঘञ্ । বেনি । বিবেদ । অববেদৌত । 9. কাম্য:—কাম + ণ্যত্ । 10. বৈদিক:—তব ভব ইত্যর্থঃ বেদ শব্দাৎ উক্ by হাজুদ ব্রাহ্মণক্ &c. &c. বেদ has two vowels. Hence উক্ ( ণিক ) । Qualifies কৰ্ম্মযোগ: । 11. কৰ্ম্মযোগ:—ক্রিয়তে ইতি কৰ্ম্মে । ক্ত ধাতো মঁষিন্ । কৰ্ম্মণা যোগ: কৰ্ম্মযোগ: ততীয়া সমাস: । or কৰ্ম্মণো যোগ: কৰ্ম্মযোগ: ষষ্ঠী সমাস: । যুক্ত + ঘञ্ যোগ । যুক্তি যুক্তি । যুযোজ যুযুজে । অযৌজৌত অযুক্ত অযুক্ত ।

Change of voice—কামাক্ষতয়া ন প্রশস্তয়া ভূযতে । ন চ এব ইহ অকামতয়া ভূযতে । বেদাধিগমেন বৈদিকেণ কৰ্ম্মযোগেন চ কাম্যেন ভূযতে ॥ ২ ॥

BENGALI.—কলকামনা করিণা কাম্য কৰ্ম্ম অনুষ্ঠান করা প্রশংসার নহে; কেননা স্বর্গাসি ফললাভের ইচ্ছায় কাম্য কৰ্ম্ম করিলে পুনর্বার অন্য হইবার হেতু উৎপন্ন হয়; নিত্য ও নৈমিত্তিক কৰ্ম্ম আত্মজ্ঞানের সহকারিত্বপে মোক্ষলাভের সহায়তা করে। আবার কামনা বা ইচ্ছামাত্রই যে নিষেধের বিষয়ীভূত তাহাও

नहै ; अहै मरणाद्रे कोषाग्रि कर्मनाम्नूता नहै ; एमन कि वेवपाठि एवः देवदिक कर्म मन्नावनः कर्मना वा देशर विवशीकुल ॥ २ ॥

ENGLISH.—The state or habit of (entertaining) desires for fruits of actions (apart from the consideration of duty) is not praise-worthy ; and yet the want or abnegation of desires for fruits of actions does not exist here. For, the study of the vedas and the practice of vedic rites are for selfish consideration. (2).

सङ्कल्पमूलः कामो वै यज्ञाः सङ्कल्पसम्भवाः ।

व्रतानियमधर्माश्च सर्वे सङ्कल्पजाः स्मृताः ॥ ३ ॥

PROSE—कामः सङ्कल्पमूलः वै, यज्ञाः सङ्कल्पसम्भवाः सर्वे व्रता नियमधर्माश्च सङ्कल्पजाः स्मृताः (भवन्ति) ॥ ३ ॥

KULLUKA.—अवोपपत्तिमाह सङ्कल्पमूलः इति अनेन कर्मणा इदमिष्टं फलं साध्यत इत्येवं विषया बुद्धिः सङ्कल्पः तदनन्तरमिष्टसाधनतयावगते तस्मिन्निष्ठा जायते तदर्थं प्रयत्नं कुर्वते च इत्येवं यज्ञाः सङ्कल्पसम्भवा व्रतानियमरूपाश्च धर्माश्चतुर्धाध्याये वक्ष्यमाणाः, सर्वे इत्यनेन पदेन अत्रापि शास्त्रार्थाः सङ्कल्पादेव जायन्ते इच्छामन्तरेण तान्यपि न सम्भवन्तीत्यर्थः । गोविन्दराजस्तु व्रतान्यगुष्ठेयरूपाणि यमधर्माः प्रतिषेधार्थका इत्याह ॥ ३ ॥

KULLUKA EXPLAINED.—“अत्र उपपत्तिं आह सङ्कल्पमूल इति ।”

In the couplet demonstration (of the proposition that performance of vedic actions is grounded on desire) is given. The sloka commences with the word *Sankalpamula*.

अत्र अस्मिन् श्लोके उपपत्तिं युक्तिसिद्धिं आह मनुविरतिर्षः कुत्र ? सङ्कल्पमूल इति श्लोके । कस्य उपपत्ति माह ? ननु कास्यो हि वेदाधिगमः कर्मयोगस्य वैदिक इति सिद्धान्तस्य प्राग्वर्णितस्य । उपपद + क्तिन् ।

“अनेन कर्मणा इदं फलं साध्यते इत्येवं विषयाबुद्धिः सङ्कल्पः ।”

A conception that a particular act yields a particular result is called *sankalpa*.

अनेन कर्मणा इदं फलं साध्यते सन्नायते इत्येवंविषया बुद्धिः ज्ञानं सङ्कल्प सङ्कल्पशब्देन कायते ।

“तदनन्तर मिष्टसाधनतयावगते तस्मिन् इच्छा जायते तदर्थं प्रयत्नं कुर्वते च इत्येव यज्ञाः सङ्कल्पसम्भवाः ।”



After such a conception, when it is known that the action will serve one's purpose, one is desirous of it, and then makes exertions for it, it is thus that sacrifices are performed in consequence of conception (sankalpa) stated above.

तदनन्तरं सङ्कल्पात् परं तस्मिन् कर्मणि इष्टसाधनतया इष्टस्य अभिलषितस्य पुत्रादेः साधनं प्राप्तुं पायः तस्य भावः इष्टसाधनता तथा ज्ञाते अवगते सति तस्मिन् पुत्रादिरूप-फलके कर्मणि इच्छा जायते उत्पद्यते ततश्च कर्मार्थं प्रयत्नं कुरुते इति एवं प्रकारेण यज्ञाः यागादिकर्माणि सङ्कल्पसम्भवाः सङ्कल्पाः अनेन कर्मणा एतत् फलं साध्यते इति ज्ञानं तदेव सम्भवः उत्पत्तिर्येषां तथाभूताः । अर्थात् सङ्कल्पात् इष्टसाधनताज्ञानं इष्टसाधनताज्ञानात् इच्छा (कामः) इच्छायाः प्रयत्नः प्रयत्नात् एव कर्म सिध्यति । अतः कामः इच्छा सङ्कल्पमूलः ।

“व्रता नियमरूपाश्च धर्म्याः चतुर्थाध्याये वक्तव्यमाणाः ।”

(व्रत) Rules of religious austerities (नियम) and abstinence from sin, are described in the fourth chapter. (These also arise from Sankalpa).

व्रताः or व्रतानि (Both masc. and neuter).

“सर्वे इत्यनेन पदेन अन्येऽपि शास्त्रार्थाः सङ्कल्पादेव जायन्ते इच्छामन्तरेण तान्यपि न सिध्यन्तीत्यर्थः ।”

The word all (सर्वे) in the text implies that other injunctions of the sastras also arise from sankalpa ; without desire they also become impossible.

“सर्वे” इति पदेन व्रतनियमव्यतिरिक्ताः अन्ये अवशिष्टा अपरे अपि शास्त्रार्थाः शास्त्रार्थाः अर्थाः विषयः शास्त्रीककर्मणां सङ्कल्पात् एव गन्तव्य इति भावः जायते उत्पद्यते । कारणमाह इच्छामन्तरेण इच्छां विना तानि अपि कर्मणि न सिध्यन्ति न घटन्ते ।

“गोविन्दराजस्तु व्रतानि अनुष्ठेयरूपाणि यमधर्म्याः प्रतिषेधार्थका इत्याह ।”

But Govindaraja splits व्रतानियमधर्म्याश्च into two parts making व्रतानि as one word and यमधर्म्याः another word (instead of making व्रताः and नियमधर्म्याः as done by Kulluka) ; and then explains व्रत as positive injunctions, and यमधर्म्याः as prohibitive injunctions.

सु पञ्चानन्दे गोविन्दराजाख्यः टीकाज्ञात् व्रतानियमधर्म्याश्च इति व्रतानि यमधर्म्याश्च

इति प्रकारेण विभज्य व्रतशब्देन अनुष्ठेयरूपाणि विधेयरूपाणि कर्माणि च एवं कुर्यात् इति विधिनामानि प्राप्तानि तानि कर्माणि आह यमधर्मशब्देन यमेन नियमनेन मण्डोषप्रापकवाक्येन अर्थात् न कुर्यात् इति निषेधरूपवाक्येन यत् प्राप्तं कर्म तस्य त्यागमाह । तु शब्देन गोविन्दराजस्य व्याख्यानं निन्दति । कुतः यज्ञरूपाणि कर्माणि अपि यज्ञेति इति विधिवाक्येन प्राप्तानि । विधিনিषेधप्रकारेण सर्वेषां कर्मणां सङ्कल्पमूलत्वे वक्तव्ये सति व्रतानि यमधर्म्याश्च सङ्कल्पसम्भवा इत्युक्ते नैव कार्यं स्यात् सामान्यमुत्प्रेक्षेहि उक्ता पुनर्विशेषस्य यज्ञरूपविध्यर्थस्य वचनं अनर्थकं स्यात् यज्ञानामपि विधेयत्वात् अनुष्ठेयकर्मासु अन्तर्भावात् । तस्मात् गोविन्दराजस्य व्याख्यानं निन्दनीयमित्यर्थः ।

ELUCIDATION.—काम्योहि वेदाधिगमः कर्मयोगश्च वैदिकः इत्यस्य उपपत्तिरस्मिन् श्लोके दर्शिता पूर्वस्मिन् श्लोके उक्तम् फलेच्छा न कर्तव्या, शास्त्रोक्ते अन्यस्मिन् विषये इच्छा कर्तव्या, यत इच्छां विना किमपि कर्तुं न शक्यते । इच्छया सह कर्मणा साक्षात् सम्बन्धो नास्ति तत् कथं उच्यते इच्छां विना कर्म न सिध्येत् ? उच्यते (*i. e. it is answered in the following way*) कर्मणा सह इच्छायाः साक्षात् सम्बन्धो नास्ति सत्यम् किन्तु परस्पराक्रमेण सम्बन्धः अस्ति । तानेव परस्परा भस्मिन् श्लोके प्रदर्शयति । प्रथमं अनेन कर्मणा एतत् फलं भवेत् इति ज्ञानं प्रयोजनम्, तदेव ज्ञानं सङ्कल्पः । ततश्च यदि तत् फलं कर्तुः अभिलषणीयं भवेत् तदा तत् कर्म अभिलषितस्य फलस्य उपायरूपं इति ज्ञानं भवति, तदेव कर्मणः इष्टसाधनताज्ञानं । ततश्च तत् कर्मविषयिणी इच्छा भवति ततश्च कर्मणे प्रयवः स्यात् तेन कर्मसिद्धिः स्यात् । किन्तु सङ्कल्पेष्टसाधनताज्ञानेच्छाप्रयवरूपाणां चतुर्णां कर्मसाधकानां मध्ये इच्छायाः प्राधान्यात् सर्व्व एव कर्म कार्य्य अर्थात् इच्छाविषयं इच्छामूलमित्युक्तम् इच्छाधामेव अवशिष्टानां वशात् अन्तर्भाव इव ।

वेदीनां मेव कुर्वाणो निःसङ्कोऽपि त मौञ्चरे ।

नैष्कर्म्या लभते सिद्धिं रोचनार्थाफलश्रुतिः । ४६ । ४ । ११ भागवतम् ।

निःसङ्कोऽभिमनिवेशयन्तः । ईश्वरे अपि तं न तु फलोद्देशेन । न तु फलस्य उक्तत्वात् फलं भवेदेव तदाह न भवति । फलश्रुतिस्तु रोचनार्थाप्ररोचनार्थं भवति । ईश्वरे अपि ते सति कर्मणः फलं न स्यात् । स्वर्गकामो यजत इत्यनेन अभिलषितस्य एव स्वर्गादेः फलत्वेन ज्ञातत्वात् अनभिलषितः स्वर्गो न भवति कर्मणि क्लृप्तःपि । तेन नैष्कर्म्या सिद्धिं लभते कर्म कुर्वन् अपि ।

एवं भारतपुराणादिषु सर्व्वत्र द्रष्टव्यम् ।

THE MEANING IN ENGLISH. — The desire has its root in the conception that a certain act will yield the desired rewards, the performance of a sacrifice is the consequence of

such a conception. Vows, and laws enjoining restraint, are also stated to be observed through the idea that they will produce the desired result.

PURPORT.—কামাত্ এব সৰ্ব্ব কৰ্ম্মসিধ্যতি । প্রথমং সঙ্কল্য; তত ইচ্ছা-সাধনতাশানং তত: কাম: ( ইচ্ছা ) তত: প্রযত: তত: কৰ্ম্মসিদ্ধি: । এতেষাং মধ্যে কামস্য অর্থাৎ ইচ্ছায়া: প্রাধান্যম্ । তস্মাত্ পূৰ্ব্বাখ্যন্ শ্রীকে যত্ উক্তং সৰ্ব্বং কৰ্ম্ম কামমূলং ইচ্ছাকৃতং তত্ উপপন্নম্ । ২ ।

GRAMMATICAL NOTES. — (a) On the text :—1. সঙ্কল্যমূল: সংকল্যতে নিশ্চয়তে ইতি সঙ্কল্য: । সঙ্কল্যো মূলং যস্য স বহুব্রীহি: । সং ক্লৃপ + ঘञ্ সংকল্য: । কল্যতে । ক্লৃপে কল্পস্যতি কল্পস্যতে কলিষ্যতি । অকলিষ্যৎ অক্লৃপত্ অক্লৃপত । 2. কাম: কাম্যতে ইতি কাম: । কন্ + ঘञ্ । ইচ্ছা ইত্যর্থ: । কাময়তে । অশৌকমত অশকমত । 3. যজ্ঞা: যজ + নড্ যজ । যজ যাচ যত বিচ্ছ প্রচ্ছ রঞ্জনড্ । যজ্ঞ: যাচ্ছা যব: বিশ্ব: প্রশ্ন: রক্ষা: । স্বপোনন ইতি স্বপ্ন: । যজতে যজতি ইযাজ ইজে অযট অযাচৌত্ । যজ্ঞ: সর্বোপধ্বরো যাজ: সততনুলম্ব: জ্ঞতুরিত্যমর: । 4. সঙ্কল্যসম্ভব:—সঙ্কল্য: সম্ভব: কারণং যস্য স সঙ্কল্যসম্ভব: । বহুব্রীহি: । সম্ভবতি অস্মাত্ ইতি সম্ভব: । সম্—মূ + অপ্ । সম্—ক্লৃপ + ঘञ্ । 5. ব্রতা:—ব্রজ + ঘ: জস্যত: । ব্রতং ব্রত: । নিয়ম: পুণ্ডকং ব্রতমিতি ষেমচন্দ: । 6. নিয়মধর্ম্মা:—নিয়ম্যন্তে অর্থে ইতি নিয়ম: । নিয়মস্য ধর্ম্মা: নিয়মধর্ম্মা: ষষ্ঠী সমাস: । নি—ঘন্ + অপ্ । যম: সমুপনিবিবুচ । এষ অণুপসর্গে চ যমে রপ্ বা স্মাত্ পচে ঘञ্ । যম: যাম: । উপযম: উপযাম: । নিয়ম: নিয়াম: । বিয়ম: বিয়াম: । 7. সৰ্ব্ব—Qualifies (5) and (6). 8. সঙ্কল্যজা:—সঙ্কল্যাত্ জায়ন্তে ইতি সঙ্কল্যজা: । উপপদ সমাস: । সঙ্কল্য—জন্ + ড জায়তে জন্তে অজনি । 9. স্মৃতা:—স্মৃ + ক্ত: কৰ্ম্মণি । স্মরতি সস্মার অস্মারীত্ ।

CHANGE OF VOICE.—সঙ্কল্যমূলেন কামিনে ভূযতে । যজ্ঞৈ: সঙ্কল্যসম্ভবৈ: ভূযতে । ব্রতৈ: নিয়মধর্ম্মৈ: সৰ্ব্বৈ: সঙ্কল্যজৈ: .....স্মৃতৈর্ভূযতে ॥ ২ ॥

BENGAL.—এই কৰ্ম্ম দ্বারা এইরূপ ফল হয়, ইত্যাকার জ্ঞানকে সঙ্কল্য বলে ; সঙ্কল্যের পর এই কৰ্ম্ম অর্থাৎ সাধন করিলে এরূপ জ্ঞান অর্জিলে সেই কৰ্ম্মটি করিবার জন্ত ইচ্ছা আছে, অতএব সঙ্কল্যই ইচ্ছার মূল ; যজ্ঞ দ্বারাও সঙ্কল্য হইতে উৎপন্ন ; কি ব্রত কি সংযম ধর্ম্ম প্রভৃতি, সমস্ত কৰ্ম্মই সঙ্কল্য হইতে জাত বলিয়া শ্রুতিতে নিশ্চিত । ( অতএব সমস্ত কৰ্ম্মই বে ইচ্ছামূলক তাহা উৎপন্ন হইল ) ॥ ২ ॥

ENGLISH.—A desire has its root in a purpose or motive (for some gain). Sacrifices have their origin in some motive or purpose. All vows and proscriptive injunctions and rules are said to have their origin in some motive or purpose. (3).

अकामस्य क्रिया काचिद् दृश्यते नेह कर्हिचित् ।

यद्यद्वि कुरुते किञ्चित् तत्तत् कामस्य चेष्टितम् ॥ ४ ॥

PROSE.—इह अकामस्य काचित् क्रिया कर्हिचित् न दृश्यते । (ततः पुरुषः) यत् यत् किञ्चित् कुरुते तत् तत् कामस्य चेष्टितम् ॥ ४ ॥

KULLUKA.—“अत्रैव लौकिकं नियमं दर्शयति अकामस्येति । लोके वा काचिद्भोजनगमनादिक्रिया साप्यनिच्छती न कदाचिद् दृश्यते ततश्च सर्वं कर्म लौकिकं वैदिकञ्च यद्यत् पुरुषः कुरुते तत्तदिच्छाकार्यम् ॥ ४ ॥

KULLUKA EXPLAINED.—अत्रैव लौकिकनियमं दर्शयति अकामस्येति” The conclusion is now supported by rules of conduct observed in the performance of worldly actions. “लोके वा काचित् भोजन-गमनादिक्रिया साऽपि अनिच्छतः न कदाचित् दृश्यते ।”

लोकते दृश्यते इति लोकः दृश्यमानं जगत् लोक इत्युच्यते । तस्मिन् वा काचित् सर्वं इत्यर्थः भोजनगमनादिक्रिया भोजनं गमनञ्च भोजनगमने ते आदिनीं यासां ता भोजनगमनादयः ता एव क्रियाः कर्म दृश्यते सापि अदृश्यमाना तु दूरे अस्तु अनिच्छतः न इच्छतः भोजनादिक्रियायां इच्छा अकुर्वतः जनस्य न कदाचित् कर्हिचित्कदाचित्

We see temporal or worldly actions like eating, going etc. etc. But we have never seen such actions being done by one who has no desire for them.

“ततश्च सर्वं कर्म लौकिकं वैदिकञ्च यद्यत् पुरुषः कुरुते तत्तत् इच्छा-कार्यम् ।”

ततः यस्मात् लौकिकं कर्ममात्रं इच्छाकार्यं तस्मात् इत्यर्थः सर्वं कर्म तदेव विशदयति लौकिकं वैदिकञ्च कर्म इति यद्यद्वि पुरुषः जनः कुरुते तत्तत् सर्वं इच्छा-कार्यम् । अयं भावः—वैदिकं कर्म एव धर्मः । तत् कर्म इच्छामूलकं न वेति विचार्य भवति । वैदिककर्माणां मूले अनेष्टव्ये लौकिककर्माणां मूलं अनेष्टव्यं

ভবতি ভবয়কৰ্ম্মণি এব মনসঃ কৰ্ম্মত্বাৎ । লৌকিককৰ্ম্মণি ইচ্ছা এব কারণং  
তস্মাৎ বৈদিকৈঃপি কৰ্ম্মণি মনস ইচ্ছা এব কারণং ইতি সিদ্ধান্ত ইত্যৰ্থঃ ।

Therefore every action whether vedic or worldly done by a man is the consequence of desire.

ELUCIDATION.—In the former sloka it has been demonstrated psychologically that desire is the root of all actions. This sloka supports the same conclusion by reference to ordinary rules of conducting and controlling human actions as far as worldly matters are concerned.

GRAMMATICAL NOTES. (a) On the text.—1. অকামস্য—ন বিদ্যতে কামো यस্য সঃ অকামঃ বহুব্রীহিঃ । তস্য শিবে ষষ্ঠী । 2. ক্রিয়া—Acc. of দৃশ্যতে । প্রাতিপদিকার্থে প্রথম । কৃ + শ ক্রিয়া । 3. কাচিত্—কিम् স্ত্রিয়া সু ততঃ চিত্ । 4. দৃশ্যতে—দৃশ্ + কৰ্ম্মণি লট্ যগাগমঃ । অদর্শি লুঙ কৰ্ম্মণি । 5. ন—নজ্ অব্যয়ম্ । 6. ইহ—ইদম্ + ই । 7. কৰ্হিচিত্—কৰ্হিচিত্ । সম্মর্থ্যে কিম্ শব্দাৎ হিঁল্ প্রত্যয়ঃ । By অন্যতনে হিঁল্ অন্যতরস্যাম্ । কৰ্হি কদা ইত্যর্থঃ । ততঃ চিত্ । 8. যদ্যত্ তততত্—কৰ্ম্মকারকম্ বীক্ষায়াং দ্বিবক্তিঃ । By নিত্যবীক্ষায়াঃ । 9. কুরুতে—কৃজ—লট্ তে । Nom. পুরুষঃ understood. 10. কামস্য—শিবে ষষ্ঠী । 11. চেष्टিতম্—Nom. to ভবতি understood. চেষ্ + নপুংসকে ভাবে ক্তঃ । চেষ্টতে বিচেष्टে অবেষ্টে ।

CHANGE OF VOICE. — ক্রিয়া কাচিত্ ন পশ্যন্তি লোকাঃ । যদ্যদ..... ক্রিয়তে তেন তেন কামস্য.....চেষ্টিতেন ভূযতে ॥ ৪ ॥

PURPORT.—লৌকিকব্যবহারে য দৃশ্যতে সৰ্ব্বা ক্রিয়া ইচ্ছাযুক্তেন পুরুষেণ সম্পাদ্যতে । তস্মাৎ ন কেবলং লৌকিকং কৰ্ম্ম বৈদিকং যত্ কৰ্ম্ম তদপি ইচ্ছামূলকং এব যতঃ মনসা সৰ্ব্বে এব ক্রিয়তে ॥ ৪ ॥

MEANING IN ENGLISH.—Not a single act appears ever to be done by any one who has no desire for it ; therefore every act of a man whether worldly or vedic (spiritual) is the result of desire.

BENGALI.—লৌকিকব্যবহারে ভোজন পান ইত্যাদি বহু ক্রিয়া দেখা যায়, তাহার কোনটাই ইচ্ছাশূন্য ব্যক্তি করিরাছেন এরূপ কথাই দেখা যায় না ; অতএব পুরুষের কি লৌকিক কি বৈদিক সমস্ত কর্ম্মই ইচ্ছার কার্য্য মাত্র । ৪ ।

ENGLISH.—Nowhere in this world is seen any action of a man having no desire (for reward a fruit of action). For, whatever one does is the outcome of a desire or purpose. (4)

तेषु सम्यग्वर्त्तमानो गच्छत्यमरलोकताम् ।

यथासङ्कल्पितांश्चेह सर्वान् कामान् समश्नुते ॥ ५ ॥

PROSE.—तेषु सम्यग्वर्त्तमानः ( पुरुषः ) अमरलोकतां गच्छति, इह च यथा सङ्कल्पितान् सर्वान् कामान् समश्नुते । ५ ।

KULLUKA.—सम्प्रति पूर्वोक्तं फलाभिलाषनिषेधं नियमयति तेषु सम्यग्वर्त्तमान इति । नावेच्छा निषिध्यते किन्तु शास्त्रोक्तकर्मसु सम्यग्वृत्तिर्विधीयते वन्महेतुफलाभिलाषं विना शास्त्रीयकर्मणामनुष्ठानं तेषु सम्यग्वृत्तिः सम्यग् वर्त्तमानोऽमरलोकताम् अमरधर्मकं ब्रह्मभावं गच्छति मौलं प्राप्नोतीत्यर्थः । तथाभूतस्य सर्व्वेश्वरत्वादिहापि लोके सर्व्वानभिलाषितान् प्राप्नोति । तथाच क्वान्दोग्येऽपि स यदा पितृलोककामो भवति सङ्कल्पादेवास्य पितरः समुत्तिष्ठन्तीत्यादि ॥ ५ ॥

KULLUKA EXPLAINED.—“सम्प्रति फलाभिलाषनिषेधं नियमयति तेषु इति” । फलाभिलाषः निषिद्धः स च निषेधः न सर्व्वत्र किन्तु शास्त्रीयेषु कर्मस्वेव इति नियमं स्थापयति अस्मिन् तेष्विति श्लोके इत्यर्थः ।

“नात्र इच्छा निषिध्यते किन्तु शास्त्रोक्त कर्मसु सम्यग्वृत्तिर्विधीयते ।”

अत्र अस्मिन् श्लोके इच्छा कामना न निषिध्यते वार्यते किन्तु शास्त्रीयकर्मसु सम्यग्वृत्तिः वक्ष्यमाणप्रकाराविधीयते । अस्मिन् श्लोके न इच्छेत् इति निषेधः न प्राप्तः किन्तु सम्यग् वर्त्तते इति विधिः प्राप्यते इत्यर्थः ।

In this sloka a negative injunction as regards desire is not found, but a positive injunction for discharging duties without desire for reward is laid down.

“वन्महेतु फलाभिलाषं विना शास्त्रीयकर्मणामनुष्ठानं तेषु सम्यग्वृत्तिः ।”

का नाम सम्यग्वृत्तिः ? ननु वन्मस्य हेतुभूतः यः फलाभिलाषः तं विना शास्त्रीयाणां कर्मणां अनुष्ठानं तेषु कर्मसु सम्यग्वृत्तिः इति कथ्यते । फलाभिलाषं परित्यज्य शास्त्रोक्तकर्मणामनुष्ठानं सम्यग्वर्त्तनम् । अयं जनः कर्मसु सम्यग् वर्त्तमानः = अयं जनः फलाभिलाषं त्यक्त्वा शास्त्रीयं कर्म करोति ।

Performance of duties prescribed by the Sastras without any desire for reward is *samyakbriiti* (proper application of oneself).

“सम्यग्वर्तमानः अमरलोकतां अमरधर्मकं ब्रह्मभावं गच्छति मोक्षं प्राप्नोति ।”

सम्यग्वर्तमानः पूर्वोक्तप्रकारेण फलाभिलाषं वर्जयित्वा कर्म कुर्वन् पुरुषः अमर-  
लोकतां अर्थात् अमरधर्मविशिष्टं ब्रह्मभावं ब्रह्मणः परमात्मनः भावः प्रकृतिः मायातीतत्वं  
केवलत्वं नैर्गुण्यं तं गच्छति मोक्षं मुक्तिं कैवल्यं प्राप्नोति । आपेर्गमेष चलनार्हत्वात्  
मुक्त्यत्वम् ।

One who performs actions without expecting rewards (*samyak bartamana*) acquires deathless state *i. e.* final absorption or state in which the pure Brahma exists.

“तथाभूतश्च सर्वेश्वरत्वात् इहाऽपि लोके सर्वान् अभिलषितान् प्राप्नोति ।”

तथाभूतः अमरलोकतां प्राप्तः सन् सर्वेश्वरत्वात् यदा एवभूतः इहैव अमरलोकतां  
प्राप्नोति तदा स सर्वेश्वरः सर्वेषां स्थावरजङ्गमानां दृष्टादृष्टानां ईश्वरः प्रभुः भवति  
तथा शास्त्रे दृष्टत्वात् अतः एवभूतः न केवलं परलोके इहलोके अपि सर्वान्  
अभिलषितान् वाञ्छितान् कामान् इच्छामात्रेण प्राप्नोति । यथा भरद्वाजी भगवान्  
सङ्कल्पमात्रेण ससैन्यं भरतं देवदुर्लभैर्द्रव्यैः अर्चयामास ।

“After attaining deathless state, he becomes lord of all, and even in this world, gets every thing that his fancy can suggest (for there are authorities on the point).

“तथा च छान्दोग्येऽपि स यदा पित्रलोककामो भवति सङ्ख्यादेवास्त पितरः  
समुत्तिष्ठन्तीति ।”

तथा यथा उक्तं तद्वत् छान्दोग्ये छन्दोगानां सामवेदिनां इदं छान्दोग्यम् ब्राह्मणग्रन्थ-  
विशेषः तस्मिन् वेदेकदेशेऽपि न केवलं मनुस्मृतौ इति भावः इदं स्वीकृतं अस्ति ।  
सः पुरुषः यदा पित्रलोककामो भवति पित्रलोके गच्छति सङ्ख्यात् इच्छामावादेव तदा  
तस्य पितरः पित्रदेवताः समुत्तिष्ठन्ति आगच्छन्ति इति ।

We have likewise in the Chhandogya Upanishad “When he is desirous of connection with his ancestors (the manes), they appear before him no sooner are they called to memory.”

ELUCIDATION.—There can be no doubt that the text has direct reference to the theory as quoted by Kulluka Bhatta from the Chhandogya Upanishad. This couplet lays down an injunction not found before. It is कर्मसम्यगनुतिष्ठेत् *i. e.* perform actions prescribed by the Vedas without expecting any reward. It then lays down an अर्चवाद or कलत्रुति or praise. The कलत्रुति

portion is directly taken from the Upanishad. सर्वान् कामान् समग्रं ते is taken almost verbatim from छान्दोग्य—

Thus अथ स यदि पितृलोककामो भवेत् सकृत्पदेवास्य पितरः समुत्तिष्ठति ।  
अथ यदि मातृलोक कामो भवति..... । अथ यदि भ्रातृलोक कामो भवति... ।  
अथ यदि स्वसृलोक कामो..... । अथ यदि सखिलोक कामः..... ।  
अथ यदि गन्धर्वालय लोक..... । अथ यदि अन्नपान लोक..... ।  
अथ यदि गौतमादिव लोक..... । अथ यदि स्त्रीलोक कामः..... ।  
यं यं चनन् अभिकामो भवति यं कामयते सोऽस्य सकृत्पदेव समुत्तिष्ठति तेन सम्पन्नो महीयते ।

Though the ritualistic side is exhibited in Manu, the spiritual side also exists and cannot be concealed so ably brought to light by Kulluka Bhatta.

The word ब्रह्मभाव creates difficulties to a beginner. ब्रह्मभाव described in this text is not final ब्रह्मभाव but secondary stage, having some environment of माया ।

PURPORT.—शास्त्रोक्तानि कर्माणि फलाभिलाषयः सन् कुर्वीत । तथा कृतेषु सत्सु पुरुषः सगुणब्रह्मणः सत्यसङ्कल्पतादिगुणयुक्तः मोक्षं गौणं प्राप्नोति, ब्रह्मणो गुणान् च सत्यसङ्कल्पादिकान् प्राप्य अक्षिन् एव लोके यद् यत् कामयते तत् तत् सपदि प्राप्य महीयते ॥ ५ ॥

MEANING IN ENGLISH.—He who performs duties without expecting reward obtains deathless state, the state of perfect liberation, or the condition of Brahma in its purity ; and thus attaining the condition of the Lord of the Universe, even in this life, secures fulfilment of every desire he may have conceived.

GRAMMATICAL NOTES. (a) On the text.—1. तेषु—Qualifies कर्त्यसु understood. 2. सम्यग्-वर्त्तमानः—सम्यक् वर्त्तमानः सम्यग् वर्त्तमानः । कुगति प्रादय इति समासः । हत + शानच् कर्त्तरि । वर्त्तते वहते अहतत् अवर्त्तिष्ठ फलाभिलाषयत्वेन अनुष्ठानपर इत्यर्थः । 3. गच्छति गम् लट् ति । लुङ् अगमत् । प्राप्नोतीत्यर्थः । Governs अमरलोकताम् । 4. अमरलोकताम्—न मरा अमराः । अमरा एव सुखहेतुत्वेन भीष्यताम् स्त्रीकाः अमरलोकाः । ( भाष्योक्त व्याख्यानम् ) तैर्वा भावः अमरलोकता अमरभावः ताम् । Acc. of



गच्छति । सिद्धते ममार अक्षत । सुक् + घञ् । ५. यथा सङ्कल्पितान्—सङ्कल्पितं  
अनतिक्रम्य यथासङ्कल्पितं अव्ययीभावः । यथा सङ्कल्पितम् अर्थ आदिभ्य अच् = यथा—  
सङ्कल्पिताः । तान् । ६. इह—इदम् + इ । ७. सर्वान्—Qualifies  
कामान् । ८. समन्नुते—सम्—अश् + लट् ते । अन्नु ते आनशे चाशिष्ट बाट ।

CHANGE OF VOICE. —सम्यग्वर्तमानैः अमरलोकाता गम्यते ।.....सर्वे  
कामाः समश्नन्ते ॥ ५ ॥

BENGALI.—জন আকাঙ্ক্ষা না করিয়া নাটকীয় কৰ্ম অনুষ্ঠান করাকে সম্যক  
অনুষ্ঠান বলে । এই অর্থে কর্ত্তের সম্যক অনুষ্ঠান করিবে । যিনি কর্ত্তের সম্যক অনুষ্ঠান  
করেন, তিনি অমরত্বপূর্ণবিশিষ্টে উন্নততাব বা যোকলাভ করেন ; এবং তিনি উন্নততাবাপন্ন  
হইয়া মর্ত্তেরত্ব লাভ করায় এই জন্মেও যাঁহা যাঁহা ইচ্ছা করেন সঙ্কল্পমাত্রে তাঁহা  
তাঁহা ভোগ করিতে সমর্থ হন । ৫ ।

ENGLISH.—A person properly or rightly doing these acts ( laid  
down by the Sastras ) attains the state of immortals (or the im-  
perishable beatitude of Brahman), and gets here all his desires as  
wished for. (5).

वेदोऽखिलो धर्ममूलं स्मृतिशीले च तद्विदाम् ।

आचारश्चैव साधूनामात्मन स्तुष्टिरेव च ॥ ६ ॥

PROSE. — अखिलो वेदः तद्विदां स्मृतिशीले च साधूनां आचारश्चैव आत्मनः  
स्तुष्टिरेव च । धर्ममूलं ( भवति ) ॥ ६ ॥

KULLUKA.—इदानीं धर्मप्रमाणान्वाह वेदोऽखिलो धर्ममूलमिति वेद  
अन्यजुःसामाथर्व्वलक्षणः स सर्वो विध्यर्थवादमन्वात्मा धर्म मूलं प्रमाणम् अर्थवादादीना-  
मपि विध्यैकवाक्यतया सावकत्वेन धर्म प्रमाणात् । यदाह जैमिनिः—विधिना  
त्वैकवाक्यत्वात् स्तुत्यर्थेन विधीनां स्युः मन्त्रार्थवादानामपि विधिवार्थैकवाक्यतयैव धर्म  
प्रमाणात् प्रयोगकाले चानुष्ठेयस्मारकवेदस्य धर्म प्रमाणात् यथानुभवकरणत्वरूपन्यायसिद्धये  
स्मृत्यादीनामपि तन्मूलत्वेनैव प्रमाणात्प्रतिपादनार्थमनूयते । मन्वादीनाञ्च वेदविदां  
स्मृतिधर्म प्रमाणं वेदविदामिति विशेषणोपादानाच्चेदमूलकत्वेनैव स्मृत्यादीनां प्रमाणा-  
भिमर्शं शीलं ब्रह्मण्यतादिरूपम् । तदाह हारीतः—ब्रह्मण्यता देवपितृभक्तता सौम्यता  
अपरोपतापिता अनन्या सदृता अपावृत्त्य मेवता प्रियवादिलं ज्ञतज्ञता शरण्याता कारुण्यं  
प्रशान्तिश्चेति वयोदशविधं शीलम् । गोविन्दराजस्तु शीलं रागद्वेषपरित्याग इत्याह ।  
आचारः कर्मलवल्कलाद्याचरणरूपः साधूनां धार्मिकाणाम् आत्मस्तुष्टिश्च वैकल्पिकपदार्थ-  
विषयधर्म प्रमाणं तदाह मर्गैः वैकल्पिकी आत्मस्तुष्टिः प्रमाणम् ॥ ६ ॥

KULLUKA EXPLAINED.—“इदानीं अर्थप्रमाणान्नाह वेद इति ।”

Dharma has been defined in the first sloka. This sloka lays down authorities on the matter of dharma.

“वेदः ऋगयजुःसामाथर्वलक्षणः” ऋग्वेदः यजुर्वेदः सामवेदः अथर्ववेदश्च इति चत्वारो वेदा वेदशब्देन अथ याज्ञा इति कुल्लुकाशयः ।

Veda consisting of Rik, Joyush, Sam and Atharba is authority on dharma.

“सर्वो विध्यर्थवादमन्त्रात्मा” अखिलशब्दस्य अर्थमाह सर्व इति । तं विशदयति विध्यर्थवादमन्त्रात्मा वेदस्य त्रयो भागा विधिः स्वर्गकामोयजेत इति रूपः, अर्थवादः विधिः प्रशंसा सर्वमायुरेति ज्योत्नोवति य एवं कुर्यात् इति रूपः मन्त्रात्मा इन्द्रमीले इत्यादिरूपः । अखिलशब्देन एतत् विभागसमन्वितो वेदः प्रमाण मित्यर्थः बोध्यते ।

The word अखिलः (सर्वः) (whole) includes parts containing injunctions, praise and hymns.

“धर्ममूलं प्रमाणम्” मूलशब्दस्य अर्थमाह प्रमाणमिति ।

“अर्थवादानामपि विध्यैकवाक्यतया सावकत्वेन धर्मं प्रामाण्यात् ।” यजेत इत्यादि विधिवाक्यानि प्रमाणानि भवन्तु प्रशंसावाक्यानां अर्थवादानां कथं प्रामाण्य मित्याह अर्थवादानां प्रशंसावाक्यानां अपि प्रामाण्यं अस्ति । कथं? उत्तरमाह विध्यैकवाक्य-तया सावकत्वेन एवं कुर्यात् इति विधिः, ततः य एवं करोति स स्वर्गं याति इति अर्थवादः । फलकौत्सेन हि विधिवाक्यस्य प्रशंसा । सा च विधिवाक्येन सह एक-वाक्यताज्ञापिका, अर्थात् अर्थवादस्य वक्ता यदि विधिवाक्यं न अनुमोदेत तदा कथं विधिं प्रशंसितुं? तस्मात् अर्थवादः अपि विधिवाक्यमेव । तस्मात् अर्थवादस्य प्रामाण्यम् ।

“यदाह जैमिनिः विधिना त्वेकवाक्यत्वात् स्तुत्येन विधीनां स्युः ।” (This is a Jaimini sutra). Kulluka explains it “मन्त्रार्थवादानामपि विधिवाक्यैक-वाक्यतया एव धर्मं प्रामाण्यम्” the hymns and the laudatory portions also are authorities. विधिवाक्यैकवाक्यतया by reason of their unanimity with injunctions. “प्रयोगकाले च अनुष्ठेयस्मरणकवेदस्य धर्मं प्रामाण्यं यवानुभवकरत्वरूपस्यावसिद्धम् ।” The hymns are authorities because such vedas remind the duties during the time of their application, as one acts according to his past experience.

अर्थभावः—विधिवाक्यं हि एवं कुर्यादिति अनुष्ठानविधायकत्वात् प्रमाणम् । अर्थवादानां विधिवाक्यस्य प्रशंसनात् एकवाक्यतया प्रामाण्यम् । अनेन मन्त्रेण एतत्

अनुष्ठितं भवतीति मन्त्रेण अनुष्ठानं कार्यते, ततः क्रियते, तस्मात् मन्त्रा अपि कर्तव्य-  
वाचकविधिवाक्येन सङ्ग ऐकवाक्यात् प्रमाणम् भवति अर्थात् येन वेदवाक्येन किमपि  
कर्म न उपदिश्यते तत् वाक्यं अप्रमाणमिति जेमिनिमतम् । विधिवाक्येन यज्ञादिरूपं  
कर्म उपदिश्यते तत् क्रियते च अतो विधिवाक्यं एव प्रमाणम् । अर्थवादाः प्रशंसा-  
परत्वात्, मन्त्राः स्मारकत्वात् विधिवाक्यस्य सहायाः अतः तन्मूल्याः तस्मात् प्रमाणम् ।

वेदो हि द्विधा विभक्तः । मन्त्रः ब्राह्मणस्य । ऋचोयजूंषि च मन्त्राः ।  
तथोरेव गीतप्रधानम् साम इति अभिचारादिप्रधानः आथर्वण्यः इति ।

विध्यर्थवादमथोब्राह्मणः । वेदस्तस्मात् मन्त्रब्राह्मणात्मकः । Vide Sayan's  
Introduction to Rigveda. ब्राह्मणस्य च विध्यर्थवादपरत्वात्, “वेदः मन्त्र-  
ब्राह्मणार्थवादात्मा” इत्युक्तं कुल्लूकेन, तस्य वेदस्य चतुर्धा विभजनात् ऋग्यजुः-  
सामाथर्वलक्षण इति चोक्तम् कुल्लूकभट्टैः ।

“ऋत्यादीनां अपि तन्मूलत्वेनेव प्रामाण्यप्रतिपादनार्थं अनूयते ।

ऋत्यादीनां ऋतिः आदिर्घेषां तेषां ऋतीतिहासपुराणानाम् अपि तन्मूलत्वेन  
सः वेदः एव मूलं येषां ते तन्मूला स्तेषां भावः तेन हेतुना एव ननु अन्वेन हेतुना  
प्रामाण्यप्रतिपादनार्थं प्रामाण्यस्य प्रतिपादनं साधनं तस्मै अनूयते प्रमाणान्तरेण अवगतं  
पुनः अत्र कथ्यते ।

“मन्त्रादीनां च वेदविदां ऋतिधर्मप्रमाणम् । वेदविदामिति विशेषणोपादनात्  
वेदमूलकत्वेनेव ऋत्यादीनां प्रामाण्यमभिमतम् ।”

मन्त्रादयो हि वेदविदः वेदज्ञाः । तेषां ऋतिः वेदमूलत्वात् हेतोः प्रमाणम् ।

“शीलं ब्रह्मण्यतादिरूपम् ।”

शीलशब्देन स्वभावो न बुध्यते किन्तु ब्रह्मण्यतादिरूपं ‘हारौतोक्त’ त्रयोदशप्रकारं  
आचरणं अत्र शीलशब्दार्थः ।

“तदाह हारौतः ब्रह्मण्यता देवपितृभक्तता सौम्यता अपरोपतापिता अनसूयता सदुता  
अपाकथ्यं मैत्रता प्रियवादित्वं कृतज्ञता शरण्याता कारुण्यं प्रशान्तिरिति त्रयोदशविधं  
शीलम्” ।

हारौतो मुनि सत् त्रयोदशविधं शीलमाह तत् यथा ब्रह्मण्यता ब्रह्मणे ब्राह्मणाव-  
हितः ब्रह्मण्यः । ब्राह्मणोचितकर्माकारिता । देवपितृभक्तता देवेषु पितृषु च  
भक्तिमत्ता । सौम्यता मनोज्ञता agreeableness. अपरोपतापिता परान् अन्धान्  
उपतापयति क्षिप्रतीतिं परोपतापी न परोपतापी अपरोपतापी तस्य भावः । अनसूयता  
अस्या गुणेषु दोषारोपः न विद्यते अस्या यस्य स अनसूयः तस्य भावः । सदुता कोमलता  
नम्रता । अपाकथ्यम् अकर्तव्यव्यवहारिता । मैत्रता मैत्रः मित्रताशाली तस्य भावः ।  
प्रियवादित्वम् अनुकूलभाषितम् । कृतज्ञता कृतं जानातीति कृतज्ञः grateful.

शरत्थता शरत्थः शरणे रत्थणे साधुः शरत्थः तस्य भावः । कावत्थम् कृपावत्थम् । प्रशान्तिः शमः चित्तस्य शोभाभावः । एतत् त्रयोदशविधं शीलं एतदपि धर्मस्य मूलम् ।

“श्रीविन्दराजस्तु शीलं रागद्वेषपरित्याग इत्याह ।”

श्रीविन्दराजो हि शीलशब्दस्य रागद्वेषपरित्यागः अर्थ इत्याह । तत् न सम्यक् इति भावः । कथं ? शीलशब्दस्य रागद्वेषत्यागरूपः अर्थः कुतपि न दृश्यते, अपि च तथा व्याख्याने हारीतेन सह विरोधः स्यात् तत् न शोभनम् । मनुना सह हारीतस्य एकवाक्यत्वात् । मुनिव्रतव्याख्यानस्य प्रामाण्यात् ।

“आचारः कस्मलवत्कलाद्याचरणरूपः” ।

आचारशब्देन कस्मलधारणं वत्कलधारणं इत्यादिरूपं धार्मिकानामाचरणं गम्यते ।

“साधूनां धार्मिकानाम्”—साधुशब्दस्य धार्मिकोऽर्थः ।

“आत्मतुष्टिः वैकल्पिकपदार्थविषया धर्मो प्रमाणम् । तदाह गर्गव्यासः वैकल्पिके आत्मतुष्टिः प्रमाणम् ।”

आत्मतुष्टिशब्दस्य न तुष्टिभावम् अर्थः किन्तु शास्त्रोक्तविधिवाक्येषु यत्र विकल्पः दृश्यते यथा एवं कुर्यात् एवं वा कुर्यात् इति वाक्ये विधिर्यं अस्ति तत्र यस्मिन् कस्ये इच्छा भवति स आत्मतुष्टिविषयः सः अपि धर्मो प्रमाणम् । तत्र गर्गव्यासस्य वचनं पठति वैकल्पिके विकल्पविधिविषये यस्मिन् आत्मतुष्टिरिच्छा भवति तस्याचरणं धर्मः । एकस्मिन् मन्वन्तरे गगौ नाम मुनिर्व्यासाख्यां लभते यथा अस्मिन् वैवस्वते मन्वन्तरे देवायगौ मुनिर्व्यासः सञ्जातः । व्यासशब्देन वेदविभागकर्ता अवगम्यते ।

PURPORT.—धर्मविषये पञ्च प्रमाणानि सन्ति तानि दृष्ट्वा धर्मं कुर्यात् । पञ्च प्रमाणानि यथा चत्वारो वेदाः विधिमन्त्रार्थवादसंहिताः, मनुव्यासप्रभृतीनां वेदज्ञानां स्मृतिशास्त्राणि, तेषां हारीतोक्तं त्रयोदशविधं शीलम्, वेदोक्तधर्माचरणवतां जनानां कस्मलवत्कलपरिधानादिरूपं आचरणं, शास्त्रे यत्र एकाधिकाः विकल्पिता व्यवस्थाः सन्ति तासां मध्ये यत्र मनस्तुष्यति तस्याः अनुसरणम् । एवं पञ्चविधानि धर्मस्य प्रमाणानि ॥ ६ ॥

MEANING IN ENGLISH.—The authorities on dharma are the following, viz. (1) The vedas (including injunctions, hymns and the laudatory portions), (2) the ordinances and (3) thirteen moral practices (as described by Harit), of those who understand them, (4) the custom of men who practise duties enjoined by the vedas, (5) and self-satisfaction in cases where option is permitted.

ELUCIDATION. — The first sloka gives a definition of dharma ; here we get the authorities on dharma so defined. Dharma is a system of duty enjoined by the vedas and conducive to welfare. (1. II Manu). In practising dharma we are to be guided by the vedas, and the ordinances and moral practices of those who know the vedas, and who act according to them.

The word आत्मनस्तुष्टिः or आत्मतुष्टिः is misleading. It does not mean that "self-satisfaction" is the standard of dharma in every case ; for in that case, self-satisfaction of a particular individual may prevail over vedic injunctions, and a heretic may claim to be a greater authority than the vedas themselves on the ground of self-satisfaction or individual conscience. Here it is limited. विकल्पे विषये आत्मतुष्टिः self-satisfaction or one's own inclination is to be allowed only where option is permitted by the texts. The words सत् and सद्यः are also liable to be misinterpreted. They mean in the text not pious men (which is a secondary meaning only) but men scrupulously discharging the duties enjoined by the Vedas and Smritis. सत् and सद्यः means धार्मिक which means one who practises धर्म or duties enjoined by the sastras. The Smriti of Panini lays down "धर्मो ऋरति" i.e. ठक् is to be affixed to the word धर्म to signify that one ( ऋरति ) practises ( धर्मम् ) duties enjoined by the vedas. The Grammar of Panini is styled as a Smriti or dharmashastra written by one who knew the vedas. You will get application of Panini's grammar or Smriti later on in this chapter, to supplement the precepts of Manu. No other grammar is a Smriti in the sense in which Manu is a Smriti ; because they are written by men not initiated in the vedic mysteries ; a man when so recognised becomes a मुनि like Panini, Vyas, Katyayana etc. etc. The other treatises on grammar such as मुग्धबोध, कातक, सारसूत, संहितासार, सुपट्ट etc. etc. are mere hand-books

or compilation by learned pandits only, whose language is neither sacred, nor capable of interpreting the Vedas or the sacred texts of the sages. Thus if you repeat any of the sutras of Panini it is held to be productive of a certain quantity of merit (पुण्य) just like the repetition of a stanza of the Vedas, the Ramayana or the Mahabharat. But repetition of a sutra of other grammars will not do it. The supreme importance and sacred character of Panini become evident to any Hindu mind on a closer study ; it is the basis on which the whole fabric of the sacred literature has been built. The Panini Sutras on कृत्, तद्धित, कारक, समस make this point very clear. In fact no one can rely on any non-Panini sutra in the interpretation of classical sanskrit without utmost diffidence.

GRAMMATICAL NOTES. (a) On the text.—1. वेदः—विद-  
बिच् + अच् । (१) वेदयति सपायं इष्टप्राप्त्यनिष्टवर्जनयोः सपायं इति वेदः । (२)  
अथवा वेदन्तं ज्ञाप्यन्ते ईश्वरेण धर्मार्थकाममोक्षाः अनेन वेदः । प्रत्यक्षेणातुमिच्छा य  
यत्नपात्री न वृध्यते । एवं वदन्ति वेदेन तस्माद् वेदस्य वेदता इति । विद-वेति  
विन्तः विदन्ति । or वेद विदतुः बिदुः । विवेद विदाश्चकार अवेदौत् । Its विधेय-  
विशेषणम् is धर्मसूत्रम् । 2. अखिलः—न खिलः अखिलः नञ् समासः ।  
(Qualifies वेदः । 3. तदविदाम्—तं विदकोति तदविदः । तद्-विद + क्तिप् ।  
उपपद समासः । शेषे षष्ठी । 4. स्मृतिशीले—स्मृतिः स्मरणं वेदपाठजनित-  
संस्काररूपेण स्थितं संहितादिरूपम् । तच्च शीलं च हारीतोक्तम् स्मृतिशीले । इतरे-  
तर बन्धः । Same case with धर्मसूत्रम् । 5. साध्वनाम्—सिध-बिच् उत्त्  
साधुः । शेषे षष्ठी । 6. आचारः—Same case with धर्मसूत्रम् । आच्-  
-चर + अच् । अचार अचारोत् । 7. आत्मनः—कर्तृकारणयोः कृतौति  
कर्तारं षष्ठी कृदयोगा । तुष्टिरित्यनेन अन्यः अत + मनिन् आत्मा । 8. तुष्टिः  
-तुप् + क्तिन् भावे । तुष्यति तुतोष अतुषत् । Same case with धर्मसूत्रम् ।  
9. धर्मसूत्रम्—धर्मस्य सूत्रम् धर्मसूत्रम् । षष्ठी समासः । विधेय विशेषणम् of  
(1), (4), (6), (8). 10. एव—अवधारणार्थे अन्ययम् ।

CHANGE OF VOICE.—वेदेन.....छूतिशीलाभ्यां.....आचारेण...तुष्ट्या च  
धर्मसूत्रेण भूयते । १ ।

BENGALI.—नमस्तु अर्वादि विधि यत्र ७ अर्वादिमन्त्रविधौ कर्त्तव्यं मां ७ अर्वादि

বেদ, মনু বাস প্রভৃতি বেদজ্ঞগণের রচিত স্মৃতি ও হাবীভোক্ত জয়োদশ প্রকার শীল, ধার্মিকগণের কখন কখনধারণাদিগুণ আচরণ, এবং বিকল্পনিধিস্থলে যে কল্পের আচরণে মনের তৃপ্তি হয় সেই কল্পের আচরণ, এই সমুদ্র ধর্মবিষয়ে প্রমাণ বলিয়া জানিবে । ( অর্থাৎ ধর্ম আচরণ করিতে হইলে এই সকল অনুসরণ করিতে হয় ) ॥ ৩ ॥

The entire veda is the authority regarding *dharma* or duty ; so also the memory or tradition and the practice of those who know it ; and also the custom of the good, and the satisfaction of one's own self (*i.e.* approbation of conscience ). (6).

য: কশ্বিত্ কস্যচিদ্ধর্মো মনুনা পরিকৌর্তিত: ।

স সর্ব্বোঃমিহিতো বেদে সর্ব্বজ্ঞানমযো হি স: ॥ ৩ ॥

PROSE. — মনুনা য: কশ্বিত্ কস্যচিৎ ধর্ম: উক্ত: স: সর্ব্ব: বেদে অমিহিত:, হি স: সর্ব্বজ্ঞানময: । ৩ ।

KULLUKA. — বেদাদন্যেধা বেদমূলত্বেন প্রামাণ্যেঃপি মনুস্মৃতি: সর্ব্বৌক্তকধর্মজ্ঞাপনায় বিশেষেণ বেদমূলতামাহ য: কশ্বিদিতি । য: কশ্বিত্ কস্যচিদব্রাহ্মণাদিমনুনা ধর্ম: উক্ত: স সর্ব্বো বেদে প্রতিপাদিত: যস্মাৎ সর্ব্বজ্ঞোঃসৌ মনু: সর্ব্বজ্ঞতয়া চ উত্ সন্নবিপ্র-কৌর্ষপশ্যমানার্থে সস্বক্ জ্ঞাত্বা লোকহিতায় উপনিবহ্বান্ । গোবিন্দরাজস্য সর্ব্ব-জ্ঞানময ইত্যস্য সর্ব্বজ্ঞানারম্ভ ইব বেদ ইতি বেদবিশেষণতামাহ ॥ ৩ ॥

KULLUKA EXPLAINED. — “বেদাদন্যেধা বেদমূলত্বেন প্রামাণ্যেঃপি মনুস্মৃতি: সর্ব্বৌক্তকধর্মজ্ঞাপনায় বিশেষেণ বেদমূলতামাহ য: কশ্বিদিতি ।”

বেদাৎ স্মৃৎ যজু: সামাথর্ষ্যনামকাত্ অন্যারাদিতি পশুমৌ অন্যেধা মনুস্মৃতি-রচিতানাং শাস্ত্রাণাং বেদমূলত্বেন বেদমূলকতয়া হেতুনা প্রামাণ্যে প্রামাণ্যযোগ্যত্বে অমিহিতে পূর্ব্বজ্ঞোকেন উক্তে অপি মনুস্মৃতিপ্রণীতস্মৃতিসমূহা মধ্যে মনুস্মৃতি: মনুপ্রণীতস্মৃতি-শাস্ত্রস্য সর্ব্বৌক্তকধর্মজ্ঞাপনায় সর্ব্বাসু-স্মৃতিষু উক্তকর্ম: শ্রেষ্ঠতা তস্য জ্ঞাপনায় জ্ঞাপনায় অর্থাৎ সর্ব্বাসু স্মৃতিষু মধ্যে মনুস্মৃতি স্নত্ স্নত্বা ইতি প্রদর্শয়িতুং বিশেষেণ আধিক্যেণ মনুস্মৃতি: বেদমূলতা বেদাত্মকতা আহ মনু: য: কশ্বিদিতি শ্লোকে । It should be noted that the Smṛiti of Manu is here being recited by Bṛhgu. (Vide 59th and the 60th Slokas, Chapter I.).

“কস্যচিৎ ব্রাহ্মণাদি:”

কস্যচিৎ ইতি শব্দস্য অর্থমাহ ব্রাহ্মণাদিতি । ধর্মোহি ব্রাহ্মণাদিবেশস্য ব্রহ্ম-অর্থ্যাদিরামিষ্যৎ : ১. one in order to practise dharma must be either a Brahmin, Kshatriya, Vaishya or Sudra or a mixed caste

accepted by the law and authorized to follow the dharma of any of the four castes according to the text. Even that will not suffice ; a man in order to practise dharma must either be a ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ or भिक्षु । A Brahmin who cannot be brought under any of the four stages mentioned, has no right to practise dharma. Therefore the vedic religion is called वर्णाश्रमधर्मः । One must belong to one of the four castes and stages in order to be entitled to practise dharma. Therefore Kulluka says "कस्यचिन् = ब्राह्मणादेः" *i.e.* धर्मः must be prescribed for one of the four castes, and for one of the four stages, and not to an outsider.

"मनुना धर्म उक्तः स सर्वो वेदे प्रतिपादितः"

मनुना स्वकीयमंहितायां यस्य मन्त्रे यो धर्मः विहितः स स सर्वः धर्मः तदनुसारिण वेदे अपि प्रतिपादितः स्थापितः अस्ति । वेदज्ञेन अगुणाएतदुक्तम् ।

"यस्मात् सर्वज्ञोऽसौ मनुः" हि शब्दस्य अर्थमाह यस्मात् इति । सर्वज्ञानमयः इति पदस्य अर्थमाह सर्वज्ञ इति । "असौ मनुः" भृगुर्हि सन्मग्नस्थितेभ्यः मुनिभ्यः उपविष्टं स्मृतिकारं मनुं दर्शयन् आह असौ साक्षात् अवताररूपः मनुः यत् कथयति तदेव वेदसम्प्रितमिति कुल्लुकाशयः ।

"सर्वज्ञतया च उत्सन्न विप्रकीर्णं पठ्यमान वेदार्थं सम्यक् ज्ञात्वा लोकहिताय उपनिबद्धवान्" ।

मनु भवतु मनुर्नाम सर्वज्ञ स्तेन प्रसूते विषये किं आयातम् ? तदुत्तरमाहुः कुल्लुकमहाः :-

सर्वज्ञतया हेतुना असौ मनुः उत्सन्न-विप्रकीर्णं-पठ्यमान वेदार्थं उत्सन्नाः ये वेदभागा विलुप्ताः ते, विप्रकीर्णाः सर्वतो विक्षिप्ताः न गृहीतुं शक्वाः, पठ्यमानाः ये वेदभागाः अधुनापि यस्याकारेण पच्यन्ते, ते सर्वे वेदाः तेषां अर्थं वक्तव्यं वस्तु सम्यक् ज्ञात्वा अवगम्य लोकहिताय लोकानां उपकाराय उपनिबद्धवान् स्मृतिरूपेण समाहृतवान् तस्मात् वेदस्य अंशविशेषाणां नष्टभटलेऽपि लोकानां न क्षतिः सर्वस्य एव वेदार्थस्य मनुना स्वयमेव उपनिबद्धत्वात् । अद्वयं सर्वज्ञो न भवेत् तदा सर्ववेदार्थ-संग्रहो न स्यादिति कुल्लुकाशयः ।

It is said that Rigveda had 21, Yajurveda 109, Samaveda 1000, Atharva 9 sakhas. Now we have altogether 6 or 7 sakhas only. Thus what we have is an insignificant part of



the whole veda as it was. Manu gives us the substance of the whole veda as it existed at the beginning. Thus according to the orthodox view the treatise of Manu is now more valuable than the existing vedas in point of vedic injunctions.

“गोविन्दराजस्तु सर्वज्ञानमय इत्यस्य सर्वज्ञानारम्भ इव वेद इति वेदविशेषणतामाह ।”

गोविन्दराजः कश्चिन्टीकारुतु तु सर्वज्ञानमय इति पदस्य वेदविशेषणताम् श्लोकोक्तं वेदशब्दस्य नतु मनोर्विशेषणतां आह । अथात् तन्मते सः वेदः सर्वज्ञानमयः सर्वज्ञानेन आरम्भ इत्याह । *i. e.* according to Kulluka सर्वज्ञानमयः हि सः means “Manu is omniscient.” But according to Govindaraja it means सः ( वेदः ) सर्वज्ञानमयः ( सर्वज्ञानारम्भः ) = “The veda was commenced (to be written) with omniscience. Govindaraja’s explanation is therefore very poor.

PURPORT—सर्वान् स्मृतिषु मनोः स्मृतिः श्रेष्ठा यतः सा अन्याभ्यः स्मृतिभ्यः अधिकतरं वेदमूला । यस्य वर्णस्य यो धर्मो मनुना कथितः तस्य वर्णस्य स एव धर्मः वेदेन अपि उक्तः यतः स मनुः सर्वज्ञस्तस्मात् स नष्टभ्रष्टविद्यमानान् सर्वान् वेदभागान् ज्ञात्वा स्मृतिं प्रणीतवान् । अतो मनुस्मृतिः सर्वोत्कृष्टा ॥ ७ ॥

MEANING IN ENGLISH. — Whatever law has been ordained for any caste by Manu, that has been fully laid down in the vedas ; for he was omniscient ; (and therefore knowing fully all parts of the vedas whether lost, scattered or extant reduced their purport to writing for the benefit of all.)

ELUCIDATION. — “सर्वज्ञानमयो हि सः” Govindaraj and (Medhātithi too) explain सः as वेदः । The natural construction leads to that interpretation. But there is no doubt that Kulluka’s interpretation is better and more to the point.

GRAMMATICAL NOTES.—(a) On the text.—1. यः कश्चित्—Qualify धर्मः (= whatever). 2. धर्मः—उक्तं कर्म of परिकीर्तितः, घृ + मन् । धरति दधार अघाशौत् । 3. कस्यचित्—शेषे षष्ठी । कारकप्रातिपदिकार्थरूपसम्बन्धव्यतिरिक्त सम्बन्धः शेषः । कस्यचित् अनुष्ठेयत्वेन सम्बन्धः धर्म इत्यर्थः । कस्य + चित् । किम् + ऊस् । 4. मनुना—कर्त्तरि द्वितीया ।

५. परिकीर्तितः - परि - कृत् - शिच् + क्तः कर्मणि। कृत् संशब्दे इति पुरादिः। कृत् - शिच् तिप् - कीर्तयति। उपधायाश्च इति इत् रपरत्वम् उपधायां च इति दीर्घः। कीर्तयति। अचीकृतत् अचिकीर्तत्। 6. सः - Qualifies सर्व्वः। 7. सर्व्वः - उक्तं कर्म of अभिहितः। 8. अभिहितः - अभि - धा + क्तः कर्मणि। धाव् दधाति धत्ते। दधौ दधे। अधात् अधित। 9. वेदे - अधिकरणे सप्तमी। विद् + घञ्। विदधिच् + अच्। वेत्ति वेद। conjugated. 10. सः refers to मनुः in मनुना। 11. हि - हेतौ। यस्मात् इत्यर्थः। अथ्यधम्। 12. सर्व्वज्ञानमयः - सर्व्वं ज्ञानं or सर्व्वस्य ज्ञानम् सर्व्वज्ञानम्। कर्मधारयः षष्ठी समासो यः। सर्व्वज्ञान + मयट्। ज्ञा + ल्युट् ज्ञानम्। जानाति अज्ञासीत्।

CHANGE OF VOICE. - येन केनचित् धर्म्येण.....परिकीर्तितेन भूयते तेन सर्व्वेण.....अभिहितेन भूयते तेन सर्व्वज्ञेन भूयते ॥ ७ ॥

BENGALI.—मनु যে বর্ণের জন্ত যে ধর্ম নির্দেশ করিয়াছেন, সেই সমস্তই বেদে প্রতিপাদিত আছে; কেমনা মনু সর্ব্বজ্ঞ, তিনি উৎসব, বিকীর্ত্ত ও বিদ্যমান বেদাংশ সকলের অর্থ সম্পূর্ণরূপে অবগত হইয়া লোকের হিতার্থে তাহা স্মৃতির আকারে উপনিবদ্ধ করিয়াছেন ॥ ৭ ॥

ENGLISH.—What so ever duty or *Dharma* was declared by Manu (as binding upon) any one, all that is mentioned in the Veda for he was possessed of all knowledge. ( 7 ).

सर्व्वन्तु समवेक्ष्येदं निखिलं ज्ञानचक्षुषा ।

श्रुतिप्रामाण्यतो विद्वान् स्वधर्मं निविशेत् वै ॥ ८ ॥

PROSE. - विद्वान् तु इदं सर्व्वं ज्ञानचक्षुषा निखिलं समवेक्ष्य श्रुतिप्रामाण्यतः स्वधर्मं निविशेत् वै ॥ ८ ॥

KULLUKA. सर्व्वं त्विति सर्व्वं शास्त्रज्ञातं वेदार्थावगमोचितं मौमांसाव्याकरणादिकं ज्ञानमेव चक्षुसेन निखिलं तद्विशेषेण पथ्यालोच्य वेदप्रामाण्येनानुष्ठेय मवगम्य स्वधर्मं अवतिष्ठेत् ॥ ८ ॥

KULLUKA EXPLAINED. - सर्व्वम् इत्यस्य अभिप्रायमाह शास्त्रज्ञातं शास्त्र समूहमित्यर्थः। ज्ञानचक्षुषा इत्यत्र ज्ञानशब्दस्य अर्थमाह “वेदार्थावगमोचितं मौमांसाव्याकरणादिकम्” वेदार्थस्य अवगमः बोधः तत्र उचितं अर्थात् वेदार्थप्रकटीकरणसमर्थं मौमांसाव्याकरणादिकम् तद्विशेषकं ज्ञानमेव ज्ञानम् तदेव चक्षुसेन। मौमांसाव्याख्येन वेदार्थव्याख्यानपरं पूर्व्वमौमांसाख्यं जैमिनीयदर्शनमनाभिप्रेतं उत्तरमौमांसायाः कर्म-

काख्ये अप्रयोजकत्वात् । व्याकरणं पाणिनीयं एव तस्यैव श्रीमन्माधवाचार्यादिभिः वेदाङ्गत्वेन प्रतिपादितत्वात् वेदार्थज्ञाने पूर्वमीमांसा पाणिनीयं व्याकरणं सवार्तिकभाष्यं प्रधानं साधनम् निरुक्तादयश्च गौण मेव । तस्मादाह मीमांसेत्यादि । “वेद प्रामाण्यतः” इत्यस्यार्थमाह “वेद प्रामाण्येन अनुष्ठेयं ( कर्तव्यं कर्म ) अवगम्य” अर्थात् वेदात् वेदमूलकाश्च शास्त्रात् कस्य वर्णस्य किं कर्तव्यं कर्म इति निश्चित्य । “निविशेत्” इत्यस्य अर्थमाहः “अवतिष्ठेत्” इति । नि पूर्वक विगधातोः प्रवेशोऽपि अर्थः किन्तु अत्र अवस्थानं अनुष्ठानं एव अर्थः । अयं भावः ब्रह्मा हि सृष्टिकाले वेदं दृष्ट्वा तदुक्त-कर्मणः सृष्टिं चकार स्वभावं कर्म च ददौ तेन ब्राह्मणः स्वभावेन धर्मं प्रविष्ट एव । तत्र अवस्थानान्तु तस्य कठिनं रागद्वेषाभ्यां विचलितत्वात् । तत्र अवस्थानार्थं शास्त्रदृष्ट्या यत् कुर्वीत इति कुङ्कुमद्वानां आशयः । अत्र विद्वान् ब्राह्मणः क्षत्रियः वैश्य इति व्यवधिक एव नतु शूद्रः तस्यानधिकारात् । सक्तश्च वशिष्ठेन “एतच्छास्त्रं यच्छूद्रस्तस्मात् शूद्रसमीपे नाध्येतव्यम् । न शूद्राय मतिं दद्यात् नोच्छिष्टं न हविष्कृतम् । न चास्योपदिशेत्तन्मै न चास्यव्रतमादिशेत्” इति । तस्मात् क्षत्रियवैश्यपरम्परया ब्राह्मणात् शूद्रस्य धर्मग्रहणम् ब्राह्मणं पुरस्कृत्य वा शूद्रं प्रत्युपदेशः इति दिक् । तस्माद् विद्वान् सुख्यः वैवर्धिक एव नतु शूद्र उपधाराद् शूद्रोऽपि वा ।

PURPORT. — विद्वान् जनः मनुकृतं शास्त्रं तन्मूलं वेदं च मीमांसाव्याकरणादि शास्त्रपाठजनित ज्ञानेन सम्यक् पर्यालोच्य वेदोक्तप्रमाणेन कर्तव्यं स्थिरीकृत्य स्वधर्मं अवस्थानं कुर्यात् ॥ ८ ॥

MEANING IN ENGLISH. — A learned man after fully scrutinising all the shastras with the eye of knowledge i. e. with the help of Mimamsa, Grammar &c. &c. and after knowing his duty on the authority of the vedas, should be firmly intent on his own duties.

ELUCIDATION. — श्रुतिप्रामाण्यतः — A learned man is to know his duties on the authority of the revealed texts. स्वधर्मं निविशेत् = is to be intent on the performance of his duties = shall not slip from his duties = shall continue to perform his duties. इदम् सर्वम् refers to all the shastras. ज्ञानचक्षुः — ज्ञान here refers to the knowledge of Mimamsa, Grammar &c. which help us in understanding the vedas and the other shastras.

GRAMMATICAL NOTES. — (a) On the text. — १. इदम् — Qualifies सर्वम् । It refers to the text of Manu and such other texts.

2. सर्वम्—सर्वेषु द्वितीया । Acc. of समवेत्य । 3. समवेत्य—सम्—  
अव—ईच् + ल्यप् । ईचने ऐलिष्ट । 4. ज्ञानचक्षुषा—ज्ञायते अनेन इति ज्ञानम् ।  
ज्ञा + ल्यट् करणे । ज्ञानस्य चक्षुः रूपककार्मधारयः । तेन—करणे द्वितीया ।  
5. निखिलम्—नि निवृत्तं खिलं अप्रवृत्तं स्थानं यस्मिन् तद् यथास्यात् तथा बहु-  
व्रीहिः । Adv. added to the verb समवेत्य । 6. श्रुतिप्रामाण्यतः—  
प्रतीयते अनेन इति प्रमाणम् । प्रमाणस्य भावः प्रामाण्याम् श्रुतेः प्रामाण्याम् श्रुति-  
प्रामाण्याम् । श्रुति प्रामाण्या + तस्मिन् द्वितीया स्थाने । प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानमिति  
करणत्वात् द्वितीया । श्रु + क्तिन् = श्रुति । 7. विद्वान्—Nom. to the verb  
निविशत । 8. स्वधर्मः—स्वः धर्मः स्वधर्मः । तस्मिन् । अधिकरणे सप्तमी ।  
9. निविशत—नि—विश् + विधिलिङ् इति । निर्विश इत्यात्मनेपदम् । अविचत ।

CHANGE OF VOICE. — विदुषा.....निविश्यते । ८ ।

BENGALI—विद्वान् व्यक्ति श्रोत्राःमां ओ श्राक्तरादि वेदार्थबोधक शास्त्ररूप ज्ञानेन  
नेजे वेदादि शास्त्रमूलक उक्तमङ्गल पर्यालोचना करत वेदके प्रमाणहले राशिमा कर्तव्य  
निरूपण पूर्वक अर्थ अन्वयन करिबे ॥ ८ ॥

ENGLISH—Having surveyed all this thoroughly with the eye of  
knowledge as in accordance with the authority of the *Śruti* or  
revelation, a learned man should assuredly stick to his own line  
of duty or *Dharma*. ( 8 )

श्रुतिस्मृत्युदितं धर्ममनुतिष्ठन् हि मानवः ।

इह कीर्तिमवाप्नोति प्रेत्यचानुत्तमं सुखम् ॥ ९ ॥

PROSE. — मानवः श्रुतिस्मृत्युदितं धर्मं अनुतिष्ठन् इह कीर्तिं प्रेत्य च अनुत्तमं सुखं  
अवाप्नोति हि ॥ ९ ॥

KULLUKA.—श्रुतिस्मृत्युदितमिति । श्रुतिस्मृत्युदितं धर्ममनुतिष्ठन् मानवः  
इहलोके धार्मिकत्वेनानुषङ्गिकीं कीर्तिं परलोके च धर्मफलमुत्कृष्टं स्वर्गापवर्गादिमुख-  
रूपं प्राप्नोति, अनेन वास्तवगुणकथनेन श्रुतिस्मृत्युदितं धर्ममनुतिष्ठेदिति विधिः  
कल्प्यते ॥ ९ ॥

KULLUKA EXPLAINED. — “परलोके च धर्मफलं उत्कृष्टं स्वर्गापवर्गादि-  
सुखरूपं लभते” ।

“इह” इति पदेन परल यत् भवेत् तदप्युक्तं इति । प्रेत्य शब्दस्य भावार्थमाह  
परलोके इति । अनुत्तम शब्दस्य अर्थमाह उत्कृष्ट इति । सुखशब्दस्य अर्थमाह

धर्मफलं स्वर्गापवर्गादि सुखरूपम् परलोके यत् सुखं तत् धर्मस्य फलम् । तत्फलं वर्णयति स्वर्गश्च अपवर्गः मोक्षश्च तौ यदि यस्य तत् लभते इत्यर्थः । धर्मो हि नाम कर्मविशेषः । कर्मणि कृते सति कर्म नश्यति तस्मात् फलं दातुं न शक्नते । किन्तु कर्मसमकालं एव अपूर्वाख्यं अदृष्टाख्यं वा वस्तु जायते तच्च वीजरूपेण तिष्ठति यथा बीजं सत्तिकावर्षवारिप्रभृतिशोभं प्राप्य अद्विरायते तथा अदृष्टाख्यं बीजनमपि यथाकालं अद्विरायते फलञ्च ददाति । तत् फलं स्वर्गादि । अत उक्तं भट्टैः “धर्मफलं स्वर्गापवर्गादि सुखम्” ।

“अनेन वास्तवगुणकथनेन श्रुतिस्मृत्युद्दिप्तं धर्ममनुतिष्ठेत् इति विधिः कल्प्यते ।”

अनेन पूर्वोक्तेन वास्तवगुणकथनं बलुन अयं वास्तवः यद्यार्थः सत्य इति यावत् वास्तवव्याप्तौ गुणश्च वास्तवगुणः स्वर्गसुखरूपः तस्य कथनेन वर्णनेन श्रुतिस्मृत्युद्दिप्तं वेदाक्तं स्मृत्युक्तञ्च धर्म्यं अनुतिष्ठेत् आचरेत् इति विधिः प्रवर्णना कल्प्यते अनुमीयत अत्र अस्तीति ज्ञायते ।

This sloka describes the benefit arising from the performance of dharma. Kulluka says that these benefits described here are real and not fanciful or imaginary. Therefore we should imagine an injunction in this verse to the effect “A man must practise duties which are enjoined by the vedas and Smritis.” The argument is this :—This treatise is supposed to contain the germs of all injunctions, positive or negative, regarding the performance of dharma. A sloka contains either an injunction ( विधिः ) or praise ( अर्थवादः ) । Injunction is generally given in the form of विधिलिङ् । Here nothing of that nature is found. Here we have only the benefits described. These benefits are real and not mere hyperbolical expressions. An injunction to follow the sacred law of the vedas and the Smritis is not found elsewhere within the four corners of Manu. But such an injunction is necessary, otherwise people will not follow the duties prescribed by the vedas and the Smritis. Kulluka therefore catches hold of this verse and lays down that this is the sloka which lays down such an injunction in a disguised form. Thus we get a desired injunction within the four corners of Manu itself, though not so explicit.

Therefore Kulluka asserts, 'अनेन श्रुतिस्मृत्युद्दिष्टं धर्मं अनुतिष्ठेत् इति विधिः कल्प्यते ।'

अर्थ भावः—श्रुतिस्मृत्युद्दिष्टं धर्मं आचरेत् इति विधिं विना न कोऽपि तं धर्मं आचरिष्यति । स च विधिर्मनुस्मृतादेव प्राप्तव्यः न च स विधि र्विधिलिङ्गसमन्वितः मनुवाक्येषु दृश्यते । अपि च स विधिर्मनुस्मृतौ अस्म्येव, एतद्विधिमूलकत्वात् सर्व-विधीनां । अस्मिन् वचने हि श्रुतिस्मृतिविहितधर्मस्य सत्याः गुणाः वर्ण्यन्ते नान्यतः । तेन च गुणवर्णनेन अर्थवादरूपेण विधिरायाति नतु अर्थवादः अर्थवादिषु स सर्वमायुरेति इत्यादिवत् अतिशयोक्तिमुखेन वर्णनं स्यात्, अतः तु वास्तवगुणोक्तिः तस्मात् अत्र श्रुति-स्मृत्युद्दिष्टं धर्मं आचरेत् इति विधिकल्पना युक्ता । Without such an injunction no one would practise the duties prescribed by the Vedas and the Smritis. Thus we assume that the verse contains an injunction.

The injunction is really essential. Omit this injunction, and the vedic dharma becomes optional. One may then follow the duties enjoined by the Jainas, Boudhas, Charvakas, and other forms of false tenets with impunity. The injunction has also great value as contributing to the suppression of vices practised under the so-called authorities of a number of Tantras, prohibited by the sacred laws of the Vedas and the Smritis.

After indicating a number of Tantras as calculated to confound the people, Raghunandan the great Professor of Law in Bengal lays down :—

“तस्मात् श्रुतिस्मृतिविरुद्धे वर्तमानि पदानि पदमपि न दातव्यम्”

Therefore the ways prohibited by the Vedas and Smritis should never be trodden, even a single step.

A tradition of a great struggle between the followers of the sacred law, and those of the Tantras is handed down to us in the shape of a story of a quarrel between दक्ष, भृगु, ब्रह्मा, विष्णु and शिव on the one side, and Siva with his demons on the other side.

It is well known that Vishnu is the deity of the Vedas, Brahma is the real author of Dharmasastras communicated to Manu who taught them to his ten sons दक्ष, धनु &c. &c. We have in Bhagabat that when Brahma commenced a sacrifice, Bhrigu the reciter of Manava Sastra, and Daksha with other Vedics opposed the invitation of Siva. The quarrel was a temporary one. But the struggle was the fiercest when Daksha one of the ten sons of Manu the law-giver, declined to invite his son-in-law Siva the promulgator of anti-vedic rites. The Tantriks have woven this tradition into an effective pro-tantrik story full of pathos. A battle was fought on the sacrificial field of Daksha, adherents of the vedic rites were defeated and Mahadeva fighting at the head of his demons got the victory. It seems there was somewhat like a compromise ; but the orthodox vediks will not yet accept the compromise. The injunction contained in the verse is therefore essentially necessary. We shall discuss the different sorts of injunctions later on.

PURPORT. — मनुष्यः यदि श्रुतिस्मृतिविहितं धर्ममाचरेत् इदलोकं ययः परलोकं स्वर्गं मोक्षं वा लभेत । तस्मात् श्रुतिस्मृत्युक्तं धर्मं आचरेत् ॥ २ ॥

MEANING IN ENGLISH. — A man who practises the duties prescribed by the Vedas and the Smritis gains fame in this world and after death unsurpassable bliss in the shape of celestial enjoyment or final liberation. (Therefore every one should follow the system of duties prescribed by the Vedas and the Smritis.)

ELUCIDATION. — श्रुति and स्मृति have been defined in the next sloka.

GRAMMATICAL NOTES. (a) On the text. — 1. श्रुतिस्मृत्युदितम्—श्रुतिश्च स्मृतिश्च श्रुतिस्मृतौ । इन्श्च समासः । ताभ्यां उदितः श्रुतिस्मृत्युदितः द्वितीया समासः । तम् । Qualifies धर्मम् । श्रूयते इति श्रुतिः स्मर्यते इति स्मृतिः । श्रु + क्तिन् ; स्मृ + क्तिन् । श्रूयति श्रुत्या च श्रूयते । स्मरति स्मृत्या च स्मरते । वद + क्तः कर्मणि उदितम् । वदति उवाच अवादीत् । 2. धर्मम्—कर्मणि

द्वितीया । Acc. of अनुतिष्ठन् । 3. अनुतिष्ठन्—अनु-स्था+ञ् । तिष्ठति तस्मै चत्वात् । 4. हि-निश्चये । अव्ययम् । 5. मानवः—मनोरपत्यं पुमान् मानवः । मनु+अच् । मानवः । मनोरपत्यं पुमान् कृतसितो मूर्खो मायव इति मूर्खः । अपत्ये कृतसिते मूर्खे मनो रौतसर्गिकः श्रुतः । नकारस्य च मूर्ख्या खेन सिध्यति मानव इति तत्त्वबोधिन्याम् । जात्यर्थे तु मनोजातावज्यतो पुक् चेति मनोरज्यं पुक् मानवः मनोर्यत् पुक् च मनुष्य इति जातिः । 6. इह-इदम्+इ । 7. कौर्त्तिम्—कृत्+क्तिन् । कौर्त्तयति । Conjugated. 8. अवाप्नोति—अव—आप् लट् ति । आप । आपन् । आप्त् इति लृ दित्वात् अङ् । 9. भेत्त—भ-इ+ल्यप् । १ति । अगात् । 10. अनुत्तमम्—न विद्यते उत्तमं यस्मात् तत् अनुत्तमम् । 11. सुखम्—सुखयतीति सुखम् । सुख+अच् । सुखदुःखं तत् क्रियायामिति ।

CHANGE OF VOICE. — अनुतिष्ठता.....मानवेन.....कौर्त्तिः.....सुखं अवाप्नोति ॥ २ ॥

BENGALI.—मनुष्य अतिश्रुति द्वारा कथित धर्म अमूर्छन करिब ऐहलोके धार्मिक बलिवा थातिनाउ करे अब पुरलोके धर्माचरणेन कलशरूप वर्ग ও অপবर्গাদি মর্কোৎকৃষ্ট স্থখলাভ করে । অতএব অতি ও শ্রুতিবিরহিত ধর্ম আচরণ করিবে । ২ ।

ENGLISH.—A man practising or following the duty or *Dharma* spoken of in the Vedas and the *Smritis* (or tradition) obtains fame here, and supreme happiness or bliss after death. (9).

श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रन्तु वै स्मृतिः ।

ते सर्वार्थेष्वमीमांस्ये ताभ्यां धर्मां हि निर्व्वभौ ॥ १० ॥

PROSE. — श्रुतिस्तु वेदः विज्ञेयः धर्मशास्त्रं तु स्मृतिः ( विज्ञेया ) वै । सर्वेषु अर्थेषु ते अमीमांस्ये, हि ताभ्यां धर्मां निर्व्वभौ ॥ १० ॥

KULLUKA — श्रुतिस्त्विति लोकाप्रसिद्धसंज्ञासम्बन्धानुवादोऽयं श्रुतिश्रुत्योः प्रतिकूल-तर्कैश्च अमीमांस्यत्वविधानार्थम् । स्मृतः श्रुतितुल्यत्वबोधनेनाचारादिभ्यो बलवत्त्व-प्रतिपादनार्थश्च तेन स्मृतिविरुद्धाचारो ह्येव इत्यस्य फलम् । श्रुति वेदः, मन्वादिशास्त्रं स्मृतिः, ते उभे प्रतिकूलतर्कैर्न विचारयितव्ये यतस्ताभ्यां निःशेषेण धर्मो बभौ प्रकाशता यतः ॥ १० ॥

KULLUKA EXPLAINED. — “लोकाप्रसिद्धसंज्ञासंज्ञिसम्बन्धानुवादोऽयं श्रुति-श्रुत्योः प्रतिकूलतर्कैश्च अमीमांस्यत्वविधानार्थं, स्मृतः श्रुतितुल्य बलवत्त्वविधानेन आचारा-दिभ्यो बलवत्त्व प्रतिपादनार्थश्च, तेन स्मृतिविरुद्धाचारो ह्येव इत्यस्य फलम् ।”



लोकप्रसिद्धसंज्ञासंज्ञिसम्बन्धानुवादः लोके प्रसिद्धः लोकप्रसिद्धः यो संज्ञासंज्ञि-  
सम्बन्धः संज्ञा यथाऽव श्रुतिः स्मृतिश्च, संज्ञौ यथाऽव वेदः धर्मशास्त्रश्च, वेदरूपसंज्ञिनः  
श्रुतिरूपा संज्ञा । संज्ञा च श्रुतिरूपा संज्ञौ वेदरूपः तयोः सम्बन्धः संज्ञासंज्ञिसम्बन्धः  
प्रतिपाद्यप्रतिपादकसम्बन्धः लोकप्रसिद्धासौ संज्ञासंज्ञिसम्बन्धश्च लोकप्रसिद्धसंज्ञा-  
संज्ञिसम्बन्धः तस्य अनुवादः प्रमाणान्तरेण ज्ञातस्य बोधकः वादः अनुवादः यदि  
प्रथमाध्याये अन्यत्र वा वेद एव श्रुतिरिति विधिः प्राप्यते पुनश्च यत्र वेद एव श्रुतिरिति  
कथ्यते तदा स विधिरिति न कथ्यते किन्तु अनुवादशब्देन कथ्यते । लोकतः श्रुतिर्वेद  
इति ज्ञातम् । तस्यार्थस्य अत्र अनुवदनात् श्रुतिर्वेदः धर्मशास्त्रं स्मृतिरिति वचनं ज्ञातस्य  
अनुवादमात्रं न विधिः । तथाविधसम्बन्धानुवादः अयं कथं क्रियते ? उत्तरमाहुः ।  
कुल्लूकभट्टाः श्रुतिस्मृत्योः प्रतिकूलतर्केण विरुद्धतर्केण अभीमांस्तत्त्वविधानार्थं अवितर्क-  
नीयत्वस्थापनार्थम् । अर्थात् श्रुतिर्यतः स्वयं वेदः स्मृतिर्यतः वेदोक्तधर्मविषयक-  
स्वरूपमात्रं तस्मान् श्रुतिः स्मृतिश्च न वितर्कविषयीभूता इति विधिः । स्मृतिः श्रुति-  
तुल्यत्वबोधनेन स्मृतेः स्मृतिशान्त्रस्य श्रुतितुल्यत्वबोधनेन श्रुतेस्तुल्या श्रुतितुल्या तस्या भावः  
श्रुतितुल्यत्वम् तस्य बोधनेन ज्ञापनेन । धर्मो हि वेदमूलक इत्युक्तम् । धर्मविषयकं  
शास्त्रं मन्वादिकृतं स्मृतिः । अत्र इति कथनात् मुनिभिः स्मृतस्य वेदार्थविसरस्यैव  
स्मृतिसंज्ञात्वात् स्मृतेर्वेदतुल्यत्वं आघातमिति कुल्लूकाशयः । स्मृतेर्वेदतुल्यत्वबोधनेन  
आचारादिभ्यः देशाचारकुलाचारादिभ्यः स्मृतेर्वलवत्त्वप्रतिपादनार्थं आचारात् स्मृतिर्वलौघ-  
सौति विधानार्थम् अनुवादः कृतः । तत्र फलमाह स्मृतिविरुद्धाचारी ह्येव इति फलम् ।  
स्मृतिशास्त्रविरुद्धो य आचारी यथा दाक्षिणात्येषु मातुलकस्याविवाहः तथाभूत आचारः  
स्मृतिविरुद्धत्वात् ह्येवः परित्याज्यः ।

अभीमांस्त्य इत्यस्य अर्थमाह प्रतिकूलतर्केन विचारयितव्ये । धर्मो हि निर्वभौ इत्यस्य  
अर्थमाह निःशेषेण प्रकाशता गत इति ।

अयं भावः — अस्मिन् श्लोके श्रुतिस्मृतिरूपयोः संज्ञयोः वेद-धर्मशास्त्ररूपसंज्ञिभ्यां  
सम्बन्धः अनुवादत्वेन उक्तः । तत् किमर्थं कृतम् इत्यस्य उत्तरमाह श्रुतिस्मृत्योरवितर्क-  
नीयत्वस्थापनार्थं, स्मृतेश्च देशाचारादिभ्यः वलौघस्तप्रकटनार्थम् । कथं स्मृतिदेशाचारात्  
वलवत्तरा भविष्यति ? ननु तस्या वेदतुल्यत्वात् कथं वेदतुल्यत्वम् ? ननु धर्मशास्त्र-  
त्वात्, धर्मो हि वेदमूलकः धर्मशास्त्रं हि वेदार्थस्य स्मृतस्य विसरमात्रम् । वेदविदां  
शास्त्रं गण्डलिकाप्रवाहवत् प्रवर्तितात् आचारात् वलवत् अवेदशमूलकत्वात् ।

PURPORT. — वेद एव श्रुतिः मन्वादुक्तं धर्मशास्त्रं स्मृतिः । श्रुतिः स्मृतिश्च न  
कस्मिन्नपि विषये नास्ति कादीनां विरुद्धतर्कस्य विषयीभूता, यतः श्रुतिस्मृतिभ्यां एव धर्मः  
निः शेषेण प्रकाशता गतः । अर्थात् श्रुतिः स्मृतिश्च न प्रमार्थं इत्यादि तर्कं न कुर्वीत  
स्मृतेर्विरुद्धं देशाचारादिकञ्च परित्यज्येत् ॥ १० ॥

ENGLISH MEANING.—By Sruti is meant the Veda, and by Smṛiti is meant the institutes of sacred law : these two must not be called into question, since from those two the sacred law shone forth fully.

GRAMMATICAL NOTES. — (a) On the text :—1. वेदः—Derived. It is अनुवादः श्रुतिः is विधेयः । 2. श्रुतिः—विधेयविशेषणम् of वेदः । 3. स्मृतिः—विधेय विशेषणम् of धर्मशास्त्रम् । 4. विज्ञेयः—वि-ज्ञा+यत् । जानाति अज्ञासौत् । 5. धर्मशास्त्रम्—धर्मस्य शास्त्रम् षष्ठी समासः । शास्त्रं इत्थं शास्त्रम् । 6. ते—उक्तं कर्म्यं of अमीमांसे । 7. सर्वार्थेषु—सर्वे अर्थाः सर्वार्थाः कर्मधारयः । तेषु । विषयाधारे मन्त्रौ । 8. अमीमांसे—मान् जिज्ञासायाम् । स्वार्थे सन् + यत् । Qualifies ते । मान् जिज्ञासायाम् (विचारि इत्यर्थः) भ्वादि गणौयमान्धातुः स्वार्थेऽनन्तं लट् मीमांसते । मान् सन् ; समान्स मिसान्स । मीमांस । लट् ते मीमांसते । It is स्वार्थेऽनन्तं hence it assumes सन् again इच्छार्थे—मीमांसिषते । We have चुरादिमान् स्वार्थे मानयते । मान् पूजने मानयति मानति । But मान जिज्ञासायां भ्वादि is always मीमांसते not मानति or मानते । मीमांसने विचारयति जिज्ञासतेत्यर्थः । 9. ताभ्याम् अपादानात् पञ्चमी । 10. धर्मः—Nom. to निर्वर्तौ । 11. निर्वर्तौ—निर्-भा लिट् णल् । अभ्यासौत् ।

(b) On Kulluka.

ELUCIDATION. — अमीमांसे means अविचारणीये । आज्ञा गुरुणा अविचारणीया इति कालिदासः । इयं श्रुतिः स्मृतिश्च प्रमाणं न वेति विचारणीया न भवति स्वतः प्रमाणत्वात् ।

The whole system of dharma is based on the authority of the Vedas and the Smṛitis. If they are allowed to be questioned, the whole system falls to the ground. It is therefore specially provided here that no system of logic calculated to question the authority of the Vedas can be entertained. The object of the Boudha, Jaina and Charvak philosophical systems is to undermine the authority of the Vedas and Smṛitis, by calling them into question. Bhrigu here lays down that such a system of heretic logic is not to be applied to the Vedas and

Smritis. The primary object of logic is to support by logical arguments the authority of the Vedas and Smritis, so that *dharma* may be preserved. Therefore any system not subservient to the Vedas and *dharma*s is to be totally excluded. The real argument is that human argument cannot prevail against the revelation, which must be judged by orthodox system of logic in loyalty to revelation. The principal argument of Sankaracharya in support of his system is that his is a system founded on the revelation, and not on human reasoning or logic. He says that argument always shifts ground, what is established by the argument of one is demolished by a subsequent intelligent man. Therefore a religion based on mere argument is no religion at all. There can be no faith in it. But religion founded on immutable truths revealed by God in the Vedas is unchangeable. Therefore we are to rely on a system of religion founded on the authority of the Vedas. It is held that the six philosophies are mere six concentric ditches to defend the system of vedic faith. Therefore it is the first duty of the sacred law-giver to oust the jurisdiction of heresy and heretic system of logic from the sphere of *vedic dharma*.

*Change of voice.*—শ্রুত্বা বিদ্বান বিজ্ঞেয়ান ধর্মশাস্ত্রাণি শ্রুত্বা মুখ্যতঃ ।  
নাম্যামান্যামান্য—মুখ্যতঃ । ধর্মশাস্ত্রাণি—নির্বচনং ॥ ১০ ॥

BENGALI.—লোকতঃ বেদকে শ্রুতি এবং মহাদিশ্রোত ধর্মশাস্ত্রকে স্মৃতি বলে ; প্রতিকূল তর্কদ্বারা এই দুইটিকে বীমাংসার বিষমীভূত করিবে না ; অর্থাৎ তর্ক দ্বারা এই দুইটিকে অপ্রমাণ করিবার যত্ন করিবে না ; কেননা ঐ দুইটি হইতেই সমস্ত ধর্ম নিঃশেষরূপে প্রকাশ পাইয়াছে । স্মৃতি ধর্মশাস্ত্র হওয়ার উহা বেদতুল্য ; স্মৃতিবিরুদ্ধ আচার পরিত্যাগ করিবে ॥ ১০ ॥

ENGLISH—The Veda is to be known as revelation, and the Codes of law (*Dharma-sastra*) as *Smriti* or tradition. In all matters these two are not to be questioned or discussed. For the system of duty or *Dharma* has been set forth by these two. ( 10 )

योऽवमन्येत ते मूले हेतुशास्त्राश्रयाद्विजः ।

स साधुभिर्वह्निष्कार्यो नास्तिको वेदनिन्दकः ॥ ११ ॥

PROSE—यः विजः हेतुशास्त्राश्रयात् ते मूले अवमन्येत स वेदनिन्दकः नास्तिकः साधुभिः वह्निष्कार्यः ॥ ११ ॥

KULLUKA.—योऽवमन्येतेति । यः पुनश्च वे श्रुतिस्मृतौ विजोऽवमन्येत स शिष्टैर्विज्ञानुष्ठेयाध्ययनादिकर्मणो निःसार्यः । पूर्वश्लोके सामान्येनाभीमांसे इति भीमांसा-निर्घघादनुकूलभीमांसापि न प्रवर्तनीयेति भभो मा भूदिति विशेषयति हेतुशास्त्राश्रयात् वेदवाक्यमप्रमाणं वाक्यत्वात् विप्रलम्बकवाक्यवदित्यादि प्रतिकूलतर्कावष्टम्भेन चार्वाकादि-नास्तिक इव नास्तिको यतो वेदनिन्दकः ॥ ११ ॥

KULLUKA EXPLAINED.—साधुभिः इत्यस्य अर्थमाहुः शिष्टैरिति । Kulluka explains साधुभिः as शिष्टैः । शिष्टः does not mean a well-behaved man. It is used in the sense of learned in the Vedas. In explaining the aphorism शिष्टापरिवृद्धाद्यान्यत्र मनपेक्षा Sankar explains शिष्टा वेदविदः मनुव्यासप्रभृतयः । This is the real meaning. वह्निष्कार्यः is to be turned out or cast out ; and from what ? Kulluka explains विज्ञानुष्ठेयाध्ययनादिकर्मणो निःसार्यः from the proper duties of the twice-born such as reading the Vedas and such other works.

“पूर्वश्लोके सामान्येन अभीमांसे इति भीमांसानिर्घघात् अनुकूलभीमांसापि न प्रवर्तनीयेति भभो माभूदिति विशेषयति हेतुशास्त्राश्रयात् ।”

In the previous sloka a general prohibition as to the application of logical system has been laid down by the words “न भीमांसे” । From that one may infer that the application of even the orthodox system of logic has been prohibited. In order to remove mistakes like this, this verse uses the compound हेतु-शास्त्राश्रयात् i. e. application of anti-vedic system of logic is only prohibited.

In what way do the atheists denounce the Vedas ? This argument is put in the syllogistic form of Hindu logic. “वेदावाक्यं अप्रमाणं वाक्यत्वात् विप्रलम्बकवाक्यवत् इति” अर्थात् वाक्यं अप्रमाणम् । वेदवाक्यम् तस्मात् वेदा अप्रमाणम् । यथा विप्रलम्बकाणां प्रवचकानां वाक्यम् सिध्दत्वात् अप्रमाणम् । “प्रतिकूलतर्कावष्टम्भेन” प्रतिकूलस्य विरुद्धस्य तर्कस्य अवष्टम्भः उत्थापनम् तेन ।

“चार्वाकादि नास्तिकः इव नास्तिकः यतो वेदनिन्दकः” चार्वाका हि नास्तिकाः नास्ति परलोका इति कथनात् । वेदनिन्दकाः अपि चार्वाकसदृशत्वात् नास्तिकाः ।

The way in which the Vedas were attacked by the Charvakas is thus shown in the Vishnupurana—

“अन्धानप्यन्यपाषण्डप्रकारैर्वहुभिर्हिज ।

देतेयान् मोहयामास मायामोहोऽति मोहकृत् ॥” (१)

The arguments of the Charvakas are reproduced : —

केचिद्विनिन्दन् वेदानां देवानामपरे हिज ।

यज्ञकर्मकलापस्य तथा न्येच हिजन्मनाम् ।

नैतद् युक्तिसहं वाक्यं हिंसा धर्माग्र नेष्यते ।

हवीष्यन्लदग्धानि फलायेत्यर्भकोदितम् ॥

यज्ञैरनेकैर्देवत्वमवाप्येन्द्रेण भुज्यते ।

शय्यादि यदि चेत् काष्ठं तद्वरं पवभुक् पशुः ॥

निष्ठुतस्य पशोर्यज्ञे स्वर्गप्राप्तिर्यदेष्यते ।

स्वपिता यजमानेन किञ्च तस्मान्न हन्यते ॥

दत्तये जायते पुंसो मुक्तमन्येन चेत् ततः ।

दद्यात् शार्ङ्गं शङ्खयाऽन्नं न वहेयुः प्रवासिनः ॥

जनश्लेष्मिल्येतत् अश्वगम्य ततो वचः ।

उपेत्य श्रेयसे वाक्यं रोचतां यन्मघेरितम् ॥

न ह्याप्तवादा नभसो निपतन्ति महासुराः ।

युक्तिमश्चर्जनं याज्ञं मथान्येव भवद्विधैः ।

मायामोहेन ते दैत्याः प्रकारैर्वहुभि र्नाथा ।

व्युत्थापिता यथा नैषां चर्या कश्चिदरोचयत् ॥

स्वल्पेनैव हि कालेन मायामोहेन तेऽसुराः ।

मोहितास्तत्पुत्रः सर्वान् वयोमार्गाग्रितां कथाम् ॥

At a remote period, a very large number of Daityas collected themselves on the bank of the Narmada and were performing various Vedic rites. By virtue of these rites they became more powerful than the gods and began to oppress the world. The gods unable to endure their tyranny

(१) “अन्यपाषण्डप्रकारैर्लौकायतिकमतभेदैः (स्वामी) । लौकायतिक = चार्वाक ।

went to Vishnu, the Supreme deity, and worshipped him. The great god was pleased and produced a great being from his own body, and gave him the name of Máyámoha, and asked the gods to depart and have no fear.

Máyámoha a form of Vishnu himself, appeared to the Daityas on the bank of the Narmada, quite naked, with head shaven clean, with peacock's feathers in his hand ; he was so resplendent with glory that all the Daityas surrounded him in awe. Then Máyámoha began to confound them by various arguments. He said :—

The injunctions of the Vedas are unreasonable. Slaying (of living creatures) never leads to the path of virtue. (*i. e.* sacrifice is no dharma). To say that clarified butter burnt in the fire produces merits is simply childish. It is better to be a beast eating soft leaves of trees, than to be Indra after performing a hundred sacrifices and eat dry wood called Sami. If a beast killed in a sacrifice goes to heaven, why does not the performer of the sacrifice kill his own father that he may reach heaven easily ? If feeding of soma (as during the time of sradh) can appease the hunger of another (*i. e.* of the dead man), then travellers could do without carrying any provision with them, their sons performing sradh at home all the while. Therefore know and accept what I say, as it is reasonable and fit for being believed. You great giants, have you seen the vedas ever falling from heaven, that you accept them as authorities ? What is reasonable must be accepted by myself, you and all alike. (Reject these deceptions called the vedas). Thus the Daityas were seduced from the path of the Vedas by various arguments, so much so that not a single Daitya liked the Vedas any more. Thus within a short time the Daityas gave up all connection with vedic path, through the influence of Máyámoha, the deity.

It is stated in the same puran that it was Mâyámoha who promulgated the Buddhist and Jaina doctrines at the very beginning. Gautam Buddha was only a recent preacher of the doctrine of Mâyámoha. The logical systems of Buddha, Jaina, and Charvak are all anti-vedic accordingly. They must not be applied to the Vedas and the Smritis. Only the orthodox systems such as the six philosophies should be applied.

PURPORT.—यो द्विजः बौद्धचार्वाकादिनास्तिकानां वेदविरुद्धतर्कशास्त्रावलम्ब-  
नेन धर्मस्य मूलभूते युतिस्मृतौ अवमानयेत् सः वेदविद्वद्भिः द्विजोचित वेदाध्ययन-यागादि  
कर्मभ्यो बहिष्कार्यः यतः स वेदनिन्दनात् हेतोः चार्वाक बौद्धादिवत् नास्तिक एव ।  
नास्तिकस्य परलोकफलकेषु कर्मसु अनधिकारात् ॥ ११ ॥

MEANING IN ENGLISH.—A twice-born man who relying on the anti-vedic systems of logic ( or method of reasoning directed against the vedas ) treats with contempt those two sources of *dharma* should be deprived of his rights to read the vedas and to perform such other duties which a twice-born man has right to do ; because being a scorner of the vedas he becomes an atheist like the followers of Charvak.

GRAMMATICAL NOTES. (a) On the text. 1. यः यद् + सु qualifies द्विजः । 2. अवमन्येत अव + मन् लिङ् ईत governs मूले । मन्यते मेने अमंस । 3. ते qualifies मूले । 4. द्विजः द्विजायते इति द्विजः । उपपद समासः । द्वि—जन + ड । Nominative to अवमन्यते । 5. हेतुशास्त्राश्रयात् हेतोः शास्त्रम् हेतुशास्त्रम् षष्ठीसमासः । तस्य आश्रयः हेतुशास्त्राश्रयः षष्ठीसमासः । तस्यात् हेतुशास्त्राश्रयात् । हेतौ पञ्चमी । द्वि + तुक् हेतु । शास + ण् शास्त्रम् । आङ् + त्रि + भच् आश्रय । श्रयति श्रयते शिष्याय शिष्ये भ्रजिष्यितुं भ्रजिष्यित । 6. सः accusative of बहिष्कार्यः । 7. साधुभिः कर्तेरि दत्तौया । 8. बहिष्कार्यः बहिस्—ङ् + ण्यत् कर्मणि । षड्ढलोकात् इति षात् । 9. नास्तिकः adjective qualifies सः । न अस्ति नास्ति इत्येकं पदम् । नास्तीतिमतिर्यस्य स नास्तिकः । नास्तिक + ठक् । By अस्तिनास्तिदिष्टं मतिः । अस्ति परलोकः इत्थं मतिर्यस्य स नास्तिकः । दिष्टम् इति मतिर्यस्य स दैष्टिकः । 10. वेदनिन्दकः adjective qualifies सः । निन्दति इति निन्दकः वेदस्य निन्दकः इति वेदनिन्दकः

वहो समासः । निन्द + क्तुल् निन्दकः हिंसकः खादकः इत्यादि । निन्दति निनिन्द भनिन्दीत् ।

*Change of voice.*—येन हिजेन ते मूले अवमन्येयाताम् तेन नास्तिकेन वेद-  
निन्दकेन वहिष्यार्थेण भूयते ॥ ११ ॥

BENGALI.—ये विज वेदविरुद्ध लोकाचार्याकादि यथावलम्बी तर्क आश्रय करिषा  
धर्मैर मूलस्वरूप श्रुति ओ स्मृतिके अवज्ञा करे, अर्थात् ओ छुई नास्त, अतीतरक नास्तिर  
उक्तिर आश्रय अश्रमां एरण बले, येनछ वास्तिगण चार्मीकबन् सेई वेदनिन्दक नास्तिकके  
विजातिर असूछेय वेदाधारनादि कर्ष इहेते वहिष्कृत करिषा दिबेन ॥ ११ ॥

ENGLISH.—A twice-born, who, from adherence to heretical  
works questioning the authority of the *Vedas* and *Smritis*, may  
despise these two sources (*of dharma*), should be, (as) an infidel  
blamer of the *Vedas*, turned out by the good. (11).

वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः ।

एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्भर्मस्य लक्षणम् ॥ १२ ॥

PROSE.—वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य आत्मनश्च प्रियम् एतच्चतुर्विधं धर्मस्य ।  
साक्षात् लक्षणं प्राहुः (मन्वादयः) ॥ १२ ॥

KULLUKA.—इदानीं शीलस्याचार एवान्तर्भावसम्भवात् वेदमूलता एव तन्म न  
स्मृतिशीलादिप्रकारनियम इति दर्शयितुं चतुर्धा धर्मप्रमाणमाह वेद इति । वेदो धर्मो  
प्रमाणं । स क्वचित् प्रत्यक्षः क्वचित् स्मृत्याद्यनुमित इत्येवं तात्पर्यं न तु प्रमाणपरिगणने,  
अतएव श्रुतिस्मृतादितं धर्ममित्यत्र द्वयमेवाभिहितवान् । सदाचारः शिष्टाचारः स्वस्य  
आत्मनः प्रियम् आत्मतुष्टिः ॥ १२ ॥

KULLUKA EXPLAINED.—“इदानीं शीलस्याचार एव अन्तर्भावसम्भवात्  
वेदमूलता एव तन्म न स्मृतिशीलादिप्रकारनियम इति दर्शयितुं चतुर्धा धर्मप्रमाणमाह  
वेद इति ।” इदानीं सम्प्रति शीलस्य हारीतोक्त त्रयोदशविधशीलस्य आचारे सदाचारे  
अन्तर्भावसम्भवात् अन्तर्भावः अन्तर्गतिः अन्तःपतितत्वं तस्य सम्भवात् वेदमूलता वेद एव  
मूलं यस्य स वेदमूलः तस्य भावः वेदमूलता सा एव तन्म प्रधानं शास्त्रार्थ इति वा । न  
स्मृतिशीलादिप्रकारनियमः स्मृतिशीलसदाचारात्मतुष्टिरूपनियमकरणम् इति दर्शयितुम्  
अर्थात् वेदोऽखिलः धर्ममूलमिति श्लोके धर्मस्य वेदमूलताप्रदर्शनमेव लक्ष्यं स्मृति-  
शीलसदाचारात्मतुष्टिरूपमूलपरिगणनं न लक्ष्यं तस्मात् तत्र पञ्चविधत्वं अथ चतुर्विधत्वं  
न विरुद्धं वेदस्य मुख्यप्रमाणत्वात् अन्येषां वेदमूलत्वेन प्रामाण्यात् चतुर्विधत्वपञ्चविधत्व-



दिक्कथनं चानुषङ्गिकमात्रम् । स्मृत्यादीनां गौणत्वं वेदस्य मुख्यप्रमाणत्वं दर्शयितुं  
पूर्वं पाञ्चविध्यं उक्त्वा अत्र चातुर्विध्यमुक्तम् । नियमः नियमनम् निरोधः ।

“वेदो धर्मो प्रमाणम् । स कश्चित्प्रत्यक्षः कश्चित् स्मृत्याद्यनुमितः इत्येवं तात्पर्यं  
ननु प्रमाणपरिगणने, अतएव श्रुतिस्मृत्युदितं धर्ममित्यत्र द्वयमेवाभिहितवान् ।”

स्पष्टव्याख्यानं कुरुते वेदो धर्मो प्रमाणम् मुख्यं अन्यत् तु स्मृत्यादि गौणमित्यर्थः ।  
सः वेदः कश्चित् कुत्रचित् प्रत्यक्षः साक्षात् वेदमहिताग्राह्यादियस्येषु पश्यते ततो-  
ज्ञायते । कश्चित् स्मृत्याद्यनुमितः स्मृतिशैलसदाचारात्मतुष्टिभिः अनुमितः अप्रत्यक्षः  
वेदः धर्मस्य मूलम् । ननु प्रमाणपरिगणने प्रमाणाणां परिगणनं संख्याकथनं तस्मिन्  
न तात्पर्यम् । अतएव श्रुतिस्मृत्युदितं धर्म इत्यत्र अर्थात् श्रुतिस्मृत्युदित धर्मो  
अनुतिष्ठन् हि मानवः इत्यस्मिन् श्लोके द्वयं प्रमाणद्वयं श्रुतिस्मृतिरूपं अभिहितं ननु  
श्रुतिस्मृतिशैल-सदाचारात्मतुष्टिरूपं पञ्चतयं चतुष्टयं वा उक्तम् । अर्थात् धर्मस्य  
प्रमाणं कश्चित् द्विविधं कश्चित् पञ्चविधं कश्चित् चतुर्विधं उक्तम् । अनेन एतावत्  
बुध्यते यत् वेद एव मूलं प्रमाणं अन्यत् तु तन्मूलत्वात् चानुषङ्गिकं प्रमाणं तस्मात् प्रमाणं  
द्विविधं पञ्चविधं चतुर्विधं वा इति न नियमः किन्तु वेद एव मुख्यं एकं प्रमाणमित्य-  
भिप्रायः । “स्मृत्याद्यनुमितः” यो विधिः स्मृतिशास्त्रे दृश्यते किन्तु प्रचलितेषु वेदेषु न  
दृश्यते स बहुशास्त्राभिन्ने अनन्ते वेदवाक्ये अवश्यमेवास्ति स्मृतेर्वेदमूलत्वात् । अनेन  
प्रकारेण स्मृतिद्वारा वेदवाक्यस्य अनुमानं भवति । यथा अयं स्मृत्युक्तविधिः वेदे अस्ति  
वेदमूलत्वात् स्मृतेः पठ्यमानवेदसाधारणस्मृतिवचनवत् । सदाचारशब्दं व्याचष्टे  
शिष्टाचार इति स्वस्वचात्मनः प्रियम् इति व्याचष्टे आत्मतुष्टिरिति ।

PURPORT.—वेद एव धर्मस्य साक्षात् प्रमाणम् । स्मृतिसदाचारात्मतुष्टि-  
रूपाणि यानि प्रमाणानि कथ्यन्ते तान्यपि वेदमूलकानि । तै वेदः कश्चित् कश्चित्  
अनुमाय प्रमाणत्वेन गृह्यते सुतरां स्मृत्यादीनां स्वतन्त्रं प्रमाणं नास्ति । यथा वेद  
एकं प्रमाणं तथा स्मृतिसदाचारात्मतुष्टयश्च प्रमाणानि तेषां संख्या अत्र कथ्यते इति  
न मन्यम् ॥ १२ ॥

MEANING IN ENGLISH.—The scripture, the codes com-  
piled by the sages, usage approved by the learned in the vedas,  
and self-satisfaction in the case of optional injunction—these  
the wise have declared to be the four-fold authority in the  
matter of practice of dharma. But it is to be borne in mind  
that each of these is not an independent authority and the  
sloka does not attempt at an enumeration of authorities. Because  
the scripture is the only authority ; it is found directly in the

vedic compilations, as well as inferred from the Smritis and Purans. It is for this reason that authorities have been enumerated by Manu as two, four and five in number which seems apparently inconsistent.

GRAMMATICAL NOTES.—1. वेदः । 2. स्मृतिः । Same case with सदाचारः । 3. सदाचारः—सतां शिष्टानां वेदज्ञानां आचारः सदाचारः षष्ठी समासः । अस + शब्द । आङ्—चर + घञ् । आचार आचारोत् । 4. आत्मनः—श्रीषे षष्ठी । 5. स्वस्व—Qualifies आत्मनः । 6. प्रियम्—Same case with सदाचारः &c. &c. प्रीणातीति प्रियम् । प्री + क । अप्रीषीत् अप्रेष्ट । 7. च—अव्ययम् । 8. एतत्—एतत् + सुप् refers to लक्षणम् । 9. चतुर्विधम्—चतस्रः विधाः प्रकाराः यस्य तत् चतुर्विधम् । वि-धा + ञङ् । 10. धर्मस्य—श्रीषे षष्ठी । 11. लक्षणम्—लक्ष्यते अनेन इति लक्षणम् । लक्ष + ल्युट् । लक्षणं द्विविधं स्वरूपं तटस्थञ्च । यतो भूतानि जायन्ते तद् ब्रह्म इति तटस्थलक्षणम् (Definition). सत्त्वं ज्ञानमननं ब्रह्म इति स्वरूपलक्षणम् (Description). Here लक्षणं means प्रमाणम् । 12. साक्षात्—अव्ययम् । Some derive it as सङ्—अच—अत + क्तिप् । 13. प्राहुः—Nom. मन्वादयः understood.

Change of voice.—...वेदेन स्मृत्या सदाचारेण...प्रियेण भूयते । एतच्चतुर्विधं ...लक्षणं लक्ष्यते ॥ १२ ॥

BENGALI.—वेद, स्मृति, सदाचार ও আচর্য্যই এই চারিটি ধর্মের সাক্ষ্য অর্থাৎ বলিয়া যন্ম প্রভৃতি শাস্ত্রকারগণ নির্দেশ করিয়া গিয়াছেন । (ইহাদের মধ্যে ও বেদই মূল অর্থাৎ, তাহা কোন জলে বেদসংহিতাদিতে প্রত্যক্ষ প্রাপ্ত হওয়া যায়, কখন কখন স্মৃতি-পুরাণ দ্বারা অনুমান করিতে হয় ; বস্তুতঃ অর্থাৎ চারি প্রকার কি পাঁচ প্রকার ইহা বলা এই লোকের উদ্দেশ্য নহে, কিন্তু এক বেদই অর্থাৎ ইহা বলা উদ্দেশ্য) ॥ ১২ ॥

ENGLISH.—The Veda, the Smriti or tradition, good custom, and what is agreeable to one's own self (or conscience), this is, they say, the direct fourfold definition of *dharma* or duty. (12).

अर्थकामेष्वसत्तानां धर्मज्ञानं विधीयते ।

धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः ॥ १३ ॥

PROSE.—धर्मज्ञानं अर्थकामेषु असत्तानां ( सम्बन्धे ) विधीयते । धर्मं जिज्ञासमानानां परमं प्रमाणम् श्रुतिः ( भवति ) ॥ १३ ॥

KULLUKA.—अर्थकामेष्विति । अर्थकामेष्वसत्तानाम् अर्थकामलिप्सायुक्तानां

धर्मोपदेशोऽयं ये त्वर्थकामसमीहया लोकप्रतिपत्ताये धर्ममनुतिष्ठन्ति न तेषां कर्मफलमित्यर्थः । धर्मश्च ज्ञातुमिच्छतां प्रकटं प्रमाणं श्रुतिः । प्रकर्षबोधनेन च श्रुतिस्मृतिविरोधे स्मृत्यर्थो नादरणीय इति भावः । अतएव जावालः—“श्रुतिस्मृतिविरोधे श्रुतिरेव गरीयसी । अविरोधे सदा कार्यं स्मार्त्तं वैदिकवत् सता ।” भविष्यपुराणेऽप्युक्तं—“श्रुत्या सह विरोधे तु त्राध्यते विषयं विना ।” जैमिनिरप्याह—विरोधं त्वनपेक्षं स्यादसति ह्यनुमानम् । श्रुतिविरोधे स्मृतिवाक्यमनपेक्षम् अप्रमाणम् अनादरणीयम्, असति विरोधे स्मूलवेदानुमानमित्यर्थः ॥ १३ ॥

KULLUKA EXPLAINED—“धर्मोपदेशोऽयम्” । अयं धर्मोपदेशः धर्मस्य उपदेशः अस्मिन् यथे यः कृतः स इत्यर्थः । सर्वधर्मशास्त्रस्य मूलं अयमेव उपदेशः ।

“न तेषां कर्मफलम्” । अर्थकामासक्तानां जनानां कृतस्य कर्मणः फलं नास्ति तस्मात् तै वृथा कर्म क्रियते । तैः कर्म न कर्तव्यं फलाभावात् । This is the inference we get from the text “अर्थकामिष्यमक्तानां धर्मज्ञानं विधीयते ।” The inference is pointed out by Kulluka.

“प्रकर्षबोधनेन च श्रुतिस्मृतिविरोधे स्मृत्यर्थो नादरणीय इति भावः ।” As the vedas have been laid down to be the highest authorities, it is to be understood, that in the case of a conflict between the vedas and the Smritis, the former is to prevail.

“अतएव जावालः श्रुतिस्मृतिविरोधे तु श्रुतिरेव गरीयसी । अविरोधे सदा कार्यं स्मार्त्तं वैदिकवत् सता ।”

Therefore Javala says when there is a conflict between the Sruti and the Smriti, the Sruti must prevail. When there is no conflict, actions enjoined by the Smritis must be performed daily just as the actions enjoined by the vedas.

“विरोधे त्वनपेक्षं स्यात् असति ह्यनुमानम्” विरोधे श्रुतिस्मृतिविरोधे तु स्मृतिवाक्यमनपेक्षं अनादरणीयं स्यात् असति अविद्यमाने विरोधे हि अनुमानं वेदस्य अनुमानं भवति । अर्थात् यत्र विरोधो नास्ति तत्र स्मृतिर्वलवती भवति यतः तस्या अविरुद्धायाः स्मृतेर्भूलभूतः वेदः अवश्यमेवास्तीति अनुमानं भवति । तस्मात् कश्चित् स्मृतिरनुमानशब्देन कथ्यते । When there is a conflict, Smriti must yield; in the absence of a conflict, the existence of a Sruti at the root of (or in support of) such Smriti is to be inferred. Therefore virtually there is no authority except the vedas.

PURPORT.—যে অর্থেষু কামেষু চ অনাসক্তানাম্ প্রতি এব অর্থ ধর্মোপদেশঃ ত এব ধর্মোপধিকারিণঃ । যে তু অর্থকামে: প্রেরিতা লোকপ্রতিপত্ত্যর্থং ধর্মং আচরন্তি তेषাং ধর্মোচরণস্য ফলং ন ভবতি । যে ধর্মং জ্ঞাতুং ইচ্ছন্তি তेषাং পশ্যে যুতিরিব শ্রেষ্ঠং প্রমাণম্ । যুতিস্মৃত্যোর্বিরোধে যুতিরিব সমাদরণীয়া ॥ ১২ ॥

MEANING IN ENGLISH.—The instruction of the sacred rules of duty is intended for those who are unattached to wealth and enjoyment. Those who practise dharma for the sake of show derive no benefit therefrom. To those who seek a knowledge of the sacred rules of duties the supreme authority is the revelation. When there is a conflict between the revelation and sacred compilation, the revelation must prevail.

GRAMMATICAL NOTES.—1. অর্থকামেষু অর্থায় কামাশ্ব অর্থকামাঃ । তेषু বিষয়াধারে সমসী । অর্থযতে আতিথ্যত । কামযতে কাময়াস্বক্রে অশ্বীকমত । অশ্বকমত । 2. অসক্তানাম্—ন সক্তাঃ অসক্তাঃ । নজ্ সমাসঃ । শ্রেষে ষষ্ঠী । সন্জ+ক্ত । সজতি সমস্ত অসক্তীত । 3. ধর্মজ্ঞানম্ ধর্মস্য জ্ঞানম্ ধর্মজ্ঞানম্ ষষ্ঠী সমাসঃ । জ্ঞা+জ্যৎ । জানাতি অজ্ঞাসীত । 4. বিধীয়তে বি-ধা+কর্ম্মণি লট্ তে । দধাতি ধমে দধৌ দধে অধাতু অধিত । 5. ধর্মম্ কর্ম্মণি দ্বিতীয়া । ন লোকাভ্যয়নিষ্ঠাঙ্কলঘটনামিতি ষষ্ঠীনিষেধঃ in connection with জিজ্ঞাসমানানাম্ । 6. জিজ্ঞাসমানানাম্ শ্রেষে ষষ্ঠী । জ্ঞা+সন্+জানচ্ কর্ম্মরি । জিজ্ঞাসতে । 7. যুতিঃ same case with প্রমাণম্ । যু+ক্তিন্ যুতি । অশ্রীষীত । 8. প্রমাণম্ বিধেয়বিশেষণম্ of যুতিঃ । প্র-মা+ল্যুট্ । মাতি মিনীতে । 9. পরমম্ qualifies প্রমাণম্ । পর-মা+ক ।

Change of voice—ধর্মজ্ঞানং বিদধতি । যুত্বা পরমেষ প্রমাণেন মূযতে ॥ ১২ ॥

BENGALI.—বীহারা অর্থ ও কামে আসক্ত নহেন, তাঁহাদের প্রতিই এই ধর্মোপদেশ করা হইতেছে । বীহারা লোকে গাতিলাভ করিবার জন্ত ধর্মোচরণ করেন তাঁহাদের সেই ধর্মকর্ম্মের কোন ফল হয় না । বীহারা ধর্ম জানিতে ইচ্ছা করেন বেদই তাঁহাদের পরম উৎকৃষ্ট অমাণ ; অর্থাৎ বেদ ও যুতির মধ্যে বিরোধ দেখা গেলে বেদের মতই অমল করিতে ইহঁদের ॥ ১৩ ॥

ENGLISH.—The knowledge of *dharma* is ordained for those who are not addicted to wealth and pleasure. To them who want to know *dharma*, the Veda is the highest authority. (13).

श्रुतिद्वैधन्तु यच्च स्यात्तत्र धर्मावुभौ स्मृतौ ।

उभावपि हि तौ धर्मा स्मृत्यगुक्तौ मनीषिभिः ॥ १४ ॥

PROSE.—यत्र तु श्रुतिद्वैधम् स्यात् तत्र उभौ ( मनुना ) धर्मा स्मृतौ । हि मनीषिभिः सम्यक् उभौ अपि तौ धर्मा उक्तौ ॥ १४ ॥

KULLUKA.—श्रुतिद्वैधन्विति । यत्र पुनः श्रुत्योरेव द्वैधं परस्परविरुद्धार्थप्रतिपादनं तत्र हावपि धर्मा मनुना स्मृतौ तुल्यबलतया विकल्पानुष्ठानविधानेन विरोधाभावः । यस्मान्मन्वादिभ्यः पूर्वतरैरपि विद्वद्भिः सम्यक् समीचीनौ हावपि तौ धर्मावुक्तौ । समानन्यायतया श्रुत्योरपि विरोधे विकल्प इति प्रकृतोपयोगः तुल्यबलत्वाविशेषात् । तदाह गौतमः—तुल्यबलविरोधे विकल्पः ॥ १४ ॥

KULLUKA EXPLAINED.—“यत्र पुनः श्रुत्योरेव द्वैधम्” but where there is a conflict between the revelations themselves. द्वैधम् is explained as “परस्परविरुद्धार्थप्रतिपादनम्” ( i. e. laying of maxims mutually conflicting). “तत्र हावपि धर्मा मनुना स्मृतौ” there both have been laid down as धर्मा by Manu. The word मनु has been supplied by Kulluka, because Bhṛigu is here reciting the sacred instructions as given by Manu. “तुल्यबलतया विकल्पानुष्ठानविधानेन विरोधाभावः” तुल्यं बलं यद्योक्ते तुल्यबले तत्तया हेतुना विकल्पानुष्ठानविधानेन विकल्पस्य अनुष्ठानं तस्य विधानं तेन हेतुना विरोधाभावः अर्थात् यत्र शास्त्रयोरेकं समानं तत्र विरोधो न स्यात् अपि तु विकल्प इति शास्त्रात् न विरोधः (In case where the strength of two texts is equal, there is to be presumed no conflict, but option.) “मनीषिभिः” (text) is explained as “मन्वादिभ्यः पूर्वतरैरपि विद्वद्भिः” (Learned men who preceded even Manu and the like). “सम्यक्” is explained as समीचीनौ reasonable.

“समानन्यायतया श्रुत्योरपि विरोधे विकल्प इति प्रकृतोपयोगः तुल्यबलत्वाविशेषात्” = समानन्यायतया श्रुतिद्वैधे येन तर्काशयेन विकल्पविधिर्भवति तस्य न्यायस्य श्रुतिद्वैधविचारैरपि तुल्यभावेन प्रयोगो भवितुमर्हति यस्मात् तस्मात् श्रुत्योरपि श्रुतिवाक्ययोरपि विरोधे श्रुतिव्यस्य तुल्यप्रमाणत्वात् विकल्पोभवति इति सिद्धान्तः प्रकृतपयोगः प्रकृतत्वस्य प्रसादविषयौभूतस्य श्रुतिव्याख्यानस्य उपयोगः प्रयोगः तुल्यबलत्वाविशेषात् तुल्यबलत्वस्य अविशेषात् भेदाभावात् यथा श्रुतौ तुल्यबलत्वविचारस्तथा श्रुतौ अपि तुल्यबलत्वविचारस्य प्रयोगयोग्यत्वात् । ( By the application of the same principle in the case of a conflict between two Smritis also,

option is allowed. This conclusion has a direct bearing on the subject in hand, the principle of equal strength being equally applicable in the case of Smṛiti too. “তদাহ গৌতমঃ তুল্য-বলবিৰোধে বিকল্পঃ” Therefore Gautama lays down that when the strength of conflicting texts is equal, option is the rule.

PURPORT.—যত বেদবাক্যযোঃ পরস্পরবিৰোধী দৃশ্যতে তত উভয়বাক্যমিহ ধৰ্ম্য ইতি মনুনা উক্তম্ । ন কেবলং মনুনা, মনোঃ পূৰ্ব্বতরৈ রনৈরপি বিদ্বদমিঃ দ্বয়মপি ধৰ্ম্য ইতুক্তম্ ॥ ১৪ ॥

MEANING IN ENGLISH.—But when there are two texts of revelation mutually conflicting, both are held to be the law (dharma) i. e. they are optional, for both have been laid down as dharma both by Manu and those learned men who preceded him. This was concluded from the principle that in case of a conflict between texts of equal authority, option is the law. This principle applies to Smṛitis as well.

GRAMMATICAL NOTES. — 1. যুতিবৈধম্—বিধা ইত্যস্য ভাবঃ বৈধম্ । হি + ধাৎ । যুতিঃ বৈধম্ যুতিবৈধম্ ষষ্ঠী সমাসঃ । 2. তু অব্যয়ম্ । 3. যত যদ + তল্ । 4. স্মাত্—অস্ম + স্মাত্ । 5. তত—তদ + তল্ । 6. উভৌ—উভ + প্রথমায়া হিবচনম্ same case with ধৰ্ম্যৌ । 7. ধৰ্ম্যৌ—বিধিঃ বিশেষণম্ of উভৌ । 8. স্মৃতৌ—স্মৃ + ক্তাঃ কৰ্ম্মণি । 9. সম্যক্—অব্যয়ম্ । 10. মনৌষিভিঃ কৰ্ত্তরি তৃতীয়া । মনসঃ ইধা মনৌষা । শকন্বাদিষু পরকৃপং বাচ্যমিতি সমিঃ । মনৌষা বুদ্ধিঃ বিদ্যতে এষাং মনৌষিভ্যঃ তৈঃ । মনৌষা + ইলি ।

Change of voice.—যুতিবৈধিন মূয়নে উভাভ্যাং ধৰ্ম্মাভ্যাং স্মৃতাভ্যাং মূয়নে । মনৌষিভ্যঃ.....উক্তবলঃ ॥ ১৪ ॥

BENGALI.—যে স্থানে দুইটি শ্রুতি পরস্পর বিরুদ্ধ হয়, সে স্থলে উভয়টিই ধৰ্ম (অর্থাৎ বিকল্পে উভয়টিই অনুসরণ করা যায়) ইহা মনু বলিয়াছেন এবং মনুর পূর্ববর্তী পণ্ডিতগণ ও এই উভয় স্মৃতিগণ বাক্যকেই ধৰ্ম বলিয়া গিয়াছেন ॥ ১৪ ॥

ENGLISH.—Where these may be a conflict or opposition (of texts) of the Veda, both (the texts or conflicting injunctions) are regarded as dharma or duty. For, both these, correct as they are, have been declared as dharma by the wise. (14).

उदितेऽनुदिते चैव समयाधुषिते तथा ।

सर्वथा वर्त्तते यज्ञ इतीयं वैदिकी श्रुतिः ॥ १५ ॥

PROSE.—उदिते अनुदिते चैव तथा समयाधुषिते ( होतव्यम् ) इति इयं वैदिकी श्रुतिः ( मस्ति ) । ( तथापि ) यज्ञः सर्वथा वर्त्तते ॥ १५ ॥

KULLUKA.—अत्र दृष्टान्तमाह उदितेऽनुदिते चैवेति । सूर्यमन्त्रवर्जितः कालः समयाधुषितश्चेन्नोच्यते । उदयात् पूर्वभरणकिरणवान् प्रविरलतारकोऽनुदित-कालः परस्परविरुद्धकालश्रवणोऽपि सर्वथा विकल्पेनायिहोतव्योऽयम् प्रवर्त्तते । देवतो-द्देशेन द्रव्यत्यागगुणयोगात् यज्ञशब्दोऽत्र गौणः । उदितादौ होतव्यमित्यादिका वैदिकी श्रुतिः ॥ १५ ॥

KULLUKA EXPLAINED.—“अत्र दृष्टान्तमाह” अत्र अर्थात् यत्र श्रुतिर्द्वयं तत्र विकल्पविधिः स्यात् इति वचनस्य दृष्टान्तं अस्मिन् श्लोके मनुराह । वेदे विरुद्ध-भावेन यज्ञस्य विविधः कालो विहितः । यथा उदिते सूर्योदयकाले सूर्योदयात् परं इत्यर्थः यज्ञं कुर्यात् इत्येको विधिः । अनुदिते अनुदयकाले (अनुदयकालं व्याचष्टे “उदयात् पूर्वे अरुणकिरणवान् प्रविरलतारकः अनुदयकालः”) (= Time before rising is the time just before sunrise, when the sky is red, stars being scarce therein) अर्थात् सूर्योदयात् प्राक् यज्ञं कुर्यात् इति द्वितीयो विधिः । तथा समयाधुषिते कालं “सूर्यमन्त्रवर्जितः कालः समयाधुषितश्चेन्नोच्यते ।” “Time when there is neither the sun nor the stars in the sky. यज्ञं कुर्यात् इत्यपि तृतीयो विधिरस्ति । तथापि यज्ञः सर्वथा = “विकल्पेन” वर्त्तते अर्थात् विविधेषु कालेषु परस्परावरोद्धेषु व्यवस्थितेषु सत्सु एतेषां मध्ये एकस्मिन्-काले यज्ञः कर्त्तव्यः । Here यज्ञः does not mean the technical यज्ञः but it includes worship of gods generally. “देवतोद्देशेन द्रव्यत्याग-गुणयोगात् यज्ञशब्दोऽत्र गौणः” यज्ञ has here secondary meaning, the offering of things to the gods being the common ingredient.

अरुण is the large red orb visible in the east just before sun-  
rise. It is really the reflection of the sun visible in the  
atmosphere.

ELUCIDATION.—Time after sunrise, time just before sun-  
rise when stars are not visible, time before sunrise when the  
sky is red, but a few stars are yet visible are the three divisions

of time. Yet there are three vedic injunctions each prescribing one of these divisions as the proper time for sacrifice. You cannot reject the authority of any one of these three contradictory texts. Therefore by the injunction laid down in the previous text you have a right to select optionally any one of these times for sacrifice.

PURPORT.—বৈদে যজ্ঞস্য ত্রিবিধঃ পরস্পরবিরুদ্ধঃ কালঃ নির্দিষ্টঃ । যথা সূর্যে সমুদিতেন সতি যজ্ঞং কুর্য্যান্, সূর্যোদয়াৎ প্রাক্ সূর্যাস্থান্ সুহর্ষে নারকান দৃশ্যন্তে তস্মিন্ যজ্ঞং কুর্য্যান্, তথা যস্মিন্ কালি সূর্যো নোদেতি নারকাচ দৃশ্যন্তে দিশা রক্ত-বর্ণাচ ভবতি তস্মিন্ কালি যজ্ঞং কুর্যাদিতি । যদ্যপি এতৈ কালৈঃ পরস্পরবিরুদ্ধাঃ তথাপি প্রাকৃতবচনবলেন তেষা মধ্যে একং কালং বিকল্যেন গৃহীত্বা যজ্ঞকর্মাদি কুর্য্যান্ ইতি ব্যবস্থা ॥ ১৫ ॥

MEANING IN ENGLISH. — In the veda there are three texts opposed to one another : “Let the sacrifice be when the sun has risen,” and “before it has risen, while stars are not visible” and “before it has risen, when a few stars are visible, and the east becomes red”. The sacrifice therefore may be performed optionally at any one of these times.

GRAMMATICAL NOTES. 1. উদিতেন—উদিতম্ উদয়ঃ অসি অস্মিন্ উদিতঃ । উদিত + অচ্ অয়ং আদিভ্যঃ । উত্ - ই + ক্তঃ ভাবে । Refers to time. কাল-ধিকরণে সঙ্গমৌ । 2. অনুদিতেন—ন উদিতেন অনুদিতেন । অজ্ সমাসঃ । It means technically a particular time. অধিকরণে সঙ্গমৌ । 3. সময়াপ্রাধিতেন—It is a technical word for a particular time. কালধিকরণে সঙ্গমৌ । অপ্রাধিতম্ is derived অধি-বস্ + ক্তঃ ভাবে । বসতি অবাসীত্ । বস্ + ক্তি ভবাম । 4. সর্ষ্বথা—সর্ষ্ব + থাচ্ । 5. বর্ণন্তে বহন্তে অহন্তত্ অবর্ণন্তি । 6. যজ্ঞঃ যজ্ + ন । যজন্তে যজতি অযচ্ অযাজীত্ । 7. ইতি Qualifies the previous sentence. 8. বৈদিকী বেদ + ঠক্ + জীপ্ । 9. যুতিঃ যু + ক্তিন্ ।

Change of voice.—ইত্যনয়া বৈদিক্যা যুত্যা সূর্যতে । সর্ষ্বথা যজ্ঞেন হন্ত্যে ॥ ১৫ ॥

BENGALI.—যথা বেদে বিহিত আছে উনয়কালে যজ্ঞ করিবে ; সময়প্রাপ্তিভিন্নকালে অর্থাৎ বধন আকাশে তারকাদৃষ্ট হয় না অথচ সূর্যও উদিত হয় না, এমন সময়ে যজ্ঞ করিবে ; এবং অমুহুরকালে অর্থাৎ বধন পূর্বদিকে অরুণ উদিত হয়, মধ্যে মধ্যে



নক্ষত্রও দেখা যায় এমন সময়ে যজ্ঞ করিবে ; এই তিনটি কালই গুরুত্বপূর্ণ । অতঃ-  
এব গুরুত্বপূর্ণ বচন অনুসারে বিবর্তে এই তিন কালের যে কোন একটি কালে যজ্ঞ করা  
যায় । ১৫ ।

ENGLISH.—(Thus goes) the Vedic revelation :—"The sacrifice  
is to take place when the sun has risen, and when the sun has not  
risen, and also when neither the sun nor the stars are visible".  
(And yet) the sacrifice takes place by all means. (15),

নিষেকাদিগ্নশানান্তো মন্বৈর্যস্যোদিতো বিধিঃ ।

তস্যশাস্ত্রেঃধিকারোঃস্মিন্জ্ঞেয়োনান্যস্যকস্যচিৎ ॥ ১৬ ॥

PROSE. — যস্য মন্বৈঃ নিষেকাদিগ্নশানান্তো বিধিঃ উক্তঃ অস্মিন শাস্ত্রে তস্য  
অধিকারঃ জ্ঞেয়ঃ অন্যস্য কস্যচিৎ (অধিকারঃ) ন (জ্ঞেয়ঃ) ॥ ১৬ ॥

KULLUKA.—নিষেকাদীতি । গর্ভাধানাদিরন্যেটিপর্যন্তো যস্য বর্ণস্য  
মন্বৈরনুষ্ঠানকলাপ উক্তো বিজ্ঞাতৈরিত্যর্থঃ তস্যাস্মিন্ মানবধর্ম্যশাস্ত্রে ষ্ঠ্যয়নে শ্রবণে  
অধিকারঃ ন ত্বন্যস্য কস্যচিৎকুদাদিঃ এতচ্চাস্ত্রানুষ্ঠানঞ্চ যথাধিকারং সত্বরেব কর্তব্যং  
প্রবচননাস্ত্যাধ্যাপনং ব্যাখ্যানরূপং ব্রাহ্মণকর্মকর্মমিতি বিদুষা ব্রাহ্মণেনৈতৎ ব্যাখ্যাতম্ ।

KULLUKA EXPLAINED.—নিষেকাদিগ্নশানান্তো is explained as  
"গর্ভাধানাদিরন্যেটিপর্যন্তো" । নিষেকো গর্ভাধানসংস্কারঃ স আদির্যস্য । অন্যাদিটি:  
মরণান্তকরণীয়সংস্কারঃ পর্যন্তঃ অবধির্য়স্য সঃ । পোড়শ সংস্কারাঃ । বিধিঃ is ex-  
plained by Kulluka as "অনুষ্ঠানকলাপঃ" = "The full complement of  
ceremonies. যস্য is explained as "বর্ণস্য" । বর্ণ means caste, but  
it has a special meaning. ব্রাহ্মণ, ক্షত্রিয়, বৈশ্য and শূদ্র—these four  
original castes are called বর্ণাঃ । ব্রাহ্মণঃ চতুর্যো বৈশ্য স্ত্রয়োবর্ণা বিজাতয়ঃ ।  
অনুষ্ঠান একজাতিস্তু শূদ্রোনাস্তি পঞ্চমঃ (Manu). i. e. Brahmin, Kshatriya,  
Vaishya, and Sudras—these four are varnas. The first three  
twice-born, the fourth is once-born. There is no fifth varna.  
The mixed castes as সূত্ৰাভিষিক্ত, অম্বষ্ট, মাহিষ্য, করণ, &c. &c. are  
called জাতিঃ but not বর্ণাঃ । By a certain fiction these are distri-  
buted under each of the four varnas for the performance of  
ceremonies. "যস্য মন্বৈঃ নিষেকাদিগ্নশানান্তো বিধিঃ উক্তঃ" is explained  
by Kulluka as "বিজ্ঞাতৈরিত্যর্থঃ" i. e. it is only বিজাতি or বিজবর্ণ such  
as Brahman, Kshatriya, Vaishya whose নিষেকাদিগ্নশানান্তো বিধিঃ

is to be performed by uttering vedic mantras. The fourth वक्त्रे sudra has ceremonies but has no right to utter mantras, nor are they to be accompanied by vedic mantras. तस्य द्विजातेरित्यर्थः । अस्मिन् is explained as "मानवे धर्मशास्त्रे" अधिकारः is supplemented by "अध्ययने श्रवणे च" *i. e.* a द्विज alone has a right to read and hear this treatise. "अन्यस्य" is explained as "शूद्रादेः" *i. e.* Sudras and mixed castes passing under that head according to the texts.

"एतच्छास्त्रानुष्ठानञ्च यथाधिकारं सर्व्वैरेव कर्त्तव्यम् । प्रवचनस्य अध्यापनं व्याख्यानरूपं ब्राह्मणकर्त्तृकमेवेति विदुषा ब्राह्मणेनेत्यत्र व्याख्यातम् ।" = The duties as laid down by this treatise must be performed by all the castes respectively as enjoined, but teaching and explanation of the treatise must be done by the Brahmans alone. This I have explained in the commentary on the text "vidushā brahmanena etc." (Vide commentary on Manu I. 103).

विदुषा ब्राह्मणेनेदं अध्येतव्यं प्रवचतः ।

शिष्येभ्यश्च प्रवक्तव्यं सम्यक् नान्येन केनचित् । १ अ ॥ १०६ ॥

ELUCIDATION.—Those whether mixed or original who are entitled to the performance of rites with mantras have been clearly laid down by Manu in the 10th chapter. Thus :—

सत्रातिजानन्तरजाः षट्सुता द्विजधर्मिणः । X. 41. "द्विजातीनां समान-जातीयान् (माय्यां) जाताः (वयः) तथा आनुलोम्येन उत्पन्नाः ब्राह्मणेन सन्निवायां वैश्यायां (सूत्राभिहितान्वाष्टौ ?) सन्निवायां वैश्यायां (माहिष्यः), एवं षट् पुत्राः द्विजधर्मिणः उपनेयाः ।" (Kulluka.) = Six sons of the twice-born castes are twice-born ; and are entitled to the sacred thread. These are (1) Brahmin's son from a Brahman wife (Brahmin), (2) Khatriya's son from a Khatriya wife (Khatriya), (3) Vaisya's son from a Vaisya wife (Vaisya), and (4) Brahman's son brought forth by a wife taken from Kshatriya caste (Murdhabhishikta), (5) by a wife taken from a Vaisya caste (Ambastha), Kshatriya's son begotten on a wife taken from Vaisya caste. (Mahishya). These six castes *vis.* (1) Brahman, (2) Kshatriya, (3) Vaisya, (4) Murdhabhishikta, (5) Ambastha, and (6)

Mahishya have the rights of the twice-born (Kulluka). All other castes whether original or mixed are once-born and have no right to ceremonies accompanied by mantras. "यद्यपि स्त्रियाश्च होमासंभव स्तथापि विप्रद्वारा होमादि कारयेत् । एवं शूद्रस्यापि । अथ साधवाचार्थः "यो विप्रः शूद्रदक्षिणामादाय तदीयं हविः शान्तिपुष्टादिसिद्धये वैदिकैर्मन्यै जुहोति तस्य विप्रस्यैव दोषः । शूद्रस्तु होमफलं लभते एव इति व्याचक्षते इति निर्णयसिन्धुकारसिद्धान्तः ।

PURPORT.—यस्य वर्णस्य मन्वीच्चारणपूर्वकः अनुष्ठानकलापः अस्ति अर्थात् यो वर्णः द्विजधर्मां तस्य वर्णस्य मनुक्तधर्मशास्त्रस्य अध्ययने श्रवणे च अधिकारीऽस्ति । किन्तु शूद्रस्य शूद्रधर्मिणः सङ्करस्य च तत्र अधिकारी नास्ति ॥ १६ ॥

MEANING IN ENGLISH.—He, all whose ceremonies from conception to funeral rite are to be accompanied by uttering the vedic mantras (i. e. he who is twice-born) has a right to read and listen to this code ; but no other man whatever, such as a Sudra or the like, has any such right.

Change of voice.—अधिकारिण ज्ञेयं भूयते ॥ १६ ॥

GRAMMATICAL NOTES. (a) On the text.—1. निषेकादिश्रमशानान्तः—निषेकः आदिष्यस्य स निषेकादिः बहुव्रीहिः । श्रमशानं अन्ते यस्य स श्रमशानान्तः । निषेकादिश्च श्रमशानान्तश्च निषेकादिश्रमशानान्तः कर्मधारयः । Qualifies विधिः । नि—सिच् + घञ् । श्रवानां श्रयनं श्रमशानम् पृथोदरादित्वात् साधुः । 2. मन्त्रैः करणे ढनीया । मन्त्रयते अभिमन्त्रत । 3. यस्य श्रेये षष्ठी । 4. विधिः वि—धा + कि । दधाति धत्ते अधात् अघित । 5. उदितः वद + क्तः कर्ष्यणि । वदति उवाद अवादौत् । 6. तस्य कर्तृकर्मणोः कृतौति कर्त्तरि षष्ठी । 7. शास्त्रे—शाम् + ङ् । 8. ज्ञेयः—ज्ञा + यत् । अचो यत् इति यत् । ईदं यति इति आतर्क्यत् गुणः । 9. अन्यस्य श्रेये षष्ठी । 10. कस्याचित् श्रेये षष्ठी चित् प्रत्ययश्च ।

BENGALI.—যাঁহার গর্ভাধান হইতে অষ্টোষ্টিক্রিয়াকর্মাক্ত ক্রিয়াকলাপ মন্ত্রোচ্চারণ পূর্বক সম্পাদিত হইবার বিধি আছে অর্থাৎ যিনি বিজ্ঞাতির অন্তর্গত, এই মানব বর্ণশাস্ত্রের অধ্যয়নে ও শ্রবণে তাঁহারই অধিকার, অষ্টের অর্থাৎ শূত্রাদি অস্ত্র কাহারও তাহাতে অধিকার নাই । বিজ নিজ অধিকার অনুসারে এই শাস্ত্রোক্ত কর্মানুষ্ঠান সর্ব বর্ণই করিতে পারেন । ১৬ ॥

ENGLISH.—The privilege or right (to read and hear) this *Sastra* or code belongs to him—and to none else, (the performance of the 16) sacraments beginning with conception and ending in cremation has been in whose case declared (as accompanied) by (the chanting of) the *Mantras*. (16).

सरस्वतीदृषद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तरम् ।

तं देवनिर्मितं देशं ब्रह्मावर्त्तं प्रचक्षते ॥ १७ ॥

PROSE — देवनद्योः सरस्वतीदृषद्वत्योः यत् अन्तरं तं देवनिर्मितं देशं (पण्डिताः) ब्रह्मावर्त्तं प्रचक्षते ॥ १७ ॥

KULLUKA.—“धर्मस्य स्वरूपं प्रमाणं परिभाषाचोक्ता इदानीं धर्मोपगुहानयोग्य-  
देशानाह सरस्वतीति । सरस्वतीदृषद्वत्योर्नद्योर्बभूवोर्ग्रन्थं ब्रह्मावर्त्तं देशमाहुः, देव-  
नदीर्देवनिर्मितशब्दौ नदीदेशप्राग्व्यर्थौ ॥ १७ ॥

KULLUKA EXPLAINED.—“धर्मस्य स्वरूपं प्रमाणं परिभाषाच्च उक्ता इदानीं धर्मोपगुहानयोग्यदेशान् आह” । After giving a definition of dharma, showing the authority on which it is based, and the technical sense in which the word is used, now the author proceeds to describe places suitable to the performance of dharma. Kulluka might add “तथा धर्माधिकारिणश्च निरूप्य” after “परिभाषाच्च” in the above sentence.

“नदीर्बभूवोर्ग्रन्थम्” is the explanation of देवनद्योः यत् अन्तरम् । अन्तरम् means मध्यम् । नदीर्बभूवोर्ग्रन्थम् अन्तरं व्यवधानं अन्तर्बर्त्तिस्थानं मध्यम् । “ब्रह्मावर्त्तं देशं आहुः” आहुः is the explanation of प्रचक्षते ।

“देवनदी देवनिर्मितशब्दौ नदीदेशप्राग्व्यर्थौ” the word देव in the compounds देवनदी and देवनिर्मित indicates only praise. देवनिर्मितः देशः = A holy or sacred or praiseworthy country, and does not mean a country created by the gods. देवनदी does not mean a river where the gods take their bath.

PURPORT.—सरस्वतीदृषद्वत्योर्नाम श्रेष्ठनद्योः मध्ये यः प्रवसति देशः स ब्रह्मावर्त्तं नाम देशः ॥ १७ ॥

MEANING IN ENGLISH.—Between the two sacred rivers

Saraswati and Drisadvati lies that sacred land named by the sages as Brahmavarta.

*Change of voice.*—येन अक्षरेण भूयते । स देवनिर्मितो देशः ब्रह्मावर्तः प्रख्यायते ॥ १७ ॥

GRAMMATICAL NOTES. — 1. सरस्वतीदृषद्वत्योः — सरस्वती च दृषद्वत्यौ च ते सरस्वतीदृषद्वत्यौ तयोः same case with देवनद्योः शेषे षष्ठौ । सरस् + मतप् + ऊीप् । दृषद् + मतप् ऊीप् । दृषद् stone. सरस् stream. 2. देवनद्योः — देवानां सम्बन्धिन्यौ नद्यौ देवनद्यौ षष्ठौ समासः । तयोः । नद् + अच् नदौ ऊीप् टिप्पत् । 3. यत् — Qualifies अक्षरम् = व्यवधानम् । 4. अक्षरम् — Nominative to the verb अस्ति understood. 5. तम् — Qualifies देशम् । 6. देवनिर्मितम् देवैः निर्मितम् qualifies देशम् । 7. देशम् — दिश्यते इति देशः दिश्यन्-ञञ् । अदिक्षत् । Acc. of प्रचक्षते । 8. ब्रह्मावर्तम् ब्रह्माक्षः ब्राह्मणाः अथ पुनः पुनः रावर्तन्ते जायन्ते इति ब्रह्मावर्तः तम् । ब्रह्म — आङ् — हत + अच् । ब्रह्मणां आवर्तः अस्मिन् इति विग्रहेण व्यधिकरणो बहुव्रीहिः । 9. प्रचक्षते — प्र — चक्ष + अन्ते । अष्टे चक्ष्यौ चक्ष्ये चक्ष्वे । अक्ष्यत्, अक्ष्यत ।

BENGALI.—नववती ओ दृषवती एहे छहे अक्ष नदीव मधवर्तौ एहे देशक ब्रह्मावर्त भेन बले ॥ १७ ॥

ENGLISH.—The land which is between the two divine rivers, the Saraswati and the Drisadvati, that land, created by the gods, they (the wise) call Brahmavarta. (17).

तस्मिन् देशे य आचारः पारम्पर्यक्रमागतः ।

वर्णानां सान्तरालानां स सदाचार उच्यते ॥ १८ ॥

PROSE. — तस्मिन् देशे सान्तरालानां वर्णानां पारम्पर्यक्रमागतः य आचारः स सदाचार उच्यते ॥ १८ ॥

KULLUKA. — तस्मिन् देशे इति । तस्मिन् देशे प्रायेण शिष्टानां सभवात् तेषां ब्राह्मणादिवर्णानां सङ्कीर्णजातिपर्यन्तानां य आचारः पारम्पर्यक्रमागतो न विद्वानौक्तः स सदाचारोऽभिधीयते ॥ १८ ॥

KULLUKA EXPLAINED. — “तस्मिन् देशे प्रायेण शिष्टानां सभवात्” That being the place mostly inhabited by the learned in the vedas. “सान्तरालानां वर्णानाम्” has been explained as “ब्राह्मणादि-

वर्णानां (= ब्राह्मणचव्रियवैश्यशूद्राणाम्) सहोर्ध्वजातिपर्यन्तानाम्" । The four original castes together with the mixed castes. पारम्पर्यक्रमगतः is explained as "नत्विदानीकृतः" = not modern *i. e.* ancient, handed down from generation to generation.

ELUCIDATION. — सदाचारः is frequently referred to in the texts. Here सदाचारः is defined.

PURPORT. — तस्मिन् ब्रह्मावर्ते देशे ब्राह्मणादिवर्णानां सदृशाचारः यः परम्परागतः व्यवहारः स एव सदृशाणां तत्तद्वर्णानां सदाचार इति ज्ञातव्यम् ॥ १८ ॥

MEANING IN ENGLISH. — The custom handed down from generation to generation in that country, among the four original as well as the mixed castes, is called approved usage. (For that country is mostly inhabited by the learned in the vedas).

*Change of voice* — तं सदाचारं चाहुः ॥ १८ ॥

GRAMMATICAL NOTES. — 1. देशे अधिकरणे समी । 2. पारम्पर्यक्रमगतः । परम्पराशब्दः अव्युत्पन्नः । परम्परायाः भावः पारम्पर्यम् तस्य क्रमः । षष्ठी समासः । तेन चागतः पारम्पर्यक्रमगतः । तृतीया समासः । 3. वर्णानाम् — शेषे षष्ठी । वर्णाः ब्राह्मणादयश्चत्वारः । 4. सान्तरालानाम् — अन्तरालेन मध्यवर्तिना मिथितेन सह वर्णमानाः सान्तरालाः तेषाम् qualifies वर्णानाम् । 5. सः refers to आचारः । 6. सदाचारः — सतां आचारः सदाचारः षष्ठी समासः । सदाचारः = शिष्टाचारः ।

BENGALI. — সেই ব্রহ্মাবর্তদেশে ব্রাহ্মণদিগের, ও মজৌর্জাতিদিগের পরম্পরাক্রমে আগত যে আচীন আচার তাহাকেই সदाচার বলে ; (কেননা সেই দেশ প্রধানতঃ বেদজ্ঞ-গণের বসতিস্থল) ॥ ১৮ ॥

ENGLISH. — The custom of the (four) castes together with the mixed ones which has been handed down by course of succession in that land is called good custom. (18).

कुर्वचेन्नश्च मत्स्याश्च पञ्चालाः शूरसेनकाः ।

एष ब्रह्मर्षिदेशो वै ब्रह्मावर्त्तादिनन्तरः ॥ १९ ॥

PROSE. — कुर्वचेन्नश्च मत्स्याश्च पञ्चालाः शूरसेनकाः एष वै ब्रह्मर्षिदेशः ब्रह्मावर्त्तात् अनन्तरः (भवति) ॥ १९ ॥

KULLUKA.—कुरुक्षेत्रमिति मत्स्यादिशब्दा बहुवचनाना एव देशविशेषवाचकाः पञ्चालाः कान्यकुब्जदेशाः शूरसेनका मथुरादेशाः एष ब्रह्मर्षिदेशो ब्रह्मावर्तात् किञ्चिद्गुणः ॥ १९ ॥

KULLUKA EXPLAINED. — “मत्स्यादिशब्दा बहुवचनाना एव देशविशेषवाचकाः.” The words मत्स्य पञ्चाल शूरसेनक &c. when used in the plural number mean a country. पञ्चालदेशः is explained as कान्यकुब्जदेशः । शूरसेनकदेशः means मथुरादेशः । The word अनन्तरः is explained as “किञ्चित् जनः” i. e. next in sacredness.

PURPORT. — कुरुक्षेत्रदेशः विराट्देशः कान्यकुब्जदेशः मथुरादेशश्च एते ब्रह्मर्षिदेशश्च कथ्यन्ते । ब्रह्मर्षिदेशो हि ब्रह्मावर्तदेशात् प्राशस्त्यविषये किञ्चिद्गुणतः ॥ १९ ॥

ELUCIDATION. — Nilkantba in his commentary on Mahabharat says :—“Draw a straight line from the mouth of the Godavari to Hardwar. Hastina and the country of the Panchalas will fall to the north-east of the line”. Thus Panchala is Kanyakubja.

• MEANING IN ENGLISH. — Kurukshetra, Matshya, Kanyakubja, and Mathura form the region called Brahmarshidesa, which is slightly inferior to Brahmabarta.

Change of voice. — कुरुक्षेत्रेण मत्स्यैः पञ्चालैः शूरसेनकैः एतेन ब्रह्मर्षिदेशेन ब्रह्मावर्तात् अनन्तरेण भूयते ॥ १९ ॥

GRAMMATICAL NOTES.—1. कुरुक्षेत्रम् कुरोर्नाम राज्ञः क्षेत्रं यज्ञभूमिरूपं कुरुक्षेत्रम् षष्ठी समासः । 2. मत्स्याः पञ्चालाः शूरसेनकाः—मत्स्यानां निवासो जनपदः (country) मत्स्याः । मत्स्य + अण् । Then अण् drops by जनपदे लुक् । अण् अण् &c. drop when a country is meant, मत्स्य remains. Then by the sutra लुपियुक्तवदव्यक्तिवचने we get the gender and number as if the suffix had not been dropped. मत्स्याः (masculine and plural). In the same way we get पञ्चालानां निवासो जनपदः पञ्चालाः शूरसेनकानां निवासो जनपदः शूरसेनकाः । This was the view held by grammarians anterior to Panini who holds that such words are संज्ञाशब्द and do not require any rule of grammar to justify their gender and number — “तद्विशिष्टं संज्ञापमाचलात्” । Therefore Kulluka says “मत्स्यादिशब्दा बहुवचनाना एव

देशविशेषवाचकाः” i. e. he explains by referring to the last quoted sutra शूरसेनकाः—शूराः सेना यस्य स शूरसेनः राज्ञादिभ्यो वृञ् शूरसेनकः जनपदार्थे बहुवचनम् । 3. ब्रह्मर्षिदेशः—ब्रह्मा + ऋषिः = ब्रह्मर्षिः । पञ्चे ऋषयः प्रकृतिभावश्च । ब्रह्म—ऋषिः । In compound we have thus the above forms by ऋत्यकः । ब्रह्मर्षेः देशः ब्रह्मर्षिदेशः or ब्रह्मा ऋषि र्यत् स ब्रह्मर्षिः सचासौ देशश्च । बहुव्रीहिः then कर्मधारयः । 4. ब्रह्माचर्यान्—अन्यारादिति पञ्चमी । अन्येत्यर्थग्रहणमिति भट्टोजिदेव्याख्यानम् । भेदार्यकशब्दभाव-ग्रहणमिति व्याख्यानाच्च अन्वार्थकशब्दयोगे पञ्चमी । Derived. 5. अनन्तरः—न विद्यते अनन्तरं व्यवधानं यस्य सः अनन्तरः । बहुव्रीहिः । अव्यवधानवर्ती अर्थात् किञ्चित् हीनः ।

BENGALI.—कुरुक्षेत्र, मत्स्य, पञ्चाल, ३ मथुरा उक्तर्षिदेश नलिश श्राव ; उक्तर्षिदेश उक्तार्थ इहेउ किञ्चित् हीनतर ॥ १३ ॥

ENGLISH.—*Kurukshetra, Matsya, Panchala, Surasenaka*, these are the *Brahmarshi* land (which is) next (in point of sacredness) to *Brahmapartha*. (19).

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादयजन्मनः ।

स्वं स्वं चरित्रं शिञ्चेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥२०॥

PROSE.—पृथिव्यां सर्वमानवाः एतद्देशप्रसूतस्य अयजन्मनः सकाशात् स्वं स्वं चरित्रं शिञ्चेरन् ॥ २० ॥

KULLUKA.—एतद्देश इति । कुरुक्षेत्रादिदेशजातस्य ब्राह्मणस्य सकाशात् सर्वमनुष्या आत्मीयमात्मीयमाचारं शिञ्चेरन् ॥ २० ॥

KULLUKA EXPLAINED.—एतद्देशप्रसूतस्य is explained “कुरुक्षेत्रादिदेश-जातस्य” एतद् refers to ब्रह्मर्षिदेशः ; सर्वमानवाः means “सर्वमनुष्याः” the four original and the mixed castes. स्वं स्वं = “आत्मीयं आत्मीयम्” वर्णानां जातोनाञ्च आचारभेदात् स्वं स्वमिति यथाक्रमप्रतिनिर्देशः । ब्राह्मणो ब्राह्मणस्य अविद्यः अविद्यस्येत्यादि । शिञ्चेरन् इति विधिः ।

PURPORT.—ब्रह्मर्षिदेशस्था ये ब्राह्मणा तेषां समीपात् सर्वे मानवाः यथा ॥ १० ॥ यथाजाति स्वं स्वं आचारं जानीयुः ॥ २० ॥

MEANING IN ENGLISH.—From a Brahmin born in that country, let all men on earth learn their several usages.



*Change of voice.* — सर्वमानवाः.....चरितं शिष्ये त ॥ २० ॥

GRAMMATICAL NOTES. — 1 एतद्देशप्रसूतस्य — एष देशः एतद्देशः । कार्यधारयः । एतद्देशे प्रसूतः एतद्देशप्रसूतः सप्तमी समासः by the योगविभाज-  
सुबम् “सप्तमी” from सप्तमी शीष्ठादिभिः तस्य qualifies अयजन्मनः । सूते  
सुपुवे असोष्ट असविष्ट । स्तुम्भूजिति वेष्टत्वात् । 2. अयजन्मनः — अये जन्म यस्य  
न अयजन्मा ब्राह्मणः । ब्राह्मणः सुखात् अये ब्राह्मणो जन्मे । लोकानाम् विहङ्गार्थं  
सुखवाङ्मकपादतः । ब्राह्मणं अविद्यं वैश्यं शूद्रश्च निरवर्तयदिति मनुः । जन +  
मनिन् जन्मन् । जायते अजनिष्ट अजनि । ज्ञेये षष्ठी । connected with सकाशात् ।  
3. सकाशात् — आख्यातोपयोगे पञ्चमी । उपयोगे निग्रमपूर्वकविद्यास्वीकारे  
आख्याता वक्ता अपादानं स्यात् । अत्र शिष्यधातुना विद्यास्वीकारस्य गौणत्वेऽपि  
तेनैव पञ्चमी । सकाशः vicinity. 4. स्व' स्तम् — वीष्मार्था द्विवचनम् quali-  
fies चरितम् । 5. चरितम् — कर्मणि द्वितीया Acc. of शिष्येन । अवचरोत् ।  
चर + इव by अत्तिं लृ धू स् खन सङ् चर इतः । चरितम् लवितम् धवितम्  
सवितम् खनितम् सङ्घितम् चरितम् । 6. सर्वमानवाः — सर्वे मानवाः सर्वमानवाः ।  
कार्यधारयः । 7. पृथिव्याम् — अधिकरणे सप्तमी वर्तमाना इति अध्याहार्यक्रियाया  
अधिकरणम् । प्रथ + षिवन् । 8. शिष्येन — शिष्य + ईरन् लिङ् । शिष्येति  
अशिषिष्ट । शिष्येति शिष्येयाताम् शिष्येन । An injunction is laid down.  
विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्ट संप्रत्य प्रार्थनेषु लिङ् इति लिङ् ।

शिष्येन — विधिनिमन्त्रादिमुखेण विधिरेव लिङोऽस्योऽर्थः । निमन्त्रणामन्त्रणादयम्  
अर्थाः विध्यर्थस्यैव प्रपञ्चः । तत्र विधिशब्दस्य अर्थज्ञानं आवश्यकम् अस्मिन् अर्थे  
बहुधा विधयः सन्ति ते च लिङा एव प्रायेण निर्दिष्टाः । गौणमुख्यभावेन सर्वतैव  
लिङो विध्यर्थत्वम् । तत्र प्रश्नः को विधिरिति । मनु प्रवक्ष्यनुकूलव्यापारोविधिः ।  
यथा शिष्येन इत्यत्र शिष्याविषयकप्रवक्ष्यनुकूलोव्यापारविशेषो विधिः स एवात्र लिङर्थः ।  
अनेन इष्टं साध्यते इतिरूपेष्टसाधनताज्ञानमेव प्रवक्ष्यनुकूलव्यापारः । तेन इष्टसाधनता  
एव विधिः । तस्मात् इष्टसाधनताज्ञानस्य विधिः प्रवर्तकत्वम् । विधिवोधजनक-  
त्वात् विधिवाक्यस्य प्रवर्तकत्वम् । उक्तञ्च मण्डनमिश्रैः प्रवर्तितुं धर्म्यं प्रवदन्ति  
प्रवर्तनमिति । वाचस्पतिप्रभृतयः । वस्तुतस्तु अनेन कर्मणा इदं अभिलषितफलं  
साध्यते इति ज्ञाने जाते सति लिङ् प्रवर्तयति मान्यथा । लिङाख्यो लकारः कर्मसु  
प्रवर्तक इति द्वेतीः विध्यर्थक उच्यते ।

BENGALI.—এই মনুস্মরণে লোকের নিকট ইহাতে পৃথিবীর ব্যবহার মনুষ্য  
বিষয় বিষয় আচার ব্যবহার নিকা করিবেন । ২০ ।

ENGLISH—All men in the world should learn their own respective course of conduct from a first-born (Brahmin) born in this country. (20).

हिमवद्विन्ध्ययोर्मध्यं यत् प्राग्विनशनादपि ।

प्रत्यगीव प्रयागाच्च मध्यदेशः प्रकीर्तितः ॥ २१ ॥

PROSE. — यत् हिमवद्विन्ध्ययोः मध्यं विनशनात् अपि प्राक्, प्रयागात् च प्रत्यक्, (सः) मध्यदेशः प्रकीर्तितः ॥ २१ ॥

KULLUKA. — हिमवदिति । उत्तरदक्षिणदिगवस्थितौ हिमवद्विन्ध्यौ पर्वतौ योरन्वध्यं विनशनात् सरस्वत्यन्तर्धानदेशात् यत् पूर्वं प्रयागाच्च यत् पश्चिमं स मध्यदेशनामा देशः कथितः ॥ २१ ॥

KULLUKA EXPLAINED. — The position of the Himalaya and the Vindhya mountains is described “उत्तरदक्षिणदिगवस्थितौ” i. e. one lies to the north and the other to the south. What are the mountains and viṇḍhya? *Answer.* “पर्वतौ” यत् स्थानं हिमाचलविन्ध्ययोर्मध्ये विनशनात् प्राक् पूर्वम्, प्रयागात् प्रत्यक् पश्चिमं इति कर्तुं चाह “विनशनात् यत् वै प्रयागाच्च यत् पश्चिमम्” “सः” इति विधेयमाधान्यात् पुंस्त्वं चाहुः कुल्लुकभट्टाः ।

विनशनादर्थमाह “सरस्वत्यन्तर्धानदेशात्” i. e. तत् स्थानं विनशनं इति ज्ञेयं यत् सरस्वती देवनादी नयतिष्ठ । तच्च कुल्लुकेवप्रामे ।

PURPORT. — यत् हिमवद्विन्ध्याचलयोर्मध्यस्थानं विनशनतीर्थात् पूर्वं प्रयागात् पश्चिमं च स मध्यदेशः ॥ २१ ॥

MEANING IN ENGLISH. — That country which is bounded to the north by the Himalaya, and on the south by the Vindhya mountains, on the west by Binasana, and on the east by Prayaga, is known as the Madhya or central country.

*Change of voice.* — येन मध्यम्, विनशनात् प्राक् प्रयागात् प्रतीचा तेन मध्यदेशेन प्रकीर्तितेन भूयते ॥ २१ ॥

GRAMMATICAL NOTES.—1. हिमवद्विन्ध्ययोः—हिमं विद्यते अस्मिन् देशे स च विन्ध्यश्च हिमवद्विन्ध्यौ द्वयः । तयोः शेषे षष्ठौ । 2. मध्यम्—qualifies यत् which again refers to स्थानम् । 3. विनशनात् अन्तर्धान-

पदयोगात् पञ्चमी by अन्यादिति । प्राक् being असुत्तरपदम् । वि-नश् + ल्युट् । अनश्त् अनेशत् । 4. प्राक् प्र-अञ् + क्तिप् । Neuter प्राक् प्राची प्राश्चि । 5. प्रयागात् असुत्तरपदयोगात् पूर्व्ववत् पञ्चमी । प्र-मञ्ज + ल्युट् । प्र-इज्यते अत्र प्रयागः । अत्र ब्रह्मा स्त्रयं यज्ञं चकारेति प्रयागः प्रकृत्ययाग इति भारतीयः कथानुसन्धेया । 6. प्रत्यक् प्रति-अञ् + क्तिप् । प्राक् and प्रत्यक् both qualify यत् । अस्ति आनञ्च आञ्चोत् । 7. मध्यदेशः मध्यदेशी देशश्च । कर्मधारयः । 8. प्र-कृत + क्तः कर्मणि (चिच्) ।

BENGALI.—ले ह्यन উত্তর হিমালয় ও পশ্চিম হু নিকা পর্ব্বতের মধ্যবর্তী, এবং বাহা বিনসনের পূর্ব্ব এবং অশ্রাগের পশ্চিম, তাহাকে মধ্যদেশ বলে ॥ ২১ ॥

ENGLISH.—The country which is between the Himalaya and the Vindhya hills, is to the east of *Vinasana* or the terminus of the Saraswati, and is to the west of Prayaga (Allahabad) is called *Madhyadesa* or the central country. (21).

आसमुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्रात्तु पश्चिमात् ।

तथोरेवान्तरं गिर्योराख्यावर्त्तं विदुर्वुधाः ॥ २२ ॥

PROSK.—आ पूर्वात् समुद्रात् आ पश्चिमात् समुद्रात् तथोः एव गिर्योः अन्तरं बुधाः आख्यावर्त्तं विदुः ॥ २२ ॥

KULLUKA.—आसमुद्रात्त्विति । आपूर्व्वसमुद्रात् आपश्चिसमुद्रात् हिमवद्विन्ध्योश्च यन्मध्यं तमाख्यावर्त्तदेशं पण्डिता जानन्ति । मर्यादायामयमाङ् नाभिविधौ तेन समुद्रमध्यद्वीपानां नार्थावर्त्तता । आख्यां अवावर्त्तन्ते पुनपुनरुद्भवन्तीत्याख्यावर्त्तः ॥ २२ ॥

KULLUKA EXPLAINED.—अन्तरम् has been explained as “मध्यम्” । बुधा = “पण्डिताः ।” विदुः = “जानन्ति” ।

“मर्यादायां आङ् नाभिविधौ तेन समुद्रमध्यद्वीपानां नार्थावर्त्तता” । The meaning of आङ् is मर्यादा exclusion and not अभिविधि inclusion. Therefore the islands in the eastern and western oceans are not included in Aryabarta. “तेनविना मर्यादा तत्तत्सहितोऽभिविधिः ।” (Vide Grammatical notes.) आख्यावर्त्तः is derived by Kulluka as “आख्यां अत्र &c.”

PURPORT.—পূর্ব্বমসুদ্রাৎ পশ্চিমং পশ্চিমসমুদ্রাৎ পূর্ব্বং হিমবন্তী দক্ষিণং বিম্ব্যাত্  
উত্তরং যৎ স্থানং তং আর্য্যাবর্ত্তং কথয়ন্তি পণ্ডিতাঃ ॥ ২২ ॥

MEANING IN ENGLISH.—Commencing from the Eastern Ocean on the east and from the Western Ocean on the west, the space between the same two mountains Himalaya and Vindhya the wise have called Aryabarta or the land of the Aryans.

Change of voice.—অন্যত্র আর্য্যাবর্ত্তঃ বুধৈঃ বিদ্যতে ॥ ২২ ॥

GRAMMATICAL NOTES—1. সমুদ্রাৎ—পশ্চমী by পশ্চম্যপাঙ্ পশ্চিমিঃ  
i. e. পশ্চমী is added in connection with অপ্ পাঙ্ and পরি when  
they are regarded as কর্ম্মপ্রবচনীয়। পাঙ্ becomes কর্ম্মপ্রবচনীয় both  
in মর্যাদা and অবিবিধ by পাঙ্ মর্যাদাবচনে। বচনসহস্রাৎ অবিবিধাবপি  
কর্ম্মপ্রবচনীয়ত্বমিতিশেষঃ। আ মুক্কেঃ সংসারঃ। আ সকলাৎ ব্রহ্ম। When  
compounded in the অস্বয়ীভাব form under the rule পাঙ্ মর্যাদামি  
বিধ্যোঃ we have আসমুদ্রম্ and not আসমুদ্রাৎ। But আ সমুদ্রাৎ is  
correct when not compounded. সুদ্রয়া সহ বর্ত্তমানঃ সমুদ্রঃ or সম্  
-উত্ + রা + ক। 2. পূর্ব্বাৎ and পশ্চিমাৎ qualify সমুদ্রাৎ। 3.  
নির্য্যোঃ—শিবে বহু। পূর্ব্বোক্ত্যোঃ হিমবত্‌বিষয়োরিত্যর্থঃ। 4. তথ্যোঃ—quali-  
fies নির্য্যোঃ। 5. বুধাঃ—বুধ + ক। বুধ্যন্তে ইতি বুধাঃ। ইনুপধ ইতি কঃ।  
অবুধ অবোধি। বোধতি বোধতে। অবুধ্যত্ অবোধীত্ অবোধিত্। 6. বিদুঃ—  
বিদ + উত্। by বিদোলটো বা বেসেলটঃ পরস্মৈপদানাং লিটঃ ঞলাদয়ঃ বা ঞ্যঃ।  
বেদ বিদতুঃ বিদুঃ। বিদ্য বিদয়ঃ বিদ। বেদ বিব বিদ্য। পচি বৈচি বিচঃ  
বিদন্তি ইত্যাদি। বিবেদ বিদাশ্চকার। 7. আর্য্যাবর্ত্তম্—আর্য্য + আঙ্—ইত + অর্  
vide ক্রুজ্জকঃ। আরাৎ অর্মান্ বিদ্যন্তে ইতি আর্য্য ইতি বাচস্পতিমিয়াঃ। ঋহলৌর্ণ-  
দিতিসূত্রে ঋধাতোর্ণ্যতা আর্য্যঃ গম্য ইত্যর্থকঃ সাত্ জ্ঞাত্যপ্রত্যয়স্ববাহুলকাত্ কাস্ত্যর্থপি  
ঞ্যত্ মবিতুমর্হতি। আর্য্যো গম্য।

BENGALI.—পূর্ব্বদিকে পূর্ব্বসমুদ্র এবং পশ্চিমদিকে পশ্চিমসমুদ্র এবং উত্তরে  
হিমালয় ও দক্ষিণে বিন্ধ্যা এই উভয় পর্ব্বতের মধ্যে যে স্থান তাহাকে পণ্ডিতগণ আর্যা-  
বর্ত্ত বলেন ॥ ২২ ॥

ENGLISH.—The land between these two mountains, (spreading)  
up to the eastern and the western sea, they (the wise) call Arya-  
varta. (22).

कृष्णसारस्तु चरति मृगो यत्र स्वभावतः ।

स ज्ञेयो यज्ञियो देशो स्नेच्छदेशस्ततः परः ॥ २३ ॥

PROSE.—कृष्णसार. मृगः यत्र तु स्वभावतः चरति स यज्ञियः देशः ज्ञेयः ततः परः स्नेच्छदेशः ज्ञेयः ॥ २३ ॥

KULLUKA.—कृष्णसारस्त्विति । कृष्णसारो मृगो यत्र स्वभावतो वसति न तु बलादानेतः स यज्ञार्हो देशो ज्ञातव्यः अन्यो स्नेच्छदेशो न यज्ञार्ह इत्यर्थः ॥ २३ ॥

PURPORT.—यस्मिन् देशे कृष्णसारो मृगः स्वभावतः विचरति स यज्ञार्ह देशः ज्ञेयः ततो बहिर्भागे यो देशः स यज्ञानर्हः देश इति मन्यव्यम् ॥ २३ ॥

MEANING IN ENGLISH.—That land on which the spotted antelope naturally grazes is held fit for the performance of sacrifices ; beyond that is the land of barbarians unfit for the performance of a sacrifice.

*Change of voice.*—कृष्णसारिण मृगेण चर्यते । तेन यज्ञियेन देशेन ज्ञेयेन भूयते... स्नेच्छदेशेन भूयते ॥ २३ ॥

GRAMMATICAL NOTES.—कृष्णसारः—कृष्णशरी सारश्च कृष्णसारः वर्णवर्णेनेति समासः । कृष्णः and सारः are not समानाधिकरण, the colours exist in the different parts of the body and not as सुन्दरः and पुरुषः in a सुन्दरपुरुषः । Therefore special sutra is necessary. 2. यज्ञियः—यज्ञ + घ । 3. स्नेच्छदेशः स्नेच्छानां देशः स्नेच्छदेशः । स्नेच्छ अन्धकारां वाचि । स्नेच्छति अपभाषते इति स्नेच्छः । गोमांसखादको यस्तु विरुद्धं बहुभाषते । सर्व्वाचारविहीनश्च स्नेच्छ इत्यभिधीयते इति वीधायने । 4. ततः तद् + तसिच् अन्वारादिति प्रसभौ । 5. मृग्यते इति मृगः ।

BENGALI.—যে স্থানে কৃষ্ণসার মৃগ স্বভাবতঃ চিহ্নিত করে সেই স্থানকে যজ্ঞার্থ দেশ বলে ; তাহার বাহিরে যে দেশ তাহারকে স্নেচ্ছ দেশ বলে ; সেই স্থান যজ্ঞের উপযুক্ত নহে ॥ ২৩ ॥

ENGLISH.—The country where the black-spotted antelope is found to roam as native to the soil is to be known as a land fit for sacrifices ; beyond it is the Mlechha land, (23).

एतान् द्विजातयो देशान् संशयेरन् प्रयत्नतः ।

शूद्रस्तु यस्मिन्कस्मिन् वा निवसेदुद्वृत्तिकथितः ॥ २४ ॥

PROSE.—বিজাতয়ঃ এতান্ দেশান্ প্রযবতঃ সংযযেরন্ যদ্রাস্তুহনিকর্ষিতঃ যচ্ছিন্ কচ্ছিন্ বা নিবসেৎ ॥ ২৪ ॥

KULLUKA.—এতানিতি । অন্যদেশীহুবা অপি বিজাতযৌ যশ্চাৰ্থত্বাহুদৃষ্টার্থত্বাচ্চ এতান্ দেশান্ প্রযবদাশ্রয়েরন্ যদ্রাস্তু হনিপৌড়িতৌ হন্যর্থম্ অন্যদেশমপ্যশ্রযেৎ ॥ ২৪ ॥

KULLUKA EXPLAINED.—বিজাতয়ঃ is explained as অন্যদেশীদম্বা অপি বিজাতয়ঃ twice-born classes even if born in other countries. যশ্চাৰ্থত্বাৎ হুদৃষ্টার্থত্বাৎ च for spiritual as well for temporal benefit. হনিপৌড়িতঃ is explained as হন্যর্থম্ for earning livelihood.

PURPORT.—ব্রাহ্মণচরিত্যবৈশ্যঃ অন্যদেশীদম্বা অপি পূর্বোক্তান্ দেশান্ যশ্চাৰ্হান্ আশ্রয়েরন্ । যদ্রাস্তু এতান্ অন্যান্ দেশান্ আজীবনার্থং আশ্রয়েরন্ ॥ ২৪ ॥

MEANING IN ENGLISH.—Let the twice-born classes even if born in other countries live in the countries mentioned above. But a Sudra distressed for subsistence may live in any country.

Change of voice.—বিজাতিभिः एते देशाः संश्रयेरन् । यद्रेष तु..... हनिकर्षितेन.....उच्येत ॥ ২৪ ॥

GRAMMATICAL NOTES.—1. বিজাতয়ঃ হে জাতৌ উত্পত্তৌ যেষাং তে বিজাতয়ঃ । ব্রাহ্মণচরিত্যবৈশ্যঃ । 2. সংযযেরন্—সং+যি+ইরন্ লিঙ্ । শ্রয়তি শ্রয়তে । শ্রিয়ায় শ্রিয়িযে । অশ্রিয়িত—ত । 3. দেশান্—Acc. of সংযযেরন্ 4. এতান্ qualifies দেশান্ । 5. প্রযবতঃ—প্র+যত+ন । যততে যেনে অযতিষিৎ । ততীয়া করণে । ততীয়াযাঃ তন্ । 6. যদ্রঃ—Nom. to নিবসেৎ । যোষতি অজ্ঞানান্বত্বাৎ যদ্রঃ নিপাতনাত্ সিদ্ধঃ । 7. নিবসেৎ+বচস—যাত্ লিঙ্ । অবাৎসৌৎ বত্স্থতি উবাচ । 8. হনিকর্ষিতঃ—বর্নতে জীবতি অন্যথা ইতি হনিতঃ । তথা কর্ষিতঃ হনিকর্ষিতঃ ততীয়া সমাসঃ । কৃষ্+ক্ত ষিচ্ স্বার্থে 9. যচ্ছিন্ কচ্ছিন্ uncertainty implied, qualify দেশে understood.

BENGAL.—বাংলা বিজাতি তাহারা অন্য দেশোদ্ভব হইলেও যত্নপূর্বক এই সকল দেশ আশ্রয় করিবেন, কেননা এই সকল দেশ বজাৰ্হ এবং তথায় জীবিকা উৎকৃষ্ট ; কিন্তু বৃহগণ জীবিকা অর্জননের জন্য যে কোন দেশে বসতি করিতে পারে ॥ ২৪ ॥

ENGLISH.—The twice-born should with care resort to these countries. The Sudras may, (when) distressed for a livelihood, live in any country whatsoever. (24).

एषा धर्मस्य वो योनिः समासेन प्रकीर्तिता ।

सम्भवस्यास्य सर्वस्य वर्णधर्मान् निबोधत ॥ २५ ॥

PROSE.—एषा वो धर्मस्य योनिः समासेन प्रकीर्तिता । अस्य सर्वस्य सम्भवस्य (प्रकीर्तिताः) । (इदानीं) वर्णधर्मान् निबोधत ॥ २५ ॥

KULLUKA.—एषा धर्मस्येति । एषा युष्माकं धर्मस्य योनिः संक्षेपेणोक्ता योनिर्ज्ञानिकारणं वेदोऽखिलो धर्मसूत्रमित्यादिना उक्तमित्यर्थः । गोविन्दराजस्तु धर्मशब्दोऽपूर्वाख्यात्मकधर्मो वर्तते इति विद्वद्भिः सेवित इत्यत्र तत्कारणेऽष्टकादौ वा पूर्वाख्यास्य धर्मस्य योनि रिति व्याख्यातवान् । सम्भवस्योत्पत्तिर्जगत इत्युक्ता इदानीं वर्णधर्मान् गृणत । वर्णधर्मशब्दश्च वर्णधर्माश्चमधर्मवर्णाश्चमधर्मगुणधर्म-नैमित्तिकधर्माणामुपलक्षकः । ते च भविष्यपुराणोक्ताः । वर्णधर्मः स्मृतस्त्वेक आश्रमाश्रमतः परम् । वर्णाश्रमस्ततोयस्तु गौणो नैमित्तिकस्तथा । वर्णधर्मः स उक्तस्तु यथोपनयनं वृष । यस्माश्रमं समाश्रित्य अधिकारः प्रवर्तते । स खल्लाश्रम-धर्मस्तु भिक्षादद्यादिको यथा । वर्णत्वमाश्रमत्वञ्च योऽधिकृत्य प्रवर्तते । स वर्णा-श्रमधर्मस्तु मौञ्जीया मेखला यथा । यो गुणेन प्रवर्तते गुणधर्मः स उच्यते । यथा सूडाभिषिक्तस्य प्रजानां परिपालनम् । निमित्तमेकमाश्रित्य यो धर्मः सम्प्रवर्तते । नैमित्तिकः स विज्ञेयः प्रायश्चित्तविधियश्च ॥ २५ ॥

KULLUKA EXPLAINED.—एषा refers to योनिः । वः = “युष्माकम्” । योनिः = “ज्ञानिकारणम्” means of knowing. प्रकीर्तिता = “उक्ता” declared. समासेन = “संक्षेपेन” briefly. Q. How योनिः उक्ता (declared) ? Ans. “वेदोऽखिलो धर्मसूत्रमित्यादिना उक्तमित्यर्थः” Declared in the couplet वेदोऽखिलो धर्मसूत्रमिति (II. 6.)

“गोविन्दराजस्तु धर्मशब्दः अपूर्वाख्यात्मकधर्मो वर्तते इति विद्वद्भिः । सेवित इत्यत्र तत्कारणे अष्टकादौ च अपूर्वाख्यास्य धर्मस्य योनिरिति व्याख्यातवान् ।” Govindaraja supposed that the word dharma here means that dharma which is called अपूर्वम् । After the performance of a duty, the effect remains in a certain condition called अपूर्वम् which stands till it exhausts itself by producing some other effect. According to Govindaraja अपूर्वम् is the meaning of धर्मो here. Therefore the योनि of धर्मो is the cause of अपूर्वम् which

lies in the performance of *śrādh* like *Ashtaka* and so on. Kulluka does not approve the explanation of Govindaraja.

सम्भवः is explained as उत्पत्तिः “वर्णधर्मशब्दश्च &c.” = The word वर्णधर्मः includes (a) वर्णधर्मः, (b) आश्रमधर्मः, (c) वर्णाश्रमधर्मः, (d) गुणधर्मः and (e) नैमित्तिक धर्मः ।

They are described in the *Bhabishya Purana* quoted in the commentary.

PURPORT.—हे सुमनसः मया संचेषेण धर्मस्य उत्पत्तिकारणं उक्तम्, अस्य जगतः सृष्टिश्च उक्ता । इदानीं मया वर्णधर्मो आश्रमधर्मश्च वर्णाश्रमधर्मश्च गुणधर्मश्च नैमित्तिक-धर्मश्च प्रवृत्तः ॥ २५ ॥

MEANING IN ENGLISH.—I have thus declared to you the means by which *dharma* may be known, as well as the creation of the universe. Now know the several duties known as duties of caste, duties of stages of life, duties of castes and stages together, duties appertaining to special functions, and duties arising from accident.

Change of voice.—एतां धर्मस्य योनिं अहं कौर्त्तितवान् । सम्भवश्च । धर्मधर्म्याः निबोधन्ताम् ॥ २५ ॥

GRAMMATICAL NOTES.—1. एषा qualifies योनिः । 2. योनिः Acc. of कौर्त्तित in the passive voice. 3. सम्भवः Acc. of कौर्त्तितः understood. यु + निः । सम् - भू + णप् । 4. धर्मस्य धर्मोः । 5. समासेन प्रत्ययादिभ्यश्चतीया । सम् - अस + घञ् । अस्सति आस्सत् । 6. धर्मधर्म्यान् Acc. of निबोधत । वर्णानां धर्म्याः धर्मो सः । 7. निबोधत (vide II. 1.)

BENGALI.—हे मूनिगण, আমি আপনাদের নিকট ধর্ম জানিবার উপায়, ও এই যগতের উৎপত্তি সংক্ষেপে নির্দেশ করিয়াছি ; এখন আপনারা আমার নিকট বর্ণধর্ম, আশ্রমধর্ম, বর্ণাশ্রমধর্ম, গুণধর্ম ও নৈমিত্তিক ধর্ম অবগত করুন ॥ ২৫ ॥

ENGLISH.—This is the source of *dharma* or duty told to you briefly ; and also the genesis of the universe (has been told). (Now) learn the duties of the castes (and the various stages of life) (25).

वेदिकैः कर्मभिः पुण्यैर्निषेकादिर्द्विजस्यनाम् ।

कार्यैः शरीरसंस्कारः पावनः प्रेत्य चेह च ॥ २६ ॥



PROSE.—পুণ্যৈঃ বৈদিকৈঃ কৰ্ম্মভিঃ হিজন্মনাং প্রেত্য চ ইহ চ পাবনঃ নিষেকাদিঃ শরীরসংস্কারঃ কার্য্যঃ ॥ ২৫ ॥

KULLUKA.—বৈদিকৈরিতি । বেদমূলত্বাবৈদিকৈঃ পুণ্যৈঃ শুভমেন্দ্রিয়াদিকৰ্ম্মভিঃ হিজাতীনাং গর্ভাধানাদিশরীরসংস্কারঃ কৰ্ম্মণ্যঃ । পাবনঃ পাপচয়হৃতুঃ প্রেত্য পরলোকে সংস্কৃতস্য যাগাদিফলসম্বন্ধাত ইহলোকে চ বেদাধ্যয়নাদধিকারাত ॥ ২৫ ॥

KULLUKA EXPLAINED.—পাবনঃ পবিত্রতাবিধায়কঃ = “পাপচয়হৃতুঃ” প্রেত্য পাবনঃ “পরলোকে সংস্কৃতস্য যাগাদিফলসম্বন্ধাত” = যঃ সংস্কৃতিমবিত্ত স এব হিজন্মনাং কৃতস্য যোগস্য ফলং পরলোকে লভেত । “ইহলোকে চ বেদাধ্যয়নাদধিকারাত” = In this life also becomes entitled to the study of the vedas, when one observes these ceremonies.

PURPORT.—ব্রাহ্মণ্যচরিতবৈশ্যানাং গর্ভাধানাদিসংস্কারাঃ কৰ্ম্মণ্যঃ । কৈঃ ? পুণ্যৈঃ বৈদিকৈঃ মন্যৈঃ । কথম্? ক্রতে হি সংস্কারে অগ্নিন্ লোকে বেদপাঠাদিষধিকারো জায়তে পরলোকে চ ইহ জন্মানি কৃতস্য যজ্ঞস্য ফলং প্রাপিঃ ॥ ২৫ ॥

MEANING IN ENGLISH.—The twice-born castes must perform with the sacred vedic rites ceremonies from conception &c. They purify them in this as well as in the next world. (26).

Change of voice.—শরীরসংস্কারেণ কার্য্যেণ ভূয়তে । পাবনেন ॥ ২৫ ॥

GRAMMATICAL NOTES.—1. কৰ্ম্মভিঃ করণে দ্বিতীয়া । 2. বৈদিকৈঃ qualifies কৰ্ম্মভিঃ । 3. পুণ্যৈঃ—qualifies কৰ্ম্মভিঃ পূজ্+য়ত্ by পুণ্যো যজুন্ ক্রত্বয় । পুনাতি পুনীতে । অপাবীত্ অপবিত । 4. নিষেকাদিঃ—নিষেকঃ আদির্যম্ সঃ বহুব্রীহিঃ । নি-সিচ্+ঘজ । 5. ক্র+ণ্যত্ কার্য্য । 6. শরীরসংস্কারঃ শরীরস্য সংস্কারঃ শরীরসংস্কারঃ । ষষ্ঠী সমাসঃ । সম্-ক্র+ঘজ । সম্+পৃথুপৈথ্যঃ কৰোতী ভূষণে ইতি সুট্ । 7. পাবনুঃ-পূ-শিচ্+ল্যুঃ । 8. প্রেত্য—প্র-ই+ল্যপ্ । অত্ৰ্যয়ম্ or প্রেত্য প্রাপ্তে লোকে ইত্যর্থঃ । 9. হিজন্মনান্—ই জন্মনী যেষাং তে হিজন্মনানঃ তেষাম্ শ্রীষে ষষ্ঠী ।

BENGALI.—পুণ্য বৈদিক কৰ্ম্মবোদ্ধা হিজাতীগণের গর্ভাধানাদিসংস্কার করা কর্তব্য । এই সকল সংস্কার ইহকালে ও পরকালে পবিত্রতা বিধান করে ; তাহাতে ইহলোকে বোধদিগাঠি এবং পরলোকে যজ্ঞফলভোগে অধিকার হয় ॥ ২৫ ॥

ENGLISH.—The sacrament appertaining to the body of the twice-born such as the ceremony at the time of conception etc. which is purificative here and hereafter (i.e. after death) should be accomplished by holy vedic rites. (26).

गर्भेर्होमैर्जातकर्मचौडमौञ्जीनिवन्धनैः ।

वैजिकं गार्भिकञ्चैनो द्विजानामपमृज्यते ॥ २७ ॥

PROSE.—गर्भः होमैः जातकर्मचौडमौञ्जीनिवन्धनैः द्विजानां वैजिकं गार्भिकं च एनः अपमृज्यते ॥ २७ ॥

KULLUKA.—कुतः पापसम्भवं येनैषां पापव्ययहेतुत्वमत आह गर्भेरिति । ये गर्भग्रहणे क्रियन्ते ते गर्भाः । होमग्रहणमुपलक्षणं गर्भाधानादेरहोमरूपत्वात् जातस्य यत् कर्म मन्त्रवत्सर्पिःप्राशनादिकृपं तज्जातकर्म, चौडं चूडाकरणकर्म, मौञ्जीनिवन्धनमुपनयनं, तैर्वैजिकं प्रतिविहमेष्टुनसङ्ख्यादिना च पेटकरेतोदोषात् यद्यनं पापं गार्भिकं च अशुचिमातृगर्भवासजं तत् द्विजातीनामपमृज्यते ॥ २७ ॥

KULLUKA EXPLAINED.—“कुतः.....चत आह” = When does their sin arise for the atonement of which those ceremonies are prescribed? This sloka is an answer to this question. वैजिकं एनः is explained as “प्रतिविहमेष्टुनसङ्ख्यादिना च पेटकरेतोदोषात् यत् पापम्” । यथा सह यस्मिन् काले वा मैष्टुनं शास्त्रे निषिद्धं तथा सह तस्मिन् काले वा जनकस्य या मैष्टुनेच्छा भवेत् तथा जनकरेतसीदोषो जायते स एव दोषः वैजिकं पापं पितृबीजजातस्य वैजिकदोषाक्रान्तत्वात् वैजिकपापभाक्त्वम् । गार्भिकं पापमाह “अशुचिमातृगर्भवासजम्” इति । अशुचिशोणितादीनां अशुचित्वं शास्त्रकृतम्

PURPORT.—पितृबीजं यत् पापं अशुचिमातृगर्भवासजातं च यत् पापं तत् सर्वं गर्भाधान-जातकर्म-चूडाकरणोपवीतग्रहणैः संस्कारैः दूरीक्रियते द्विजानाम् ॥ २७ ॥

MEANING IN ENGLISH.—By a ceremony during mother's pregnancy, by holy rites on the birth of the child, by the tonsure ceremony, by investing with the sacred thread, is the seminal and uterine impurity of the three classes removed.

GRAMMATICAL NOTES.—1. गर्भः—गर्भ + अच् । 2. होमैः करणे द्वितीया । 3. जातकर्मचौडमौञ्जीनिवन्धनैः—जातस्य कर्म जातकर्म । चूडाया इदं चौडम् । मौञ्जीनिवन्धनम् मुञ्जस्य विकारो मौञ्जी मेषला तस्या निवन्धनम् मौञ्जीनिवन्धनम् । जातकर्म च चौडश्च मौञ्जीनिवन्धनश्च तानि तैः करणे द्वितीया । चध्नाति चधान्तीति । 4. वैजिकम्—बीजस्य इदम् (उक्) । 5. गार्भिकम्—गर्भ + उक् । Qualifies एनः । 6. एनः Acc. of अपमृज्यते कर्मणि प्रत्ययः ।

২ + অসু + নৃট্ । এতি অগাৎ । ৭. দ্বিজাধিকো দ্বিজাঃ উপপদ সমাসঃ ।  
 দ্বি - জন + উঃ । তেষাম্ দ্বিজানাং শ্রেণে বহৌ । ৪. অপরজ্যতে—অপ - স্বজ  
 + কর্মণি লট্ তে । স্বজ মারিৎ মমার্জ । অমার্জ্যেৎ অমার্জ্যেৎ ।

*Change of voice.* - এন: অপমার্জ্জন্তি কর্মিণ্য: (understood) ॥ ২৩ ॥

BENGALI.—গর্ভাধান, জাটকর্ম, চূড়াकरण ও উপনয়ন সংস্কার দ্বারা দ্বিজাতি-  
 গণের বীজদোষজ ও গর্ভদাসজ পাপ অপকৃষ্ট হয় ॥ ২৭ ॥

ENGLISH.—The seminal and uterine sin of the twice-born is  
 purged away by fire-offerings during conception, the natal cere-  
 mony, the tonsure or shaving of the head, and by binding on the  
*Munja* string. (27).

স্বাধ্যায়েন ব্রতৈর্হোমৈস্বৈবিত্যে নৈজ্যয়া সুতৈঃ ।

মহায়জ্ঞৈশ্চ যজ্ঞৈশ্চ ব্রাহ্মীযং ক্রিয়তে তনুঃ ॥ ২৮ ॥

PROSE.—স্বাধ্যায়েন ব্রতৈঃ হোমৈঃ বৈবিত্যে নৈজ্যয়া সুতৈঃ মহায়জ্ঞৈঃ যজ্ঞৈঃ চ  
 ইদং তনু ব্রাহ্মী ক্রিয়তে ॥ ২৮ ॥

KULLUKA.—স্বাধ্যায়েনেতি । বেদাধ্যয়নেন ব্রতৈর্মধুমাংসবর্জনাদিনিয়মৈর্হোমৈঃ  
 সাবিতচন্দ্রহোমাदिभिः मायं प्रातर्होमैश्च वैविद्याख्येन च ब्रतेन प्राधान्यादस्य पृथगुप-  
 न्यासः । इज्यया ब्रह्मचर्यावस्थायाम् देवर्षिपितृतर्पणरूपया दृढस्यावस्थायाम् पुनोत्-  
 पादनेन महायज्ञैः पञ्चभिर्ब्रह्मयज्ञादिभिः यज्ञैर्ज्योतिष्टोमादिभिः ब्राह्मी ब्रह्मप्राप्ति-  
 योग्येयं तनु तत्त्ववच्छिन्न आत्मा क्रियते कर्मसहकृतब्रह्मज्ञानेन मोक्षावाप्तये ॥ २८ ॥

KULLUKA EXPLAINED.—তনু: is explained as “তত্ত্ববচ্ছিন্ন আত্মা”  
 তনুর্হি জড়া তস্যা ব্রহ্মলাভযোগ্যতাभावात् তনুস্থিত আত্মা एव তনুশব্দেन कथ्यते ।  
 “পঞ্চभिঃ ব্রহ্মযজ্ঞাদিभिঃ” see further. ব্রাহ্মী is explained “ব্রহ্মপ्राप्तियोग्या” ।

PURPORT.—দেহস্য আত্মা বেদপাঠেন মদ্যমাংসবর্জনাदिरूपब्रतेन, সার্ব  
 प्रातः कर्मख्येन धामेन, वैविद्यासंशुक्लेन ब्रतेन पितृतर्पणादिना पुनोत्पादनेन पञ्चभि र्यज्ञै  
 सथा ज्योतिष्टोमादियज्ञैश्च, ब्रह्मप्राप्तियोग्यः क्रियते ॥ २८ ॥

*Change of voice.* —ইমাং তনু ব্রাহ্মী কুর্বেন (দ্বিজা:) ॥ ২৮ ॥

BENGALI.—বেদজ্ঞানের অধ্যয়ন, ব্রহ্মচর্যাदि উত্ত, ব্রহ্মচর্য্যসময়ে দেবর্ষি পিতৃতর্পণ,  
 গৃহহোম ইত্যেইপাঠোপনিষদ, ব্রহ্মযজ্ঞ প্রভৃতি পঞ্চমহাযজ্ঞ ও অপরপূজা যজ্ঞ—এইগুলি  
 মানবনিগদে ব্রহ্মপ্রাপ্তির উপযুক্ত করে ॥ ২৮ ॥

ENGLISH.—This body (*i.e.* the soul inhabiting therein) is rean-

dered fit for attaining the Brahman or beatitude by reading the Vedas, by vows, by burnt offerings, by *trividya* (i.e. certain vows), by sacrifices, by offspring, by the (five daily) great sacrifices, and by other sacrifices. (28).

प्राङ्नाभिवर्द्धनात् पुंसो जातकर्म विधीयते ।

मन्त्रवत् प्राशनञ्चास्य हिरण्यमधुसर्पिषाम् ॥ २८ ॥

PROSE.—नाभिवर्द्धनात् प्राक् पुंसो जातकर्म विधीयते । अथ (तदा) हिरण्यमधुसर्पिषां मन्त्रवत् प्राशनञ्च (भवेत्) ॥ २८ ॥

KULLUKA.—प्रागिति । नाभिवर्द्धनात् प्राक् पुरुषस्य जातकर्माख्यः संस्कारः क्रियते । तदा चास्य स्वयच्छोक्तमन्त्रैः स्वर्णमधुघृतानां प्राशनम् ॥ २८ ॥

MEANING IN ENGLISH.—Immediately after birth and before the section of the umbilical cord a ceremony called Jatakarma is performed. During this ceremony the child is made to taste honey, clarified butter and gold, all the while the sacred texts are being pronounced.

Change of voice.—जातकर्म विधीयते । प्राशनेन भूयते ॥ २८ ॥

GRAMMATICAL NOTES.—1. नाभिवर्द्धनात् अन्तारादितरत्नं इति प्राक्शब्दयोगो पञ्चमी । नाभेः वर्द्धनम् नाभिवर्द्धनम् तस्मात् प्राक् । वर्द्धनम् छेदनम् । 2. पुंसः—श्रुते षष्ठी । 3. जातकर्म जातस्य कर्म जातकर्म षष्ठीसमासः । 4. विधीयते—वि-धा+कर्त्तृणि लट् ति । अघित अघात् । 5. हिरण्यमधुसर्पिषाम्—कर्त्तृणि षष्ठी हिरण्यञ्च मधु च सर्पिषश्च हिरण्यमधुसर्पिषां वि । तेषाम् । कर्तृकर्त्तव्योः कृतौति षष्ठी । 6. मन्त्रवत्—मन्त्र+मतृप् qualifies प्राशनम् । 7. प्राशनम् प्र-अश्+ल्यट् । अश्नाति । आश, आशीत् ।

BENGALI.—बालक जन्मिबानाज नाडीछेदनेर पूर्वें ताहार जातकर्म नामक संस्कार करा विहित ; उदकाले मन्त्र उच्चारण पूर्वेंक अर्घ, घृत ओ मधु पान कराइये ॥ २८ ॥

ENGLISH.—Before the cutting of the umbilical cord the natal ceremony of a male (child) is ordained (to be performed). And the child is to taste honey, clarified butter and gold (—probably in a golden cup) accompanied with recitation of Vedic Mantras. (29).

नामधेयं दशम्यान्तु द्वादश्यां वास्य कारयेत् ।

पुण्ये तिथौ सुहृत्ते वा नक्षत्रे वा गुणान्विते ॥ ३० ॥

PROSE.—दशम्यां द्वादश्यां वा यस्य नामधेयं कारयेत् । पुण्ये तिथौ सुहृत्ते गुणान्विते नक्षत्रे वा कारयेत् ॥ ३० ॥

KULLUKA.—नामधेयमिति । जातकर्म्येति पूर्वश्लोके जन्मनः प्रसूतत्वात् जन्मापेक्षया दशमे द्वादशे वाहनि तस्य शिशोर्नामधेयं स्वयमसम्भवे कारयेत् । अथवा अशौचे तु व्यतिक्रान्ते नामकर्म विधीयते इति शङ्खवचनाद्दशमेऽह्न्यतीते एकादशाह इति व्याख्येयम् तत्राप्यकरणे प्रशङ्गे तिथौ प्रशस्त एव सुहृत्ते नक्षत्रे च गुणवत्येव ज्योतिषावगते कर्तव्यं वाशब्दोऽवधारणे ॥ ३० ॥

KULLUKA EXPLAINED.—“जातकर्म्येति.....कारयेत् ।” The preceding text alludes to birth. Therefore *namakarana* is to take place on the 10th or 12th day commencing from the birth of the child.

MEANING IN ENGLISH.—Let one perform or, if absent, cause it to be performed, on the tenth or twelfth day after the birth, the ceremony of giving a name ; if not done on those days, then on some auspicious day of the moon, at a lucky hour, and under the influence of an auspicious star.

GRAMMATICAL NOTES.—1. नामधेयम्—Acc. of कारयेत् रूपनामभावेभ्योऽधेय इति नामन् + धेय । 2. गुणान्विते—गुणैः अन्विते द्वतीया समासः । 3. दशम्याम् and 4. द्वादश्याम् refer to तिथि understood but really they mean day. कालाधिकरणे समसौ ।

*Change of voice* .—.....नामधेयम् कारयेत् ॥ ३० ॥

BENGALI.—जन्मের পর একাদশ কিংবা দ্বাদশ দিবসে নামকরণ করিবে । ই সময়ের না পাঁত্রিলে প্রশস্ত তিথি ও সুহৃৎ এবং শুভবুজ নক্ষত্রে নামকরণ করিবে ॥ ৩০ ॥

ENGLISH.—(The ceremony of giving) a name to him (the child) should be caused to be performed on the tenth or twelfth day (from the date of birth) ; or on an auspicious lunar day or hour, or under a lucky star. (30).

मङ्गल्यं ब्राह्मणस्य स्यात् क्षत्रियस्य वलान्वितम् ।

वैश्यस्य धनसंयुक्तं शूद्रस्य तु जुगुप्सितम् ॥ ३१ ॥

PROSE. — ब्राह्मणस्य मङ्गल्यं क्षत्रियस्य वलान्वितं वैश्यस्य धनसंयुक्तं शूद्रस्य तु जुगुप्सितं ( नामवेधं ) स्यात् ॥ ३१ ॥

KULLUKA. — मङ्गल्यमिति ब्राह्मणादीनां यथाक्रमं मङ्गलवलधननिन्दावाचकानि श्रम-वल-वसुदीनादीनि नामानि कर्तव्यानि ॥ ३१ ॥

MEANING IN ENGLISH. — A Brahmin's name must be auspicious, a Kshatriya's name is to indicate strength, that of a Vaisya wealth, and that of a Sudra is to indicate contempt.

GRAMMATICAL NOTES. — 1. मङ्गल्यम् — मङ्गल + यत् । 2. वलान्वितम् वलेन यत्ना अन्वितम् । 3. धनेनसंयुक्तम् अयुक्तं अयौचीत् अयुक्त । 4. जुगुप्सितम् गुप् + सन् + क्तः कर्षणे ।

Change of voice. — मङ्गल्येन.....वलान्वितेन..... धनसंयुक्तेन ... .. जुगुप्सितेन नामधेयेन भूयेत ॥ ३१ ॥

BENGALI. — ब्राह्मणेर मङ्गलवाचक, क्षत्रियेर वलवाचक, वैश्येर धनवाचक च शूद्रेर निन्दावाचक नाम ईहेवे ॥ ३१ ॥

ENGLISH. — The name of a Brahmin should be auspicious, that of a Kshatriya indicative of power; that of a Vaisya significant of wealth; but that of a Sudra contemptible. (31).

शर्मवद्ब्राह्मणस्य स्याद्राज्ञो रक्षासमन्वितम् ।

वैश्यस्य पुष्टिसंयुक्तं शूद्रस्य प्रैषसंयुतम् ॥ ३२ ॥

PROSE. — ब्राह्मणस्य शर्मवत् राज्ञः रक्षासमन्वितं वैश्यस्य पुष्टिसंयुक्तं शूद्रस्य प्रैषसंयुक्तं उपपदं स्यात् ॥ ३२ ॥

KULLUKA. — इदानीमुपपदनिर्णयार्थमाह शर्मवद्ब्राह्मणस्येति । एषां यथाक्रमं शर्मरक्षापुष्टिप्रैषवाचकानि कर्तव्यानि शर्मवर्त्मभूतिदासादीनि उपपदानि कार्याणि उदाहरणानि तु श्रुतशर्मा वलवर्मा वसुभूतिः दीनदास इति । तथाच यमः — शर्मा देवसन्निप्रस्य वर्मा जाता च भूसुतः । भूतिर्दत्तश्च वैश्यस्य दासः शूद्रस्य कारयेत्

विष्णुपुराणेऽप्युक्तं शर्मवत्त्राक्षणस्योक्तं वञ्चति चतसंयुतम् । गुप्तदासान्तकं नाम  
प्रशस्तं वैश्यशूद्रयोः ॥ ३२ ॥

KULLUKA EXPLAINED. — “शर्मवर्म्भ भूति दासादीनि उपपदानि कार्याणि ।  
The last part of the name of a Brahman, Kshatriya, Vaisya  
and Sudra is to be respectively Sarman, Varman, Bhuti and  
Das and the like. He quotes authorities to show that a Brahman  
may have the additional surname or title Deva, a Kshatriya  
may have Trata and a Vaisya may have Dutta and Gupta too.

GRAMMATICAL NOTES. — 1. शर्मण + मतुप् । 2. राक्षः शिषे षडौ  
राज + कनिच् । 3. रक्षसमन्वितम् रक्षया समन्वितम् । रक्ष + ञ । सम् -  
अनु + इ + क्तः कर्मणि । अरक्षीत्, अगात् । 4. पुष्टिसंयुक्तम् पुष्ट्या संयुक्तम् ।  
पुष्ट + क्तिन् अपुषत् । सम् - युञ् + क्तः । 5. प्रैष्य संयुतम् प्रैष्येण दास्त्रेण संयुतम् ।  
प्र + ण्य = प्रैष्य इतिः by प्राद्वोढोद्येवैधायुः । The first vowel of ऊङ्, ऊढः, ऊढिः, एष and एष्य gets इति when preceded by प्र. इष् (दिवादि  
आदि) + ण्यत् एष्य ।

*Change of voice.* — शर्मवता रक्षसमन्वितेन ... पुष्टिसंयुक्तेन ... प्रैष्यसंयुक्तेन भूयेत ॥ ३२ ॥

BENGALI.—त्राक्षणेर उपपद शर्म, कत्रिणेर उपपद त्रकावाचक अर्थात् वैश्य,  
वैश्वेणेर पुष्टिवाचक अर्थात् भूति, शूद्रेर दृडाववाचक अर्थात् दास नाम इहेवे । तथा—  
सुखमर्था, समवर्मा, वशभूति ओ दौनदास एहेक्षण नाम इहेवे । ३२ ॥

ENGLISH.—A Brahmin's name should have a surname or title  
indicative of happiness or prosperity, a Kshatriya's name should  
have a title expressive of protection, the name of a Vaisya should  
have a title significant of riches, and that of a Sudra a title indica-  
tive of service. (32).

स्त्रीणां सुखोद्यमक्रूरं विस्मयार्थं मनोहरम् ।

महत्त्वं दीर्घवर्णान्तमाशीर्वादाभिधानवत् ॥ ३३ ॥

PROSE. — स्त्रीणां सुखोद्यं अक्रूरं विस्मयार्थं मनोहरं महत्त्वं दीर्घवर्णान्तं  
आशीर्वादाभिधानवत् ( नामधेयं ) स्यात् ॥ ३३ ॥

KULLUKA. — স্ত্রীণামিতি । সুখীভাষ্যমকুরাধবাচি ব্যক্তাভিষেয়ং মনঃপ্রীতি-  
জননং মঙ্গলবাচি দীর্ঘস্বরানন্স আশীর্বাচকেনাभिधानেন শব্দেনোপেতং স্ত্রীণাং নাম কর্তব্যং  
যথা যশোদা দেবীতি ॥ ২২ ॥

MEANING IN ENGLISH.—The name of a woman should  
be easily utterable, not indicative of cruelty, of clear meaning,  
agreeable, auspicious, ending in long vowels, containing words  
of benediction.

GRAMMATICAL NOTES. — 1. স্ত্রীণাম্ শিবে বহৌ । 2. সুখীভ্যম্  
সুখিন উদ্যতে সুখীভ্যম্ । সুখ - বদ + ক্যপ্ । কর্ম্মণি । Bhatto says "কর্ম্মণি  
প্রত্যয়াবিত্যেকো" পশ্যে যত্ সুখবদ্যম্ । বদতি অবাদীত্ । 3. অকুরম্ ন কুরম্  
নন্স মমাসঃ । ক্রনতি হৃদয়মিতি কুরম্ । কৃত্ + রক্ । কৃতঃ ক্রুঃ । 4.  
বিস্পষ্টার্থম্ বিস্পষ্টঃ অর্থো यस্য তত্ বহুব্রীহিঃ । স্পৃশ্ + ক্ত নিপাতনে । 5.  
মনীহরম্ - মনস্ - হৃ + অচ্ । 6. মঙ্গল্যম্ - মঙ্গল + যত্ । 7. দীর্ঘবর্ণানন্স  
দীর্ঘশাসী বর্ণশ্চ দীর্ঘবর্ণঃ কর্ম্মধারয়ঃ । সঃ অন্সো यस্য তত্ বহুব্রীহিঃ । স্বরবর্ণ-  
মিগ্নস্য হ্রস্বদীর্ঘাভাবাত্ দীর্ঘবর্ণানন্স দীর্ঘস্বরাননমিত্যর্থঃ । Definition of  
দীর্ঘত্বম্ অকালোঃচ্ হ্রস্বদীর্ঘপ্রুতঃ i. e. those vowels whose pronun-  
ciation is like উ-জ-উ" (i. e. কু-কু-কু") of a cock while crowing are  
respectively হ্রস্ব, দীর্ঘ and প্রুত । i. e. a vowel with one mátrá  
(attempt) is হ্রস্ব, with two is দীর্ঘ, and with three is প্রুত ।  
Thus অ' - ঞ' - ঞ'" are respectively হ্রস্ব, দীর্ঘ and প্রুত অকার । Some  
contend that অ' - ঞ' - ঞ'" are not identical in sound like ই' - ই'  
- ই'" । ঞ" (আ) is flatter than অ, and is like a different sound.  
But the difficulty was anticipated by Panini and was removed  
by the sutra নান্শ্ললৌ while discussing সর্ববর্ণসংস্থা । 8. আশীর্বাধামি-  
ধানবত্ আশির্বা বাদঃ আশীর্বাদঃ তস্য অভিধানং কথনং তদনু তদনুগম্ । আঙ্-  
শাস্ + ক্টিপ্ । আশীর্বাধাধিধান + মনুপ্ । বদ + ঘজ্ । অমি - ঘা + ণ্ডত্ ।

Change of voice.—সুখীভ্যেন অকুরেণ, বিস্পষ্টার্থেন, মনীহরেণ, মঙ্গল্যেন  
দীর্ঘবর্ণানেন আশীর্বাধামিধানবতা .....মুখেন ॥ ২২ ॥

BENGALI.—যে নাম অনাগ্রাসে উচ্চারণ করা যায়, নিঃস্রুতবাচক নহে, বাহার  
অর্থ বিশিষ্ট, বাহাতে মনের প্রীতি জন্মে, বাহা মঙ্গলবাচক, বাহার অন্তে দীর্ঘস্বর থাকে,  
বাহার উচ্চারণ আনন্দোৎসবের অর্থ বুঝায়, জীলোকের সেইরূপ নাম করিবে । যথা  
—যশোদা দেবী । ৩৩ ।



ENGLISH—Women's names should be such as are capable of being easily pronounced, are not harsh, are plain of meaning, charming, auspicious have a terminating long vowel and have the meaning of benediction or blessing. (33).

चतुर्थे मासि कर्त्तव्यं शिशोर्निष्क्रमणं गृह्णात् ।

षष्ठेऽन्नप्राशनं मासि यदेष्टं मङ्गलं कुले ॥ ३४ ॥

PROSE. — चतुर्थे मासि शिशोः गृह्णात् निष्क्रमणं षष्ठे मासि अन्नप्राशनं कार्यम् । यत् वा कुले मङ्गलं इष्टं (तत्) कर्त्तव्यम् ॥ ३४ ॥

KULLUKA. — चतुर्थे मासीति । चतुर्थमासे बालस्य जन्मगृह्णात् निष्क्रमणमादित्यदर्शनार्थं कार्यम् । अन्नप्राशनञ्च षष्ठे मासे अथवा कुलधर्मत्वेन यन्मङ्गलमिष्टं तत् कर्त्तव्यं तेनोक्तकालादन्यकालेऽपि निष्क्रमणम् । तथाच यमः — ततश्चतुर्थे कर्त्तव्यं मासि सूर्यस्य दर्शनम् । सकलसंस्कारविषयव्याधं तेन नाम्नां शर्मादिकमप्युपपदं कुलाचारैश्च कर्त्तव्यम् ॥ ३४ ॥

KULLUKA EXPLAINED. — वा = “अथवा” । गृह्णात् = “जन्मगृह्णात्” ।

GRAMMATICAL NOTES. — 1. चतुर्थे — चतुर् + थक् । 2. गृह्णात् — अपादाने पञ्चमी । 3. मासि — मासे पक्षे मासि । 4. अन्नप्राशनम् अन्नस्य प्राशनं भोजनं अन्नप्राशनम् । 5. इष्टम् — इष्ट + क्तः कर्मणि । इच्छति ऐषीत् ।

Change of voice. — ..... निष्क्रमणेन कर्त्तव्येन भूयते ॥ ३४ ॥

BENGALI. — चतुर्थ मासे निष्ठुर श्रुतिका गृह इहेते श्रुत्यर्पणार्थे निष्क्रमण नामक संस्कार करिबे ; षष्ठे मासे अन्नप्राशन संस्कार कराइबे ; अथवा निज कुले अन्न ये मगरे निष्क्रमणादि संस्कार इहेना बाके जेई मगरे करिबे । ३४ ॥

ENGLISH. — (The ceremony of) a child's coming out of the lying-in room should be done in the fourth month ; the ceremony of eating rice should be done in the sixth month, or what auspicious practise is desired or preferred in one's own family (should be followed). (34).

चूडाकर्म द्विजातीनां सर्वेषामेव धर्मतः ।

प्रथमेऽष्टे तृतीये वा कर्त्तव्यं श्रुतिचोदनात् ॥ ३५ ॥

PROSE.—चूडाकर्म्म सर्वेषामिव द्विजातीनां प्रथमे तृतीये वा ऋद्धे धर्मतः कर्म्मव्ययं श्रुतिचोदनात् ॥ ३५ ॥

KULLUKA.—चूडाकर्म्मति । चूडाकरणं प्रथमे वर्षे तृतीये वा द्विजातीनां धर्मतो धर्मार्थं कार्यं श्रुतिचोदनात् । यत्र वाणाः सम्पत्तिनि कुमारः विशाखा इवेति नमन्तिहात् कुलधर्मोऽनुवारेणार्थं व्यवस्थितविकल्पः । अतएवान्तरायनगृह्यं तृतीये वर्षे चूडाकरणं यथा कुलधर्मं वा ॥ ३५ ॥

KULLUKA EXPLAINED.—धर्मतः is explained as धर्मार्थम् । व्यवस्थितविकल्पः व्यवस्थितस्य प्रथमवर्षे कर्म्मव्ययतया स्थितस्य कुलधर्मोऽनुरोधेन विकल्पः ।

GRAMMATICAL NOTES. — 1. चूडाकर्म्म चूडा चूला एव कर्म्म चूडाकर्म्म । 2. धर्मतः चतुर्थ्यास्तसिः । 3. प्रथमे — प्रथ + अमच् । 4. तृतीये — त्रि + तीये by वेः सम्प्रसारणञ्च । 5. ऋद्धे अपः ददातीति ऋद्धः । वत्सरः । 6. श्रुतिचोदनात् — श्रुतेः चोदनम् प्रवर्तना श्रुतिचोदनम् तस्मात् द्विती पञ्चमी । 7. चतुर्थे — चतुर् + थक् ।

Change of voice.—चूडाकर्म्मणा कर्म्मव्ययेन मृयते ॥ ३५ ॥

BENGALI.—अतिर विधान अनुसारे ममसु द्विजातिर गृहे ऋद्धेन अथवा तृतीये वत्सरे कुलधर्मोऽनुवारे चूडाकर्म्म करिषे ॥ ३५ ॥

ENGLISH.—The *chuda* rite, or the rite of tonsure or shaving of all the twice-born castes should in obedience to the direction of the *Śruti* or revelation be done for the purposes of duty or religious practise either in the first or the third year. (35).

गर्भाष्टमेऽर्द्धे कुर्वीत ब्राह्मणस्योपनायनम् ।

गर्भादेकादशे रात्रौ गर्भात्तु द्वादशे विशः ॥ ३६ ॥

PROSE.—गर्भाष्टमे ऋद्धे ब्राह्मणस्य, गर्भात् एकादशे ऋद्धे रात्रः, गर्भात् तु द्वादशे ऋद्धे विशः, उपनायनं कुर्वीत ॥ ३६ ॥

KULLUKA.—गर्भाष्टमेति । गर्भवर्षाष्टमे वर्षे ब्राह्मणस्योपनयनं कर्म्मव्ययम् उपनयनमेवोपनायनम् ऋद्धेऽपि दृश्यत इति दीर्घः । गर्भादेकादशे अविशस्य गर्भाद्वादशे वैशस्य ॥ ३६ ॥

GRAMMATICAL NOTES. 1. गर्भाष्टमे गर्भात् गर्भसञ्चारात् ऋष्टमः गर्भाष्टमः पुरुषात् उत्तमः पुरुषोत्तम इति विग्रहस्य शाब्दे दृष्टत्वात् । अत्रापि गर्भात् एकादशे द्वादशे इत्युक्तदिशा समासः पञ्चम्याः स्त्रीक्रियते । ऋष्टम + मद् पुरषे । 2.

एकादशे एकाधिका दश एकादश । एकादशानां पूरणः एकादशः तस्य पूरये ङट् इति ङट् । ३. द्वादशे Do. ४. गर्भात् अन्तारादितिकालवाचकयोर्मे पञ्चमी । ५. रात्रः शेषे षष्ठी । ६. विशः Do. द्वौ विशौ वैश्यमनुजौ इत्यमरः । विशति षट्श्रमिति विट् । विश + क्तिप् । अविशत् । ७. उपनायनम्—उपनयन-  
मेव उपनायनम् । उप - नी + ल्युट् । अन्येषामपि दृश्यते इति दीर्घः । Acc.  
of कुर्वीत । ८. कुर्वीत - क्त + ईत ।

*Change of voice.*—उपनयनं क्रियेत ॥ ३६ ॥

BENGALI.—गर्भ सफ़ार इहेते गणना करिग्रा अष्टम बৎसरे ब्राह्मणेन, एकादश बৎसरे क्खियेन, द्वादश बৎसरे वैश्येन उपनयन संस्कार करिबे ॥ ३६ ॥

NOTE.—गर्भ सफ़ार इहेते गणना करिले १० मास काल गर्भवास धरिग्रा भूमिष्ठ इण्डास समय अवधि ७ बৎसर ७ मास इहेते १ बৎसर ७ मास पर्वास्त काल गर्भोष्ठम बৎसर ह्य । उक्कालमथो ब्राह्मणेन । ऐरूप क्खियेन भूमिष्ठ इण्डास अवधि ७ बৎसर ७ मासरेन पर १० बৎसर ७ मास पर्वास्त कालमथो, एवं वैश्येन भूमिष्ठ इण्डास अवधि १० बৎसर ७ मास पर ११ बৎसर ७ मास पर्वास्त उपनयन काल ।

ENGLISH.—One should perform the investiture of a Brahmin with the sacred thread in the eighth year commencing from conception, of a Kshatriya in the 11th year; and of a Vaisya in the 12th year. (36).

ब्रह्मवर्चसकामस्य कार्यं विप्रस्य पञ्चमे ।

राज्ञो वलार्थिनः षष्ठे वैश्यस्येहार्थिनोऽष्टमे ॥ ३७ ॥

PROSE.—ब्रह्मवर्चसकामस्य विप्रस्य पञ्चमे, वलार्थिनः राज्ञः षष्ठे, अर्थिनः वैश्यस्य अष्टमे (उपनयनं) कार्यम् ॥ ३७ ॥

KULLUKA.—ब्रह्मवर्चसकामस्येति । वेदाध्ययनतदर्थेज्ञानादिप्रकर्षकृतं तीक्ष्णं ब्रह्मवर्चसं तत्कामस्य ब्राह्मणस्य गर्भपञ्चमे वर्षे उपनयनं कार्यम्, अमियस्य ह्यस्यवाट-  
राज्यवलार्थिनो गर्भषष्ठे, वैश्यस्य बहुकृष्यादिष्वेहार्थिनो गर्भाष्टमे गर्भवर्षाणामेव प्रकृतत्वात् । यद्यपि वालस्य कामना न सम्भवति तथापि तत्पितुरेव तद्वतफलकामना-  
तस्मिन्प्रचर्यते ॥ ३७ ॥

KULLUKA EXPLAINED.—पञ्चमे षष्ठे and अष्टमे have been explained as “गर्भपञ्चमे” “गर्भषष्ठे” “गर्भाष्टमे” because the former sloka commences with the word गर्भ ।

GRAMMATICAL NOTES 1. ब्रह्मवर्चसकामस्य—ब्रह्मणो वर्चः ब्रह्मवर्चसम् षष्ठी समासः । समासान्त अच् by ब्रह्महस्तिभ्यां वर्चसः ब्रह्मवर्चसम् कामः कामना यस्य स ब्रह्मवर्चसकामः । बह्व्रीहिः । तस्य qualifies विप्रस्य । कम + चञ् कामः । कामयते अचौकमत अचकमत । चकमे कामयाचकमे । वृंह + मनिन् ब्रह्मन् । वृंहते वर्जते स्वरूपशक्त्या अर्धात् शक्तियुक्तं यत् तद् ब्रह्म । अद्वैतवादपक्षे शक्त्याभावात् वृंहते वर्जते इव व्याप्रीतीव ब्रह्म । 2. विप्रस्य श्रेषे षष्ठी । वपति धर्ममिति विप्रः । वप + रन् उपधाया इलम् । By अन्वेन्द्राय वज्रविप्र &c. &c. 3. पञ्चमे—पञ्चन् + मट् । By नान्तादसंख्यादिर्मट् । 4. राज्ञः—श्रेषे षष्ठी । 5. वलार्थिनः वलं अर्थयते इति वलार्थी तस्य वलार्थिनः । 6. षष्ठे—षष्—षट् षष्ठ । 7. अर्थिनः—अर्थ + इनि असन्निधाने । 8. अष्टमे—अष्टन् + मट् । 9. कार्यम् ल + ण्यत् ।

*Change of voice*—.....उपनायनेन कार्येण भूयते ॥ ३७ ॥

BENGALI.—ब्रह्मपाठे ও ব্রোহ্ম গ্রহণে প্রকর্ষ হওয়া যাহার বাঞ্ছনীয় সেই ব্রাহ্মণের উপনয়ন গর্ভ সকার হইতে পঞ্চ বৎসরে, যে ক্ষত্রিয়ের হস্তি ও অশ্বাদি রাজ্য-বল বাঞ্ছনীয় সেই ক্ষত্রিয়ের উপনয়ন গর্ভসকার হইতে ষষ্ঠ বৎসরে, যে বৈশ্যের বহুতর কৃষি প্রভৃতি কল বাঞ্ছনীয় তাহার উপনয়ন গর্ভসকার কাল হইতে ঋষ্টম বৎসরে সম্পাদন করিবে ॥ ৩৭ ॥

NOTE.—পূর্বলোকবৎ ব্রাহ্মণের ভূমিষ্ট হওয়াবধি ৩ বৎসর ৩ মাসের পর ৩ বৎসর ৩ মাস পর্যন্ত ; ক্ষত্রিয়ের ভূমিষ্ট হওয়াবধি ৪ বৎসর ৩ মাস হইতে ৫ বৎসর ৩ মাস পর্যন্ত ; বৈশ্যের ভূমিষ্ট হওয়া অবধি ৬ বৎসর ৩ মাস হইতে ৮ বৎসর ৩ মাস পর্যন্ত সময়মধ্যে উপনয়ন ।

ENGLISH.—The investiture (with the sacred string of a Brahmin, desirous of spiritual pre-eminence resulting from sacred knowledge should be performed in the fifth year ; of a Kshatriya desirous of prowess or strength in the sixth, and of a Vaisya desirous of wealth in the eighth. (37).

आ षोडशादब्राह्मणस्य सावित्री नातिवर्त्तते ।

आ द्वाविंशात् क्षत्रवन्धोराचतुर्विंशतेर्विशः ॥ ३८ ॥

PROSE.—ब्राह्मणस्य आ षोडशात् क्षत्रवन्धोः आ द्वाविंशात् विशः आ चतुर्विंशते सावित्री न अतिवर्त्तते ॥ ३८ ॥

KULLUKA.—आषोडशादिति । अग्निविधावाङ्, ब्राह्मण-अग्निव-विशातुष्टाष्ट-

মৈকাদশদ্বাদশবর্ষদ্বৈগুণ্যস্য বিবচিত্বাত্না ব্রোড়শবর্ষপর্যন্তং ব্রাহ্মণস্য সাবিবায়ৈ  
বচনসুপনয়নং নাতিক্রান্তকালং ভবতি । অবিয়স্য দ্বাবিংশতিবর্ষপর্যন্তং বৈশ্বস্য  
চতুর্বিংশতিবর্ষপর্যন্তম্ । অত মর্যাদায়ামাঙ্ কৈবিশাখ্যাপয়ন্তি যমবচনদর্শনাৎ  
তথা চ যমঃ—পতিতা যস্য সাবিবৌ দশবর্ষাণি পশু চ । ব্রাহ্মণস্য বিশেষেণ তথা  
রাজন্যবৈশ্বযোঃ । প্রায়শ্চিত্তং ভবেদেবাং প্রোবাচ বদতাং বরঃ । বিবস্বতঃ সূতঃ শ্রীমান্  
শ্রমো ধর্ম্মার্থতত্ববিত্ । সশিষ্টং বপনং কৃत्वा ব্রতং কুৰ্য্যাৎ সমাহিতঃ । হবিষ্য  
ভীজঘেদগ্নং ব্রাহ্মণান্ সপ্ত পশু বা ॥ ২৮ ॥

KULLUKA EXPLAINED.—“অতিবিধাবাঙ্” তত্‌সংহিতোঃ ভিবিধিঃ ইতি  
নিয়মাৎ ব্রোড়শবর্ষাভ্যে ব্রাহ্মণস্য উপনয়নকালঃ । “দ্বৈগুণ্যস্য বিবচিত্বাত্না” ।  
While laying down 8th, 11th, and 12th year as the period  
of investiture, double the times was all the while contemplated.  
Therefore we have here 16, 22 and 24 respectively. Some  
accept বাঙ্ in the sense of মর্যাদা but Kulluka does not accept  
that view.

GRAMMATICAL NOTES.—1. ব্রোড়শাৎ—বাঙ্ যোগে পশুমৌ by  
পশুস্বপাঙ্‌পরিমিঃ । ব্রোড়শাদশ ব্রোড়শ । ততঃ পূরণে উট্ । 2. দ্বাবিংশাৎ বাঙ্  
যোগে পশুমৌ ব্রোড়শাৎ বিংশতিঃ দ্বাবিংশতিঃ । দ্বাবিংশতে পূরণং দ্বাবিংশঃ দ্বাবিংশতি-  
তমৌ বা by বিংশত্যাদিভ্যসমভূত্যাং optionally তমট্ and উট্ । 3.  
চতুর্বিংশতে পূর্ববৎ বাঙ্‌যোগে পশুমৌ । চতুরধিকা বিংশতিঃ চতুর্বিংশতিঃ । It  
ought to have been চতুর্বিংশাৎ or চতুর্বিংশতিতমাৎ । উট্ or তমট্  
ought to have been added. পূরণার্থ is understood. 4. বাঙ্  
অন্যয়ম্ । অত অবিবিধ্যৈ কৰ্ম্মপ্রবচনীয়সংজ্ঞাতা পশুমৌবাঙ্‌কম্ । 5.  
অববস্বতঃ—অবঃ বস্বঃ সুবর্ণো যস্য সঃ or অবস্য বস্বঃ তস্য অবিয়স্য ইত্যর্থঃ ।  
Generally the word বস্ব in such compounds as ব্রহ্মবস্বঃ অববস্বঃ  
means a bad অবিয় or bad ব্রাহ্মণ । 6. সাবিবৌ—“সাবিবানুবচনম্”  
(Kulluka.)=উপনয়নম্ । সাবিতা দেবতা অস্য সাবিবঃ স্রিয়াং সাবিবৌ, refers  
to Gayatree. সাবিবৌ=The ceremony of investiture hallowed  
by Gayatree. 7. অতিবর্ষতে=অতিক্রান্তমতি ।

Change of voice—.....সাবিবায় নাতিহস্যতে ॥ ২৮ ॥

BENGALI.—গর্ভসংকার ইহাতে গণনা করিয়া ব্রাহ্মণের বোড়শ বৎসর পর্য্যন্ত,  
ক্সিত্রের দ্বাবিংশতি বৎসর পর্য্যন্ত এবং বৈশ্ব্যের চতুর্বিংশৎ বৎসর পর্য্যন্ত উপনয়নের  
কাল বর্তমান থাকে ॥ ২৮ ॥

ENGLISH.—(The initiation into) *Savitri* or *Gayatri*, in the case of a Brahmin, does not go beyond (or take place after) the sixteenth year ; in the case of a Kshatriya, the twenty-second year ; and in the case of a Vaisya, the twenty-fourth year. (38).

অত ऊर्ध्वं त्रयोऽप्येते यथाकालमसंस्कृताः ।

सावित्रीपतिता ब्राह्म्या भवन्त्यार्यविगर्हिताः ॥ ৩৮ ॥

PROSE.—এতে ত্রয়ঃ যথাকালং অপি অসংস্কৃতাঃ অত ऊर्ध्वं সাবিব্রীপতিতাঃ আৰ্য্য-  
বিগৰ্হিতাঃ ব্রাহ্ম্যা ভবন্তি ॥ ৩৮ ॥

KULLUKA.—অত ऊৰ্দ্ধমিতি । এতে ব্রাহ্মণাদ্যো যথাকালং যো যস্যানুকল্য  
কৌঃপনয়নকালঃ সতঃ ষোড়শবর্ষান্তং তদাসংস্কৃতাঃসূৰ্ধ্বং সাবিব্রীপতিতা উপনয়নকালীনাঃ  
শিষ্টগৰ্হিতাঃ ব্রাহ্ম্যসংজ্ঞা ভবন্তি । সংপ্রাপ্যোজনস্ব ব্রাহ্ম্যানাং যাজ্ঞমং কৃত্বাদিনা  
ব্যবহারসিদ্ধিঃ ॥ ৩৮ ॥

KULLUKA EXPLAINED.—The force of অপি is explained  
“যো যস্যানুকল্যকঃ উপনয়নকালঃ সতঃ ষোড়শবর্ষাদিপৰ্য্যন্তং তদ অসংস্কৃতাঃ”  
(অপি) ইত্যর্থঃ । ব্রাহ্ম্যাঃ=“ব্রাহ্ম্যসংজ্ঞাঃ” i. e. technically called ব্রাহ্ম্যাঃ ।  
It is necessary to define ব্রাহ্ম্যাঃ because we get the word ব্রাহ্ম্যাঃ  
further in the text. Amar says “ব্রাহ্ম্যঃ সংস্কারকালীনঃ স্যাৎ ।” ব্রাহ্ম্য-  
সমূহঃ তস্মাৎ অস্বতে ইতি ব্রাহ্ম্যঃ outcasted for non-observance of pre-  
scribed ceremonies.

GRAMMATICAL NOTES.—1. অতঃ—অন্যাদিতি পশ্চমী । 2. যথা-  
কালম্ কালমনতিক্রম্য যথাকালম্ অব্যয়ীভাবঃ । 3. অসংস্কৃতাঃ—ন সংস্কৃতাঃ ।  
সম্—ক্ত+ক্তঃ কার্য্যণি সূত্র by সমপৰ্য্যপেষ্যঃ.&c. &c. 4. সাবিব্রীপতিতাঃ—  
সাবিব্র্যাঃ পতিতাঃ সাবিব্রীপতিতাঃ পশ্চমী সমাসঃ by অপেতাষোড়শমুকপতিতাপনসৌরভঃ  
or পতিতা সাবিব্রী যেষাং তে সাবিব্রীপতিতাঃ পতিতসাবিব্রীকা বহুব্রীহিঃ ।  
আহুতান্ম্যাদিত্বান্ পরনিপাতঃ । 5. ব্রাহ্ম্যাঃ—ব্রাহ্ম্যান্ অুতাঃ ব্রাহ্ম্যাঃ । ব্রাহ্ম্য+য়ন্ ।  
6. আৰ্য্যবিগৰ্হিতাঃ—আৰ্য্যৈঃ বিগৰ্হিতাঃ । দ্বতীয়া সমাসঃ ।

Change of voice.—.....বিমিঃ অসংস্কৃতৈঃ.....ব্রাহ্ম্যৈঃ ভূয়তি ॥ ৩৮ ॥

BENGALI.—এই তিন বর্ষের যে ষোড়শাদি বৎসর পর্য্যন্ত উপনয়নের অনুকূল কাল  
নির্দেশ করা গেল তদ্ব্যতীত যদি ইহারা উপনীত না হয়, তাহা হইলে ঐ ঐ কালের পরে  
ইহারা গায়ত্রীসঙ্কেত হইয়া শিষ্টগণের গর্হিত ও ব্রাহ্ম্য সংজ্ঞা প্রাপ্ত হয় । ৩৮ ।

ENGLISH.—After that these three (castes), if not invested (with the sacred string) at the proper time, become fallen from *Gayatri*, are despised by the respectable, and are (called) *Bratyā* (or out-castes). (39).

नैतैरपूतैर्विधिवदापद्यपि हि कर्हिचित् ।

ब्राह्मन् यौनांश्च सम्बन्धानाचरेद् ब्राह्मणः सह ॥४०॥

PROSE.—विधिवत् अपूतैः एतैः सह ब्राह्मणः आपदि अपि कर्हिचित् ब्राह्मन् यौनान् च सम्बन्धान् न आचरेत् ॥ ४० ॥

KULLUKA.—नैतैरिति । एतैरपूतैर्ब्राह्मणैश्चाविधि प्रायश्चित्तमकृतवद्भिः सह आपत्कालेऽपि कदाचिदध्यापनकन्यादानादीन् सम्बन्धान् ब्राह्मणो नानुतिष्ठेत् ॥४०॥

KULLUKA EXPLAINED. — विधिवत् अपूतैः = “यथाशास्त्रं प्रायश्चित्तं अकृतवदभिः ।” ब्राह्मन् सम्बन्धान् = अध्यापनादीन् । यौनान् सम्बन्धान् = “कन्यादानादीन्” ।

ELUCIDATION.—विधिवत् अपूतैः—When one becomes a *brāhṃ* he or his descendants may be taken back only on the performance of *prāyashcitta* according to the rules. *Apastamba* is the authority on the point. His rules are (1) यस्य पिता पितामह इत्यनुपेतौ स्यातां ते ब्रह्महंसस्तुताः । Those whose father and grandfather received no investiture are like the killers of Brahmins. (2) तेषां अभ्यागमनं भोजनं विवाहमिति वर्ज्ययेत् । They must be excluded from mutual visits, feast and marriage relations. Then we come to the point. (3) तेषां इच्छतां प्रायश्चित्तम् । When they really intend respectfully and not for show, they may receive *prāyashcitta* and get rid of *brāhṃ*. After various discussions, the conclusion made by the ancient commentators was as follows :—

अनेकपुरुषपतितसावित्रीकविषये पतितसावित्रीकाणां वंशानां वधाणां पुरुषाणां यदपत्यं चतुर्थं तत्र संस्कारः उपनयनं भवति । प्रपितामहस्य पितरमारब्ध चतुर्णां पतितसावित्रीकाणां अपत्ये तु न संस्कारः । (इति आपस्तम्बव्याख्यातारः प्राचीनाः )

As to families devoid of investiture ceremony for many generations, the rule is that when there are three genera-

tions without investiture the fourth generation may perform Prayaschittam and get investiture. But when there are four generations commencing from the father upwards, their children the fifth *Bratyas* and downwards will get no investiture. This is the orthodox rule. But some of late have violated the orthodox principle.

GRAMMATICAL NOTES.—1. अपुतेः—न पूतैः पू + क्तः कर्मणि । पुनाति पुनीते पादौना ऋस् इति । अपावौत् अपविष्ट । 2. विधिवत् यथाविधि । विधि + वति । वि - धा + क्ति । विधीयते अनेन इति विधिः शास्त्रम् । यथा-शास्त्रम् । 3. आपदि यस्य च भावेन भावलक्षणम् । or अधिकरणे आपत्काले इत्यर्थः । आङ् - पद + क्तिप् । पयते पेदे आपदि । 4. ब्रह्मणो विदस्व इति ब्राह्माः । ब्रह्मण् + अण् । नकारलोपः अनातो । 5. यौनान् योनिः इमे यौनाः तान् योनि + अण् । 6. सम्बन्धान् - संबध्यते अनेन सम्बन्धः । सम् - बन्ध + घञ् । वध्नाति अमानत्सीत् अवान्मानम् । 7. एतैः - सङ्गस्यधीनि द्वयोः । सङ्गधीनि अप्रधाने इति । 8. ब्रह्मणः अथम् वरुणः ब्राह्मणः न नकारलोपः ।

*Change of voice.*—ब्राह्माः यौनाः ...सम्बन्धाः न चर्येरन् ब्राह्मणेन ॥ ४० ॥

BENGALI.—এই সকল ক্রান্তি বখানিগ্নমে প্রাপ্তিহিত না করিলে বিপৎকালেও ব্রাহ্মণ এই অপবিত্রগুণের সহিত বেদ অধ্যয়নাদি ও কন্যাদানাদি সম্বন্ধস্থাপন করি-  
বেন না ॥ ৪০ ॥

ENGLISH.—A Brahmin should never, not even in times of distress, form spiritual (this is to say by the teaching of Vedas) and marital relations with these (*Bratyas*) not purified according to rule. (40).

कार्थरौरव-वास्तानि चर्माणि ब्रह्मचारिणः ।

वसौरनानुपूर्व्येण शाण्डीमाविकानि च ॥ ४१ ॥

PROSE.—ब्रह्मचारिणः आनुपूर्व्येण कार्थ-रौरव-वास्तानि चर्माणि शाण्डीमा-  
विकानि च ( अश्वोवसनानि ) वसौरन् ॥ ४१ ॥

KULLUKA.—कार्थरौरववास्तानीति । कार्थ इति विशेषानभिधानेऽपि स्व-  
विशेषः रुद्रसाङ्गवर्थात् हारिवर्मेत्येवं वा कार्थं वा ब्राह्मणस्तेत्यापसम्बन्धनाच्च कृत्स्-  
नगो मृच्छते । कृत्स्नगुरुदन्त्यामवर्थाच्च ब्रह्मचारिण उत्तरोयाचि वसौरन्,



चर्माच्छतरीयासीति यद्वचनान् । तथा ब्रह्मसुमनिषलोममवान्धोवसनानि  
ब्राह्मणादयः क्रमेण परिदधौरन् ॥ ४१ ॥

KULLUKA EXPLAINED.—*कृष्णसुगवर्ण* is the meaning of *कर्ण* ;  
These are to be sheets to show which he quotes *पादसन्ध* ;  
“*ब्राह्मचारिणः चानुपूर्व्यान्*” is explained as “*ब्राह्मणादयः क्रमेण*” ।

NOTE.—The practical adoption of the texts of the sages  
is contained in the works called *निबन्ध* or authoritative compi-  
lations and expositions. No part of India can do without  
them. Thus we have our great Raghunandan ; the Maithils  
have their Vachaspati Misra, the Marathis their Narayan,  
Nagoji Kamalakar, Nilkantha and others ; the Deccanese  
have Madhaba and others. These are regarded somewhat  
like infallible authorities, though they have always differed  
from one another on more points than one the old sages  
died long long ago, it is men like those who have practically  
ruled the Hindu society from the time of the great Vicrama-  
ditya at least. The authoritative commentators on Purans  
like Chitsukha Yogin, and Sridhara Swamin have supplied rich  
materials to these text writers, because these *nibandhas* must  
remain hopelessly incomplete without Pauranik texts. Even  
ordinary *ekadasi* fasting would be impossible without Pauranic  
texts, so incomplete are the Samhitas themselves. The ex-  
pounders of the Purans had therefore to be frequently con-  
sulted, and fortunately expounders like Chitsukha and Sridhar  
were most severe, orthodox and unbending, wonderfully learned,  
accurate and reliable. I shall illustrate below the truth of  
what I have said.

This as well as many other texts of Manu prescribe the  
duties of the Brahmans, Kshatriyas and Vaisyas. But in the  
practical adaptation, the texts prescribing the duties of the  
Kshatriyas and Vaishyas have either been entirely excluded as  
in our Raghunandan or only slightly touched as in Shekar.

The common view of all the *nibandhakars* being that these two castes have entirely become extinct, and no vestige of them remains, there being now only two castes the Brahmins and the Sudras. The *vedic* and *sanhita* texts simply lay down the classification that existed long long ago, it is only the *Purans* and the *Itihasas* within whose province it lies to give us information as to how much of the old classification survives and in what way. The *nibandhakars* gave therefore due importance to the social history as preserved by Bhagbat, Vishnu, Vayu, Matsya and similar Purans. Raghunandan stated briefly but clearly that he would not discuss the duties of the 2nd and 3rd castes as they became extinct in the Kalijuga, and referred to the Vishnupuran. We quote below :—

महानन्दिसुतः शूद्राशर्भोदभवः अतिलुब्धो महापद्मनन्दः परशुराम इवापरोऽखिल-  
चवान्तकारो भविता । (Part IV. chapter 24.) Mahapadma Nanda  
a son of Mahanandi begotten on a Sudra wife of his, will be  
immensely rich and, like another Parashuram, will extirpate the  
2nd caste without keeping any remnant.

यावन् परोक्षितो जन्म यावन्नन्दाभिषेचनम् ।

एतद् वर्षसहस्रन्तु श्रेयं पञ्चदशोत्तरम् ॥ ३९ ॥

Between the birth of Parikshit son of Abhimanyu and the installation of Mahapadma Nanda the period consists of 1015 years. Swamin explains : —

“पञ्चदशोत्तरसहस्रवर्षपर्यन्तं युद्धः अनियवंशः स्यात्सति अनन्तरं मन्वेन सर्व-  
चरियमाशङ्क ।” The pure 2nd caste will remain up to 1015 of  
Kali after which Nanda will exterminate all of them.

The Vishnu Puran continues : —

देवायिः पौरवो राजा मरुषेस्त्राकुर्वंशजः ।

महायोगवलोपेतो कलापयामसंश्रयी ॥ ४५ ॥

कृते युगे इहागम्य चावप्रवर्त्तऽको हि तौ ।

भविष्यतो मनीषेक्षे वीजभूतो न्यवसिती ॥ ४६ ॥

Though the Kshatriyas became thus extinct after 1015 years of the Kalijuga, the earth will have the Kshatriyas again only in the next Satyayuga after the expiration of Kali. How ? The answer is that Raja Devapi of the Lunar dynasty, and Maru of the Solar dynasty, are still living in a part of the Himalayas called the village of Kalap, practising yoga. After the Kali when the next Satyayuga will come, these two Kshatriyas will then descend on the earth and procreate the Kshatriyas again. They are living as *seeds* of the Kshatriyas.

एतेन क्रमधीगेन मनुष्यै वसुधरा ।

कृतवेतादिसंज्ञानि युगानि त्रीणि भुज्यन्ते ॥ ४७ ॥

According to this method, the Kshatriyas enjoy the earth only during the first three yugas and not during the fourth.

Swamin :—

“कलिः सव्याशमेव क्षत्रियमत्वात् त्रीणि युगानि भुज्यन्ते इत्युक्तम् ।” The 1015 years of Kali are only a small portion of Kali extending over millions of years. Hence the texts say three yugas only.

The great Nagoji Bhatta's celebrated *Bratyanirnaya* is a powerful exposition of these texts and commentaries. He adds “कली न क्षत्रियाः सन्ति कलौ न वैश्यजातयः । ब्राह्मणायैव यदाय कलौ चण्डग्रं स्मृतम् ।” and “कलावाद्यन्तयोः स्थितिः ।” But though Raghu-  
nandan has omitted the texts we can not omit explanation.

GRAMMATICAL NOTES.—1. कृण्वस्य कृण्वस्य इदं कार्ष्णम् । कृण्व + अण् । 2. रोरिदम्—रौरवम् । रुरु + अण् । 3. वसस्य—वसस्य इदम् वासम् । वस + अण् । कार्ष्णं रौरवस्य वासस्य कार्ष्णरौरववासानि । ब्रह्मचारिणः—ब्रह्म—चर + णिनिः । 4. आनुपूर्व्येण प्रकृत्यादिभ्यस्त्वतीया । अनुगतः पूर्वम् अनुपूर्वः कालाद्यर्थे द्वितीययेति समासः तस्य भावः आनुपूर्व्यम् । 5. शाण्छौमाविकानि च शाण्छ औमञ्च आविकञ्च इहः । Acc. of वसोरन् । शण्स्य चुमाशः च विकारः । शण् + अण् । चुमा + अण् । अवि + ठक् । 6. वसोरन् वस् + ईरन् विधिलिङ् । वसे ववसे । अवसिष्ट ।

Change of voice.—.....चर्माणि शाण्छौमाविकानि वसोरन् ॥ ४१ ॥

BENGALI.—ব্রাহ্মণ কলিয় ও বৈশ্য খাডীয় ত্রকট্যত্রিগণ বশাক্রমে কৃষ্ণমৃগ, ব্রহ্মমৃগ ও ছাগের চৰ্ণ উত্তরীযরূপে এবং শবমৃগ, ব্রেশমের মৃগ ও মেঘলৌহমৃগ হারি প্রস্তুত বস্ত্র অধোবসনরূপে পরিধান করিবে ॥ ৪১ ॥

ENGLISH.—Religious students (belonging to the three twice-born castes) should wear (as upper or outer garments) in order of their precedence the skins of *Krishnasara* antelope, deer, and goats respectively, and should put on under-garments made of hemp, silk and wool (respectively). (41).

মৌজী ত্রিহত্ সমা শ্লক্ষা কার্য্য বিপ্রস্য মেখলা ।

চত্ৰিয়স্য তু মৌৰ্বী জ্যা বৈশ্যস্য শ্ৰণতান্ভবী ॥ ৪২ ॥

PROSE.—বিপ্রস্য ত্রিহত্ সমা শ্লক্ষা মৌজী মেখলা কার্য্য চত্ৰিয়স্য তু মৌৰ্বী জ্যা মেখলা বৈশ্যস্য ত্রিহত্ শ্ৰণতান্ভবী মেখলা কার্য্য ॥ ৪২ ॥

KULLUKA.—মৌজীতি । মুচ্চময়ী ত্রিগুণা সমগুণত্ৰয়নির্মিতা সুখস্পর্শী ব্রাহ্মণস্য মেখলা কচস্য চত্ৰিয়স্য মূৰ্ব্বাময়ী জ্যা ধনুর্গুণরূপা মেখলা অতো জ্যাভবিনাশাপনেস্ত্রিহত্ নাস্তীতি মেধাতিথিগোবিন্দরাজী । বৈশ্যস্য শ্ৰণমূবময়ী যত্র ত্রৈগুণ্যমনুবর্তত এব । ত্রিগুণা প্রদনিষ্ঠা মেখলা ইতি সামান্যেন প্রচৈতস্যা ত্রৈগুণ্যমিধানাত্ ॥ ৪২ ॥

KULLUKA EXPLAINED.—“অতো জ্যাভবিনাশাপনে: ত্রিহত্ নাস্তীতি” । If the girdle be three-stringed it cannot be like a bow-string. Hence the girdle of a Khatriya cannot be a tripple cord so say Medhatithi and Govindaraja.

GRAMMATICAL NOTES.—1. ত্রিহত্—ত্বেধা হত্ ত্রিহত্ । ত্রি-হত্+ক্রিপ্ । 2. সমা-সমত্রিগুণান্বিতা or (1) ত্রিহত্ সমা ত্রিহতা সমা । 3. মৌজী-মুচ্চস্য বিকারো মৌজী । মুচ্চ+অণ্ । 4. শ্লক্ষা-মল্লিকা । শ্লিষ+ক্ক্ষ: by স্থিধেরশোপধায়া: । 5. বিপ্রস্য-শ্রেণে বহৌ । বপ+রক্ । 6. মেখলা-Acc. of কার্য্য: । 7. চত্ৰিয়স্য-চত্ৰ+চ । তস্য । 8. মৌৰ্বী-মূৰ্ব্বা+অণ্ ভৌপ্ । 9. জ্যা-জ্যা+ক্রিপ্ । জিনাতি । 10. জ্যা-জ্যাসৃষ্টমৌ । 11. শ্ৰণ-তান্ভবী শ্ৰণস্য তান্ভবী বহৌ সমাস: । তন্ম+অণ্+ভৌপ্ ।

*Change of voice.*—मौञ्जा विवता समया श्रवणा.....मेखलायाः कार्यया भूयते ॥ ४२ ॥

BENGALI.—ब्राह्मणस्य समानं त्रिंशत् गुणं द्वात्रिंशत् निश्चितं सूक्ष्मं सूक्ष्मसूत्रं मेखलां करिष्ये, क्षत्रियस्य धनुर्गुणाकारे निश्चितं सूक्ष्मसूत्रं जिह्वान्तं मेखलां करिष्ये, वैश्याश्च शतशतनिश्चितं जिह्वान्तं मेखलां करिष्ये ॥ ४२ ॥

ENGLISH.—The girdle of a Brahmin should be made of a triple cord of *Munja* grass, smooth and uniformly (thick) ; but that of a kshatriya should be a bowstring made of *Mūrbā* grass ; that of a *Vaisya* should be a (triple) cord made of the thread of hemp. (42).

मुञ्जालाभे तु कर्त्तव्याः कुशाश्मान्तकवल्जैः ।

विवता यन्मिनेकेन त्रिभिः पञ्चभिरेव वा ॥ ४३ ॥

PROSE.—मुञ्जालाभे ( ब्राह्मणादीनां यथाक्रमं ) कुशाश्मान्तकवल्जैः ( मेखलाः कार्य्याः ) । विवता ( मेखलाः ) एकेन यन्मिना ( यथाकुलाचारं ) त्रिभिः पञ्चभिर्वा ( युक्ताः कार्य्याः ) ॥ ४३ ॥

KULLUKA.—मुञ्जालाभे त्रिति । कर्त्तव्या इति बहुवचननिर्देशात् ब्राह्मणारिवयस्य प्रकृतत्वात् मुञ्जालाभे विषयपेक्षायाः समत्वात् कौशादीनाञ्चतष्ट्यां विधानात् मुञ्जालाभ इति बोद्धव्यम् । कर्त्तव्या इति बहुवचनमुपपन्नतरं भिन्नजातिसम्बन्धितेति द्रुवावयस्य मेधातिथेरपि बहुवचनपाठः सम्मतः । मुञ्जालाभे ब्राह्मणादीनां वयाणां यथाक्रमं कुशादिभिस्त्रिभिस्तृणविशेषैर्मेखलाः कार्य्याः । त्रिगुणेनैकयन्मिना युक्तास्त्रिभिर्वा पञ्चभिर्वा अथ च वायम्निर्देशात् यन्मिनां न विप्रादिभिः क्रमेण सम्बन्धः किन्तु सर्व्वेव यथाकुलाचारं विकल्पः । यन्मिनेदृशं मुञ्जालाभे सम्भवादग्रहीतव्यः ॥ ४३ ॥

GRAMMATICAL NOTES.—1. मुञ्जालाभे—मुञ्जस्य मुञ्जादीनामित्यर्थः । न लाभः अलाभः नञ् समासः । मुञ्जस्य अलाभः मुञ्जालाभः तस्मिन् सति यस्य च भावेन भावलक्षणमिति समी । 2. कुशाश्मान्तकवल्जैः—कुशाश्च अश्मान्काश्च वल्जश्च तैः करिष्ये इतीया । 3. विवता—विवत् + टा । प्रकृत्यादिभ्य इति or कर्त्तरि इतीया and यन्मिना कर्त्तरि इतीया युक्ताः क्रिया understood. 4. कर्त्तव्याः qualifies मेखलाः understood. 5. or विवताः त्रि - ३ + क qualifying मेखलाः (vide ऊर्ध्वं कृतम् next sloka).

*Change of voice.*—मेखलाभिः कर्तव्याभिः भूयते ॥ ४३ ॥

BENGALI.—युष्मद् मूर्खा ओ मणतद्ध पांडरा ना गेले, बिजजयेर यथानियमे कून अन्नास्तक ओ बब्रनानिक ठुण्ठारा मेखला अस्तुत करिबे । ताहापेर सेई सेई जिखनित (मेखला निज निज कुलांतर अनुगारे एक, तिन वा पञ्चग्रहियुक्त करिबे ॥ ४० ॥

ENGLISH.—But if *Munja* grass &c. could not be had, the girdles should be made of *Kusa*, *Asmantaka*, and *Valvaja* respectively), threefold, and with one knot or three or five. (43).

कार्पासमुपवीतं स्याद्विप्रस्योर्द्ध्वतं त्रिवृतम् ।

शणसूत्रमयं राज्ञो वैश्यस्याविकसौत्रिकम् ॥ ४४ ॥

PROSE.—त्रिवृत ऊर्द्ध्वतं उपवीतं ब्राह्मणस्य कार्पासं राज्ञः शणसूत्रमयं वैश्यस्य आविकसौत्रिकं स्यात् ॥ ४४ ॥

KULLUKA.—कार्पासमिति : यदीयविन्यासविशेषस्योपवीतसंज्ञां वक्ष्यति तद्वन्निब्राह्मणस्य कार्पासं, क्षत्रियस्य शणसूत्रमयं, वैश्यस्य मेषलोमनिर्मितम् । त्रिवृदिति विगुणं कृत्वा उर्द्ध्वतं दक्षिणार्धमितम् एतच्च सर्वत्र सम्बध्यते यद्यपि गुणत्रयमेवोर्द्ध्वतं मनुनोक्तं तथापि तन्निगुणौक्त्य द्विगुणं कार्यम् । तदुक्तं ऋग्वेदोपनिषदि ऊर्द्ध्वतं त्रिवृतं कार्यं तन्नुत्तरमधोवृतम् । त्रिवृतस्योपवीतं स्यात् तस्यैको यन्त्रिरिष्यते । देवलोऽप्याह यज्ञोपवीतं कुर्वीत स्वाणि नव तन्तवः ॥ ४४ ॥

KULLUKA EXPLAINED.—“यदीयविन्यासविशेषस्य उपवीतसंज्ञां वक्ष्यति तद्वन्नि (उपवीतं) ब्राह्मणस्य” । The particular arrangement of threads is called sacred thread, that of a Brahmin is to be made of *Karpas* (cotton). “एतच्च सर्वत्र सम्बध्यते” this description applies to the sacred thread of all the three classes. “गुणत्रयमेव” &c. According to Manu only three threads are to be suspended, yet they are to be trippled and three of such trippled threads are to be used.

GRAMMATICAL NOTES.—1. ऊर्द्ध्वतम्—ऊर्द्ध्व त्वं आवर्तितं ऊर्द्ध्वतम् । सङ्घट्टेति समासः । 2. उपवीतम्—उप—वि+इ+क्त । 3. कार्पासम्—कार्पासस्य विकारः कार्पासम् । 4. शणसूत्रमयम्—शणस्य सूत्राणि शणसूत्राणि । मयद् । 5. आविकसौत्रिकम्—अवेरिदं आविकम् । सूत्राणां इदं सौत्रिकम् ।

*Change of voice.*—ऊर्ध्वहतेन विवृता उपवीतेन विप्रस्य कार्पासिन.....

ব্রহ্মসূতময়েন.....আবিকাসীবিকিণ ভূয়ৈত ॥ ৪৪ ॥

BENGAL.—তিনটি সূত্রের একদিক দক্ষিণ কর উর্দ্ধদিকের দ্বিগুণা বহানিষ্ময়েন পুরায়েণ প্রস্তুত করিলে উপবীত হয়। ঐরূপ ত্রিগুণিত ও দক্ষিণাবর্তিত উপবীত আকর্ণের পক্ষে কার্পাসসূত্রনির্মিত, ক্ষত্রিয়ের পক্ষে শবসূত্রনির্মিত, বৈশ্যের পক্ষে মেঘলোমের সূত্রনির্মিত হইবে ॥ ৪৪ ॥

ENGLISH.—The holy thread of a Brahmin should be made of cotton, threefold and put over the (left) shoulder; that of a Kshatriya should be made of the thread of hemp; while that of a Vaisya should be of the thread of the wool of goat or a sheep. (44).

ब्राह्मणो वैल्वपालाशौ क्षत्रियो वाटस्त्रादिरौ ।

पैलवोदुम्बरी वैश्यो दण्डानर्हन्ति धर्मतः ॥ ४५ ॥

PROSE. — ब्राह्मणो वैल्वपालाशौ क्षत्रियो वाटस्त्रादिरौ वैश्यः पैलवोदुम्बरी दण्डानर्हन्तः अर्हन्ति ॥ ४५ ॥

KULLUKA. — ब्राह्मण इति । यद्यपि इहनिर्देशेन समुच्चयावगमात् धारणमपि समुचितस्यैव प्राप्तं तथापि केशान्तिको ब्राह्मणस्य दण्डः कार्य इति तथा प्रतिगृह्योपहितं दण्डमिति विधावेकत्वस्य विवक्षितत्वात् । वैल्वः पालाशौ वा दण्ड इति वामिष्ठे विकल्पदर्शनात् एकस्यैव दण्डस्य धारणं विकल्पितयोरेवैकब्राह्मणसम्बन्धात् समुच्चयो इह नानुद्यते ब्राह्मणादयो विकल्पेन द्वौ द्वौ दण्डौ वत्यमाणकार्ये कर्तुंसर्हन्ति ॥ ४५ ॥

KULLUKA EXPLAINED.—“यद्यपि.....अर्हन्ति ।” “वैल्वपालाशौ” is a compound of the इह class; such a compound implies a collective sense: therefore it seems that a Brahmin is to use staffs of Villva and Palash collectively. But that is not the intention because in other texts we get singular number and we get optional injunction in the text of Vaistha. Therefore a Brahmin is to use staffs made of Villva and Palash optionally. The same option lies with Kshatriyas and Vaisyas also.

GRAMMATICAL NOTES. — 1. वैल्वपालाशौ वैल्वश्च पालाशश्च वैल्वपालाशौ

इहसमासः । इह समास is defined as चार्थे इहः i. e. इहसमास contains the meaning of चकार । यद्यपि समुच्चयार्थे न इह समासः किन्तु इतरैतरयोगे समाहारे च तथापि समुच्चयार्थः अंशेनास्तीति समुच्चयार्थे इहयहणम् । विलस्य विकारः वैलः । विल्लादिभ्योऽण् इति विकारार्थे अण् । पलाशस्य विकारः पालाशः । पलाश + अञ् by पलाशादिभ्यो वा । पालाशम् खादिरम् । 2. बाटखादिरौ - बाटश्च खादिरश्च तौ । बटस्य विकारः बाटः अवयवेच प्राण्यौषधिवृक्षेभ्य इति विकारे अण् । खदिरस्य विकारः खादिरः । खदिर + अञ् by पलाशादिभ्यो वा । 3. पेलवौदुम्बरौ पेलवश्च औदुम्बरश्च तौ । पौलोर्विकारः पेलवः by ओरञ् अञ् is affixed to उकारान्त शब्द in the sense of विकार विकारे । पौलु + अञ् । उदुम्बरस्य विकारः औदुम्बरः । उदुम्बर + अञ् by प्राणिरजतादिभ्योऽञ् उदुम्बर is रजतादि । 4. धर्मतः तृतीयया ससिः । प्रकृत्यादिभ्य इति तृतीयया । 5. दण्डान् - समुच्चयेन अन्वयान् दण्डान् बहुवचनम् । 6. अहन्ति अह् + अन्ति । आनहं आर्हन्ति । समुच्चयेन अन्वयः अहन्तीति ।

*Change of voice.*—ब्राह्मणेन वैलपलाशी क्षतिशेष बाटखादिरौ वैल्लेन पेलवौदुम्बरौ दण्डाः अर्हन्ति ॥ ४५ ॥

BENGALI.—ब्राह्मण (उक्ताङ्गो) विव अथवा गलापेन पञ्च, कजिण (उक्ताङ्गो) । नटे अथवा अदिद्वेन पञ्च, वैल उक्ताङ्गो गौल अथवा उदुम्बरद्वेन पञ्च धर्मतः धात्रेण कतिव ॥ ४६ ॥

ENGLISH.—A Brahmin should have in accordance with law or rule, a staff (made) of either *Vilva* or *Palash* (wood) ; a Kshatriya should have a staff of either *Vatu* or *Khadira* ; and a *Vaisya* should have a staff of *Pilu* or *Udumbara*. (45).

केशान्तिको ब्राह्मणस्य दण्डः कार्यः प्रमाणतः ।

ललाटसन्धितो राज्ञः स्यात्तु नासान्तिको विशः ॥४६॥

PROSE.—ब्राह्मणस्य प्रमाणतः केशान्तिकः दण्डः कार्यः राज्ञः (दण्डः) ललाट-सन्धितः विशः तु नासान्तिकः स्यात् ॥ ४६ ॥

KULLUKA.—केशान्तिक इति । केशललाटनासिकापर्यन्तपरिमाणकमेव ब्राह्मणा-दीनां दण्डाः कर्तव्याः ॥ ४६ ॥

GRAMMATICAL NOTES.—1. केशान्तिकः केशाः अन्ति अवधिवस्य स केशा-



নিক: স্বার্থে কন্ । অথবা কেশা অনিকি যস্য স: । 2. প্রমাণত: তৃতীয়া প্রজাত্যাদিভ্য: । 3. ললাটসম্মিত: ললাটেন সম্মিত: ললাটসম্মিত: তৃতীয়া সমাস: । 4. নাসানিক: নাসা অনিকি যস্য স: ।

*Change of voice.*—কেশানিকেন দৃষ্টেন কাৰ্য্যেণ ভূয়তে । ললাটসম্মিতেন নাসানিকেন ( দৃষ্টেন ) ভূয়েত ॥ ৪৬ ॥

BENGALI.—ব্রাহ্মণের দণ্ড পরিমাপে কেশপর্শ্যস্থ দীর্ঘ করিবে; ক্ষত্রিয়ের দণ্ড ললাটপর্শ্যস্থ ও তৈশ্রের নামিকাপর্শ্যস্থ দীর্ঘ হইবে ॥ ৪৬ ॥

ENGLISH.—The staff of a Brahmin should be made in point of measure (long enough) to come up to his hair; of a Kshatriya, measuring up to his forehead; of a Vaisya, as long as to reach his nose. (46).

ऋजवस्ते तु सर्वे स्युरव्रणाः सौम्यदर्शनाः ।

अनुद्गेकरा नृणां सत्वचो नाग्निदूषिताः ॥ ४७ ॥

PROSE.—তে তু সৰ্ব্বে ( দৃষ্টা: ) অব্রণা: সৌম্যদৰ্শনা: নৃণাং অনুদ্গেকরা: সত্বচ: নাগ্নিদূষিতা: স্য: ॥ ৪৭ ॥

KULLUKA.—ऋजव इति । ते दृष्टा: सुरला: अव्रता: शौभनदर्शना: सवल्कला: अग्निदाहरहिता भवेयु: ॥ ४७ ॥

GRAMMATICAL NOTES.—1. ऋजव: सुरला: । अर्ज Or ऋज + व । 2. न विद्यते व्रणो येषां ते । व्रण + अच् । 3. सौम्यदर्शना: । सौम्यं दर्शनं येषां ते । 4. अनुद्गेकं कुर्वन्तीति अनुद्गेकरा: । कृञ् अतोऽन्त्योऽनुलोप्येति ताच्छीले ट: । न अनुद्गेकरा: । उद्-विज + घञ् । उपपदसमास: । 5. नृणाम् शेषे षष्ठी । 6. सत्वच: त्वचा सह वर्तमाना: सत्वच: तुल्ययोगी बहुव्रीहि: । 7. अग्निदूषिता: अग्निना दूषिता: तृतीया समास: । दुष + णिच् + क्त: कर्मणि । दुष स्थाने दूष । दूषयति । दूषयति ।

*Change of voice.*—तै: ऋजुभि: अव्रणै: सौम्यदर्शनै: अनुद्गेकरै: सत्वग्भि: नाग्निदूषितै:.....भूयेत ॥ ४७ ॥

BENGALI.—পূৰ্ণোক্ত সকল দণ্ডই সরল, অক্ষত, স্বর্ণযুক্ত, ও অগ্নিবারা অনূষিত, দেখিতে এমন স্থল হইবে, যেন লোকের উদ্বেগ না জন্মায় ॥ ৪৭ ॥

ENGLISH.—All these staves should be straight, devoid of any hole or aperture, beautiful to look at, with their bark on, not defiled

or scorched by fire, and not creating terror or anxiety (in the minds of men). (47).

प्रतिगृह्येष्मितं दण्डमुपस्थाय च भास्करम् ।

प्रदक्षिणं परीत्याग्निं चरेद्भैक्षं यथाविधि ॥ ४८ ॥

PROSE.—ईष्मितं दण्डं गृहीत्वा भास्करं उपस्थाय च अग्निं प्रदक्षिणं परीत्य यथाविधि भैक्षं चरेत् ॥ ४८ ॥

KULLUKA. -- न च तैः प्राणिजातमुद्देजनीयमित्याह प्रतिगृह्येष्मितमिति । उक्तलक्षणं प्राप्तमितं दण्डं गृहीत्वा आदित्याभिमुखं स्थित्वा अग्निं प्रदक्षिणौक्त्य यथाविधि भैक्षं याचेत ॥ ४८ ॥

GRAMMATICAL NOTES. 1. ईष्मितम् आप् सन् + क्तः कर्मणि । 2. प्रतिगृह्य—प्रति—ग्रह + ल्यप् । अग्रहीत् । अग्रहीष्ट । 3. भास्करम् Acc. of उपस्थायः । भास्—क्त + ट । दिगविभा इत्यादिना । 4. उपस्थाय—उप—स्था + ल्यप् । 5. अग्निम् Acc. of परीत्य । 6. प्रदक्षिणम्—क्रियाविशेषणं प्रगतौ दक्षिणं प्रदक्षिणम् । तिष्ठद्ग प्रभृतोनि च इति निपातनात् अत्यथौभावः । 7. परीत्य परि—इ + ल्यप् । एति—अद्यात् । 8. यथाविधि विधिं ज्ञात्वा अनतिक्रम्य यथाविधि । वि—धा + क्ति । अत्यथौभावः । 9. चरेत्—चर + यात् । 10. भैक्षम्—भिक्षायै इदम् भैक्षम् भिचते ।

Change of voice.—भैक्षं चर्येत ॥ ४८ ॥

BENGALI.—पूर्वोक्त लक्षणगुण्ड ब्रह्मचरः सः ग्रहणं कृत्वा सूर्याभिमुखं इहेना ईनामनां च अग्निं अक्षिप्य करिष्य यथाविधाने भिक्षां कार्षां करिष्ये ॥ ४८ ॥

ENGLISH.—Having taken a staff up to his liking, standing in front of, and adoring, the sun, going round the fire keeping it to the right, a *Brahmacharin* should go for alms. (48).

भवत्पूर्वं चरेद्भैक्षमुपनीतो द्विजोत्तमः ।

भवन्मध्यन्तु राजन्यो वैश्यस्तु भवदुत्तरम् ॥ ४९ ॥

PROSE.—उपनीतः द्विजोत्तमः भवत्पूर्वं राजन्यः भवन्मध्यं वैश्यः भवदुत्तरं भैक्षं चरेत् ॥ ४९ ॥

KULLUKA.—भवदिति । ब्राह्मणो भवति भिक्षां देहीति भवच्छब्दपूर्व्यं भिक्षां याचन् वाक्यमुच्चारयेत् । क्षत्रियो भिक्षां भवति देहीति भवन्मध्यम् । वैश्यो भिक्षां देहि भवतीति भवदुत्तरं ॥ ४९ ॥

KULLUKA EXPLAINED.—“भवति भिक्षां देहि” “भिक्षां भवति देहि” “भिक्षां देहि भवति” इति यथाक्रमं ब्राह्मणक्षत्रियवैश्याः त्रयः भिक्षाचर्यायाम् । भवतीति स्त्रीलिङ्गनिर्देशस्तु परवचनसामर्थ्यात् ।

GRAMMATICAL NOTES.—1. विज्ञोत्तमः—विज्ञेप् उत्तमः विज्ञोत्तमः विज्ञानासुत्तम इत्यपि नित्यमभिधाने एव समासनिषेधान् । 2. उपनीतः—उप-नौ + क्त । अनैषीत् अनेष्ट । It qualifies विज्ञोत्तमः राजन्यः and वैश्यः । 3. भवत् पूर्व्यम्—भवत् शब्दः पूर्व्यः यस्मिन् कर्म्मणि तद् यथा स्यात् तथा बहुव्रीहिः । भा + डवत् भवती भू + शट् भवन्ती । Similarly भवन्मध्यम् भवदुत्तरम् । 4. राजन्यः—राजन् + यत् । न ननोपः । 5. मैत्र्यं चरेत् explained.

*Change of voice.*—उपनीतेन विज्ञोत्तमेन ... .. भेदां चर्येत ॥ ४९ ॥

BENGALI.—डेगनशनाच्छ ब्राह्मण “उवति भिक्षां देहि” ऐहकणे उवत् नक्ष अथे उक्कारण करिषा, क्षत्रिय “भिक्षांउवति देहि” ऐहकणे उवत् नक्ष यथे उक्कारण करिषा, वैश्य “भिक्षां देहि उवति” ऐहकणे उवत् नक्ष शेषे उक्कारण करिषा भिक्षां वाचका करिषे ॥ ४९ ॥

ENGLISH.—A Brahmin invested with the holy thread should go for alms, using the word “*bharvat*” (your honoured self) first ; a Kshatriya should go for alms using the word *bharvat* in the middle ; and a Vaisya should do so, using *bharbat* at the end. (49).

मातरं वा स्वसारं वा मातुर्वा भगिनीं निजाम् ।

भिक्षेत भिक्षां प्रथमं या चैनं नावमानयेत् ॥ ५० ॥

PROSE.—(ब्राह्मणारौ) प्रथमं मातरं वा स्वसारं वा मातुः निजां भगिनीं वा या एनं न अवमानयेत् (तां) च भिक्षां भिक्षेत ॥ ५० ॥

KULLUKA.—मातरं वेति । उपनयनाङ्गभूतां भिक्षां प्रथमं मातरं भगिनीं मातुर्वा भगिनीं सहोदरां याचित या चैनं ब्राह्मणारिषं प्रत्याप्यनिजं नावमन्येत पूर्व्या-सम्भवे उत्तरापरिग्रहः ॥ ५० ॥

KULLUKA EXPLAINED. — “पूर्वासम्भवे उत्तरापरिणतः” मातादीनां असम्भवे या न अवमानयेत् तां याचेत इत्यर्थः नतु विकल्पः ।

GRAMMATICAL NOTES.—1. मातरम् — स्वसारम् गौणकर्म्म of भिचेत । 2. निजाम् — नि + जन + ड । 3. भगिनीम् — भग + इनि + डौप् । गौण कर्म्म of भिचेत । 4. मैत्र्यम् — मुख्यकर्म्म of भिचेत । 5. भिचेत — भिच् + ईत् । भिचने । याच्ञार्थत्वात् द्विकर्म्मकः धातुः । 6. एनम् — एनादेशः अन्वादेशे । 7. अवमानयेत् — सम्भावनायां चिङ् । अच् — मन् + णिच् + यात् ।

Change of voice — माता स्वसा...निजा भगिनी भिचा भित्येत् (ब्रह्मचारिणा) यथा च अयं न अवमानयेत् (सा) ॥ ५० ॥

BENGALI.—उक्तछात्री प्रथम माँडा, छगिनी, अथवा माँडांर सहायका छगिनींर निकटे, डाढ़नी आँझीशांर अछापे यिनि उक्तछात्रीके अवमानना ना करेन এমন नाँझींर निकटे ( উপনয়নের অকীৰ্ত্ত ) ভিক্ষা যাচঞা করিবে ॥ ৫০ ॥

ENGLISH.—A *Brahmacharin* should first beg alms of his mother, his sister, or the full-blooded sister of his mother, or a female who may not disrespect him. (50).

समाहृत्य तु तद्वैद्यं यावदन्नमायया ।

निवेद्य गुरवेऽग्नीयादाचम्य प्राङ्मुखः शुचिः ॥ ५१ ॥

PROSE.—(ब्रह्मचारी) तद् वैद्यं समाहृत्य यावदन्नं अमायया गुरवे निवेद्य चाचम्य प्राङ्मुखः शुचिः (मन्) अग्नीयात् ॥ ५१ ॥

KULLUKA.—समाहृत्येति । तद्वैद्यं बहुभ्य आहृत्य यावदन्नं दक्षिमागोचितं गुरवे निवेद्य निवेदनं कृत्वा अमायया कदनेन सदन्नं प्रच्छाद्य एवमेतदगुरुन यद्दीप्यतीत्यादिमायाव्यतिरेकेण तदनुज्ञात आचमनं कृत्वा शुचिः सन् मुञ्जीत प्राङ्मुखः ॥ ५१ ॥

KULLUKA EXPLAINED. — “यावदन्नम्” is explained as “दक्षिमागोचितम्” “अमायया” is explained as not covering good food by bad one so that the teacher may not accept. “अमायया निवेद्य” having presented it without guile.

GRAMMATICAL NOTES.—1. समाहृत्य — सम् — आ — ट् + ल्यप् । 2. यावदन्नम् — यावन्ति अन्नानि तावन्ति इति यावदन्नम् अव्ययीभावः by यावदवधारणे । The word यावत् in यावदन्नम् is अव्यय, but the word यावत् in the



*Change of voice.*—प्राङ्मुखेन चायुष्यं दक्षिणामुखेन यशस्यं भुज्यते । शिथं पश्चता प्रत्यङ्मुखेन कृतमिच्छता उदङ्मुखेन भुज्यते ॥ ५२ ॥

BENGALI.—यिनि आगुर बुद्धि ईच्छा करेन त्रिनि पूर्वमुखे, यिनि यन बुद्धि ईच्छा करेन त्रिनि पश्चिममुखे भोजन करेन ; यिनि सम्पद् ईच्छा करेन त्रिनि पश्चिममुखे, यिनि सदाफल ईच्छा करेन त्रिनि उद्वरमुखे भोजन करेन ॥ ५२ ॥

ENGLISH.—One facing the east eats (food) conducive to long life, one facing the south eats food conducive to fame ; one wishing riches eats facing the west ; and wishing truth one eats facing the north. (52).

उपस्पृश्य द्विजो नित्यमन्नमद्यात् समाहितः ।

भुक्त्वा चोपस्पृशेत्सम्यग्निःखानिचमंसस्पृशेत् ॥ ५३ ॥

PROSE.—द्विजः नित्यं उपस्पृश्य समाहितः अन्नं चद्यात्, भुक्त्वा च सम्यक् उपस्पृशेत् च, अग्निः खानि च संस्पृशेत् ॥ ५३ ॥

KULLUKA.—उपस्पृशेति । निवेद्य गुरवेऽग्नौषादाचम्येति यद्यपि भोजनान् प्राणाचमनं विहितं तथाप्यग्निः खानि च संस्पृशेदिति गुणविधानार्थोऽनुवादः । नित्यं ब्रह्मचर्यान्नन्तरमपि द्विज आचम्यान्नं भुञ्जीत समाहितोऽनन्त्यमनाः । भुक्त्वा आचम्येत् सम्यक् यथाशास्त्रम् तेन प्रचाल्य हस्तौ पादौ च विःपिवेदन् बौचितम् इत्यादि दृष्ट्या-द्युक्तमपि संगृह्णाति अखिले खानौन्द्रियाणि घट्छिद्राणि च स्पृशेत् तानि च शिरःस्थानि प्राणवज्जुषादादीनि ग्रहीतव्यानि । खानि चोपस्पृशेत् शीर्षस्थानौति गौतमवचनान् । उपस्पृशेत् कृत्वा खानि च संस्पृशेदिति पृथग्विधानात् निरव्यवधानमावसाचमनं स्वस्पृश-नादिकमिति कर्तव्यता इति दर्शितम् ॥ ५३ ॥

KULLUKA EXPLAINED.—“गुणविधानार्थम्” for adding special merit. The six hollow parts of the head are the nostrils, the ears and the eyes. “अनुवादः” re-statement of what has been once stated. आचमनम् was laid down in the 51st sloka. It is re-stated here.

GRAMMATICAL NOTES. — 1. द्विजः — द्वि — जन + उ । जायते अत्रिणि । 2. नित्यम् — नि — त्वप् । 3. उपस्पृश्य — उप स्पृश + ल्यप् । स्पृशति । पस्पृशं । अस्याचोत् अस्याचोत् अद्युचत् । 4. अन्नम् Acc. of चद्यात् चद + क्त । 5. चद्यात्

अद + यात् । आद जवात् । अचसत् । 6. समाहितः सम् आङ्—आ + ण्  
7. भुक्ता भुज् + क्ताच् । 8. सम्यक् अव्ययम् । 9. अदभिः करणे ढतीया ।  
आप् + क्रिप् । अप् शब्दो नित्यं बहुवचनान्तः । 10. खानि Acc. of संस्पृश्येत् ।

*Change of voice.*—द्विजेन अन्नं अद्येत उपस्पृश्येत । खानि संस्पृश्येत् ॥ ५३ ॥

BENGALI.—ब्रह्मचारी ब्रह्मचर्यात् परत्र निठा आचमन करिषा अनश्ननेन अन्न  
भोजन करिवे । भोजन करिषां यथाशक्ति (तिन बार) आचमन करिवे एवं आचमनी  
जलवात्रा (निरःहित कू कर्ण उ नासिकाया छत्रा) छिन्न स्पर्श करिवे । ५३ ।

ENGLISH—A twice-born should always eat his food, calm and collected, after having rinsed his mouth and after eating he should rinse his mouth perfectly, and touch the hollow parts (in the head) with water. (53).

पूजयेदशनं नित्यमद्याच्चैतदकुत्सयन् ।

दृष्ट्वा हृष्येत् प्रसीदेच्च प्रतिनन्देच्च सर्व्वशः ॥ ५४ ॥

PROSE. — नित्यं अशनं पूजयेत्, अकुत्सयन् च एतद् अद्यात्, सर्व्वशः (अशनं)  
दृष्ट्वा हृष्येत्, प्रसीदेत् च, प्रतिनन्देत् च ॥ ५४ ॥

KULLUKA. — पूजयेदशनमिति । सर्व्वदा अन्नं पूजयेत् प्राणार्धत्वेन ध्यायेत् ।  
तदुक्तमादिपुराणे अन्नं विष्णुः स्वयं प्राङ् इत्यनुव्रत्तो प्राणार्थं मां सदा ध्यायेत् स मां  
सम्पूजयेत् सदा चानिन्दं चैतदद्यात् दृष्ट्वा हृष्येत् प्रसीदेच्चैति हंत्वन्तरजमपि त्विदम् अन्न-  
दर्शनेन त्यजेत् प्रतिनन्देत् नित्यमस्माकमेतदस्त्विति अभिधाय वन्दनं प्रतिनन्दनम् ।  
तदुक्तमादिपुराणे अन्नं दृष्ट्वा प्रणम्यादौ प्रात्रलिः कथयिष्यतः । अस्माकं नित्यमस्त्वेतदिति  
भक्त्या स्तुवन् नमेत् । सर्व्वशः सर्व्वमन्नम् ॥ ५४ ॥

MEANING IN ENGLISH.—Food is to be honored as sustainer of life ; it must be eaten without contempt ; when it is seen one is to rejoice, and forget sorrows caused otherwise, and must bow to it saying that he may obtain it daily.

GRAMMATICAL NOTES.—1. अशनम् Acc. of पूजयेत् । अश् + ल्युट् ।  
अश्रति । 2. पूजयेत् पूज् + णिच् + यात् । अप्पूजत् । 3. अद्यात् अद + यात् ।  
4. एतद् Acc. of अकुत्सयन् and अद्यात् । 5. अकुत्सयन्—कुत्सयति + शब् ।  
न कुत्सयन् अकुत्सयन् । 6. हृष्येत् हृष् + यात् । हृष्यति । 7. प्रसीदेत्—

প্র-সদ+ঘাৎ । সীদতি । অসদৎ । ৪. প্রতিমন্দেৎ-প্রতি-মন্দ+ঘাৎ মনন্দ  
অনন্দোৎ । ৭. সর্ব্বশঃ সর্ব্ব+দ্বিতীয়ার্থে শম্ । Acc. of দৃষ্টা ।

*Change of voice.*—অশনং পূজ্যেত অকৃত্যসয়তা অযোত দৃশ্যেত প্রসীদ্যত প্রতি-  
নন্দ্যেত ॥ ৫৪ ॥

BENGALI.—অন্ন প্রাণধারণের উপায় এইরূপ ধ্যান দ্বারা অন্নের পূজা করিবে,  
এবং নিশ্চয় না করিয়া অন্ন ভোজন করিবে ; অন্ন সর্জন করিয়াই ইহা প্রকাশ করিবে,  
অন্ন কারণে চিত্তে ধেন অগ্নিরা থাকিলে অন্নসর্জনমাত্র তাহা ভ্যাগ করিবে, এবং এই  
অন্ন নিত্য যেন আমরা পাই এই বলিয়া অন্নের বন্দনা করিবে ॥ ৫৪ ॥

ENGLISH.—He should always reverence food and eat it without  
blaming it ; he should be glad on seeing it, be satisfied, and should  
recieve all food with joy. (54).

পূজিতং অশনং নিত্যং বলমূৰ্জ্জিচ্ছ যচ্ছতি ।

অপূজিতন্তু তদ্বক্তৃমুখ্যং নাশয়েদিদম্ ॥ ৫৫ ॥

PROSE.—পূজিতং অশনং নিত্যং বলং জর্জং চ যচ্ছতি, অপূজিতং চ তদ্বদ্ব  
ভময়ং নাশয়েৎ হি (তস্মাৎ অন্নং পূজয়েৎ ) ॥ ৫৫ ॥

KULLUKA.—পূজিতমিতি । যস্মাৎ পূজিতমন্নং সামর্থ্যে বীৰ্য্যচ্ছ দদ্যতি  
অপূজিতং পুনরিতদুভয়ং নাশয়তি তস্মাৎ সর্ব্বদা অন্নং পূজয়েদিতি পূজ্যৈকবাধ্যতাপন্নমিহ  
ফলশ্রবণম্ সম্ব্যাবন্দনাদাবুপাশ্চদুরিতলয়বত্, নিত্যং কামনাবিপদলেনাপি নিত্যশ্রুতি-  
বহিতা, নিত্যশ্রুতিবিবোধাত্ ফলশ্রবণং স্তুত্বশ্রমিতি তু মেধাতিথিগোবিন্দরাজী ॥ ৫৫ ॥

GRAMMATICAL NOTES— 1. পূজিতম্—পূজ+বর্ত্তমানি ক্তঃ মতি-  
বুদ্ধি পূজার্থেভ্য । 2. অশনম্—অশ+ল্যট্ । 3. বলম্ । 4. জর্জম্ Acc.  
of যচ্ছতি জর্জ—জর্জয়তি । জর্জ+ঘञ্ । 5. যচ্ছতি দা+লট্ তি ।  
6. ন পূজিতং অপূজিতম্ । 7. মুক্তম্ মুক্ত+ক্তঃ কর্ম্মণি । 8. ইদম্ Qualifies  
ভময়ম্ । 9. ভময়ম্ Acc. of নাশয়েৎ । 10. নাশয়েৎ নশ+শিচ্+ঘাৎ ।

*Change of voice.*—পূজিতেন অশনেন ... বলং জর্জয়তি । তেন ভময়ং  
নাশয়েত ॥ ৫৫ ॥

BENGALI.—সর্ব্বদা পূজাপূর্ব্বক ভোজন করিলে অন্ন সামর্থ্য ও বীৰ্য্য প্রদান করে,  
অভিপূর্ব্বক ভোজন করিলে সে উভয়কেই নাশ করে । অতএব অভিপূর্ব্বক অন্ন  
ভোজন করিবে ॥ ৫৫ ॥



ENGLISH.—A food revered always gives strength and power, but if it is eaten without being revered it destroys both. (55).

नोच्छिष्टं कस्यचिद्दद्याद्वाद्याच्चैव तथान्तरा ।

नचैवात्यशनं कुर्यान्नचोच्छिष्टः कचिद्व्रजेत् ॥ ५६ ॥

PROSE. — उच्छिष्टं कस्यचित् न दद्यात्, तथा अन्तरा न चैव अद्यात्, अत्यशनं च नैव कुर्यात् न च उच्छिष्टः सन् कचित् व्रजेत् ॥ ५६ ॥

KULLUKA.—नोच्छिष्टमिति । भुक्तावशेषं कस्यचिन्न दद्यात्, अतुर्थ्यां प्राप्तायां सम्बन्धमाविवक्षया वष्टो । अनेनैव सामान्यनिषेधेन शूद्रस्याप्युच्छिष्टदाननिषेधे सिद्धे नोच्छिष्टं न हविष्कृतमिति शूद्रगोचरनिषेधश्चातुर्थः स्नातकव्रतं त्वार्थः । दिवासां-भोजनयोश्च मध्ये न भुञ्जीत, वारधयेऽप्यतिभोजनं न कुर्यात् । नातिसौहित्यमाहरेदिति चातुर्थे स्नातकव्रतार्थम् उच्छिष्टः सम् कचिन्न गच्छेत् ॥ ५६ ॥

KULLUKA EXPLAINED. — “अनेनैव ..... स्नातकव्रतत्त्वार्यः.” This general injunction prohibits a twice-born from giving remnants of their dishes to the Sudras also. Yet in the fourth chapter we have a special text prohibiting the giving of the remnants of a dish to the Sudras ; that is no repetition, but points out special functions of a *snatak* twice-born. Kulluka has explained elsewhere that remnants of a dish, and torn pieces of cloth may be given to Sudras who become a “*griha-sudra*” or domestic slave, but not to others.

GRAMMATICAL NOTES.—1. उच्छिष्टम्—उत्—शिष्+क्तः कर्मणि । शिगिष्टि । 2. कस्यचित्—सम्बन्धविवक्षया सम्प्रदानचतुर्थीस्थले वष्टो । 3. अद्यात् अद्+यात् । 4. अन्तरा अव्ययम् अधिकरणम् । 5. अत्यशनम्—अतिमात्रं अशनम् अव्यशनम् प्रादयो गताद्यर्थे प्रथमयेति समासः । अति—अश्+ल्युट् । 6. उच्छिष्टः—उत्—शिष्+क्तः भावे उच्छिष्टम् । अश् आदिभ्यः षष् । 7. व्रजेत् व्रजति व्रज+यात् । वज्राज अज्राजीत् । 8. कचित्—किम्+सप्तम्यर्थे चत् । क । by कति । Then चित् ।

Change of voice.—उच्छिष्टं दीयेत् । अयेत् । क्रियेत् । उच्छिष्टेन... व्रजेत् ॥ ५६ ॥

BENGALL.—काशकैः उच्छिष्टे अन्नं करिबे ना, दिवा ओ रात्रिभोजनेन मध्याह्ने भोजन करिबे ना, अतिरिक्त भोजन करिबे ना, एवः उच्छिष्टेषु कोथां गृहेबे ना ॥ ५७ ॥

ENGLISH.—A twice-born should give the remains of his food to none, and he should not eat between the (two meals,—at daytime and night). He should not eat much, nor should he go anywhere with remains of food (in his mouth). (56).

अनारोग्यमनायुष्यमस्वर्ग्यञ्चातिभोजनम् ।

अपुण्यं लोकविद्विष्टं तस्मात्तत् परिवर्जयेत् ॥ ५७ ॥

PROSE.—अतिभोजनं अनारोग्यं अनायुष्यं अस्वर्ग्यं अपुण्यं लोकविद्विष्टं तस्मात् तत् परिवर्जयेत् ॥ ५७ ॥

KULLUKA.—अतिभोजने दौषमाह अनारोग्यमिति । अरोगो रोगाभावः तस्मै हितमारोग्यम्, आयुषे हितमायुष्यम्, यस्मादतिभोजनमनारोग्यमनायुष्यञ्च भवति अजीर्णजनकत्वेन रोगमरणहेतुत्वात्, अस्वर्गाच्च स्वर्गहेतुयागादिविरोधित्वात्, अपुण्यञ्च इतरपुण्यप्रतिपक्षत्वात् लोकविद्विष्टं बहुभोजितया लोकमिन्दनात् तस्मात् तत् न कुर्यात् ॥ ५७ ॥

KULLUKA EXPLAINED.—“अपुण्यम् इतरपुण्यप्रतिपक्षत्वात्” नञ् has different meanings. तत्सादृश्यं मभावश्च तदन्वयं तदव्ययता । अप्राज्ञस्य विरोधश्च नञर्थः षट् प्रकीर्तितः । नञ् in अपुण्यम् means विरोध inconsistent with. अपुण्यम् inconsistent with other meritorious works.

GRAMMATICAL NOTES.—1. अनारोग्यम्—रोगस्य अभावः, अरोगः अभावार्थकस्य नञः अशय्यभावेन विकल्पितः समासः । नञ् समासः । यथा अविवादः &c. &c. । अरोगस्य भावः आरोग्यम् । अरोग + अञ् । न आरोग्यम् अनारोग्यम् । रुज् + चञ् रोगः । कर्त्तरि । पद रुज् दिग् स्पृशो चञ् । रुजतीति रोगः । स्पृजतीति स्पर्शः । 2. आयुषे हितम् आयुष्यम् आयुस् + यत् । न आयुष्यं अनायुष्यम् । 3. स्वर्गाय हितं स्वर्ग्यं न स्वर्ग्यं अस्वर्ग्यम् । 4. न पुण्यं पुण्यविरुद्धम् इति अपुण्यम् । पू + यत् पुण्यम् । 5. लोकविद्विष्टम् लोकैः विद्विष्टम् लोकविद्विष्टम् । वृत्तौ समासः । स्थोक्त्येऽसौ लोकः । वि—विष + क्तः कर्त्तृवि । वेष्टि । अविचत् । 6. तस्मात् षेती पञ्चमी । 7. परिवर्जयेत्—इज् चिच् यात् ।

Change of voice.—...अतिभोजनेन अनारोग्येण म्रियते...तत् परिवर्जयेत् ॥ ५७ ॥

BENGALI.—অজিষ্ঠোক্তনে স্বাস্থ্যশানি হয়, আত্ম: স্বল্প হয়, স্বর্গসাধক যোগাদি ক্রিয়ার বাধা হয়, ঔষধিক বনিতা নিম্না হয়, পুণ্যকার্যে বিঘ্ন জন্মে, অতএব উহা পরিত্যাগ করিলে ॥ ৫৭ ॥

ENGLISH.—Surfeit or eating to excess is unwholesome, detrimental to longevity, and prejudicial to the securing of heaven ; it is unholy or vicious, hated by men, and therefore one should avoid it. (57).

ब्राह्मेण विप्रस्तौर्धेन नित्यकालमुपस्पृशेत् ।

कायवैदशिकाभ्यां वा न पित्रेण कदाचन ॥ ५८ ॥

PROSE.—विप्रः नित्यकालं ब्राह्मेण तौर्धेन उपस्पृशेत्, कायवैदशिकाभ्यां वा (उपस्पृशेत्) पित्रेण कदाचन न (उपस्पृशेत्) ॥ ५८ ॥

KULLUKA.—ब्राह्मेणति । ब्राह्मादिमंत्रेभ्यं शास्त्रे संन्यवहारायां स्तुत्यर्थां च नतु मुख्यं ब्रह्मदेवताकत्वं सम्भवति अयामरूपत्वात्, तौर्धेनशब्दोऽपि पावनगुणयोगात् । ब्राह्मेण तौर्धेन सर्व्वदा विप्रदिशामिन् । कः प्रजापतिस्तदौषः कायः तस्यैदमित्यन् इकारश्चात्तादेशः । वैदशिको देवः ताभ्यां वा । पित्रेण तु तौर्धेन न कदाचिदाचामेत् अप्रसिद्धत्वात् ॥ ५८ ॥

KULLUKA EXPLAINED.—The words ब्राह्म, काय, वैदशिक and विप्र are technical ones used for praising what is indicated by them. The word तौर्धे is also technically called so because things indicated by it add purity. These are explained in the next sloka.

GRAMMATICAL NOTES.—1. ब्राह्मेणः इदम् ब्राह्मम् । ब्राह्मन् + णच् । 2. तेन तौर्धेन करणे तृतीया । 3. नित्यकालम् नित्यशायौ कालश्च । कर्मधारयः । अत्यन्तसंयोगे द्वितीया । 4. कायवैदशिकाभ्याम् कस्य प्रजापतेः इदं कायम् । क + णच् । इकारोऽत्तादेशः । कि + णच् । कायम् । तिस्रः दशाः वाच्यं विना विद्यते येषां ते विदशाः देवाः । विदशानामिदं वैदशिकम् । विदश् + ठक् । कायश्च वैदशिकश्च कायवैदशिके इत्यसमासः । ताभ्याम् । Qualify तौर्धाभ्याम् understood. 5. पित्रेण पितुरागतं पितृम् । पिठ् + यत् । सर्व्वं पारिभाषिकम् । Qualifies तौर्धेन ।

Change of voice.—...विप्रेण उपस्पृशेत् ॥ ५८ ॥

BENGALI.—ब्राह्मणादि सकल मयश्चे ब्राह्मणोर्ध्वं चारा (गुह्याङ्गुष्ठेन चलेन अर्धा-  
ङ्गं चारा) आचमन करिबे, अथवा अङ्गपति तीर्थ (कनिष्ठाङ्गुलिर्न भूल) चारा वा पैव-  
डोर्ध्वं (ममङ्ग अङ्गङ्ग) चारा आचमन करिबे, किङ्ग पिङ्गाडोर्ध्वं (तर्जनी ३ अङ्गुष्ठेन  
अर्धाङ्गं) चारा कथनञ्च आचमन करिबे न । ॥ ५८ ॥

ENGLISH.—A Brahmin should always take a sip of water with  
(that part of his hand called) *Bahmatirtha* or with *Kaya* or *Traidasi-  
ka tirtha* ; but never with the *pitryatirtha*. (58).

अङ्गुष्ठमूलस्य तले ब्राह्मणं तीर्थं प्रचक्षते ।

कायमङ्गुलिमूलेऽग्रे देवं पित्रं तयोरधः ॥ ५८ ॥

PROSE.—अङ्गुष्ठमूलस्य तले ब्राह्मणं, अङ्गुलिमूलं कायं अग्रे देवं, तयोः अधः  
पित्रं तीर्थं प्रचक्षणं (मन्वादेशः) ॥ ५८ ॥

KULLUKA.—ब्राह्मणादितोर्ध्वान्वाह अङ्गुष्ठमूलस्येति । अङ्गुष्ठमूलस्याधोभागे ब्राह्म-  
कनिष्ठाङ्गुलिमूलं कायम्, अङ्गुलीनामग्रे देवम्, अङ्गुष्ठप्रदेशिन्योर्ध्वं पित्रं तीर्थं मन्वा-  
देशः आहुः । यद्यपि कायमङ्गुलिमूलं तयोरधः इत्यत्र चाङ्गुलिमात्रं श्रुतं तथापि कृत्यन्त-  
रादविशेषपरिग्रहः । तथाच याज्ञवल्क्यः कनिष्ठादेशिन्यङ्गुष्ठमूलान्यत्र करस्य च ।  
प्रजापतिपितृव्रतद्वैततीर्थान्यनुकमान् ॥ ५८ ॥

KULLUKA EXPLAINED.—As deduction from other texts,  
Kulluka has explained “अङ्गुलिमूलं” as “कनिष्ठाङ्गुलिमूलं,” “अग्रे” as  
“अङ्गुलीनां (सकलानां) अग्रे” and “तयोः” as “अङ्गुष्ठ-प्रदेशिन्योः and not  
अङ्गुष्ठकनिष्ठयोः” ।

GRAMMATICAL NOTES.—1. अङ्गुष्ठमूलस्य—अङ्गुष्ठस्य मूलं तस्य षष्ठीसमासः ।  
2. प्रचक्षते—प्र + चक्ष् + चले । चटे । 3. कायम् qualifies तीर्थम् । क + चच्  
इकारः चलादेशः । 4. अङ्गुलिः मूलं अङ्गुलिमूलं तस्मिन् । 5. तयोः षष्ठी by  
वृत्तसर्गप्रत्ययेन, षष्ठी is added in connection with अतसर्थक प्रत्ययान्त  
words. अधः is such a word. 6. अधः—अधर + असि = अध् + अस् = अधस्  
by पूर्वोक्ताधराचामसि पुरवधर्षणम् i. e. असि is affixed to पूर्व अधर and  
अवर in the sense of अस्ताति and they become पुर् अध् and अक्  
respectively.

Change of voice.—तीर्थं प्रख्यायते ॥ ५८ ॥

BENGALI.—बृहत्कूर्ठेर मूलेर अर्धाङ्गके त्राकूर्तीर्ष, कनिष्ठाङ्गुलिर् मूलदेशके अङ्गपति तीर्ष, समग्र अङ्गुलिर् (मिलित) अर्धाङ्गके दैवतीर्ष, उर्ध्वनी ७ अङ्गुष्ठेर अर्धाङ्गके पित्रातीर्ष नामे अर्थात् मुनिगण निर्देशेन कश्चिदाहेन ॥ ६० ॥

ENGLISH.—The (part) on the surface of the root of the thumb is called *Brahmatirtha*; the part at the root of the (little) finger *Kaya*; the tips (brought together) of the fingers the *Daiva* and the part below the two (the thumb and the forefinger) the *Pitrya tirtha*. (59).

विराचामेदपः पूर्वं द्विः प्रमृज्यात्ततो मुखम् ।

खानि चैष स्पृशेदग्निरात्मानं शिर एव च ॥ ६० ॥

PROSE.—पूर्वं विः अपः आचामेत्, ततः द्विः मुखं प्रमृज्यात्, खानि च आत्मानं शिरः च अग्निः एव स्पृशेत् ॥ ६० ॥

KULLUKA.—सामान्येनोपदिष्टस्य आचमनस्यानुष्ठानक्रममाह विराचामेदिति । पूर्वं ब्राह्मादितीर्थेन जलगच्छुष्यत्यं पिवेत् अनन्तरं संवत्सीप्राधरी वारहयमकुष्ठमूलैर्न संमृज्यात् संवत्साकुष्ठमूलैर्न द्विः प्रमृज्यात्ततो मुखम् इति दक्षेण विशेषाभिधानात् । खानि चेन्द्रियाणि जलेन स्पृशेत् मुखस्य सन्निधानान्मुखखान्येव । गीतमोऽप्याह खानि चोप-स्पृशेच्छीर्षखानि । हृदयज्योतिः पुरुष इति उपनिषत्सु हृदयदेशत्वेनात्मनः अवकाश-आत्मानं हृदयं शिरसाग्निरिव स्पृशेत् ॥ ६० ॥

KULLUKA EXPLAINED.—“आचामेत्” — “पिवेत्” Kulluka supplies “ब्राह्मादितीर्थेन” प्रमृज्यात्” Kulluka supplies “संवत्साधरोक्षी” and “अङ्गुष्ठ-मूलैर्न” “खानि” is explained as “मुखखान्येव” “आत्मानं” is explained as “हृदयम्” on the strength of other texts of Smritis and Upanishads.

GRAMMATICAL NOTES. — 1. विः - वि + सुच् by द्वि - वि - चतुर्थः सुच् । कृत्वसुचोऽपवादः । Adv. 2. अपः Acc. of आचामेत् । 3. आचामेत्—आङ् - चम + यात् । 4. द्विः - द्वि + सुच् । 5. प्रमृज्यात् - प्र - मृज् + यात् । मृज् conjugated. 6. मुखम् Acc. of प्रमृज्यात् । 7. खानि । 8. आत्मानम् । 9. शिरः Acc. of स्पृशेत् । 10. अदभिः करणे तृतीया । 11. स्पृशेत् स्पृशति पस्वर्थ । अस्याचीत् अस्याचीत् अस्पृशत् ।

Change of voice.—आपः आचम्येरन् । खानि आत्मा शिरः स्पृशेरन् ॥ ६० ॥

BENGALI.—অথনওঃ ব্রাহ্মণি ভীৰ্ঘ বারো তিন বার জল গান করিবে, তৎপন্ন  
নঃপুত গঠাধর অঙ্গুষ্ঠেয়লবারো দুই বার মার্জনা করিবে, এবং মণ্ডকহৃদিতমকল, জগন্ন ও  
মণ্ডক জল বারোই স্পর্শ করিবে । ৬০ ॥

ENGLISH.—Let him (a Brahmin) first take three sips (of water);  
then wipe his mouth twice ; and touch with water the openings  
in the face, the head and the body (the breast). (60.)

অনুশাভিরফেনাভিরদ্ধিস্তীর্থেন ধর্মবিত্ ।

শীচেষুঃ সর্ব্বদাচামেদেকান্তে প্রাগুদঙ্গুস্বঃ ॥ ৬১ ॥

PROSE. — ধর্মবিত্ শীচেষুঃ (সন্) তীর্থেন অনুশাভিঃ অফে নাভিঃ অহমিঃ একান্তে  
প্রাগুদঙ্গুস্বঃ সর্ব্বদা প্রাচামেত্ ॥ ৬১ ॥

KULLUKA.—অনুশাভিরিতি । অনুশীকৃত্যভিঃ ক্রৈনবর্জিত্যভির্ভাঙ্গাদিতীর্থেন  
শীচমিচ্ছন্ একান্তে জনৈরবাকীর্ষ্যে যুচিদেশ ইত্যর্থঃ । প্রাগু, স্বঃ উদঙ্গুস্বী বা সর্ব্বদা  
প্রাচামেত্ । আপসম্বেন তস্মাভিঃ কারণাদিত্যভিধানাত্ ব্যাঘ্রাদিকারণ্যতিরেক্ষ  
নাচামেত্, ব্যাঘ্রাদী তু উশীকৃত্যভিরপ্যচমনে দোষাভাবঃ । তীর্থস্যতিরেক্ষাচমনে  
শীচাভাব ইতি দর্শয়িতুমুক্তস্যপি তীর্থস্য পুনর্ব্বচনম্ ॥ ৬১ ॥

GRAMMATICAL NOTES. 1. ধর্মবিত্—ধর্ম্যং বেদীতি ধর্মবিত্ উপপদ-  
সমাসঃ । ধর্ম্যবিদৃ + ক্টিপ্ । 2. শীচেষুঃ—শীচং ইঙ্গুঃ শীচেষুঃ দ্বিতীয়া  
সমাসঃ । যুচের্ভাবঃ শীচম্ । আপ্—সন্ + উঃ । 3. একান্তে—অধিকারকম্ ।  
একঃ অন্তঃ একান্তঃ তচ্ছিন্ । 4. প্রাগু স্বঃ উদঙ্ক স্বঃ মুখং যস্য স প্রাগুদঙ্গুস্বঃ ।  
বহুব্রীহিঃ । প্র—অস্ব + ক্টিপ্ । উত্—অস্ব + ক্টিপ্ । 5. অনুশাভিঃ ন উশাভিঃ  
অনুশাভিঃ । 6. অফে নাভিঃ ন বিদ্যন্তে ক্রৈনা যাসু তাভিঃ বহুব্রীহিঃ । তাভিঃ quali-  
ties অহমিঃ । 7. অহমিঃ করণে দ্বিতীয়া । 8. তীর্থেন করণে দ্বিতীয়া ।

Change of voice.—ধর্ম্যবিদা শীচেষু না &c. &c. .... আপসম্বেন ॥ ৬১ ॥

BENGALI.—যে ধর্ম্যজ ব্যক্তি শুদ্ধ হইতে ইচ্ছা করেন, তিনি ব্রাহ্মণি ভীৰ্ঘবারো  
অনুষ্ঠান ফেনপুত জলবারো নির্জনে পূর্বে বা উত্তরমুখে সর্সনা আচমন করিবে । ৬১ ॥

ENGLISH.—One who knows the laws (of duty) and is desirous  
of purity should always take sips of water devoid of foam or froth  
and not heated, by mans of the *Brahmatirtha* in a retired place,  
with his face either towards the east or the north. (61.)

হৃদগামিঃ পূয়তে বিপ্রঃ কণ্ঠগামিস্তু ভূমিপঃ ।

বৈশ্যোঽগ্নিঃ প্রাশিতাভিস্তুশূদ্রঃ সৃষ্টাভিরন্ততঃ ॥ ৬২ ॥

PROSE.—বিপ্রঃ হৃদগামিঃ, ভূমিপঃ তু কণ্ঠগামিঃ, বৈশ্যঃ প্রাশিতাভিঃ শূদ্রঃ তু সৃষ্টাভিঃ অদ্বিঃ পূয়তে ॥ ৬২ ॥

KULLUKA. -- আচমনজনপরিমাণমাহ হৃদগামিরিতি । ব্রাহ্মণো হৃদগামি-  
নীমিঃ অবিয়ঃ কণ্ঠগামিনীমিঃ বৈশ্যোঽন্তরাশ্বপ্রবিষ্টাভিঃ কণ্ঠমপ্রাপ্তাভিরপি শূদ্রো  
জিহ্বোষ্ঠানোনাপি সৃষ্টাভিরগ্নিঃ পূর্তা ভবতি, অন্তত ইতি তৃতীয়ায়ৈ তসিঃ ॥ ৬২ ॥

GRAMMATICAL NOTES. — 1. হৃদগামিঃ—হৃদ গচ্ছন্তীতি হৃদগাঃ হৃদ-  
গম + ড । 2. কণ্ঠ গচ্ছন্তীতি কণ্ঠগাঃ কণ্ঠ-গম + ড । 3. ভূমিপঃ—ভূমি-  
পাতীতি ভূমিপঃ অবিয়ঃ । ভূমি + পা + ক । 4. প্রাশিতাভিঃ—প্র—অশ-ক্তঃ  
কর্মণি । 5. অন্ততঃ তৃতীয়ায়ৈ তসিঃ করণে তৃতীয়া । জিহ্বোষ্ঠয়োরন্তে ইত্যর্থঃ ।  
6. অদ্বিঃ করণে । 7. পূয়তে পূজ পবনে । কর্ম কর্তরি । Or make অদ্বিঃ  
কর্তরি তৃতীয়া and পূয়তে কর্মণি প্রত্যয়ঃ ।

Change of voice.—বিপ্রঃ.....পূয়তে । কর্ম কর্তরি । Change বিপ্রঃ  
পূয়তে । If কর্মণি আপঃ বিপ্রঃ...পুননি ॥ ৬২ ॥

BENGALI.—আচমনকালে হৃদয় পর্য্যন্ত প্রবেশ করে এই পরিমাণ জলদ্বারা জাকণ,  
কণ্ঠ পর্য্যন্ত গমন করে এই পরিমাণ জলদ্বারা কণ্ঠিয়, মুখের অস্তান্তর পর্য্যন্ত ঘাইতে  
পারে এই পরিমাণ জলদ্বারা বৈশ্য, জিহ্বা ও ওষ্ঠের অন্তর্ভাগ স্পর্শ করে এই পরিমাণ  
জলদ্বারা শূদ্র আচমন করিলে পবিত্র হয় ॥ ৬২ ॥

ENGLISH.—A Brahmin is purified by (sips of as much) water  
as may reach the heart ; a Kshatriya by as much as reaches the  
throat ; a Vaisya by water simply entering into the mouth ; and  
a Sudra by water touched by the extremity (of his lips). (62).

उद्धृते दक्षिणे पाणौ उपवीतौ इत्युच्यते द्विजः ।

सव्ये प्राचीन आवीती निवीती कण्ठसञ्जने ॥ ६३ ॥

PROSE.—দ্বিজঃ দক্ষিণে পাণৌ উদ্ধৃতে উপবীতৌ ইত্যুচ্যতে, সব্যে পাণৌ উদ্ধৃতে  
প্রাচীন আবীতৌ, কণ্ঠসজ্জনে নিবীতৌ উচ্যতে ॥ ৬৩ ॥

KULLUKA. -- আচমনাঙ্কতামুপবীতস্য দর্শয়িতুमुपवीतलक्षणं तत्प्रसङ्गेन  
प्राचीनावीत्यादिलक्षणमाह उद्धृते इति । दक्षिणे पाणौ उद्धृते वामस्तब्धस्थिते दक्षिणे-

কণ্ঠাবলম্বে যজ্ঞসূত্রে বস্তু বা উপবীতী বিজ্ঞঃ কথ্যতে, বামপাশাবুজুতে দক্ষিণকণ্ঠাবলম্বে বামকণ্ঠাবলম্বে প্রাচীনাবীতী ভগ্ন্যতে সন্ধ্য প্রাচীন আবীতীতি কন্ডোঃসুরোধাদুক্তম্ ।  
তথা চ গৌমিলঃ দক্ষিণং বাহুমুজুত্ব শিরোঃবধায় সন্ধ্যোঃসি প্রতিষ্ঠাশ্রয়তি দক্ষিণং কণ্ঠ-  
মবলম্বনং ভবতি এবং যজ্ঞোপবীতী ভবতি, সন্ধ্যং বাহুমুজুত্ব শিরোঃবধায় দক্ষিণেহসি  
প্রতিষ্ঠাপয়তি সন্ধ্যং কণ্ঠমবলম্বনং ভবত্যেবং প্রাচীনাবীতী ভবতি । নিবীতী কণ্ঠসজ্জান  
ইতি শিরোঃবধায় দক্ষিণপাশাদাবলম্বনুজুত্ব কণ্ঠাদেব সজ্জনে ঋজুপ্রালম্বে যজ্ঞসূত্রে বস্তু  
চ নিবীতী ভবতি ॥ ৬২ ॥

KULLUKA EXPLAINED.—“দক্ষিণে পাশাবুজুতে বামকণ্ঠাবলম্বে দক্ষিণকণ্ঠ-  
াবলম্বনে যজ্ঞসূত্রে” প্রাক্ কণ্ঠাত্ যজ্ঞমূৰ্য্য লম্বয়, ততঃ যজ্ঞসূত্রমণ্ডলস্য মধ্যভাগে  
দক্ষিণেহসি উত্তোলয়, তথা সতি যজ্ঞসূত্রং বামকণ্ঠে স্থাশ্রয়তি দক্ষিণকটিপার্শ্বে আশ্রয়-  
য়তি এবম্মূত্রং যজ্ঞসূত্রং উপবীতং কথ্যতে । Place the sacred thread on the  
neck suspending on the breast. Raise the left hand through  
the circle of the thread. It will then rest on the right shoulder  
and the left-side. This is প্রাচীনাবীতম্ । Suspend from the  
neck merely without raising any hand through it. It will  
be নিবীতম্ ।

GRAMMATICAL NOTES. — 1. উজুতে — উজ্ - ধৃ + ক্তঃ কর্মধি ।  
qualifies পাশী । 2. পাশী যস্য চ ভাবেন ভাবলক্ষণমিতি সমসী । 3. উপ-  
বীতী — উপ - বি - ই + ক্ত উপবীতম্ । উপবীত + ইনি । 4. প্রাচীন -  
আবীতী অসমিঃ আর্ষঃ । = প্রাচীনাবীতী । প্র - অস + ক্রিণ্ । স্বা । প্রাচীন ।  
আর্ - বি - ই + ক্তঃ । প্রাচীনং আবীতং কর্মধারয়ঃ । প্রাচীনাবীত + ইনি ।  
5. কণ্ঠসজ্জনে — কণ্ঠে সজ্জনম্ কণ্ঠমসজ্জনম্ সমসীতি যোগবিভাগাত্ সমসী  
সমাসঃ । সজ্জ + ল্যুট্ । সজ্জতে, সসজ্জে, অসজ্জিট । 6. নি - বি - ই + ক্ত  
+ ইনি । 7. সন্ধ্য qualifies পাশী ।

Change of voice. — বিজ্ঞ উপবীতিনং প্রাচীনাবীতিনং নিবীতিনং (প্রাভুঃ) ॥ ৬২ ॥

BENGALI.—কণ্ঠ হইতে বক্ষোদেশে লখিত যজ্ঞসূত্রের মধ্য দিয়া দক্ষিণ হস্ত  
উঠাইলে যজ্ঞসূত্র বামদক্ষ হইতে লখিত হইয়া দক্ষিণপার্শ্ব বেটেন করিয়া অবস্থান করে,  
এই অবস্থাপন্ন যজ্ঞসূত্রধারী বিজ্ঞকে উপবীতযুক্ত বলে, কণ্ঠ হইতে বক্ষোদেশে লখিত  
যজ্ঞসূত্রের মধ্য দিয়া বাম হস্ত উঠাইয়া নিলে যজ্ঞসূত্র দক্ষিণ দক্ষ হইতে লখিত হইয়া  
বামপার্শ্বে বেটেন করিয়া অবস্থান করে, এই অবস্থাপন্ন যজ্ঞসূত্রধারী বিজ্ঞকে প্রাচীনাবীত-  
যুক্ত বলে ; কণ্ঠ হইতে বক্ষোপরি লখনান যজ্ঞসূত্রধারী বিজ্ঞকে নিবীতযুক্ত বলে । ৬২ ।



ENGLISH.—A twice-born is said to be *Upaviti* when his right hand is raised up (so that the sacred thread might rest on his left shoulder and pass under his right arm); and he is said to be *Prachinaviti*, when his left hand is lifted up (so that the sacred thread might rest on the right shoulder and pass under his left arm); and he is said to be *Niziti*, when the sacred thread is round his neck (without passing under either arm). (63).

मेखलामजिनं दण्डमुपवीतं कमण्डलुम् ।

अप्सु प्रास्य विनष्टानि गृहीतान्यानि मन्त्रवत् ॥ ६४ ॥

PROSE.—विनष्टानि मेखलां अजिनं दण्डं उपवीतं कमण्डलुं अप्सु प्रास्य अन्यानि मन्त्रवत् गृहीत ॥ ६४ ॥

NOTE.—विनष्टानि अन्यानि सामान्ये नपुंसकवहवचनम् ।

KULLUKA.—मेखलामिति । मेखलादीनि विनष्टानि भिन्नानि क्षिप्तानि च जप्ते प्रक्षिप्य अन्यानि नवानि स्वस्वगृह्योक्तमन्त्रं गृहीयात् ॥ ६४ ॥

GRAMMATICAL NOTES.—1. मेखलाम् अजिनम् दण्डम् उपवीतम् 'कमण्डलुम्' Acc. of प्रास्य । 2. विनष्टानि मेखलादीनां सामान्यविशेषकं बहुवचनम् । 3. अन्यानि Acc. of गृहीत । सामान्ये नपुंसकम् । 4. मन्त्रवत् समन्तं यथा स्यात् तथा ।

Change of voice.—विनष्टानि गृहीतान् ॥ ६४ ॥

BENGALI.—मेखला, अजिन, दण्ड, उपवीत 'उ' कमण्डलु अङ्गुति हिरण्य वा उग्र इहेने कले फेलिया दिशा यज्ञोत्थारण पूर्णक नूतन मेखलादि ग्रहण करिबे ॥ ६४ ॥

ENGLISH.—Having thrown into water a worn out girdle, hide of a deer (used as a garment), staff sacred thread and water-pot he should take (fresh) ones with the (chanting) *mantras* or sacred texts. (64).

केशान्तः षोडशे वर्षे ब्राह्मणस्य विधीयते ।

राजन्यबन्धोर्द्वाविंशे वैश्यस्य द्वाधिके ततः ॥ ६५ ॥

PROSE.—केशान्तः ब्राह्मणस्य षोडशे ; राजन्यबन्धोः द्वाविंशे, वैश्यस्य ततः द्वाधिके वर्षे, विधीयते ॥ ६५ ॥

KULLUKA.—केशान् इति । केशान्नाख्यो गृह्योक्तसंस्कारः, गर्भषोडशे वर्षे ब्राह्मणस्य, चाविशस्य गर्भषाविंशे, वैश्यस्य ततो द्वाधिके गर्भवतुष्विंशे कर्तव्यः ॥ ६५ ॥

GRAMMATICAL NOTES. — 1. केशान्: केशानामनो यस्मिन् सः संस्कारः । 2. ब्राह्मणस्य शेषे षष्ठी । 3. षोडशं qualifies वर्षे । 4. विधीयते वि-धा + कर्त्तृणि लट् । 5. राजन्यवन्धोः राजन्यः बन्धुं धेय्य सः तस्य शेषे षष्ठी । 6. द्वाधिके द्वौ अधिकी यस्मिन् तन् तस्मिन् । Qualifies वर्षे ।

Change of voice.—केशानं विदधते ॥ ६५ ॥

BENGALI.—गर्भ हहेते षोडश वर्षे ब्राह्मण, चाविश वर्षे कश्चित्प्रेर, ताहार हहे बन्धन अधिक पत्रे वैश्वेन केशान्नामक संस्कार करिबे ॥ ७० ॥

ENGLISH.—The tonsure ceremony or *Kesanta* of a Brahmin should be performed in the 16th year ; of a Kshatriya in the 22nd year ; and of a Vaisya in two years more (than that of a Kshatriya). (65).

अमन्त्रिका तु कार्य्यं स्त्रीणामावृदशेषतः ।

संस्कारार्थं शरीरस्य यथाकालं यथाक्रमम् ॥ ६६ ॥

PROSE — शरीरस्य संस्कारार्थं स्त्रीणां इयं आहत् अशेषतः यथाकालं यथाक्रमं अमन्त्रिका कार्या ॥ ६६ ॥

KULLUKA.—अमन्त्रिकेति इयमाहत् अयं ज्ञातकर्त्तादिक्रियाकलापः समय उक्तकालक्रमेण शरीरसंस्कारार्थं स्त्रीणाममन्त्रिकाः कार्य्यः ॥ ६६ ॥

KULLUKA EXPLAINED. — इयं आहत् = “ज्ञातकर्त्तादिक्रियाकलापः ।

GRAMMATICAL NOTES.—1. इयं qualifies आहत् । 2. आहत् आङ् इत + कृिप् । आवर्त्तनं संस्कारार्थां क्रम इत्यर्थः । Acc. of कार्या । 3. कार्या कृ + क्तृत् । 4. शरीरस्य शेषे षष्ठी । 5. संस्कारार्थम् संस्काराय इदं संस्कारार्थं चतुर्थ्या नित्य समासः अर्थेन । सम्-कृ + घञ् । सुट् आगमः । सम्पर्य्यपेभ्य इति । 6. कालमनतिक्रम्य यथाकालम् । 7. क्रम मनतिक्रम्य यथाक्रमम् । 8. अशेषतः प्रकृत्यादिभ्यः तृतीयाशक्तिसिः । 9. अमन्त्रिका न विद्यते मन्यो यस्यां सा अमन्त्रिका । समासान्तः कप् । ततः स्त्रियां आप् इकारश्च । प्रत्ययस्मात् कान्पूर्वस्मात् इदाय्यसुपः ।

Change of voice. — अनया आहता...कार्य्यया भूयते ॥ ६६ ॥

BENGALI.—পুরুষের স্থান স্ত্রীলোকদিগেরও দেহতত্ত্বের সমস্ত উপনয়ন ভিন্ন কাজ কর্মাদি সংস্কার করিত ব্রহ্মণ ও ক্রম অনুসারে বিনামাত্র সম্পাদন করিতে ॥ ৬৬ ॥

ENGLISH.—For the consecration of the bodies of females this course (of purificatory rites) should all be done in due time and due order, but without the (chanting of the) *mantras* or sacred texts. (66).

বৈবাহিকো বিধিঃ স্ত্রীণাং সংস্কারো বৈদিকঃ স্মৃতঃ ।

পতিসেবাগুরৌ বাসো গৃহার্থোঃ পুণ্যপরিষ্কৃত্য ॥ ৬৭ ॥

PROSE.—বৈবাহিকঃ বিধিঃ স্ত্রীণাং বৈদিকঃ সংস্কারঃ স্মৃতঃ পতিসেবা গুরৌ বাসঃ, (স্মৃতঃ) গৃহার্থঃ অগ্নিপরিষ্কৃত্য (স্মৃতা) ॥ ৬৭ ॥

KULLUKA.—অনেনোপনয়নেনাপি প্রাপ্তে বিশেষমাহ, বৈবাহিক ইতি । বৈবাহিক-বিধিরেব স্ত্রীণাং বৈদিকঃ সংস্কার নপনয়নাত্মনো মন্বাদিভিঃ স্মৃতঃ পতিসেবৈব গুরুকুলে বাসো বেদাধ্যয়নরূপঃ গৃহকৃত্যসেব সাধ্যং প্রাপ্তঃ সমিহ্নোমরূপাগ্নিপরিষ্কৃত্য, তস্মাদ্বিবাহাদি-রূপনয়নস্থানে বিধানাদুপনয়নার্হিভিত্তিরিতি ॥ ৬৭ ॥

NOTE. In some Smritis females also had investiture ceremony. But Manu clearly lays down that nuptial ceremony is in their case investiture ceremony.

GRAMMATICAL NOTES — 1. বৈবাহিকঃ বিবাহ + উক্ত । 2. বি - ধা + ক্তিঃ বিধিঃ । 3. স্ত্রীণাম্ শ্রেণে বহুব্রী । 4. বৈদিকঃ বেদ + উক্ত । 5. স্মৃতঃ স্মৃ + ক্তঃ কর্মণি । 6. পতিসেবা পত্যুঃ সেবা same case with গুরৌ বাসঃ । 7. গুরৌ গুরুকুলে ইত্যর্থঃ অধিকরণকারকং । 8. বাসঃ বিশেষবিশেষণ of পতি-সেবা । 9. গৃহার্থঃ গৃহস্য অর্থঃ বিষয়ঃ গৃহার্থঃ গৃহকৃত্যমিত্যর্থঃ । বহুব্রী সমাসঃ । 10. অগ্নিপরিষ্কৃত্য অগ্নিঃ পরিষ্কৃত্য অগ্নিপরিষ্কৃত্য । বহুব্রী সমাসঃ । পরি + ক্ত + শত্ ।

Change of voice. — .....বিধিঃ.....বৈদিকং সংস্কারং পতিসেবাং বাসং.....  
গৃহার্থং.....পরিষ্কৃত্য স্মৃতবন্তঃ (মন্বাদয়ঃ) ॥ ৬৭ ॥

BENGALI.—উপনয়ন একটি সংস্কার হইলেও স্ত্রীলোকের উপনয়ন হইবেনা, কেননা বিবাহই স্ত্রীলোকের উপনয়ন সংস্কার, পতিসেবাই গুরুগৃহে বাস, এক গৃহকৃত্যই স্ত্রীলোকের অগ্নিপরিষ্কৃত্য বলিয়া গণ্য ॥ ৬৭ ॥

ENGLISH—The marriage ceremony is regarded as the Vedic consecration for women, attendance to and serving their husbands is looked upon as staying with the *Guru* (or a course of student-life) ; and the performance of household duties as worshipping the fire. (67).

एष प्रोक्तो द्विजातीनामौपनायनिको विधिः ।

उत्पत्तिव्यञ्जकः पुण्यः कर्मयोगं निबोधत ॥ ६८ ॥

PROSE.—द्विजातीनां एषः उत्पत्तिव्यञ्जकः पुण्यः औपनायनिकः विधिः प्रोक्तः (इदानीम्) कर्मयोगं निबोधत ॥ ६८ ॥

KULLUKA.—एष इति । औपनायनिक इति अनुष्ठितिकादिवाद्भयपदशब्दिः, अथ द्विजातीनामुपनयनसम्बन्धी कर्मकल्पा उक्तः उत्पत्तेर्द्वितीयजन्यमो व्यञ्जकः, इदानीमुपनीतस्य येन कर्मणा योगस्तं शृणुत इति ॥ ६८ ॥

GRAMMATICAL NOTES. — 1. औपनायनिकः qualifies विधिः उपनयन + उक्त । 2. उत्पत्तिव्यञ्जकः उत्पत्तेः व्यञ्जकः षष्ठी समासः । वि-अन्जन् । 3. कर्मयोगम् कर्मणा योगः कर्मयोगः तृतीयामासः । युज् + घञ् । 4. नि-बुध + भ्वादि लोट् त ।

Change of voice. — विधिना प्रोक्तेन भूयते । कर्मयोगः निबुध्यताम् ॥ ६८ ॥

BENGALI.—उक्तादि विग्रहपत्र द्वितीय अन्वय वाञ्छक पवित्र उपनयनमन्त्रकोटि विधि वला इहेन ; এখন উপনীত বিগ্রহণ যে ভালে কন্দের সঙ্গে যুক্ত ইहेদেন, তাই অবগ করুন ॥ ৬৮ ॥

ENGLISH—The holy rule relating to the investiture of the three twice born classes which indicetes or rather constitutes their (second) birth, is thus described. Now learn their course of conduct or actions. (68.)

उपनीय गुरुः शिष्यं शिक्षयेच्छीचमादितः ।

आचारमग्निकार्येषु सन्धोपासनमेव च ॥ ६९ ॥

PROSE.—गुरुः शिष्यं उपनीय आदितः शीघ्रं आचारं अग्निकार्यं सन्धोपासनं एव च शिक्षयेत् ॥ ६९ ॥

KULLUKA.—उपनीय गुरुरिति गुरुः शिष्यमुपनीय प्रथमम् एका लिङ्गे गृष्टे तिस्र इत्यादि वक्तव्यमात्रं शीघ्रं आचारमनाद्याचारमघौ सायं प्रातः सन्निहोमानुष्ठानं समककसन्धोपासनविधिश्च शिक्षयेत् ॥ ६९ ॥

(GRAMMATICAL NOTES. — 1. उपनीय - उप - नी + ल्यप् । अनेवीत् अनेष्ट । 2. शिष्यम् शास् + क्यप् । Acc. of उपनीय and प्रशोच्य कर्त्ता of शिष्येत् बुद्ध्यर्थक शिष्यधातोः प्रयोगात् प्रशोच्यस्य कर्मसंज्ञा । 3. आदिः आदि + सप्तम्यर्थे तसिः । 4. शिष्येत्—शिष + शिप् + यात् । 5. आचारम् Acc. of शिष्येत् । 6. अग्निकार्यम् अग्नेः कार्यम् षष्ठीसमासः । 7. सन्धोपासनम् सन्ध्यायाः उपासनम् । षष्ठीसमासः Acc. of शिष्येत् । सम् ध्ये + षङ् । उप - आस् + ल्यट् ।

*Change of voice*—.....गुरुणा शिष्यः शिष्येत् आचारं अग्निकार्यम् सन्ध्यापासनम् ॥ ६२ ॥

BENGALI.—शुक्र शिवाक केपनीठ करत प्रथमतः ज्ञान ও আচমনাদি (मोक्ष) निका निवेन, शास्त्र ও आचःकाले (श्रीमान्) ठेन प्रकृति आचार এবং मन्त्रादिनन निका निवेन ॥ ७० ॥

ENGLISH.—A *Guru* or preceptor, after having invested his disciple with the sacred thread, should first teach him purity of habits, customary conduct, the attendance to the sacred fires and *Sandhya* devotions. (69).

अध्येष्यमाणस्वाचान्तो यथाशास्त्रमुदङ्मुखः ।

ब्रह्माञ्जलिःकृतोऽध्याप्यो लघुवासा जितेन्द्रियः ॥ ७० ॥

PROSE.—अध्येष्यमाणः (शिष्यः) तु यथाशास्त्रं आचान्तः उदङ्मुखः ब्रह्माञ्जलिः कृतः लघुवासाः जितेन्द्रियः (गुरुणा) अध्याप्यः ॥ ७० ॥

KULLUKA.—अध्येष्यमाण इति । अध्ययनं करिष्यमाणः शिष्यो यथाशास्त्रं कृताचमन उत्तराभिमुखः कृतब्रह्माञ्जलिः पवित्रवस्त्रः कृतेन्द्रियसंयमी गुरुणा अध्याप्यः । प्राङ्मुखो दक्षिणतः शिष्य उदङ्मुखोवेति गौतमवचनात् प्राङ्मुखस्यापि अध्ययनम् । ब्रह्माञ्जलिकृत इति वाङ्मताम्यादिष्वित्यनेन कृतशब्दस्य परिनिपातः ॥ ७० ॥

GRAMMATICAL NOTES.—1. अध्येष्यमाणः अधि - इङ् + स्वमानः (ज्ञानच् - स्वकारागमः) कर्त्तरि । अधीते अधिजगि अध्येष्ट अध्यगीष्ट । 2. आचान्तः आङ् - चम + क्तः कर्त्तरि । 3. यथाशास्त्रम् अन्यथोभावाः । 4. उदङ्मुखः - उदक् मुखं यस्य सः बहुव्रीहिः । उत् - अच् + क्तिप् । 5. ब्रह्माञ्जलिकृतः ब्रह्मणः वेदपाठस्य अञ्जलिः ब्रह्माञ्जलिः । वाङ्मताम्यादिस्वात् कृतस्य परिनिपातः । 6. लघु - वासः वस्त्रं यस्य स लघुवासाः बहुव्रीहिः । 7. कृतानि इन्द्रियाणि वीर्यस्य जितेन्द्रियः । 8. अध्याप्यः अधि - इङ् - शिप् यत् ।

*Change of voice.*—অধীক্ষমাণেন আচাৰ্য্যেন উদঙ্মুখেণ ব্রহ্মাঙ্গলিকৃতেন বসুধামসা জিতেন্দ্ৰিয়েণ (শিষ্যেণ) অধ্যাপ্যে ন ভূয়তে ॥ ৩০ ॥

BENGALI.—শিষ্য অধ্যয়ন করিতে ইচ্ছুক হইলে, তৎপূৰ্বে যথাশাস্ত্র আচমন করিয়া পবিত্র বস্ত্র পরিধানাঙ্কে ইল্লিশমংগম করিয়া ত্রিকাঙ্গলি বন্ধন করিয়া উত্তরাভিমুখে বসিলে, তৎপরে গুরু তাহাকে অধ্যয়ন করাইবেন ॥ ৩০ ॥

ENGLISH—A disciple about to read the Vedas should be taught, after he has properly taken the sips of water according to the Sastras has seated himself facing the north, has done the folding of his palms in honour of the Vedas, has controlled his senses and with a light garment on. (70).

ব্রহ্মারম্ভেঃবসানে চ পাদৌ গাছৌ গুরোঃ সদা ।

সংহত্য হস্তাবধ্যৈয়ং স হি ব্রহ্মাঙ্গলিঃ স্মৃতঃ ॥ ৩১ ॥

PROSE.—ব্রহ্মারম্ভে অবসানে চ সদা গুরোঃ পাদৌ গাছৌ। হস্তৌ সংহত্য অবধ্যৈয়ম্। স হি ব্রহ্মাঙ্গলিঃ স্মৃতঃ ॥ ৩১ ॥

KULLUKA.—ব্রহ্মারম্ভেঃবসানে চেতি। বেদাধ্যয়নস্বারম্ভে কর্তব্যে সমাপনে চ ক্রমে গুরোঃ পাদোপসংহৃত্যং কর্তব্যং হস্তৌ সংহত্য সংশ্লিষ্টৌ কৃत्वा অধ্যৈতব্যং স এব ব্রহ্মাঙ্গলিঃ স্মৃত ইতি পূৰ্ব্বশ্লোকীকৃতব্রহ্মাঙ্গলিশব্দার্থব্যাকারঃ ॥ ৩১ ॥

GRAMMATICAL NOTES.—1. ব্রহ্মাঙ্গলিঃ আরম্ভে ব্রহ্মারম্ভে। ভাবি সমসী বাড্ + রম + অজ্। রমতে রম্ভে অরম্ভ। 2. অবসানে ভাবি সমসী অব—সৌ + ল্যুট্। স্মৃতি। 3. গুরোঃ শিষ্যে গুপ্তৌ। 4. সংহত্য—সম্ + হৃ + ল্যপ্। 5. হস্তৌ Acc. of সংহত্য। 6. অধ্যৈয়ম্ অধি—হৃ + ভাবি যত্।

*Change of voice.*—পাদাব্যৌ গাছাব্যৌ ভূয়তে। অধ্যৈয়েন ভূয়তে। ব্রহ্মাঙ্গলিনা স্মৃৎ ন ভূয়তে ॥ ৩১ ॥

BENGALI.—বেদপাঠের আরম্ভে এবং অন্তে শিষ্য সর্বদা বক্ষ্যমাণনিয়মে গুরুর উত্তর পাদ স্পর্শ করিবে; হস্তদ্বয় অঙ্গলিবদ্ধ করিয়া অধ্যয়ন করিবে; এইরূপ অধ্যয়ন সমুষ্ঠানকে ত্রিকাঙ্গলি বলে ॥ ৩১ ॥

ENGLISH—At the commencement of the reading of the Vedas, and at the end, the feet of the teacher should ever be clasped. One should read with his hands folded together; that is called the folding of the palms in homage to the Vedas. (71).

व्यत्यस्तपाणिना कार्यमुपसंग्रहणं गुरोः ।

सव्येन सव्यः स्मृष्टव्यो दक्षिणेन च दक्षिणः ॥ ७२ ॥

PROSE.—गुरोः (तत्) उपसंग्रहणं व्यत्यस्तपाणिना—कार्यम् ; (तत्र) सव्येन सव्यः दक्षिणेन दक्षिणः स्मृष्टव्यः ॥ ७२ ॥

KULLUKA.—पादोपसंग्रहणं कार्यमित्यनन्तरमुक्तं तद्व्यत्यस्तपाणिना कार्यमिति विधीयते कीदृशो व्यवसायः कार्यं इत्यत आह व्यत्यस्तपाणिनेति । सव्येन पाणिना सव्यः पादो दक्षिणेन पाणिना दक्षिणः पादः गुरोः स्मृष्टव्यः उत्तानहस्ताभ्यांछेदं पादयोः स्पर्शनं कार्यं यदाह पंथीनमिः उत्तानाभ्यां हस्ताभ्यां दक्षिणेन दक्षिणं सव्यं सव्येन पादावभिवाद्येत् । दक्षिणोपरभावेन व्यवसायीवाचं शिष्टसमाचारात् ॥ ७२ ॥

KULLUKA EXPLAINED.—व्यत्यस्तपाणिना with crossed hands (placing the right hand above the left one).

GRAMMATICAL NOTES.—1. गुरोः शेषे षष्ठी । 2. उप—सम—ग्रह + ल्युट् । 3. व्यत्यस्तपाणिना व्यत्यस्तन पाणिना व्यत्यस्तपाणिना । करधौ तृतीयः वि—अति—अम् + क्तः । 4. कार्यम् क्त + ल्युट् । 5. सव्येन दक्षिणेन qualifies पाणिना । 6. स्मृष्टव्यः—स्मृश् + ल्युट् । Conjugated.

Change of voice.—उपसंग्रहणेन कार्येण भूयते । सव्येन दक्षिणेन (पादेन) स्मृष्टव्येन भूयते ॥ ७२ ॥

BENGAL.—पूर्व श्लोक मे पादसंग्रहणत्र विधानं कर्त्ता इहेति चेत् मे पादसंग्रहण विधीयते इत्येव करिष्ये इहेवे ; मया दक्षिण इत्येव उक्तरं दक्षिण पाद एव बाध इत्येव उक्तरं बाध पाद स्पर्शनं करिष्ये एव दक्षिण इत्येव बाध इत्येव उक्तरं मया बाधेवे ॥ १२ ॥

ENGLISH.—The clasping of the feet of the teacher should be done with hands crossed ; the left foot is to be touched by the left hand ; and the right foot by the right hand. (72).

अध्ययमाणन्तु गुरुर्नित्यकालमतन्द्रितः ।

अधीष्व भो इति ब्रूयाद्विरामोऽस्त्विति चारमेत् ॥ ७३ ॥

PROSE.—गुरुः नित्यकालं अनन्तरः अध्ययमाणं (शिष्यम् आरम्भे) अधीष्व भो इति ब्रूयात्, (अन्ते) विरामः अन्त इति च (उक्ता) चारमेत् ॥ ७३ ॥

KULLUKA.—अध्ययमाश्रमिति । अध्ययनं करिष्यमाणं शिष्यं सर्वदा अनन्तरं गुरुर्अधीष्व भो इति प्रथमं वदेत् शेषे विरामोऽस्त्विति विधाय चारमेत् निवर्त्तते ॥ ७३ ॥

BENGALI.—নিম্ন অধ্যয়ন করিতে ইচ্ছুক হইলে, ঐক মর্সদা অনবস হইয়া প্রথমে “ভো অধ্যয়ন কর” এই কথা বলিবেন, এবং অস্তে “বিশ্রাম হউক” ইহা বলিয়া নিবৃত্ত হইবেন । ৭৩ ।

ENGLISH.—The teacher should always without idleness or fatigue say to the disciple about to recite the Vedas,—“recite,” and saying “let there be a stop or pause,” he should cease (from teaching). (73)

ব্রাহ্মণঃ প্রণবং কুর্যাদাদাবন্তে চ সর্বদা ।

সবত্যনোক্তং পূর্বং পরস্তাচ্চ বিশীৰ্য্যতি ॥ ৩৪ ॥

PROSE.—ব্রাহ্মণঃ আদৌ অন্তে চ সর্বদা প্রণবং কুর্যাত্ (যতঃ) পূর্বং অনোক্তং স্বতী, পরস্তাচ্চ (অনোক্তং) বিশীৰ্য্যতি ॥ ৩৪ ॥

KULLUKA.—ব্রাহ্মণঃ প্রণবমিতি । ব্রাহ্মণো বেদস্তাধ্যয়নারম্ভে অধ্যয়ন-মমামা ঐচ্ছ্যত্ কুর্যাত্ যস্মাত্ পূর্বং যস্যোক্তারো ন কৃতম্ভত্ সবতি শনৈঃ শনৈর্নগ্নতি যন্ত পরস্তাচ্চ কৃতম্ভদিশীৰ্য্যতি অবাস্থ্যনিস্ব ন লভতে ॥ ৩৪ ॥

KULLUKA EXPLAINED.—অনোক্তম্ ঐচ্ছ্যত্ রহিতম্ যত্ অধ্যয়নং তত্ । অনোক্তম্=ঐচ্ছ্যত্ । ভাবে ক্তঃ । সবতি শনৈর্নাগ্নং য়তি । বিশীৰ্য্যতি স্মৃতিঃ সগ্নতি ।

GRAMMATICAL NOTES.—1. প্রণবম্—প্র-নু+অপ্ । প্রণবং Acc. of কুর্যাত্ । 2. পূর্বম্ Adv. 3. অনোক্তম্ ন বিদ্যতে ঐচ্ছ্যত্ ঐচ্ছ্যত্ যস্মিন্ তত্ । 4. সবতি সুশ্রাব অমুস্রবত্ । 5. পরস্তাচ্চ পর+অস্তাতি by বিশ্রামা পরাভবরাভ্যাম্ । অধিকরণসম্প্রদায়ঃ অস্তাতিঃ । 6. বিশীৰ্য্যতি—বি-জু+লট্ তি ।

Change of voice.—অনোক্ততেন স্মৃতিঃ.....বিশীৰ্য্যতি ॥ ৩৪ ॥

BENGALI.—ব্রাহ্মণ মর্সদাই অধ্যয়নের আদি ও অস্তে প্রণব উচ্চারণ করিবে ; কারণ যে অধ্যয়নের পূর্বে ওকার উচ্চারিত না হয় তাহা ধীরে ধীরে নোণ পায় ; যাঁহারা যথেষ্ট ওকার উচ্চারিত না হয়, তাঁহা বিশীর্ণ হয় (স্মৃতিগণে আক্লভ হয় না) ॥ ৭৪ ॥

ENGLISH.—A Brahmin should always utter (the syllable) “om” at the beginning and at the end. Without om at the end it disappears (i. e. obtains no hold at all). (74).

প্রাক্কুলান্ পর্য্যপাসীনঃ পবিত্রৈশ্চৈব পাবিতঃ ।

প্রাশায়ামৈস্তুভিঃ পূতস্তত ঐচ্ছ্যতমর্হতি ॥ ৩৫ ॥



PROSE.—পাক্কুলান্ ( দর্ভান্ ) পর্য্যপাসীনঃ পবিতৈঃ (দর্ভৈঃ) পাবিতঃ বিবিঃ  
প্রাণাঘাসৈঃ পূতঃ ততঃ ঐচ্ছারং অর্হতি ॥ ৩৫ ॥

KULLUKA.—পাক্কুলানিতি পাক্কুলান্ প্রাগযান্ দর্ভান্ অধ্যাসীনঃ, পবিতৈঃ  
কুশৈঃ করষযজ্ঞৈঃ পবিত্রীকৃতঃ প্রাণাশাসাস্বয়ঃ পশ্চদশমাষা ইতি গীতমক্ষরযাত্ পশ্চ-  
দশমাত্মৈস্ত্রিবিধিঃ প্রাণাঘাসৈঃ প্রযতঃ, অকারাদিলঘুচরকালঞ্চ মাতা ততোঃধ্যয়ন্যধ-  
মৌচ্ছারমর্হতি ॥ ৩৫ ॥

GRAMMATICAL NOTES. 1. প্রাগযান্ পাক্ পূর্ব্বদিগমিসুত্বং অযং অযমানো  
বৈশাং তান্ qualifies দর্ভান্ understood. Kusha grasses with points  
to the east. 2. পর্য্যপাসীনঃ পরি - উপ - আচ্ছাস্ম শানচ্। আশিষ্ট। 3.  
পবিতৈঃ qualifies দর্ভৈঃ understood. পু + ইত। 4. পাবিতঃ পু + ণিচ্ + ক্তঃ  
কর্ম্মণি। 5. প্রাণাঘাসৈঃ প্রাণান্ প্রাণবায়ুনাং আযাসাঃ দৈর্ঘ্যসম্পাদনম্ নিশ্বাসরোধাঃ  
প্রাণাঘাসাঃ তৈঃ করণে তৃতীয়া। To repeat a number of letters men-  
tally while suppressing the breath. Here suppression of breath  
for a time enabling one to utter fifteen short vowels is advised.  
6. পূতঃ পু + ক্তঃ। 7. ততঃ তদ্ + তন্। 8. ঐচ্ছারম্ Acc. of অর্হতি ঐচ্ছ  
+ কার (suffix). 9. অর্হতি অর্হ + লট্ তি।

Change of voice.—...পর্য্যপাসীনেন ... পাবিতেন ... পূতেন ..... ঐচ্ছারঃ  
অর্হতি ॥ ৩৫ ॥

BENGALI.—যাহার অগ্রভাগ পূর্ব্বদিগভিমুখে স্থিত এমন কুশ উপবেশন করিয়া  
উত্তর হস্তস্থিত পবিত্র দর্ভ দ্বারা পবিত্রীকৃত হইয়া এবং যত সময়ে পোনপ্রতি হস্তযত  
উচ্চারণ করা যায় তত সময়ে যে একটি প্রাণাশ্বাস হয় এইরূপ তিনটি প্রাণাশ্বাস দ্বারা  
বিশুদ্ধ হইয়া তৎপরে ওকার উচ্চারণে অধিকারী হইতে পারা যায় ॥ ৩৫ ॥

ENGLISH.—Sitting on Kusa grass with the points or tips to  
the east purified by the holy or sacred Kusa grass in his hands  
and purified also by three *Pranavams* or suppressions of breath,  
a disciple is fit to utter (the syllable) *om*. (75).

অকারস্বায্যুকারস্ব মকারস্ব প্রজাপতিঃ ।

বেদত্রয়াঙ্গিরদুহুভূবঃ স্বরিতীতি চ ॥ ৩৬ ॥

PROSE.—প্রজাপতিঃ অকারস্ব উকারস্ব মকারস্ব অপি ভূভুবঃ স্বরিতীতি চ  
বেদত্রয়াঙ্গিরদুহুত ॥ ৩৬ ॥

KULLUKA.—अकारश्चेति । एतद्वरमेवाचेति वक्ष्यति तस्यार्थं शेषः अकार-  
सुकारं मकारश्च प्रणवावयवभूतं ब्रह्मा वेदतयात् ऋग्यजुःसामलक्षणात् भूर्भुवः स्वरिति  
व्याहृतियद्यच्च क्रमेण निरदुहत् उद्धृतवान् ॥ ७६ ॥

KULLUKA EXPLAINED.—भूर्भुवः स्वरिति गायत्र्युपलक्षणम् । अ + उ + म्  
भोम् = भौं = प्रणवः । The Gayatri and the Pranava were milched  
out from the Vedas.

GRAMMAR.—1. अकारम् । 2. उकारम् । 3. मकारम् सर्वत्र अवयवे  
कारपत्यः । Acc. of निरदुहत् । 4. प्रजापतिः षष्ठीसमासः नित्यः । 5. वेदानां  
तत्र तस्मात् विषयश्चा पञ्चमी पक्षे वेदवधं निरदुहत् इत्यपि दुर्हर्षिकर्षकत्वात् ।  
नो दुग्धं दोग्धि । 6. भूर्भुवः स्वरितौति Acc. of निरदुहत् । 7. निरदुहत्  
used for निरधोक् ।

Change of voice.—प्रजापतिना अकारः उकारः मकारः भूर्भुवः स्वरितश्च  
निरदुहन्त ॥ ७६ ॥

BENGALI—अकार, उकार ও মকার এই তিনটি প্রণবাবয়ব এবং ভূঃ ভুবঃ স্বরিত্তি  
এই তিন ব্যাক্তি প্রজাপতি ঋক্, যজুঃ, ও সামবেদ হইতে দোহন করিয়াছিলেন । ৭৬।

ENGLISH—Prajapati or the Creator milked from the three  
Vedas the letter A, the letter U and the letter M, and also (the  
three words) Bhuh, Bhubah, (and) Swar. (76).

त्रिभ्य एव तु वेदेभ्यः पादं पादमदूदुहत् ।

तदिदृशोऽस्याः सावित्र्याः परमेष्ठी प्रजापतिः ॥ ७७ ॥

PROSE.—परमेष्ठी प्रजापतिः तदिदृशः अस्याः सावित्र्याः पादं पादं त्रिभ्य एव  
वेदेभ्यः अदूदुहत् ॥ ७७ ॥

KULLUKA.—त्रिभ्य एवेति । तथा त्रिभ्य एव वेदेभ्यः ऋग्यजुःसामभ्यः  
तदिदृश इति प्रतीकानुदितायाः सावित्र्याः पादं पादमिति वीजं पादान् ब्रह्मा  
आचकर्ष । परमेष्ठीने तिष्ठतीति परमेष्ठी ॥ ७७ ॥

KULLUKA EXPLAINED.—“तदिदृशः इति प्रतीकेन अनुदितायाः” ।  
तदिदृशः i. e. a ऋक् commencing with the word “तन्” । प्रतीकेन  
अनुदितायाः which has been stated here not bodily but by re-  
presentation i. e. by quoting a portion of it.

GRAMMAR.—1. বেদেভ্যঃ অপাদানে পঞ্চমী । 2. পাদং পাদম্ বীক্ষায়াং দ্বির্ভ্বচনম্ Acc. of অদুদুহত্ । 3. অদুদুহত্ দুহ ণিচ্ লুঙ ত্ । 4. তদিদ্রাক্ : তত্ ইতি তদিতি কর্ম্মধারয়ঃ । তদিতি ঞ্চক্ তদিদ্রাক্ পূর্ব্বক্ সমাসঃ । অস্বাঃ same case with সাবিব্রাঃ । 5. সাবিব্রাঃ সবিব্র + অণ্ + ডীপ্ । শিবে ষষ্ঠী । 6. পরমেষ্টৌ পরমে — স্যা + ডিন্ । পতম্ অলুক সমাসঃ ।

*Change of voice.* — পাদঃ পাদঃ অদৌহি ॥ ৩৩ ॥

BENGALI.—সর্ব্বত্রোক্ত জ্ঞানবিত্ত লক্ষা “৩২” এই সাবিত্রী মন্ত্রের এক এক পাঠ করিয়া তিন পাদ স্বক্ যজুঃ ও সামনেদ ইহেতে উচ্কৃত করিয়াছেন ॥ ৭৭ ॥

ENGLISH.—The Creator, the Supreme Being, milked from the three Vedas, foot by foot, the hymn beginning with *tad*, (and known as) *Savitri* or *Gayatri*. (77).

एतदक्षरमेताञ्च जपन् व्याहृतिपूर्व्विकाम् ।

सम्ययोर्विदविद्भिप्रो वेदपुण्येन युज्यते ॥ ३८ ॥

PROSE.—এতদক্ষরং ব্যাহৃতিপূর্ব্বিকাং এতাঞ্চ সম্যগ্ভ্যোঃ জপন্ বেদবিৎ বিপ্রঃ বেদপুণ্যেন যুজ্যতে ॥ ৩৮ ॥

KULLUKA.—যত এবং অতঃ এতদক্ষরমিতি । এতদক্ষরমৌঙ্কাররূপম্ এতাঞ্চ বিপদা সাবিত্রী' ব্যাহৃতিবিশ্বপূর্ব্বিকাং সম্যগাকালে জপন্ বেদভ্যো বিপ্রাদির্বেদবিশ্বাশ্রয়ন-পুণ্যেন যুক্তো ভবতি অতঃ সম্যগাকালে প্রণবব্যাহৃতিবিশ্বাশ্রয়তাং সাবিত্রী' জপেদিতি বিধিঃ কল্যাপি ॥ ৩৮ ॥

GRAMMAR.—1. ব্যাহৃতিপূর্ব্বিকাম্ ব্যাহৃতিঃ পূর্ব্ব যস্যাঃ তাম্ । 2. সম্যগ্ভ্যোঃ অধিকরণে সপ্তমী । 3. বেদ বিদ + ক্রিপ্ । 4. বপ্ + রক্ বিপ্রঃ । 5. বেদপুণ্যেন বেদস্য বেদপাঠস্য পুণ্যম্ তেন সহায়্যে ততীয়া । 6. যুজ্যতে যুজ কর্ম্মণি লট্ তে । Nom. বিধিনা understood.

*Change of voice.* — বিপ্রং বেদপুণ্যেন যুক্তি বিধিঃ ॥ ৩৮ ॥

BENGALI.—এই প্রণবরূপ মন্ত্রের এবং ভূভূবঃস্বত্ এই ব্যাহৃতিত্রয়বৃক্ক সাবিত্রী উভয় মন্ত্রাকালে জপ করিলে বেদবিৎ ব্রাহ্মণ বেদপাঠজনিত পুণ্য লাভ করে ॥ ৭৮ ॥

ENGLISH.—A Brahmin versed in the Vedas is gifted with the merit of reading the Vedas, by muttering this syllable (*Om*) and this hymn (*Gayatri*) preceded by the words (*Bhuh*, *Bhuvah*, and *Swar*), at both the *Sandhyas*, (morning and evening). (78).

सहस्रकृत्वस्त्वभ्यसा वहिरेतत्तिकं द्विजः ।

महतोऽप्येनसो मासात् त्वचेवाहिर्विसृज्यते ॥ ७८ ॥

PROSE. — द्विजः एतत् त्रिकं बहिः सहस्रकृत्वः अभ्यस्य महतः अपि एनसः  
बहिः त्वचा इव मासात् विमुच्यते ॥ ७९ ॥

KULLUKA.—सहस्रकृत्व इति । सन्ध्यायामन्यत्र च काले एतत् प्रकृतं प्रणवव्या-  
हृतिव्यसाविमयात्मकं त्रिकं यामाहर्हर्नदीतौरारण्यदौ सहस्राहृतिं जपित्वा सहस्रोऽपि  
शापात् सर्व इव कञ्चुकाभ्युच्यते तस्मात् पापवधार्थमिदं जपनीयमिति अप्रकरणेऽपि  
नाधर्वाधुस्तुतम् अन्यैस्तथोच्चारणमपि पुनः कर्तव्यं स्यात् ॥ ७८ ॥

GRAMMAR.—1. सहस्रकत्वः सहस्र + कत्वसुच् । 2. अभि-अस् + ल्यप् । 3. वह्निः अन्वयम् । 4. एनसः अपादाने पञ्चमी अपंतायोद्भुता इति ज्ञायकात् । 5. त्वचा कर्त्तरि तृतीया । 6. अहिः Acc. of विमुच्यते कर्मणि । 7. माप्रात् विव्रजया पञ्चमी तृतीया स्थाने वा मामं अतीत्य इति ल्यब्लोपे कर्मणि पञ्चमी ।

*Change of voice.* - विजिज् विमुच्यते ( कर्म कर्तरि ) । लृक् अङि विमुञ्चति ॥ ७६ ॥

BENGALI.—দ্বিজ গ্রামের বাহিরে নদীতীর ও জরণাদি স্থানে পূর্বোক্ত প্রণব গাঙ্কিত্ত্বয় ও সাবিত্রী এই তিনটি সহস্রবার করিয়া জপ করিলে কণ্ঠক হইতে সর্পের ন্যায় মহাপাপ হইতে এক মাস মধ্যে বিমুক্ত হয় ॥ ৭৯ ॥

ENGLISH.—Having repeated a thousand times this triad outside public resorts (in a forest or on the banks of a river), a twice-born is exonerated in a month from even a most serious sin, in the same way as a snake is freed from its slough. (70).

एतच्चैविसंयुक्तः काले च क्रियया स्वया ॥

ब्रह्मक्षतियविड्योनिर्गर्हणां याति साधुषु ॥ ८० ॥

PROSE.—एनया ऋचा कासि च स्वया क्रियया विसंयुक्तः ब्रह्मचक्रियविद्योनिः  
माधव मूर्ध्ना याति ॥ ८० ॥

KULLUKA. — एतयचति । सन्ध्यायामन्यत्र रुनये वः ऋचेतथा सावित्र्या वियुक्त-  
सातसावित्रीग्रपः स्वकीयया क्रियया च सायम्प्रातर्होमादिरूपया स्वकाले त्यक्ती

ब्राह्मणः चतुर्थो वैश्योऽपि सज्जनेषु निन्दां गच्छति तस्मात् स्वकाले सावित्रीजपं स्वक्रियाच्च न त्यजेत् ॥ ८० ॥

GRAMMAR.—1. एतथा qualifies ऋचा । 2. काले अधि-  
करणकारकम् । 3. स्वया adj. 4. ऋचा कर्त्तरि ढतीया । ऋच् + क्तिप् ।  
5. क्रियया कर्त्तरि ढतीया । क्त + गः । 6. विसंयुक्तः वि + सम् + युज् + क्तः  
कर्म्मणि । 7. ब्रह्मचरिविविधयोनिः ब्रह्मा च अतिशय विद् च ब्रह्मचरितिविधः  
इतरतरहन्ः । ते योनयः उत्पत्तिस्थानं यस्य सः । 8. गर्हणाम् Acc. of  
याति गर्ह + युच् । 9. साधुषु बाधरि सममी ।

*Change of voice.* — ब्रह्मचरित्य-विध्योनिना गर्हणा यायते ॥ ८० ॥

BENGALI.—ब्राह्मण कश्चिद् वैश्य एवै गार्हपत्ये एव गार्हपत्ये शक्यते (होत्रादि  
क्रिया) ना करिने माधुनसमाजे निमित्त इत्यर्थः ॥ ८० ॥

ENGLISH.—A Brahmin, or a Kshatriya or a Vaisya who has  
foregone this hymn and his proper sacraments at their due times,  
is put to disgrace among the good. (80).

ओङ्कारपूर्विकास्तिस्रो महाव्याहृतयोऽव्ययाः ॥

त्रिपदा चैव सावित्री विज्ञेयं ब्रह्मणो मुखम् ॥ ८१ ॥

PROSE. — ओङ्कारपूर्विकाः तिस्रः। अव्ययाः महाव्याहृतयः त्रिपदा सावित्री च  
एव ब्रह्मणः मुखं विज्ञेयम् ॥ ८१ ॥

KULLUKA.—ओङ्कारपूर्विकेति । ओङ्कार पूर्विकास्तिस्रो व्याहृतयः भूर्भुवः  
स्वरित्येता अक्षरब्रह्मावाप्तिफलत्वेनाव्ययाः त्रिपदा च सावित्री ब्रह्मणो वेदस्य मुखमाद्यं  
तत्पूर्विकवेदाध्ययनारम्भात् अथवा ब्रह्मणः परमात्मनः प्राप्तेर्हार्मेतदध्ययनजपादिना  
निष्पापस्य ब्रह्मज्ञानप्रकर्षणं मोक्षावाप्तिः ॥ ८१ ॥

KULLUKA EXPLAINED.—अव्ययाः immutable. Why ? Kulluka  
answers “अक्षरब्रह्मावाप्तिफलत्वेन ।”

GRAMMAR.—1. ओङ्कारपूर्विकाः ओङ्कारः पूर्वः यासां ताः ओङ्कार-  
पूर्विकाः । अकारस्य इकारः प्रत्ययस्थात्कात् पूर्वस्थात् इदायमुपः । 2. महा-  
व्याहृतयः महत्यः व्याहृतयः महाव्याहृतयः । कर्म्मधारयः । आन् महतः समानाधि-  
करणजातीयदीर्घादीरिति आत् । 3. अव्ययाः न विद्यन्ते व्ययो यासां ताः ।

বহুব্রীহিঃ । ৪. বিপদা ত্রীণি পদানি যस्याঃ সা বিপদা । ৫. ব্রহ্মণঃ ত্রৈণি বহৌ ।

*Change of voice.*—মহাব্যাহতিমিঃ...বিপদয়া সাবিব্রাহ্য মুখেন বিশ্লেয়েন ভূযতে ॥ ৮১ ॥

BENGALI.—আনিত্তে ঔক্সরুতু ভুঃ ভুনঃ স্বঃ ঔক্সপ্রাশ্চিৎ কাত্রীকৃত এই তিনটি অনিনাণো মহাব্যাহতিমস্কক শব্দ এবং জিপদগুতু গায়ত্রী বেসেত্র আদি অথবা ঔক্সপ্রাশ্চিৎ স্বাঃ বনিয়া আনিত্তে ॥ ৮১ ॥

ENGLISH.—The three imperishable great words (*Bhuh* preceded *O m*, and the three-footed *Gayatri* are to be known as the beginning or the mouth of the *Vedas*. (81).

যোঃধীতেঃহন্যহন্যতাং ত্রীণিবর্ষাণ্যতন্দ্রিতঃ ।

মব্রহ্ম পরমভ্যেতি বায়ুভূতঃ স্বমূর্ত্তিমান্ ॥ ৮২ ॥

PROSE.—যঃ অহনি অহনি অতন্দ্রিতঃ এতাং ত্রীণি বর্ষাণি অধীতে সঃ পরং ব্রহ্ম অভ্যেতি ( চ ) বায়ুভূতঃ স্বমূর্ত্তিমান্ ( ভবতি ) ॥ ৮২ ॥

KULLUKA.—অতএবাঙ্ক যোঃধীত ইতি । যঃ প্রত্যহমনলমঃ সন্ সাবিব্রী প্রথব্যাঙ্কনিত্যুতাং বর্ষব্রহ্মধীতে সঃ পরং ব্রহ্মাভিমুখ্যেন মচ্ছতি সঃ বায়ুভূতাং বায়ুরিব কামচারী ভ্রাত্যতে স্বং ব্রহ্মতদেবাস্য মূর্ত্তিরিত স্বমূর্ত্তিমান্ ভবতি শরীরস্যপি ভাষাত্ ব্রহ্মৈব সম্যদ্যতে ॥ ৮২ ॥

GRAMMAR.—1. অধীতে - অধি - ঙ্ঙ্ লট্ তে । অধীষ্টে অধ্যগীষ্টে । 2. অহনি অহনি বীক্ষায়াং দিক্ৰক্তিঃ অধিকরণ সমসো । 3. বর্ষাণি কালাব্ধনো-রত্বনসংযোগে দ্বিতীয়া । 4. ন তন্দ্রিতঃ অতন্দ্রিতঃ । তন্দ্রা + ইতচ্ । or তন্দ্র + ক্তাঃ কর্ত্তরি । 5. সঃ Nom. to the verb অভ্যেতি । 6. ব্রহ্ম কন্ধ্যণি দ্বিতীয়া । 7. পরম্ qualifies ব্রহ্ম । 8. অভ্যেতি governs ব্রহ্ম অধি - ঙ্ঙ্ + লট্ তি । 9. ন বায়ুঃ বায়ুঃ সম্ভ্রাতঃ বায়ুভূতঃ কৃগতিপাদ্য ইতি সমাসঃ । 10. স্বস্ব মূর্ত্তিঃ স্বমূর্ত্তিঃ বহৌ সমাসঃ । স্বমূর্ত্তি + মনুপ্ ।

*Change of voice.*—যেন এষা অধীযতে তেন পরং ব্রহ্ম অধীযতে বায়ুভূতেন স্বমূর্ত্তিমতা ভূযতে ॥ ৮২ ॥

BENGALI.—যিনি অতিমিত জননস হইয়া তিন বৎসর অপর ও ব্যাকৃতিবৃত্ত জিপদা

গায়ত্রী গণ করেন তিনি ব্রহ্মপ্রাপ্তির অভিযুগে প্রবেশ করেন, বায়ুর স্থায় কামরূপী হন, এবং যত্নর পর ব্রহ্মের স্থায় যুক্তিবিশিষ্ট হন অর্থাৎ ব্রহ্ম হইয়া যান ॥ ৮২ ॥

ENGLISH.—He who reads this hymn (*Gayatri*) day by day for three years without being careless, attains to the Supreme *Brahma* with an ethereal body, becoming like air. (82).

एकाक्षरं परं ब्रह्म प्राणायामाः परं तपः ।

सावित्र्यास्तु परं नास्ति मौनात् सत्यं विशिष्यते ॥ ८३ ॥

PROSE.—एकाक्षरं परं ব্রহ্ম ( ভবতি ), প্রাণায়ামাঃ পরং তপঃ ( ভবন্তি ), সাবিত্র্যাঃ পরং তু ( সত্যঃ ) নাস্তি, সত্যং মৌনাৎ বিশিষ্যতে ॥ ৮৩ ॥

KULLUKA.—एकाक्षरमिति । एकाक्षरमीडारः परं ब्रह्म परब्रह्मावाप्ति-  
हेतुत्वात् । ओङ्कारस्य जपेन तदर्थस्य च परब्रह्मणो भावनया तदवाप्तिः । प्राणायामाः  
सप्रणवसंख्यावृत्तिसंशिरस्कृतायत्नौभिः कृताश्चान्द्रायणादिव्योऽपि परन्तपः प्राणायामा  
इति बहुवचननिर्देशात् तयोऽवश्यं कर्तव्या इत्याहुः सावित्र्याः प्रकृतमन्त्रान्वज्जगतं  
नास्ति मौनादपि सत्यवाग्विशिष्यते । एषां चतुर्णां सत्या चत्वारोऽन्तर्यामिणोपासनीयानीति  
विधिः कल्प्यते । धरणीधरेण तु एकाक्षरपरंब्रह्म प्राणायामपरन्तप इति पठितं व्याख्यातञ्च  
एकाक्षरं परं यस्य तदेकाक्षरपरम् एवं प्राणायामपरमिति । मेधातिथिः प्रश्नमि  
बुद्धेर निश्चितं यतः । लिखन्पाठान्तरं ततः स्वतन्त्रो धरणीधरः ॥ ८३ ॥

GRAMMAR.—1. एकाक्षरम् एकमक्षरं यत् तत् एकाक्षरम् बहुव्रीहिः ।  
2. परम् qualifies ब्रह्म । 3. ब्रह्म विध्य विशेषण of एकाक्षरम् । 4. प्राणायामाः  
same case with तपः । 5. सावित्र्याः पञ्चमी विभक्ते इति पञ्चमी । 6.  
परम् Adj. used as noun, agrees with the verb अस्ति । 7. मौनात्  
पूर्ववत् पञ्चमी । 8. सत्यम् कर्म of विशिष्यते in the passive voice  
9. विशिष्यते - वि + शिष + कर्त्तृणि लट् । शिषिणि अशिष्यत् । कर्त्तृणि शिष्यते ।

Change of voice.—एकाक्षरेण परेण ब्रह्मणा भूयते । प्राणायामैः परेण  
तपसा भूयते, सावित्र्याः परेण न भूयते मौनात् सत्यं विशिष्यति ॥ ८३ ॥

BENGALI.—একাক্ষর অর্থাৎ অণব পরম ব্রহ্ম, কেননা অণব ব্রহ্মপ্রাপ্তির হেতু, আধারামজর চান্দ্রায়ণাদি তপস্তাতুলা, গায়ত্রী হইতে শ্রেষ্ঠ কোন মন্ত্র নাই, যৌন হইতে সভা বাক্য উৎকৃষ্ট । অতএব নিম্নত এই চারিটির উপাসনা করিবে ॥ ৮৩ ॥

ENGLISH.—The single syllable (*Om*) is the supreme *Brahma* ;

suppressions of breath are the highest penance ; but there is nothing superior to *Gayatri* ; truth is better than silence. (83).

चरन्ति सर्वा वैदिक्यो जुहोति यजति क्रियाः ।

अचरन्त्वचरं ज्ञेयं ब्रह्म चैव प्रजापतिः ॥ ८४ ॥

PROSE.—सर्वाः वैदिक्यः जुहोति यजति क्रियाः चरन्ति अचरन्तु अचरं प्रजापतिः ब्रह्म च ज्ञेयम् ॥ ८४ ॥

KULLUKA.—चरन्तीति सर्वा वैदविहिता होमयागादिरूपाः क्रियाः स्वरूपतः फलतश्च विनश्यन्ति अचरन्तु प्रणवरूपमन्त्रं ब्रह्मप्राप्तिहेतुत्वात् फलहारिणाच्चरं ब्रह्मोभावस्याविनाशात् । कथमस्य ब्रह्मप्राप्तिहेतुत्वमत आह ब्रह्म चैवेति । च शब्दो हेतौ यस्मात् प्रजापतिर्धृतिर्यत् ब्रह्म तदेवायमोङ्कारः स्वरूपतो ब्रह्मप्रतिपादकत्वेन चास्य ब्रह्मत्वम् उभयर्थापि ब्रह्मत्वेन प्रतिपादकत्वेन वायमुपासितो जपकालं मोक्षहेतुरनेन दर्शितः ॥ ८४ ॥

GRAMMAR.—1. वैदिक्यः वेद + ठक् + डीप् । qualifies जुहोति यजति क्रियाः । 2. जुहोतिश्च यजतिश्च जुहोतिश्च जतौ तथोः क्रियाः जुहोतिश्च जति-क्रियाः । अथवा जुहोति यजत्यादयः क्रियाः ताः मध्यपदस्य लोपः । क्रियाणां शप् तिप् निङ्शः । 3. चरन्ति चोतन्ते । 4. अचरन् प्रणवः Acc. of ज्ञेयम् । न चरन् अचरन् । 5. अचरन् qualifies अचरन् । न विद्यते अथो यस्य तत् बहुव्रीहिः । 6. ज्ञेयम् — ज्ञा + कर्म्मणि यः । अज्ञासौत् । 7. प्रजापतिः प्रजानां पतिः qualifies ब्रह्म । 8. ब्रह्म विघ्नश्च विघ्नेषणम् of अचरम् ।

Change of voice....क्रियाभिः चर्यते । अचरेण अचरेण प्रजापतिना ब्रह्मणा ज्ञेयेन भूयते ॥ ८४ ॥

BENGALI.—वेदविहित होम ও বাগাদি ক্রিয়া মাজাই নয় প্রাপ্ত হয়, কিন্তু ওঙ্কারকে অক্ষয় এবং প্রজাপতির অধিপতি পরব্রহ্ম বলিয়া জানিবে । ৮৪ ॥

ENGLISH.—All the Vedic rites—"oblatinal and sacrificial" decay ; but the syllable *Om* is imperishable, and is to be known as *Brahma*, the lord of creation. (84).

विधियन्नाज्जपयन्नो विशिष्टो दशभिर्गुणैः ।

उपांशुः स्याच्छतगुणः साहस्रो मानसः स्मृतः ॥ ८५ ॥



PROSE.—विधियज्ञात् जपयज्ञः दशभिः गुणैः विशिष्टः, उपांशुः शतगुणः स्यात्, मानसः साहसः स्यात् ॥ ८५ ॥

KULLUKA.—विधियज्ञादिति । विधिविषयो यज्ञो विधियज्ञो दर्शपौर्णमासादिः तस्मात् प्राज्ञतानां प्रणवादीनां जपयज्ञो दशगुणाधिकः सोऽप्युपांशुश्चेदनुष्ठितः तदा शतगुणाधिकः, यत् समीपस्थोऽपि परो न श्रूयति तदुपांशुः । मानसस्तु जपः सहस्रगुणाधिकः यत् जिह्वोष्ठं मनागपि न चलति स मानसः ॥ ८५ ॥

GRAMMAR.—1. विधियज्ञात् विधेर्यज्ञः विधियज्ञः । यजेत इत्यादि विधिना यो यागः प्राप्यते स विधियज्ञः । तस्मात् । पञ्चमी विभक्ते इति विभागे पञ्चमी । वि-धा+किः । यज्ञ+नः । यजति यजते अयट् अयाचीत् । 2. जपयज्ञः जप एव यज्ञः जपयज्ञः कर्मधारयः । जपन् यजेत इति विधिना यज्ञत्वेन न प्राप्तः किन्तु जपेत् इति विधिना । जपन् यज्ञत्वं उपचारात् । 3. उपांशुः qualifies जपयज्ञः । 4. शतगुणः शतं गुणाः यस्मिन् स शतगुणः । 5. मानसः मनस् + अण् qualifies जपयज्ञः । 6. साहसः सहस्र + अण् । सहस्रसम्बन्धो सहस्रगुणः इत्यर्थः । 7. स्मृतः - स्मृ + क्तः कर्मणि ।

Change of voice.—जपयज्ञेन विशिष्टेन भूयते । उपांशुना शतगुणेन भूयते । मानसेन साहसं च स्मृतेन भूयते ॥ ८५ ॥

BENGALI.—दर्श पौर्णमासादि यज्ञ इहेते अथवरूपरूप यज्ञ दशगुण श्रेष्ठ, जप निर्विकल अर्थात् निकटवर्ती लोके न ना श्रुति ते पात्रे এমন ভাবে অনুষ্ঠিত হইলে শতগুণ ফলপ্রদ হয়, মানস অর্থাৎ সে মনে জিহ্বা এবং ওষ্ঠে কিছুদূর চলিত না হয় এমন জপ সহস্রগুণ ফলপ্রদ ॥ ৮৫ ॥

ENGLISH.—The sacrifice of muttering (the syllable *Om* and *Gayatri*) is ten times superior to the sacrifice enjoined (by the *sas-tras*); if it is done in secret (being inaudible), it is hundred times superior; but if it is mental, it is thousand times superior. (85).

ये पाकयज्ञाश्चत्वारो विधियज्ञममन्विताः ।

सर्वे ते जपयज्ञस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥ ८६ ॥

PROSE.—विधियज्ञममन्विताः ये चत्वारः पाकयज्ञाः ते सर्वे जपयज्ञस्य षोडशीं कलां न अर्हन्ति ॥ ८६ ॥

KULLUKA.—ये पाकयज्ञा इति । ब्रह्मयज्ञादन्वे ये पञ्चमहायज्ञानामन्ता वैश्वदेवहोमवलिर्कर्मनित्यग्राह्यातिथिभोजनात्मकाश्चत्वारः पाकयज्ञाः विधियज्ञा, दर्शपौर्ण-

मात्मादयः तैः सहिता जपयज्ञस्य षोडशीमपि कलां न प्राप्नुवन्ति जपयज्ञस्य षोडशांशे-  
नापि न समा इत्यर्थः ॥ ८६ ॥

GRAMMAR.—1. पाकयज्ञाः पाकसमन्विनो यज्ञाः पाकयज्ञाः । 2. विधि-  
यज्ञसमन्विताः विधिर्धेयज्ञाः विधियज्ञाः तैः समन्विताः विधियज्ञसमन्विताः qualifies  
पाकयज्ञाः । 3. जपयज्ञस्य जपे षष्ठी । 4. षोडशीम् qualifies कलाम् षडधिका  
दश षोडश षोडशानां पूरणः षोडशः स्त्रियाम् षोडशी ताम् । 5. कलाम् Acc.  
of चर्हन्ति ।

Change of voice.—विधियज्ञसमन्वितैः धैः चतुर्भिः पाकयज्ञैः भूयते, तैः  
सर्वैः षोडशी कला न चर्हन्ति ॥ ८६ ॥

BENGALI.—एक पौर्णमासी विधियज्ञ समन्वित ये चारिটি पाकयज्ञ आछे,  
शोडशी मकले निनिश्रांश रूपयज्ञेन एक कलात्र मवान इय नी ॥ ८६ ॥

ENGLISH.—The four household sacrifices together with the  
sacrifices enjoined by the sastras, all those are not worth the  
sixteenth part of the sacrifice of muttering. (86).

जप्येनैव तु संसिध्येद्ब्राह्मणो नात्र संशयः ।

कुर्यादन्यत्र वा कुर्यान्मेवो ब्राह्मण उच्यते ॥ ८७ ॥

PROSE.—ब्राह्मणः जप्येन एव तु संसिध्येत् अत्र संशयः न ( अस्ति ), अन्यत्  
कुर्यात् न वा कुर्यात् मैवः ब्राह्मणः उच्यते ॥ ८७ ॥

KULLUKA.—जप्येनैवेति । ब्राह्मणो जप्येनैव निःसन्देहां सिद्धिं लभते भोक्त-  
प्राप्तिरोग्यो भवति । अन्यद्देदिकं यागादिकं करोतु न करोतु वा यस्मान्नैतो ब्राह्मणः  
ब्रह्मणः सम्बन्धो ब्रह्मणि लीयते इत्यागमेषूच्यते । मित्रमेव मैवः स्थायैः यागादिषु  
पशुवीजादिवधान्न सर्वप्राणिप्रियता सम्भवति तस्मादयागादिना विनापि प्रत्यवादिजप-  
निष्ठो निस्तरतीति जपप्रशंसा नतु यागादीनां निषेधः तेषामपि शास्त्रोक्तत्वात् ॥ ८७ ॥

ELUCIDATION.—“मैवः ब्राह्मणः उच्यते”=ब्राह्मणः यदि मैवः मित्रं सर्व-  
प्राणिनां भवति, तर्हि स ब्राह्मणः अत्रात् ब्रह्मणि लयाईः उच्यते । यज्ञपरो ब्राह्मणः  
मैवः न भवति यज्ञेषु शस्त्रवीजानां पशूनां च हननात् ; तस्मात् याज्ञिकोहि ब्राह्मणः  
न ब्रह्मणि लयाईः भवति, भवति तु कालाकरे । योहि ब्राह्मणो जपयज्ञ एव अनु-  
तिष्ठति तत्र हिंसाभावात् स मैवो भवति एवं ब्रह्मणि लयाईं भवति । तस्मात् विधि-

यज्ञात् जपयज्ञः श्रेष्ठः । किन्तु विधियज्ञस्य निषेधो न भवति तस्यापि शास्त्रेण विधीयमानत्वात् ।

GRAMMAR. — 1. जप्येन करणे दृतीया । जप + य । भावे प्रत्ययः । जपेन इत्यर्थः । 2. संसिध्येत् सम् सिध + यात् । असिधत् । ऊदित् पाठस्य प्रामादिकत्वात् । 3. ब्रह्मण् + अण् ब्राह्मणः ज्ञात्यर्थे । 4. संग्रहः—सम + शी + अच् । शीते अशयिष्ट । 5. कुर्यात्—कृ + यात् । 6. मैवः मित्रमेव मैवः स्वार्थे अण् लिङ्गव्यत्ययश्च । 7. उच्यते वच + ते कर्मणि ।

Change of voice. — ब्राह्मणेन संसिध्येत । संग्रहेन न भूयते । अन्वत् क्रियेत...मैवं ब्राह्मणं वक्ति ॥ ८७ ॥

BENGAL.—ब्राह्मण केवल रूप द्वाराई सिद्धिनाथ करिते पात्रेन उद्दिष्टे मन्त्र नई; ब्राह्मण केवल अथ कोन वाग करक धार नई करक, हिंसारहित रूपक अन्वयेन वक्तु अगतेन मित्र इव उद्दिष्टे परब्रह्म लीन उद्दिष्ट पात्रे, एकाग्र वेदे कथित आदि ॥ ८७ ॥

ENGLISH.—A Brahmin attains to final success by muttering (the syllable 'Om a...') ; there is no doubt about it ; though he may do or do not anything else (such as the Vedic rites) a Brahmin is called *mutra* or friendly to all...(87).

इन्द्रियाणां विचरतां विषयेष्वपहारिषु ।

संयमे यत्नमातिष्ठेद्बिहान् यन्ते व वाजिनाम् ॥ ८८ ॥

PROSE.—विहान् यन्ता वाजिनामिव अपहारिषु विषयेषु विचरतां इन्द्रियाणां संयमे यत्नं आतिष्ठेत् ॥ ८८ ॥

KULLUKA.—इदानीं सर्ववर्णानुष्ठेयं सकलपुरुषार्थोपयुक्तमिन्द्रियसंयममाह इन्द्रियाणामिति । इन्द्रियाणां विषयेष्वपहरणशैलीषु वर्तमानानां अथित्वादिविषय-दोषान् जानन् संयमे यत्नं कुर्यात् भारथिरिव रथनियुक्तानामश्वानाम् ॥ ८८ ॥

KULLUKA EXPLAINED. — “अथित्वादिविषयदोषान्” शब्दस्य शङ्खपरस-गत्याहविषय उच्यते । ते हि विनाशशैली इति तेषां दोषः तम् अन्यांश्च विमोहनात्मादीन् जानन् । विहान् = जानी ।

GRAMMAR. — 1. अपहारिषु अप-हृ + णिनिः । 2. विषयेषु वि-सि + अच् विषयः । अधिकरणे सप्तमी । 3. विचरताम्—वि-चर + शट् ।

qualifies इन्द्रियाणाम् । 4. इन्द्रियाणाम् कर्तृकर्मणोः कृतौति कर्मणि षष्ठी in connection with संयमं । 5. वाजिनाम् पूर्ववत् षष्ठी । 6. यना—यम् + वच् । यच्छति अयंसीत् ।

*Change of voice.*—यत्रः आस्थीयेत ॥ ८८ ॥

BENGALI.—गारनि यैकप रथांगणके सयत राथे, सेइकप निधान वाक्ति मनोहरणमोल मकल्पनीयि भोगा विषयगमूहे विचरणकारी ईन्द्रियगणके सयत राथिवार मकृ यत्र करिवेन ॥ ८८ ॥

ENGLISH.—A wise man should, like the driver of horses, take care to control his senses running after captivating sensual objects. (88).

एकादशेन्द्रियाण्याहुर्यानि पूर्वं मनीषिणः ।

तानि सम्यक् प्रवक्ष्यामि यथावदनुपूर्वशः ॥ ८९ ॥

PROSE.—पूर्वं मनीषिणः यानि एकादश इन्द्रियाणि आहुः तानि यथावत् अनु-पूर्वशः सम्यक् प्रवक्ष्यामि ॥ ८९ ॥

KULUKA.—एकादशेति : पूर्वपण्डिता यान्येकादशेन्द्रियाण्याहुन्मान्ध्याचां शिष्यार्थं सर्व्याणि कर्म्यतो नामतश्च क्रमादित्यामि ॥ ८९ ॥

KULUKA EXPLAINED. — “सर्व्याचां शिष्याद्यम्” For teaching the ignorant.

GRAMMAR. — 1. एकादश एकाधिकानि दश एकादश । 2. इन्द्रियाणि Acc. of आहुः । 3. पूर्वं qualifies मनीषिणः । 4. मनीषिणः Nom. verb आहुः । मनीषा—मनसः ईषा मनीषा । शकन्मादत्वात् साधुः । मनीषा + इति । 5. प्रवक्ष्यामि—वृ + क्ष्यामि लृट् । 6. यथावत् यथा + वति । 7. अनुपूर्वशः—अनुपूर्व + शस् ।

*Change of voice.*—मनीषिभिः यानि इन्द्रियाणि उच्यन्ते । तानि मया प्रवक्ष्यामि ॥ ८९ ॥

BENGALI.—पूर्वपण्डितगण ये एकादश ईन्द्रियेर कथा बलिग्रा गिराहेन, यथा-निरये क्रम अनुसारे सेई गुलिर ईन्द्रिय नां बलितेहि ॥ ८९ ॥

ENGLISH.—I will tell rightly in due order those eleven senses which former wise men have told. (89).

श्रोत्रं त्वक् चक्षुषी जिह्वा नासिका चैव पञ्चमी ।

पायूपस्थं हस्तपादं वाक् चैव दशमी स्मृता ॥ ८० ॥

PROSE.—श्रोत्रम् त्वक् चक्षुषी जिह्वा पञ्चमी नासिका च एव पायूपस्थं हस्त-  
पादं च वाक् दशमी स्मृता ॥ ८० ॥

KULLUKA.—श्रोत्रमिति । तेषु एकादशसु श्रोत्रादीनि दशेतानि बहिरिन्द्रियाणि  
नामती निर्दिष्टानि । पायूपस्थं हस्तपादमिति इन्द्रिय प्राणितूर्यसेनाङ्गानामिति प्राण्यङ्ग-  
इन्द्रियादेकवद्भावः ॥ ८० ॥

GRAMMAR.—1. श्रोत्रम् श्रु + ट्ठन् । श्रुतेऽनेन इति । 2. त्वक् त्वच् +  
क्विप् । त्वचति व्याप्नोतीति त्वक् । 3. चक्षुषी । चक्षुष् + औ । चक्ष् + कर्त्तव्ये  
उपि । 4. जिह्वा लीढीति जिह्वा । लिह् + य । 5. पञ्चमी पञ्चानां पूर्णौ  
पञ्चम + डीप् । 6. नासिका नास् + ण्वल् । नासते शब्दायते इति नासिका ।  
7. पायूपस्थम् पा + यु पायुर्गुदम् । उपस्थ उप + स्था + कः । पायुय उपस्थय  
पायूपस्थम् । प्राण्यङ्गत्वात् समाहारङ्कः । 8. हस्तपादम् हस्तौच पादौच  
समाहारे एकवत् प्राण्यङ्गत्वात् । 9. दशमी qualifies वाक् । 10. वाक्  
वच् + क्विप् । Verb भवति understood.

*Change of voice.*—श्रोत्रेण त्वचा चक्षुर्भां पञ्चम्या नासिकया पायूपस्थेन  
हस्तपादेन दशम्या वाचा भूयते ॥ ८० ॥

BENGALI—(महै एकादश हेलिङ्गमधो कर्ब एवः छद्मः छिह्वा ओ नक्कम नासिका,  
एवः गनवात्र, जननलिङ्ग, हस्त, पाद ओ मनम हेलिङ्ग वाक्, मयस्तु एहै वनति  
नहिरिन्द्रियेन नाम वना इहेन ॥ २० ॥

ENGLISH.—Ears, skin, the two eyes, the tongue and the nose,  
(as) fifth the anus and the generative organ the hands and the  
feet ; and the organ of speech is considered as the tenth. (90).

बुद्धीन्द्रियाणि पञ्चेषां श्रोत्रादीन्यनुपूर्वशः ।

कर्मेन्द्रियाणि पञ्चेषां पायादीनि प्रचक्षते ॥ ८१ ॥

PROSE.—एषां ( मध्ये ) अनुपूर्वशः श्रोत्रादीनि पञ्च बुद्धीन्द्रियाणि, एषां च  
पायादीनि पञ्च कर्मेन्द्रियाणि प्रचक्षते ॥ ८१ ॥

KULLUKA.—बुद्धीन्द्रियाणीति । एषां दशानां मध्ये श्रोत्रादीनि पञ्च क्रमोक्तानि

बुद्धेः करणत्वात् बुद्धौन्द्रियाणि पायादीनि चोत्सर्गादिकर्मकरणत्वात् कर्मेन्द्रियाणि तद्विदो वदन्ति ॥ ८१ ॥

ELUCIDATION.—Five senses *i.e.* the senses of hearing, touch, sight, taste and smelling, are called the organs of knowledge ; because we acquire the knowledge of external things through them. The organs of excretion, hands, feet and the organ of speech, are called the organs of action.

GRAMMAR. — 1. एषाम् निर्धारणं षष्ठी । 2. यांसादीनि श्रोत्रं आदिः श्रेयं तानि बहुव्रीहिः qualifies पञ्च । 3. बुद्धौन्द्रियाणि बुद्धेः इन्द्रियाणि बुद्धौन्द्रियाणि षष्ठीसमासः । विधेयविशेषणं of पञ्च । 4. पायुरादि येषां तानि पायादीनि qualifies पञ्च । 5. कर्मेन्द्रियाणि कर्मणः इन्द्रियाणि षष्ठीसमासः । विधेयम् of पञ्च । 6. प्रचक्षते agreeing with its nominative पण्डिताः understood. प्र - चक्ष् लट् चने ।

*Change of voice....* कर्मेन्द्रियाणि ख्यायन्ते पण्डितैः ॥ ८१ ॥

BENGALI.—এই দশটির মধ্যে বাক্যক্ৰমে শ্রোত্র অর্জুতি পাঁচটিকে বুদ্ধৌল্লিঙ্গ এবং এই দশটি মধ্যে পাণু অর্জুতি পাঁচটিকে কৰ্মৌল্লিঙ্গ বুলে ॥ ৮১ ॥

ENGLISH.—Of these the five in order beginning with “ears” they call the organs of knowledge ; and the (other) five of these beginning with the “anus” they call the motor senses or organs of action. (91).

एकादशं मनो ज्ञेयं स्वगुणेनोभयात्मकम् ।

यस्मिन् जिते जितावेतौ भवतः पञ्चकौ गणौ ॥ ८२ ॥

PROSE.—मनः एकादशं ( इन्द्रियं ) ज्ञेयम्, (तत्) स्वगुणेन उभयात्मकं ज्ञेयम्, यस्मिन् जिते एतौ पञ्चकौ गणौ जितौ भवतः ॥ ८२ ॥

KULLUKA.—एकादशमिति । एकादशसङ्ख्यापूरकश्च मनोरूपमन्तरिन्द्रियं ज्ञातव्यं स्वगुणेन सङ्कल्परूपेण उभयरूपेन्द्रियगणप्रवर्तकस्वरूपम् अतएव यस्मिन् मनसि जिते उभावापि पञ्चकौ बुद्धौन्द्रियकर्मेन्द्रियगणौ जितौ भवतः, पञ्चकाविति तदस्य परिमाणमित्यनुवृत्तौ संख्यायाः संज्ञासङ्ख्याध्यायनेष्विति पञ्चसंख्यापरिमितिसङ्ख्यायै कः ॥ ८२ ॥

KULLUKA EXPLAINED. — “सगुणेन सहस्यरूपेण” । The natural property of mind is सहस्य or desire which controls the senses of knowledge as well as those of action.

GRAMMAR. — 1. मनः Acc. of ज्ञेयम् । 2. एकादशम् एकादशानां पूरणम् एकादशम् एकादश + डट् । विघ्नं of मनः 3. ज्ञेयम् governs मनः । ज्ञा + यः । 4. सगुणेन करणे तृतीया । 5. उभयात्मकम् उभयं आत्मा यस्य तत् बहुव्रीहिः समासे उभयवदस्य उभयादेशः । 6. यस्मिन् qualifies मनसि । 7. जितं यस्य च भावेन भावनचरणं इति सप्तमी उभयवत् । 8. पञ्चकौ qualifies गणौ । पञ्चानां सङ्गः पञ्चसंख्यापारमितसङ्गः । पञ्चन् + क । 9. गणौ agreeing with भवतः । 10. जितौ qualifies गणौ ।

Change of voice. — मनसा एकादशेन ज्ञेयेन भूयते । एताभ्यां पञ्चकाभ्यां गणाभ्यां जिताभ्यां भूयते ॥ ८२ ॥

BENGAL. — मनस्क एकानन ईन्द्रिय ज्ञानिदे, उद्देश्य कौश सकलज्ञप क्षण क्षण बुद्धीन्द्रिय उ कर्मेन्द्रिय उद्देश्यरहे ज्ञानक, ऐ मनस्क ज्ञप करिते पारिते उद्देश्यविष पक्ष ईन्द्रिय प्रगटि पत्राक्षित इय ॥ ८२ ॥

ENGLISH. — Mind is to be known as the eleventh sense, which by its own property is of the nature of both (knowledge giving and motor) ; which being controlled those two sets of five are also controlled. (92).

इन्द्रियाणां प्रसङ्गेन दोषसृच्छत्यसंशयम् ।

संनियम्य तु तान्येव ततः सिद्धिं नियच्छति ॥ ८३ ॥

PROSE. — ( पुरुषः ) इन्द्रियाणां प्रसङ्गेन असंशयं दोषं सृच्छति, तान्येव संनियम्य ततः सिद्धिं नियच्छति ॥ ८३ ॥

KULLUKA. — मनोवर्गसहस्यसूत्रत्वादिन्द्रियाणां प्रायेण प्रवृत्तेः किमर्थमिन्द्रिय-निग्रहः कर्त्तव्य इत्यत आह इन्द्रियाणामिति । तस्मादिन्द्रियाणां विषयेषु प्रसक्तता दृष्टा-दृष्टश्च दोषं निःसन्देहं प्राप्नोति तान्येव पुनरिन्द्रियाणि सत्यक् नियम्य सिद्धिमोक्षादि-पुरुषार्थयोग्यताकृपां लभते तस्मादिन्द्रियसंशयं कुर्यादिति शेषः ॥ ८३ ॥

GRAMMAR. — 1. इन्द्रियाणाम् कर्त्तृवचनोः कर्त्तृत्वेन प्रवृत्तौ in connection with प्रसङ्गेन । 2. प्रसङ्गेन — द्वितीया तृतीया । प्र - सन् + क् ।

3. न विद्यते संशयो यस्मिन् कश्चिन् तत् यथास्यात् तथा । 4. ऋच्छति governs दोषम् : ऋ + लट्ति । ऋच्छति चार चार्षीत् चरिष्यते । 5. संनियस्य - सम् - नि - यम् ल्यप् governs तानि । 6. सिद्धिम् कर्मणि द्वितीया । 7. नियच्छति नि - यम् + लट्ति ।

*Change of voice.*—दीषः अय्यंते । सिद्धिः नियम्यते ॥ ८३ ॥

BENGALI.—यस्यै इच्छिष्ये आसक्त इहेलेइ इहेलोक ओ परलोक अनिष्टे, उद्भाग करे, एवं नेई इच्छिग्रणके संयत करिठे पारिलेइ परे धर्म, अर्थ, काम ओ आश्रम लब्ध करे ॥ ८३ ॥

ENGLISH.—Surely does a man incur fault by giving indulgence to the senses ; but by controlling them he can have success at his command. (93).

न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति ।

हविषा कृष्णवर्त्मव भूय एवाभिवर्द्धते ॥ ८४ ॥

PROSE.—कामः कामानां उपभोगेन न जातु शाम्यति ( किन्तु ) हविषा कृष्णवर्त्मव भूय एव अभिवर्द्धते ॥ ८४ ॥

KULLUKA.—किमिन्द्रियसंयमन विषयापभोगादेव त्वयकामो निवत्स्यतीत्याशङ्क्य न जातिरिति । न कदाचित् कामोऽभिभावः काम्यन् इति कामा विषयाः तेषामुपभोगेन निवर्तते किन्तु घृतेनाग्निरिवाधिकाधिकमेव वर्द्धते प्राप्तभोगस्यापि प्रतिदिनं तदधिकभोगवाञ्छादर्जनात् । अतएव विष्णुपुराणे ययातिवाक्यम् । यत् पृथिव्यां ब्रौह्मिवं हिरण्यं पशवः स्त्रियः । एकस्यापि न पर्याप्तं तदित्यतिदृढं त्यजेत् । तथा पूर्णं वर्षसहस्रं मे विषयामक्तचेतसः तथाप्यनुदिनं दृष्ट्वा यमेवेव हि जायते ॥ ८४ ॥

ELUCIDATION.—There is a false theory current among the Tantriks that desire is extinguished by its fulfilment. That theory is attacked here. कामानाम् = विषयानाम् = भोग्यवस्तूनाम् ।

GRAMMAR.—1. कामः कम् + घञ् । Verb कामयते अचौकमत अचकमत चकामे । 2. शाम्यति शम् लट्ति अशमत् । 3. कामानाम् कर्तृकर्मणोः कृतीति कर्मणि षष्ठी in connection with कृदन्त word उपभोगेन । 4. उपभोगेन करणे द्वितीया । उप - भुज् + घञ् । 5. हविषा करणे द्वितीया । 6. कृष्णवर्त्मव कृष्णं कृष्णवर्णं वर्त्म पश्याः यस्य स बहुब्रीहिः ।



Then इवेन समासः विभक्त्यलोप्य । 7. बहु + ईयसुन् = भूयः Adv. 8. चक्षि-  
वर्धते—वृध् + लट्ते । वृध्धे च वर्द्धिष्ट ।

*Change of voice.*—कामेन शस्यते । कृष्णवर्त्मनेव वृध्यते ॥ ८४ ॥

BENGALI.—विषयलोकगोचरा कथनं कामनां निवृत्त्य इयं न, वरुः विषयलोकगोचरा  
कामनां वृत्तिगुणं अग्निराग्नौ अधिकतरं वृद्धिं गीय ॥ ८४ ॥

ENGLISH.—Never does desire become extinguished or stopped  
by the enjoyment of sensual objects ; it rather gets more and more  
inflamed like fire (which makes its path dark) by clarified butter  
(poured into it). (94).

यस्यैतान्प्राप्नुयात् सर्वान्यस्येतान्केवलांस्त्यजेत् ।

प्रापणात् सर्वकामाणां परित्यागो विशिष्यते ॥ ८५ ॥

PROSE.—यस्य एतान् सर्वान् प्राप्नुयात् यस्य केवलान् तान् त्यजेत्, सर्वकामानां  
प्रापणात् परित्यागः विशिष्यते ॥ ८५ ॥

KULLUKA.—यस्यैतान्ति । य एतान् सर्वान् विषयान् प्राप्नुयात् यस्यैतान्  
कामान् उपेक्षते तयोर्विषयोपेक्षकः श्रेयान् तस्मात् सर्वकामप्राप्तेस्तदुपेक्षा प्रशस्यते तथाहि  
विषयलोपस्य तत्साधनादुत्पादने कष्टसम्भवो विपत्तौ च क्लेशातिशयः नतु विषया-  
विरसस्य ॥ ८५ ॥

KULLUKA EXPLAINED—“तयोर्विषयोपेक्षकः श्रेयान् ।” This is the  
meaning of “सर्वकामानां प्रापणात् परित्यागो विशिष्यते” । The sentence  
is not strictly grammatical, since यः यः of the first part is not  
completed by सः सः or तयोः ।

GRAMMAR.—1. यः Nom. verb प्राप्नुयात् । 2. प्र - आप् + यात् प्राप्नुयात् ।  
प्रापत् । 3. सर्वान् governed by प्राप्नुयात् कर्मणि द्वितीया । 4. यः Nom.  
verb त्यजेत् । 5. त्यजेत् त्यज् + यात् ; अत्याचौत् । 6. केवलान् = कृतज्ञान् = सम-  
ज्ञान् । केवलः कृतज्ञ एकस्य इत्यमरः (qualifies तान्) । 7. तान् Acc. of त्यजेत् ।  
8. यः यः - यत्तदौर्गन्तिसम्बन्धान् तच्छब्दस्यापेक्षा न च तच्छब्दो न व्यवहृतः  
तच्छब्दस्यार्थम् प्रापणात् इत्यादि वाक्येन उपपन्नम् इति । 9. प्रापणात् पञ्चमी  
विभक्ते इति विभागे पञ्चमी प्र - आप् + ण्यट् । सर्वकामानाम् कर्तृकर्मणोः कृतौति  
षष्ठी । सर्व्वेव ते कामाय इति कर्मधारयः । 10. परित्यागः उत्तकर्म of  
विशिष्यते । 11. विशिष्यते वि - शिच् + कर्मणि लट् । अशिचत् ।

*Change of voice*—যেন এতে সৰ্ব্বং প্ৰাপ্যেৱ ন যেন তে ত্যজ্যেৱ ন পৰিত্যাগং বিজি-  
নতি ॥ ১৫ ॥

BENGALI.—যিনি সমস্ত কাম্য বিষয় লাভ করেন, আর যিনি সমস্ত কাম্য বিষয়  
তাঁগ করেন, এই উভয়ের মধ্যে পরিত্যাগকারীই স্রেষ্ঠ ( কেননা বিষয় আশির উপায়  
সংগ্রহে এবং আশুবিশয় নাশে অত্যন্ত কষ্ট হয়. বিষয়ব্রতসম্বন্ধে ব্যক্তিগত মেক্রপ ক্রেশ  
হয় না ) ॥ ১৫ ॥

ENGLISH.—He who attains all these desires ; and he who  
relinquishes them all,—(in reference to these two) the renunciation  
of all desires is better than their attainment. (95).

ন তথৈতানি শক্যন্তে সন্নিয়ন্তুমসেবয়া ।

বিষয়েষু প্রজুষ্টানি যথা জ্ঞানেন নিত্যশঃ ॥ ১৬ ॥

PROSE.—বিষয়েষু প্রজুষ্টানি এতানি অসেবয়া তথা সন্নিয়ন্তুং ন শক্যন্তে নিত্যশঃ  
জ্ঞানেন যথা ( সন্নিয়ন্তুং শক্যন্তে ) ॥ ১৬ ॥

KULLUKA.—ইদানীমিন্দ্রিয়সংযমোপায়মাহ ন তথৈতি । এতানীন্দ্রিয়াণি বিষ-  
য়েষু প্রযুক্তানি তথা নাসেবয়া বিষয়সন্নিধিবর্জনরূপয়া নিয়ন্তুং শক্যন্তে দুর্নিবারত্বাৎ  
যথা সৰ্ব্বদা বিষয়াণাং অযিত্বাদিদোষজ্ঞানেন শরীরস্য চাস্থিস্থলমিত্যাদি বচনমা-  
দৌষচিন্তনেন তস্মাদ্বিষয়দৌষজ্ঞানাদিনা বহিরিন্দ্রিয়াণি মনস্য নিয়ন্তে ॥ ১৬ ॥

GRAMMAR.—1. বিষয়েষু বিষয়াধারে সমসী । 2. প্রজুষ্টানি qualifies  
এতানি । প্র-জুষ + ক্ত । 3. এতানি উক্তে কর্ম্মণি প্রথমা । Governed by  
নিয়ন্তুন্ and শক্যন্তে । 4. শক্যন্তে শক্ কর্ম্মণি লট্ অন্ते । শক্ণোতি শক্যন্তে ।  
অশক্যত্ । 5. অসেবয়া করণে তৃতীয়া । ন সেবা অসেবা নত্ সমাসঃ । নজঃ  
অমারঃ । সেব্ + অ । সেবতে অসেবিত । 6. তথা অব্যয়ম্ তদ্ + ণাৎ ।  
7. সম্ - নি - যম্ + তুমুন্ । অগ্রসীত্ । 8. নিত্যশঃ নি + ত্যপ্ নিত্য + শস্ ।  
9. জ্ঞানেন করণে তৃতীয়া ।

*Change of voice*.—এতানি...ন শক্যন্তি (জনাঃ)... ॥ ১৬ ॥

BENGALI.—বিষয়ে আশ্রয় ইচ্ছারগণকে বিষয়ভোগ পরিত্যাগ দ্বারা মেক্রপ সংবৃত্ত  
করা যায় না, ভোগ্য বিষয় অনিষ্ট্য সর্বদা একরূপ বুদ্ধি অবলম্বন দ্বারা মেক্রপ সংবৃত্ত  
করিতে পারা যায় ॥ ১৬ ॥

ENGLISH.—These senses can not be so controlled by non-  
indulgence, as they, attached to sensual objects, can be done ever  
by knowledge (of their real nature). (96).

वेदास्तागाश्च यज्ञाश्च नियमाश्च तपांसि च ।

न विप्रदुष्टभावस्य सिद्धिं गच्छन्ति कर्हिचित् ॥ ६७ ॥

PROSE.—विप्रदुष्टभावस्य वेदाः त्यागाश्च यज्ञाश्च नियमाश्च तपांसि च कर्हिचित् सिद्धिं न गच्छन्ति ॥ ६७ ॥

KULLUKA.—यस्यादनियमितं मनोविकारस्य हेतुः स्यादत आह वेदा इति । वेदाध्ययनदानयज्ञनियमतपांसि स्वगादिविषयसेवासङ्कल्पशौलिनी न कदाचित् फलसिद्धये प्रभवन्ति ॥ ६७ ॥

GRAMMAR.—1. विप्रदुष्टभावस्य विप्रदुष्टः विषयासक्त्या कलुषितः भावः सङ्कल्पो यस्य स विप्रदुष्टभावः तस्य । वि-प्र-दुष्ट+ताः कर्त्तरि । भू+घञ् भावः । 2. वेदाः already derived. 3. त्यागाः त्यज+घञ् । 4. यज्ञाः यज+नः । 5. नि-यम+घञ् । 6. तपांसि तप+अमुन् all nominative to the verb गच्छन्ति । 7. सिद्धिम् Acc. of गच्छन्ति । सिध्+क्तिन् भावे । असिध्म् ।

Change of voice.—वेदैः त्यागैः यज्ञैः नियमैः तपोभिः सिद्धिः न गम्यते ॥ ६७ ॥

BENGALI.—वाहिर मङ्गल विवरमेवात्र निष्कृत ताहार वेदगाँठि, दान, यज्ञ, निग्रह ও উপাস্তা কখনও ফলপ্রদান করে না । ২৭ ।

ENGLISH.—(The reading of) the Vedas, making gifts, sacrifices, observances (of rituals) and austerities do never contribute to the success or perfection of one, the state of whose mind is vitiated. (97)

श्रुत्वा स्पृष्ट्वा च दृष्ट्वा च भुक्त्वा घ्रात्वा च यो नरः ।

न हृष्यति ग्लायति वा स विज्ञेयो जितेन्द्रियः ॥ ६८ ॥

PROSE.—यो नरः श्रुत्वा स्पृष्ट्वा च दृष्ट्वा भुक्त्वा घ्रात्वा च न हृष्यति वा ग्लायति स जितेन्द्रियः विज्ञेयः ॥ ६८ ॥

KULLUKA.—जितेन्द्रियस्य स्वरूपमाह श्रुतेति । सुतिवाक्यं निरुदावाक्यञ्च श्रुत्वा, सुखस्पर्शं दुःखलादि दुःखस्पर्शं मेषकम्बलादि स्पृष्ट्वा सुखं कुण्डपञ्च दृष्ट्वा, खादु च खादु च भुक्त्वा, सुरभिःसुरभिश्च घ्रात्वा यस्य न हर्षविषादौ स जितेन्द्रियो जातव्यः ॥ ६८ ॥

GRAMMAR—1. युत्वा यु+क्ताच् । 2. स्पृष्टा स्पृश्+क्ताच् । स्पृशति  
अस्पृचत् अस्पृचीत् अस्पृचीत् । 3. दृष्टा दृश्+क्ताच् । अदृष्टा अदृष्टत् । 4. भुक्ता  
भुज+क्ताच् अभूचीत् अभुक्त । 5. प्राप्ता प्रा+क्ताच् । जिघ्रति । अप्राचीत् ।  
6. हृषति अहृषत् । 7. स्नायति जम्बो अस्नासीत् । 8. सः Acc. of ज्ञेयः ।

*Change of voice.*—येन नरेण युत्वा.....न हृष्यते स्नायते तेन जिते-  
न्द्रियेण विज्जेयेन भूयते ॥ ८८ ॥

BENGALI.—यिनि छुति वा निन्हा जवण करिशा, कोयल कि कर्कण वस्तु मर्ण  
करिशा, श्रुतण कि कृत्तण देखिशा, बाहू कि अबाहू डोकन करिशा, श्रुतण कि द्रुगक  
आवाण करिशा इह अलवा विधान आशु इन ना, ठाहाके छितेल्लिग बलिग  
छानिषे ॥ २७ ॥

ENGLISH.—The man who does neither rejoice nor droop with  
sorrow on hearing (agreeable or disagreeable sounds), touching  
(soft or hard things), seeing (beautiful or ugly objects), eating  
(delicious or bad food), and smelling (sweet or bad smells) is  
known to have controlled his senses. (98)

इन्द्रियाणान्तु सर्वेषां यद्येकं चरतीन्द्रियम् ।

तेनास्य चरति प्रज्ञा हतेः पात्रादिवोदकम् ॥ ८९ ॥

PROSE.—सर्वेषां इन्द्रियाणां तु यदि एकं इन्द्रियं चरति तेन हतेः पात्रात्  
उदकं इव अस्य प्रज्ञा चरति ॥ ८९ ॥

KULLUKA.—एकेन्द्रियासंयमोऽपि निवार्यत इत्याह इन्द्रियाणाम्बिति । सर्व-  
ेषाम् इन्द्रियाणां मध्ये यद्येकमपि इन्द्रियं विषयप्रवृत्तं भवति ततोऽस्य विषयपरस्य  
इन्द्रियान्नरैरपि तत्त्वज्ञानं चरति न व्यवतिष्ठते अर्थनिर्मितोदकपात्रादिव एकेनापि  
क्षिप्रेण सर्वज्ञानममेव उदकं न व्यवतिष्ठते ॥ ८९ ॥

ELUCIDATION—हतिः अर्थपात्रम् ।

GRAMMAR.—1. इन्द्रियाणाम् निर्धारणे षष्ठी । 2. इन्द्रियम् Nom. verb  
चरति । 3. तेन करणे तृतीया । 4. प्रज्ञा Nom. verb चरति प्र-ज्ञा+अञ् ।  
5. अस्य शेषे षष्ठी । 6. हतेः शेषे षष्ठी । हृ+क्तिन् । 7. पात्रात् अपादाने पञ्चमी ।  
पा+इन् । 8. उदकम् Nom. verb चरति understood.

*Change of voice.*—एकेन इन्द्रियेण यदि चर्यते,.....प्रज्ञया...उदकेन...  
चर्यते ॥ ८९ ॥

BENGALI.—সকল ইন্দ্রিয়ের মধ্যে একটি ইন্দ্রিয়ও যদি বিপর্যাসক্ত হয়, তবে চক্ষুপাত্রে একটি ছিঁড় থাকিলেই যেমন সেই ছিঁড় দ্বারা সমস্ত জল পড়িয়া যায়, তেমন সেই একটি ইন্দ্রিয় দ্বারাও সমস্ত তত্ত্বজ্ঞান বাহির হইয়া যায় ॥ ৯৯ ॥

ENGLISH.—If any one of all the senses of a man goes astray, then his wisdom fails thereby, just as water goes out by one hole from a bag of leather. (99).

বশীকৃত্যেन्द्रিয়গ্রামং সংযম্য চ মনস্তথা ।

সৰ্ব্বান্ সংসাধয়েদ্যানচ্চিৎস্বন্থ যোগতস্তনুন্ম ॥ ১০০ ॥

PROSE.—( পুরুষ: ) ইন্দ্রিয়গ্রামং বশী কৃৎবা তথা মনস্য সংযম্য তনুং অচ্চিৎস্বন্থ যোগত: সৰ্ব্বান্ অর্থান্ সংসাধয়েত্ ॥ ১০০ ॥

KULLUKA.—ইন্দ্রিয়সংযমস্য সৰ্ব্বপুরুষার্থহেতুতাং দর্শয়তি বশী কৃৎবেতি । বহিঃস্বাভাবিকগণসামগ্র্যং কৃৎবা মনস্য সংযম্য সৰ্ব্বান্ পুরুষার্থান্ সম্যক্ সাধয়েত্ । যোগত উপায়েন স্বর্দেহমপৌড়য়ন, য: সহজসুখী সংস্কৃতান্নাদিকং মুচ্ছতে স ক্রমেণ তং ত্যজেত্ ॥ ১০০ ॥

GRAMMAR.—1. ইন্দ্রিয়গ্রামং যাম: সমূহ: বহুী সমাস: । তন্ম । Acc. of কৃৎবা । 2. মন: Acc. of সংযম্য । 3. সংযম্য সম-যম্+অপ্ । 4. অর্থান্ ( সৰ্ব্বান্ ) কৰ্ম্মণি দ্বিতীয়া Acc. of সংসাধয়েত্ । 5. সংসাধয়েত্ সম-সিধ+ণিচ্+যাত্ । 6. তনুন্ম কৰ্ম্মণি দ্বিতীয়া Acc. of অচ্চিৎস্বন্থ । 7. অচ্চিৎস্বন্থ স্বাদি চি or তনাদি চিণ+শত্ । স্বাদি—চি চিণোতি অচ্চৈষীত্ । তনাদি—চিণ । চিণোতি চৈণোতি । অচ্চৈষীত্ অচ্চৈষিট-অচ্চিত । 8. উপাযত: কৰণে ততীয়া । ততীয়াযা: তসি: ।

*Change of voice....* তনুং অচ্চিৎস্বন্থতা সৰ্ব্ব অর্থান্: সংসাধয়েত্ ॥ ১০০ ॥

BENGALI.—বাহু পক্ষ ইন্দ্রিয় বশীভূত করিয়া, অস্বাভাবিক মন সংযত করিয়া, শরীরকে গীড়া না দিয়া উপায় অবলম্বনে বর্মান্বিত সমস্ত পুরুষার্থ সাধন করিবে । যথা সহজসুখী ও স্বাভাবিকী ব্যক্তি ক্রমশঃ বাহু অঙ্গ পরিত্যাগ করিবে ॥ ১০০ ॥

ENGLISH.—Bringing the host of senses under subjugation and controlling the mind, one may secure all objects or aims without decaying his body by asceticism. (100).

पूर्वां सन्ध्यां जपं स्तिष्ठत् सावित्री मार्कदर्शनात् ।

पश्चिमान्तु समासीनः सम्यग्दक्षविभावनात् ॥ १०१ ॥

PROSE.—पूर्वां सन्ध्यां मार्कदर्शनात् सावित्रीं जपन् तिष्ठेत् पश्चिमां ( सन्ध्याम् ) तु आसम्यग्दक्षविभावनात् सावित्रीं जपन् समासीनः ( स्यात् ) ॥ १०१ ॥

KULLUKA.—पूर्वां सन्ध्यामिति । पूर्वां सन्ध्यां पश्चिनामिति च कालाध्वनोरत्यन्त-  
संधौ द्वितीया, प्रथमसन्ध्यां सूर्यदर्शनपर्यन्तं सावित्रीं जपन् तिष्ठेत् आसनादुत्थाय  
निवृत्तगतिरेकत्र देशे कुर्यात् । पश्चिमान्तु सन्ध्यां सावित्रीं जपन् सम्यङ्गच्छवदर्शन-  
पर्यन्तमुपविष्टः स्यात् । अतः च फलवत्त्वात् जपः प्रधानं स्थानासने त्वज्ञे, फलवत्-  
मन्त्रिधावफलं तदङ्गमिति न्यायात् । सम्यग्योऽद्विदिप्रो वेदपुष्पेन युज्यते । सङ्ग-  
कल्पसन्ध्या इति च पूर्वं जपत् फलसुकुम् भंघातिथिस्तु स्थानासनयोरेव प्राधान्यमाह ।  
सन्ध्याकालस्य सुहूर्तमात्रं तदाह योगियाश्रवणाः । ज्ञासहजौ तु सततं दिवसानां  
श्याक्रमम् । सन्ध्या सुहूर्तमात्रं ज्ञासे हजौ च सा स्मृता ॥ १०१ ॥

KULLUKA EXPLAINED. — तिष्ठेत् = “आसनादुत्थाय निवृत्तगति रेकत्र देशे  
कुर्यात् ।” Leaving his seat and standing, one will utter.

GRAMMAR.—1. पूर्वाम् qualifies सन्ध्याम् । 2. सन्ध्याम् कालाध्वनो ।  
रत्यन्तसंधौ द्वितीया । सन्ध्यां व्याप्य इत्यर्थः । सम्—धै + अच् । सम्यक् ध्यायति  
अस्यामिति । ध्यायति दधौ अध्यासोत् । 3. सावित्रीम् कर्मणि द्वितीया Acc.  
of जपन् । 4. जपन् जप + शब् । 5. मार्कदर्शनात् आ + अर्कदर्शनात् सन्धिः ।  
आङ् मर्यादावचने इति कर्मप्रवचनीयत्वात् । पञ्चमपाङ्परिमिरिति पञ्चमी अर्क-  
दर्शनात् । अर्कस्य दर्शनं अर्कदर्शनम् तस्यात् । न तु अन्ययोभावः आ and अर्क-  
दर्शनात् पदद्वयम् । Thus explain सम्यग्दक्षविभावनान् आङ् धौने पञ्चमी ।  
सन्ध्यायां नक्षत्राणां विभावनं दर्शनम् । सम्यक् ऋक्षविभावनम् सम्यग्दक्षविभावनम् ।  
तस्यात् । 6. समासीनः सम्—आस + शानच् । आसिष्ट ।

Change of voice.—जपता स्थीयते... समासीनेन ॥ १०१ ॥

BENGALI.—पूर्व सकाद्वेली सूर्यादर्शनकालपर्यन्त आसन रहैठे उषित रहैरा  
एक हाने नौड़ाईरा सावित्री जप करिबे ; पश्चिम सकाद्वेली मर्यादकाल पर्यन्त  
नक्षत्रविभावन रहैरा सावित्री जप करिबे । १०१ ।

ENGLISH.—One should remain standing, muttering the *Gayatri*  
at the morning twilight till the sun is seen; and in the evening

he should remain sitting, muttering the *Gayatri*, till the stars are clearly visible. (101).

पूर्वां सभ्यां जपंस्तिष्ठच्चैशमेनो व्यपोहति ।

पश्चिमान्तु समासीनो मलं हन्ति दिवाकृतम् ॥ १०२ ॥

PROSE.—पूर्वां सभ्यां ( व्याप्य ) जपन् तिष्ठन् नैशं एनः व्यपोहति पश्चिमां ( सभ्यां व्याप्य ) ( जपन् ) समासीनः दिवाकृतं मलं हन्ति ॥ १०२ ॥

KULLUKA.—पूर्वां सभ्यामिति । पूर्वसभ्यायां तिष्ठन् जपं कुर्व्याचो निशा-सञ्चितं पापं नाशयति । पश्चिमसभ्यायान्तपविष्टो जपं कुर्वन् दिवार्जितपापं निहन्ति अवापि जपात् फलमुक्तं एतच्चाज्ञानादिकृतपापविषयम् । अतएव याज्ञवल्क्यः—दिवा वा यदि वा रात्रौ यदज्ञानकृतं भवेत् । त्रिकालसभ्याकरणात् सत् सर्वं विप्र-शयति ॥ १०२ ॥

KULLUKA EXPLAINED.—पूर्वां सभ्यां पूर्ववत् कालाध्वनीरत्यन्तसंयोगे द्वितीया । पश्चिमां सभ्याम् do. सभ्या indicates a division of time. Hence द्वितीया by the rule कालाध्वनीः ।

GRAMMAR.—1. सभ्याम् कालाध्वनीरत्यन्तसंयोगे द्वितीया । 2. नैशम् qualifies एनः । निशा + अच् । 3. व्यपोहति वि - अय - ऊह + लट् ति । ऊहते । औहित । 4. दिवाकृतम् दिवा इत्यव्ययम् । समासीनो समासः । Qualifies मलम् । 5. हन्ति अवधीत् ।

Change of voice.—जपता तिष्ठता एनः व्यपोहते । समासीनेन मलः हन्यते ॥ १०२ ॥

BENGALI.—प्रतिसर्काकाले जपप्रमान इहेरा नाविजो जप करिले रात्रिकाले अज्ञातसारे कृत पाप नष्टे हउ, मारुंकाले आसने समासीन इहेरा नाविजो जप करिले दिवाभागे अज्ञातसारे कृत पाप नष्टे इहेरा याय ॥ १०२ ॥

ENGLISH.—Standing up and muttering the (*Gayatri*) at the morning twilight, one expiates the sin (unwillingly done) at night ; and sitting down and muttering the *Gayatri* in the evening, he goes away with sin (unknowingly done) during day. (102).

न तिष्ठति तु यः पूर्वां नोपास्ते यस्य पश्चिमाम् ।

स यूद्वहद्विष्कार्यः सर्वस्माद्विजकर्मणः ॥ १०३ ॥

PROSE.—यः तु पूर्वां (सम्भ्याम्) न तिष्ठति यश्च पश्चिमां न उपास्ते सः  
शूद्रवत् सर्व्वेष्वात् द्विजकर्मणः वहिष्कार्य्यः ॥ १०३ ॥

KULLUKA.—न तिष्ठतीति । यः पुनः पूर्व्वसम्भ्यां नानुतिष्ठति पश्चिमानु  
नोपास्ते तत्तत्कालविहितं जपादि न करोतीत्यर्थः, स शूद्र इव सर्व्वेष्वाङ्गिजातिकर्मणोऽ-  
तिविषयकारादेरपि वहिः कार्य्यः । अनेनैव प्रत्यवायेन सम्भ्योपासनस्य नित्यतोक्ता  
नित्यत्वेऽपि सर्व्वदा अपेक्षितपापघ्नस्य फलत्वमविरुद्धम् ॥ १०३ ॥

ELUCIDATION.—यः पूर्वां न तिष्ठति यश्च पश्चिमां नोपास्ते = यः पूर्वां  
पश्चिमाञ्च एकतरां वा सम्भ्यां नोपास्ते ।

GRAMMAR.—1. यः Nom. verb तिष्ठति । 2. पूर्व्वाम् qualifies सम्भ्याम्  
understood which is governed by तिष्ठति । 3. तिष्ठति स्या धातुर  
कर्मकोऽपि प्राप्तार्थकत्वात् सकर्मकः सर्व्वेषामेव धातूनां गमनार्थप्राप्तार्थत्वादित्वात् ।  
अस्यात् । 4. पश्चिमां qualifies सम्भ्याम् understood governed by  
उपास्ते । 5. उपास्ते उप-आम् लट् ते । आसिष्ट । 6. शूद्रवत् अव्ययम् शूद्र  
+ वति । तेन तुल्यं क्रिया चेत् वतिरिति । ब्राह्मणेन तुल्यं अधीते ब्राह्मणवत्  
अधीते । शूद्रेण तुल्यं वहिष्कार्य्यः शूद्रवत् वहिष्कार्य्यः । 7. वहिष्कार्य्यः वहिस्-  
ल्ल + यत् । 8. सर्व्वेष्वात् qualifies द्विजकर्मणः । 9. द्विजस्य कर्म द्विजकर्म  
यस्यै समासः तस्यात् द्विजकर्मणः अपादाने पञ्चमी ।

Change of voice.—येन पूर्वां न स्थीयते येन पश्चिमा नोपास्यते तेन शूद्रवत्  
वहिष्कार्य्येण भूयते ॥ १०३ ॥

BENGAL.—ये चाङ्गि आठःसकां ও সাতঃসকাং না করে তাহাকে শূদ্রের জ্ঞান  
অতিবিশেষকরাণি সমস্ত বিজ্ঞোচিত কার্য ইহঁতে বাহির করিয়া দিবে । ১০৩ ।

ENGLISH.—He who does not stand up and mutter the *Gayatri*  
at the morning twilight, and does not sit at the evening twilight  
and mutter the *Gayatri*, should be expelled, like a *Sudra*, from  
all the rites of a twice-born. (103).

अपां समीपे नियतो नैत्यकं विधिमास्थितः ।

सावित्रीमण्यधौयीत गत्वारण्यं समाहितः ॥ १०४ ॥

PROSE.—नैत्यकं विधिं आस्थितः (द्विजः) अरण्यं गत्वा अपां समीपे नियतः  
समाहितश्च (सन्) सावित्रीं अपि अधौयीत ॥ १०४ ॥



KULLUKA.—अपि समीप इति । ब्रह्मयज्ञरूपमिदं बहुवेदाध्ययनाशक्तौ सावित्रीमात्राध्ययनमपि विधीयते । अरण्यादिनिर्ज्जनदेशं गत्वा नद्यादिजलसमीपे निवर्ततेन्द्रियः समाहितोऽनन्यमना नैत्यकं विधिं ब्रह्मयज्ञरूपमास्थितोऽनुतिष्ठामुः सावित्री-मपि प्रणव व्याहृतिसंयुतां यद्योक्तामधीयीत ॥ १०४ ॥

ELUCIDATION.—आस्थितः = “अनुतिष्ठामुः” one who intends to perform, नैत्यकं विधिम् *i.e.* ब्रह्ममन्त्रम् described in the next श्लोक which consists in reading the Vedas.

GRAMMAR.—1. नैत्यकम् qualifies विधिम् नित्य + अण् + क । 2. विधिम् Acc. of आस्थितः । वि - घा + क्तिः । 3. आस्थितः आङ् - स्था + क्तः कर्त्तरि । It has here the meaning of सन् प्रत्ययः । 4. अरण्यम् Acc. of गत्वा । 5. अपि अपि शेषे षष्ठी । 6. समीपे संगता आपः यस्य इति समीपम् बहुव्रीहिः । बालरूपसंगम्य इति अकारस्य ईकारः । अधिकरणे समीपौ । 6. निवर्तः नि - यम् + क्तः । 7. सम - चा - धा + क्तः । 8. सावित्रीम् Acc. of अधीयीत । 9. अधि - इङ् + ईत विधिलिङ् ।

*Change of voice.....* निवर्ततेन समाहितेन सावित्री अधीयेत ॥ १०४ ॥

BENGALI.—यदि ब्रह्मयज्ञरूप निरुद्धं अनुष्ठान करिते ईच्छुक, तनि अवगोचरिषा जलान्तर तौर ईन्द्रियशुद्धि संवत्त ओ मन हित करिषा ( वेद अध्ययने अनङ्क इहेले अशुद्धः उत्पन्नित्वे ) अपव ओ ब्राह्मन्तु ग्राशजो पाठ करितेन । ( अर्थात् एकाग्र करिते ब्रह्मयज्ञ सम्पादन करा बटे ) ॥ १०४ ॥

ENGLISH.—One who is bent on doing the (daily) obligatory ceremonies, and has subdued his senses, should, after having gone to a forest, read, near a river or tank, the *Savitri* also being self-possessed. (104).

वेदोपकरणे चैव स्वाध्याये चैव नैत्यके ।

नानुरोधोऽस्थनध्याये होममन्त्रेषु चैव हि ॥ १०५ ॥

PROSE.—वेदोपकरणे चैव नैत्यके स्वाध्याये चैव होममन्त्रेषु चैव हि अनध्याये अनुरोधः नास्ति ॥ १०५ ॥

KULLUKA.—वेदोपकरणे इति । वेदोपकरणे वेदाङ्गे शिवादी नैत्यके नित्या-नुष्ठेये च स्वाध्याये ब्रह्मयज्ञरूपे होममन्त्रेषु चानध्यायादयो नास्ति ॥ १०५ ॥

GRAMMAR. — 1. वेदोपकरणे उपक्रियतेऽनेन उपकरणम् सामयौ । वेदानां उपकरणं वेदोपकरणम् तस्मिन् । 2. स्वाध्यायः सु अध्यायः अध्ययनं यस्य स इति बहुव्रीहिः or सु अध्यायः स्वाध्यायः इति तत्पुरुषः । तस्मिन् । सर्वत्र विद्याधिकरणे समौ । 3. नैत्यके qualifies स्वाध्याये । 4. होममन्त्रेषु होमानां मन्त्राः होममन्त्राः षष्ठी समासः तेषु पूर्ववत् समौ । 5. अनध्याये न अध्यायः अनध्यायः अध्ययनाभावः तस्मिन् । 6. अनुरोधः अनुरध्यते इति अनुरोधः । अनु- रुध + घञ् । रुधञि रुधे । अरुधत् परीत्सीत् अरुज् । Verb अस्ति । अनध्यायः is described elsewhere ; it means that time when reading is prohibited.

*Change of voice.* — अनुरोधेन न भूयते ॥ १०५ ॥

BENGALI.—निष्क कञ् प्रकृति वेदाङ्गे वेदपाठरूप निडा कर्मे एव होममन्त्रे नानामपाठनक त्रादौ निश्चयि नर्तिरे न, अर्थात् ये दिन अद्याग्रन निष्क मे दिनञ्च ये नकल करिरे ॥ १०६ ॥

ENGLISH.—To the six subsidiary studies of the Veda (*i. e.* the *angas*), the obligatory (daily) study of the Vedas, and the *mantras* or texts for offerings to fire, no prohibition of study does apply. (105).

नैत्यके नास्त्यनध्यायो ब्रह्ममत्तं हि तत् स्मृतम् ।

ब्रह्माहुतिहुतं पुण्यमनध्यायवषट्कृतम् ॥ १०६ ॥

PROSE.—नैत्यके अनध्यायः नास्ति तत् हि ब्रह्ममत्तं स्मृतम् ; अनध्यायवषट्कृतम् ब्रह्माहुतिहुतम् पुण्यम् ( भवति ) ॥ १०६ ॥

KULLUKA.—नैत्यके इति । पूर्वोक्तनैत्यकस्वाध्यायस्यायमनुवादः । नैत्यक- नपथञ्चे अनध्यायो नास्ति यतः सततभवत्वात् सर्वं ब्रह्मैव सर्वं ब्रह्मसत्त्वं तन्मन्त्रादिभिः स्मृतम्, ब्रह्मैवाहुतिर्ब्रह्माहुतिर्हविस्तस्याहुतमध्ययनरूपम् अनध्यायवषट्कृतम् अनध्याय- खीकृतमपि पुण्यमेव भवति ॥ १०६ ॥

ELUCIDATION.—ब्रह्माहुति = ब्रह्मैवाहुतिः । आहुतिः = हविः । तेन हुतम् हवनम् । ब्रह्माहुतिहुतम् = वेदरूपहविषा यत् हवनम् = वेदपाठरूपयज्ञकरणम् । अनध्यायवषट्कृतम् = अनध्यायेन अनध्यायकालेन वषट्कृतं गृहीतं वषट्कारमुच्चार्य यद्वत् पद्वषट्कृतम् वषट्करणमुच्यते तस्मात् वषट्कृतं स्वीकृतमिति कुल्लुकाख्यानम् ।

GRAMMAR.—1. नैत्वके derived विषयाधारे सप्तमी । 2. अनध्यायः explained. 3. तत् refers to नैत्वकम् । 4. ब्रह्मसत्रम् विधेयविशेषकम् of नैत्वकम् । ब्रह्मैव सत्रम् कर्मधारयः । सततं भवतीति सत्रम् । सतत + वन् । नित्यत्वात् सत्रम् इत्यर्थः । 5. ब्रह्माहुतिहुतम् ब्रह्म वेदः तदेव आहुतिः हवनद्रव्यम् हुतम् ब्रह्माहुतिः । तथा हुतम् हवनम् ब्रह्माहुतिहुतम् = वेदरूपहविषायश्चकारणम् = वेदपाठरूपयज्ञकरणम् इति भावः । 6. अनध्यायवषट्कृतम् अध्ययनस्य अभावः अनध्यायः तत्पुरुषः पक्षे अय्ययीभावश्च तत्र क्लीबता । तेन वषट्कृतम् सूक्तम् अनध्यायवषट्कृतम् । वषट्कृतम् गतिप्रमासः । अय्ययात् न ईकारागामादिः अय्येऽपि । 7. पुण्यम् qualifies ब्रह्माहुतिहुतम् । पू + यत् पुण्यम् by पूजो यत्पुं क्तस्य ।

*Change of voice....* अनध्यायेन न भूयते । तेन ब्रह्मसत्रेण स्मृतेन भूयते । अनध्यायवषट्कृतेन ब्रह्माहुतिहुतेन पुण्येन भूयते ॥ १०६ ॥

BENGAL.—निता कर्तव्य वेदपाठानिदिष्ट अनध्याय बाटे ना, केनना निता कर्तव्य वेदपाठक उक्तयञ्च बले ; वेदरूप हविः बादा ये अध्यायनरूप वञ्चकरण ताहा अनध्याय दिन कर्तुक शोकृत ( अर्थां अनध्याय दिने कृत ) इहेले पुण्यजनकहे हय ॥ १०७ ॥

ENGLISH.—The prohibition of study does not apply to the obligatory recitation; for it is regarded as the Veda sacrifice. The sacrifice done with the (reciting of the) Veda as clarified butter, and completed (as in the case of a sacrifice with the words *Vasatkur*) with reading on a day which is though a day for general prohibition of study, is meritorious. (106).

यः स्वाध्यायमधीतेऽब्दं विधिना नियतः शुचिः ।

तस्य नित्यं चरत्येष पयोदधिघृतं मधु ॥ १०७ ॥

PROSE.—यः अब्दं नियतः शुचिः ( सन् ) विधिना स्वाध्यायम् अधीते एष तस्य नित्यपयः दधि घृतं मधु चरति ॥ १०७ ॥

KULLUKA.—यः स्वाध्यायमिति । अब्दमिति अत्यन्तसंयोगे द्वितीया वर्षमर्थके स्वाध्यायमहरहर्विहितारयुक्तं नियतेन्द्रियः प्रयतो अपति तस्यैष स्वाध्यायो अपयज्ञः शीरादीनि चरति शीरादिभिर्हैवान् पितृंश्च प्रीणाति ते च प्रीताः सर्वकामैर्कपयज्ञ-कारिणस्तर्पयन्तीत्यर्थः । अतएव याज्ञवल्क्यः—मधुना पयसः चैव स देवांसर्पशैविजः । पितॄन् मधुघृताभ्याञ्च जपोऽधीते द्वितीयोऽब्दम् इत्युपक्रम्य अतुर्वाग्निं वेदानां पुराणा-

नाच्च जपस्य देवपितृदण्डिफलमुक्ता शेषे ते दत्तास्तर्पयन्त्येनं सर्वकामफलैः शुभैरित्युक्त-  
वान् ॥ १०७ ॥

GRAMMAR.—1. अव्ययसंयोगे द्वितीया अपोददातीति अव्ययः तम्  
अप्-दा+क। हायनोऽव्ययसंयोगे इत्यमरः। 2. नियतः श्रुतिः quali-  
fy यः। 3. विधिना करणे द्वितीया वि-धा+कि। 4. स्वाध्यायम् Acc.  
of अधीते 5. अधीते अधि इङ् ते। 6. नित्यम् Adv. 7. पयः दधि  
घृतम् मधु Acc. of चरति।

Change of voice.—येन.....स्वाध्यायः अधीयते तस्य अनेन...पयं दधि घृतम्  
मधु चर्यते ॥ १०७ ॥

BENGALI.—यिनि श्रुति इहेरा ओ हेलिग मंगत करत यथाविधाने अस्तुतः एकटि  
वसत्र ओ अतिमिन जगयऊ करेन, मेहे जगयऊ ठाहाके निगत कौर, मधि, घृत ओ मधु  
प्रदान करे। अर्थात् यिनि वेद वा पुराण जप करेन, ठाहार मेहे जपे देवतागण  
कौरादि वारा उष्ट इहेरा ठाहाके कौरादि प्रदान करिषा तर्पित करेन ॥ १०७ ॥

ENGLISH.—For him who being pure and self-controlled makes  
according to due form the recitation for a full year, it ever flows  
with milk, curds, butter and honey. (107).

अग्नीन्धनं भैक्ष्यचर्यामधःश्रव्यां गुरोर्हितम् ।

आ समावर्त्तनात्कुर्व्यात्कृतोपनयनो द्विजः ॥ १०८ ॥

PROSE.—कृतोपनयनः ( ब्रह्मचारी ) द्विजः आ समावर्त्तनात् अग्नीन्धनं  
भैक्ष्यचर्यां अधःश्रव्यां गुरोः हितं कुर्यात् ॥ १०८ ॥

KULLUKA.—अग्नीन्धनमिति । सायंप्रातः समिद्धोमं भिक्षासमूहाहरणमखट्टा-  
शयनरूपामधःश्रव्यां नतु स्थण्डिलशायिलमेव गुरोर्नदककुम्भाद्याहरणरूपं हितं कृतोप-  
नयनो ब्रह्मचारी समावर्त्तनपर्यन्तं कुर्यात् ॥ १०८ ॥

GRAMMAR.—1. कृतोपनयनः कृतं उपनयनं यस्य सः qualifies द्विजः।  
2. समावर्त्तनात् कर्मप्रवचनीया ज्योति पञ्चमी। 3. आ अव्ययम् सर्वदायाम्।  
4. अग्नीन्धनम् इत्यनेन अग्नि इति इन्धनम् अग्नेरिन्धनं अग्नीन्धनम् Acc. of कुर्यात्।  
5. भैक्ष्यचर्याम् भिक्षया प्राप्तं भैक्ष्यम् अङ्। भैक्ष्य-चर+श्। वार्त्तिकेन परि-  
चर्याशब्दस्य बहुषात् अनन्तापि बहुषम्। 6. अधःश्रव्याम् अधः भूमौ एव श्रव्या  
ताम् श्री+कप्। 7. हितम् Acc. of कुर्यात्।

*Change of voice.*—বিজেন.....অগ্নীশ্বনং মেত্যবধ্যা অধঃশয্যা...হিতম্  
ক্ৰিয়েত ॥ ১০৮ ॥

BENGALI.—বিজ্ঞাপিত উপনয়ন গ্রহণান্তে যে পঞ্চাঙ্গ শুক্লগৃহ ছাড়িয়া গৃহস্থ ধর্ম  
গ্রহণার্থে পিতার বাড়ীতে প্রত্যাগমন না করেন তাবৎকাল সাধঃ ও প্রাতে যজ্ঞকাঠ  
আহরণ ও হোমকরণ, ত্রিকাসঃগ্রহ, বিনা খট্টায় শয়ন, এবং শুক্লর জল ও কুণ আহরণ  
প্রভৃতি হিতসাধক কর্ম করিবে ॥ ১০৮ ॥

ENGLISH.—A twice-born, invested with the sacred string,  
should collect fuel for the sacrificial fire, beg alms, sleep low on  
the ground, and do what is conducive to the good of his preceptor,  
till the ceremony of his returning home from the preceptor's  
place. (108).

আচার্য্যপুত্রঃ শুম্রুপুত্রানদো ধার্মিকঃ শুচিঃ ।

আতঃশক্তোঽর্থদঃসাধুঃস্বোঽধ্যাষ্যাদশধর্ম্মতঃ ॥ ১০৯ ॥

PROSE.—আচার্য্যপুত্রঃ শুম্রুপুঃ জ্ঞানদঃ ধার্মিকঃ শুচিঃ আতঃ শক্তঃ অর্থদঃ  
সাধুঃ স্বঃ ( এতে ) দশ ধর্ম্মতঃ অধ্যাষ্যাঃ ॥ ১০৯ ॥

KULLUKA.—কৌটিল্যঃ শিষ্যোঽধ্যাষ্য ইত্যাহ আচার্য্যপুত্র ইতি । আচার্য্য-পুত্র-  
পরিচারক - জ্ঞানান্तरদাতৃ-ধর্ম্মবিন্দু-দার্থ্যাদিশুচি - বাসববহণসমর্থধনদাত্ত্রীহিজ্ঞাতথৌ  
দশৈন-ধর্ম্মোপাধ্যাষ্যাঃ ॥ ১০৯ ॥

GRAMMAR.—1. আচার্য্যস্য পুত্র আচার্য্যপুত্রঃ । 2. শুম্রুপুঃ শুম্রু সন্ + উ ।  
3. তন - দা + ক । 4. ধর্ম্ম + উক্ । 5. আপ্ + ক্তঃ আতঃ । 6. শক্ + ক্তঃ ।  
7. অর্থ - দা + ক্তঃ । 8. স্বঃ স্বকীয়ঃ । 9. ধর্ম্মতঃ তৃতীয়াবাক্যনিঃ ।  
10. অধ্যাষ্যাঃ অধি - হৃৎ + ণিচ্ য ।

*Change of voice.*—আচার্য্যপুত্রেষ.....স্বেন ( এতে ) দশমিঃ অধ্যাষ্যৈঃ  
সূয়তে ॥ ১০৯ ॥

BENGALI.—আচার্য্যপুত্র, পরিচর্য্যকারক, অস্ত্রবিদ্যাগ্রন, ধর্ম্মবিন, শূন্যিকা ও  
জ্ঞানাদিবারা শুচি, বাসব, বিন্যাগ্রহণ ও ধারণে সমর্থ, ধনদাতা, অজ্ঞোহি ও জ্ঞাতি এই  
দশজনকে অধারন করাইবে ॥ ১০৯ ॥

ENGLISH.—The son of a preceptor, a pupil willing to learn,  
a communicator of some knowledge, a virtuous or pious person,

a man who is pure, a man who is trustworthy and faithful, one who is capable (of retaining what is taught), one who gives money, one who is honest and good and one who is a relative—these ten are lawfully to be taught. (109).

**নাপৃষ্টঃ কস্যচিদব্রূয়ান্‌চান্যায়ৈন পৃচ্ছতঃ ।**

**জানন্নপি হি মেধাবী জড়বল্লোক আচরেৎ ॥ ১১০ ॥**

PROSE.—মেধাবী অপৃষ্টঃ কস্যচিৎ ন ব্রূয়াৎ, অন্যায়েন পৃচ্ছতঃ; চ ন ব্রূয়াৎ, জানন্‌ অপি মেধাবী লোকে জড়বন্‌ আচরেৎ ॥ ১১০ ॥

KULLUKA.—নাপৃষ্ট ইতি । শ্রদ্ব্যন্যোনাভ্যাবরং বিস্তরস্বাধৌঃ তস্য তত্বমপৃষ্টঃ সন্‌ ন বদেৎ শিষ্যস্য ত্বপৃচ্ছতোঃপি বক্তব্যং ভক্তিগুণাদিপ্রশ্নধর্মোক্তজনমন্তায়; তৈন পৃচ্ছতো ন ব্রূয়াৎ । জানন্নপি হি প্রাজ্ঞো লোকে, সূক ইব ব্যবহরেৎ ॥ ১১০ ॥

GRAMMAR.—1. মেধা + বিনিঃ । 2. ন পৃষ্টঃ অপৃষ্টঃ । 3. কস্যচিৎ সম্বন্ধবিবচনয়া পঠৌ । 4. অন্যায়েন প্রকৃত্যাদিভ্য উপসংখ্যানং ইতি তৃতীয়া । 5. জানন্‌ - জ্ঞা + শত্ । 6. লোকে অধিকরণে সমগ্রৌ । 7. জড়বন্‌ জড় + বতিঃ তৈন তুল্যং ক্রিয়া বেদবতিঃ ।

*Change of voice.*—মেধাবিনা অপৃষ্টেন...উচ্যেৎ । জানতা আশ-  
জ্যেৎ ॥ ১১০ ॥

BENGALI.—মেধাবী গুরু জিজ্ঞাসিত না হইলে অশ্রুর অধ্যয়নে অক্ষরস্থলন বিষয়তা দেখিয়া ও শিষ্য না হইলে তাহাকে কিছু বলিবেন না, অথবা শাস্ত্রানুসারে ভক্তিশ্রদ্ধা-  
পূর্বক জিজ্ঞাসা না করিলে জিজ্ঞাসাকারীকেও বলিবেন না, এবং এই উভয় অবস্থাতেই জ্ঞানিগণ লোকসমাজে মুকের স্থায় ব্যবহার করিবেন ॥ ১১০ ॥

ENGLISH.—No one should say (any thing of the Vedas) to any one without being asked; nor should he answer any person asking improperly. A wise man, though he knows, should act like a dumb man (or a dullard) in the world. (110).

**অধর্ম্মেণ চ যঃ প্রাহ যস্মাদধর্ম্মেণ পৃচ্ছতি ।**

**তয়োরন্যতরঃ প্রৈতি বিদ্বেষং বাধিগচ্ছতি ॥ ১১১ ॥**

PROSE.—যঃ অধর্ম্মেণ প্রাহ যস্য অধর্ম্মেণ পৃচ্ছতি তয়ৌ: অন্যতরঃ প্রৈতি বিদ্বেষং বা বাধিগচ্ছতি ॥ ১১১ ॥

KULLUKA.—উক্তপ্রতিষেধহয়্যতিক্রমে দোষমাহ অধৰ্ম্মেতি । অধৰ্ম্মেণ  
পৃষ্টোপি যো যস্য বদতি যথান্যায়েন যং পৃচ্ছতি তথোরন্যতরো জ্যৈষ্ঠকলকারৌ বিধতে  
বিধেযং বা তেন সহ গচ্ছতি ॥ ১১১ ॥

GRAMMAR.—1. অধৰ্ম্মেণ প্রকৃত্যাদিভ্য স্কতীয়া । 2. প্রাহ প্র-ব্র লট্ তি ।  
3. তথো: নির্দ্বারণে ষষ্ঠী । 4. প্রৈতি স্মিয়তে । প্র+এতি । ই-লট্ তিপ্ । অগান্ ।  
5. বিধেযম্ Acc. of অধিগচ্ছতি । বি-বিহ্+অজ্ ।

Change of voice.—যেন...উচ্যতে যেন পৃচ্ছতে অন্যতরেণ প্রেযতে বিধেয: অধি-  
গম্যতে ॥ ১১১ ॥

BENGALI.—যিনি অধৰ্ম্ম অনুসারে জিজ্ঞাসিত হইয়া উত্তর দেন এবং যিনি অধৰ্ম্ম  
অনুসারে প্রশ্ন করেন সেই উভয়ের এক জন মৃত্যুমুখে পতিত হয় অথবা উভয়েই  
লোকের ঘেঁষের পাত্র হয় ॥ ১১১ ॥

ENGLISH.—He who says unlawfully, and he who asks un-  
lawfully, either of these two may die or incur hatred. (III).

ধর্ম্মার্থী যত্র ন স্যাতাং শুম্রূষা বাপি তদ্বিধা ।

তত্র বিদ্যা ন বক্তব্য্যা শুমং বীজমিবোষরে ॥ ১১২ ॥

PROSE.—যত্র ধর্ম্মার্থী ন স্যাতাং, তদ্বিধা শুম্রূষা বা অপি ন ( স্যাৎ ),  
জবরে শুমং বীজমিবতত্রবিদ্যা ন বক্তব্য্যা ॥ ১১২ ॥

KULLUKA.—ধর্ম্মার্থাবিতি । যস্মিন্ শিষ্যেঃ প্রাপ্যতে ধর্ম্মার্থী ন ভবত:  
পরিচর্যা বা অধ্যয়নানুরূপা, তত্র বিদ্যা নার্বণীয়া সুদ্রব্রীহ্মাদিবীজমিবোষরে যত্র  
বীজমুতং ন প্ররোহতি স জবর: । ন চার্যগৃহীণে মৃতকাধ্যাপকত্বমাশঙ্কনীয়ং যদেতা-  
বদ্যম্ দীযতে তদেতা বদধ্যাপয়ামৌতি নিয়মাভাবান্ ॥ ১১২ ॥

GRAMMAR.—1. যত্র যদৃ+বল্ অধিকরণে । 2. ধর্ম্মার্থী ধর্ম্মং  
অর্থং ধর্ম্মার্থী ( ব্হন:) পচে অর্থধর্ম্মী । ধর্ম্মাদিষ্মনিয়ম ইতি বার্তিকান্ ।  
3. স্যাতাং অস্+যাতাং । 4. তদ্বিধা সা এষ বিধা অস্যা সা তদ্বিধা ( বহু )  
qualifies শুম্রূষা । বি-ধা+অজ্ । 5. শুম্রূষা-শু+সন্+অ । 6. জবরী  
অধিকরণে সমসী । জব-দাঙি । জব+ক । জব-৪: অদ্যথৈ । 7. বীজ-  
মিব ইবেন সহ সমাস: বিমল্ললোপঃ । Acc. of বক্তব্যম্ understood.  
8. বিদ্যা-বিদৃ+ক্যপ্ । 9. বসম্ব-বপ+তম্ব । বপতি উবাচ । অবাপ্তৌ ।  
জপ্যতে । উক্ত: ।

*Change of voice.*—ধর্ম্মার্থাম্যাম্ ন ভূয়েত...যশস্যাম্ ন ভূয়েত বীজেনৈব  
বিদ্যায়া বক্তব্যয়া ন ভূয়েত ॥ ১১২ ॥

BENGALI.—যে শিক্ষাকে গড়াইলে বর্ম্ম কি অর্থ কিছুই হয় না, অথবা অসুস্থ  
পরিচর্যাও লাভ হয় না, উত্তম ভূমিতে যেমন উত্তম বীজ বপন করিতে নাহি, একগুণ  
ভস্মই বিন্যাস উপদেশ করিবে না ॥ ১১২ ॥

ENGLISH.—Where there may not be virtue or wealth, or proper  
service and obedience, there no instruction should be imparted  
as seed is not sown in a barren soil. (112).

বিদ্যয়ৈব সমং কামং মর্ত্ব্যং ব্রহ্মবাदिना ।

आपद्यपि हि घोरायां नत्वेनामिरिणे वपेत् ॥ ११३ ॥

PROSE.—ব্রহ্মবাदिना বিদ্যায়া एव समं कामं मर्तव्यम् घोरायां आपदि अपि  
हि एनां तु इरिणे न वपेत् ॥ ১১৩ ॥

KULLUKA. — বিদ্যয়েতি । বিদ্যয়ৈব সৎ বেদাধ্যাপকেন বরং মর্তব্যং নতু সর্ব্বাধ্যা-  
পনযোগ্যশিক্ষাভাব্যে আপাত্যৈতাং প্রতিপাদয়েৎ । তথাচ কান্দীম্যব্রাহ্মণং বিদ্যায়া  
স্বার্থে স্থিত্যেত ন বিদ্যাসূচরং বপেৎ ॥ ১১৩ ॥

GRAMMAR — 1. ব্রহ্মবাदिना ব্রহ্ম বেদং বদিতং শীলমস্ব স ব্রহ্মবাदी তেন ।  
বেদবক্তা কর্তারি তৃতীয়া । 2. বিদ্যায়া সমম্ যোগে সঙ্গার্থে তৃতীয়া । 3. কামম্  
Adv. অব্যয়ম্ অকাসালুমতী কামম্ । 4. মর্তব্যম্ স+ভাবে তব্য । স্থিত্যে  
মরিস্থিতি অস্থত । 5. ঘোরাযাম্ qualifies আপদি । হন+অচ্ছন স্থানে  
ঘূরাদেশঃ by হনোরচ্ছন চ । 6. আপদি অধিকরণে সপ্তমী । 7. এনাম্ Acc.  
of বপেৎ । 8. ইরিণে উপরে, শূন্যে স্থানে । অধিকরণে সপ্তমী । ছ+ইনচ্  
by অর্থে ক্রিদিষ্ট । “ইরিণং শূন্যম্” Bhatto. 9. বপেৎ—বপ+ঘাত্ ।

*Change of voice.* — ব্রহ্মবাदी...স্থিত্যেত । এষা ন ভূয়েত ॥ ১১৩ ॥

BENGALI.—যেদের অধ্যাপক বরং বিদ্যা লইয়াই মরিলে বাইবেন, তথাপি  
অধ্যাপনযোগ্য পাত্রের অভাবে উত্তম ভূমিতে (অপাত্রে) এই বিদ্যাবীজ বপন করিবেন  
না ॥ ১১৩ ॥

ENGLISH.—A teacher of the Veda should rather die with his  
learning (not communicated to any one); even in great distress  
he should not sow it in an unfertile soil. (113).



विद्या ब्राह्मणमेत्याह शिवधिस्तेऽस्मि रक्ष माम् ।

असूयकाय मां मादास्तथा स्यां वीर्यवत्तमा ॥ ११४ ॥

PROSE.—विद्या ब्राह्मणं एव आह ते शिवधिः अस्मि मां रक्ष असूयकाय मां मादाः तथा ( सति ) वीर्यवत्तमा स्याम् ॥ ११४ ॥

KULLUKA.—अस्यानुवादमाह विद्या ब्राह्मणमिति । विद्याधिष्ठात्री देवता कश्चिदध्यापकं ब्राह्मणमागत्य एवमवदत् तयाहं निधिरस्मि मां रक्ष असूयकादिदोषवते न मां वदेः तथा सत्यतिशयेन वीर्यवती भूयाम् । तथा च कान्तोक्तब्राह्मणं, विद्या ह वै ब्राह्मणमाजगाम तवाहमस्मि त्वं मां पालय अनर्हं ते मानिने नैवमादा शोषाय मां ज्ञेयसा तैऽहमस्मीति ॥ ११४ ॥

GRAMMAR. — 1. विद्या Nom. to the verb आह । 2. ब्राह्मणम् Acc. of एव, कर्मणि द्वितीया । 3. आह governs वाक्यार्थे । from ते — to अप्रमादिने of the next sloka. 4. ते शेषे षष्ठो । 5. शिवधिः or शिवधिः शी + वन् शिव । शिव — धा + किः । निधिर्ना शिवधि भेदादव्ययरः । विशेष विशेषणम् of अहम् understood. 6. माम् Acc. of रक्ष । 7. माम् Acc. of मादाः । 8. असूयकाय सम्प्रदाने चतुर्थी । असूय — म्बुल् । असूयति । 9. दाः दा + लृट् स । न माङ्गोमे इत्यङ्गागमनिषेधः । 10. सतिशयेन वीर्यवती वीर्यवत्तमा वीर्य + मतुप् + तमप् । 11. स्याम् अस + याम् ।

Change of voice.—विद्यया.....उच्यते । शिवधिना मया भूयते । त्वया अहं रक्ष्यते । ...अहम् मा दिधि वीर्यवत्तमया मया भूयते ॥ ११४ ॥

BENGALI.—विद्यार अविष्ठात्री देवता কোন অধ্যাপক ব্রাহ্মণের নিকটে আসিয়া বলিয়াছিলেন—আমি তোমার নিধিরূপ, তুমি আমাকে পালন কর, আমাকে অসূয়ানীল পায়ে অর্পণ করিও না, তাহা হইলে আমি অধিকতর বলশালিনী হইব । ১১৪ ।

ENGLISH.—(The goddess of ) learning coming to a Brahman says :—"I am your treasure, guard me. Do not impart me to a spiteful man ; then I shall be strongest." (114).

यमेव तु शुचिं विद्या नियतं ब्रह्मचारिणम् ।

तस्मै मां ब्रूहि विप्राय निधिपायाप्रमादिने ॥ ११५ ॥

PROSE. — यं एव तु शुचिं नियतं ब्रह्मचारिणं विद्याः निधिपाय अप्रमादिने तस्मै विप्राय मां ब्रूहिः । ११५ ॥

KULLUKA.—यमिति । यमेव पुनः शिष्यं श्रुतिं नियतेन्द्रियं ब्रह्मचारिणं जानासि तस्मै विद्यारूपनिधिरक्षकाय प्रसादरहिताय मां वद ॥ ११५ ॥

GRAMMAR. — 1. यम् कर्मणि द्वितीया । Governed by विद्याः यम् is qualified by विषेय विशेषणानि । 2. श्रुतिम् । 3. नियतम् । 4. ब्रह्म-चारिणम् । 5. विद्याः विद + यास् । वेति विवेद विदाद्यकार अवेदीत् विदाङ्-रोत् । 6. निधिपाय qualifies विप्राय । नि - घा + किं । निधि - पा + क । 7. अप्रसादिने न प्रसादौ अप्रसादौ तस्मै अप्रसादिने नञ् समासः । प्र - साद्यतीति प्रसादौ तस्मै । Qualifies विप्राय । 8. तस्मै qualifies विप्राय । 9. विप्राय क्रियायहणमपि कर्तव्यमिति सम्प्रदानत्वात् चतुर्थी । 10. माम् Acc. of ब्रूहि । 11. ब्रूहि—ब्रू + हि । अवोचत् अवोचत ।

Change of voice. — यः.....श्रुतिः नियतः ब्रह्मचारौ विद्येत.....ब्रूहि... उच्यते ॥ ११५ ॥

BENGALI.—वाशकै श्रुति मन्त्रेण्ड्रिय उक्ताङ्गी जानिवे; विद्यारूप निधिर-प्रतिपालक सावधान सेई विषेय निकट आमाके उपदेश निवे । ११५ ।

ENGLISH.—“But impart me to that Brahman who guards his treasure, is never careless, and whom you may know to be a pure and self-restrained student observing the vow of celibacy.” (115).

ब्रह्म यस्त्वननुज्ञातमधीयानादवाप्नुयात् ।

स ब्रह्मक्षेत्रसंयुक्तो नरकं प्रतिपद्यते ॥ ११६ ॥

PROSE. — यः तु अधीयानात् अननुज्ञातं ब्रह्म अवाप्नुयात् सः ब्रह्मक्षेत्रसंयुक्तः ( सन् ) नरकं प्रतिपद्यते ॥ ११६ ॥

KULLUKA. — ब्रह्मेति । यः पुनरभ्यासार्थमधीयानात् अन्धं वा कस्मिदध्यापय-तस्तदनुमतिरहितं वेदं गृह्णाति स वेदक्षेत्रयुक्तो नरकं गच्छति तस्मादेतन्न कर्त-व्यम् ॥ ११६ ॥

GRAMMAR. — 1. यः Nom. verb अवाप्नुयात् । 2. अननुज्ञातम् may be taken as an adverb of अवाप्नुयात् or as an adj. of ब्रह्म । न अनुज्ञातं अननुज्ञातम् । 3. अवाप्नुयात् अव - आप + यात् । आपत् । 4. ब्रह्म-क्षेत्रसंयुक्तः ब्रह्मणः क्षेत्रं ब्रह्मक्षेत्रं ( ब्रह्म ) तेन संयुक्तः तृतीया समासः qualifies सः क्षेत्रयति चोरयतीति क्षेत्रः । क्षेत्र + अच् । क्षेत्रस्य भावः क्षेत्रम् । क्षेत्र + यत् नलोपश्च । 5. प्रतिपद्यते प्रति - पद + छद् ते ।

*Change of voice.*—যেন...ব্রহ্ম অবাধ্যত তেন...নরকঃ প্রতিপদ্যতে ॥ ১১৬ ॥

BENGALI.—কেহ অভ্যাসের জন্য বেদপাঠ করিতে থাকিলে অথবা অন্যকে পড়াইতে থাকিলে তদবস্থায় বিনা অনুমতিতে যে ব্যক্তি বেদ গ্রহণ করে, সে বেদ চুরি করার জন্য পাতকী হইয়া নরক প্রাপ্ত হয় ॥ ১১৬ ॥

ENGLISH.—He, who learns the Veda without permission from one reading or reciting it, is charged with theft of the Veda and goes to hell. (116).

লৌকিকং বৈদিকং বাপি তথা আধ্যাত্মিকমেব চ ।

আদদৌত যতো জ্ঞানং তং পূৰ্ব্বমভিবাদয়েত ॥ ১১৭ ॥

PROSE.—যতঃ লৌকিকং বৈদিকং বাপি তথা আধ্যাত্মিকং एव च জ্ঞানং আদদৌত তং পূৰ্ব্বমভিবাদয়েত ॥ ১১৭ ॥

KULLUKA.—লৌকিকমিতি । লৌকিকং অর্থশাস্ত্রাদিজ্ঞানং বৈদিকং বেদার্থজ্ঞানম্ আধ্যাত্মিকং ব্রহ্মজ্ঞানং যজ্ঞানু মৃজ্ঞানি বহুমান্যমধ্যে স্থিতং তং প্রথমমভিবাদয়েত । লৌকিকাদিজ্ঞানদাতৃণামেব তথাষা সমবাযং যথোচরং মান্যত্বম্ ॥ ১১৭ ॥

GRAMMAR.—1. যতঃ আখ্যাতোপযোগী পঞ্চমী । 2. জ্ঞানম্ কর্মণি দ্বিতীয়া Acc. of আদদৌত । It is qualified by লৌকিকম্ বৈদিকং and আধ্যাত্মিকম্ । 3. লৌকিকম্ লোক + উক্ । 4. বৈদিকম্ বেদ + উক্ । 5. আধ্যাত্মিকম্ আত্মানমধিকৃত্ব আধ্যাত্মম্ অন্যগ্রীভাবঃ টিলোপঃ by ন তন্ত্রিতে । আধ্যাত্ম + উক্ আধ্যাত্মিকম্ । 6. আদদৌত আড্ - দা + ইত । আদিত । 7. তম্ Acc. of অভিবাদয়েত । 8. পূৰ্ব্বম্ adverb. 9. অভিবাদয়েত অভি - বদ + ণিষ্ + যাত্ । ন পাদস্মাকৃশ্ম ইতি সূত্রেণ ণিনি বদধাতোঃ পরস্মৈপদনিষেধেপি “অকৰ্ম্মমিপ্রায়ে পরস্মৈপদং স্যাদেব” ইতি মনুজ্যৈষ্যাত্মানাত্ পরস্মৈপদম্ ।

*Change of voice.*—জ্ঞানং...আদৌত সঃ...অভিবাধ্যত ॥ ১১৭ ॥

BENGALI.—যাঁহা হইতে লৌকিকজ্ঞান অর্থাৎ অর্থশাস্ত্র প্রভৃতির জ্ঞান, বৈদিকজ্ঞান, কি আধ্যাত্মিকজ্ঞান লাভ করা যায়, বহুপ্রাণ ব্যক্তি যথো বর্ষমান থাকিলেও তাঁহানিগকেই অগ্রে অভিবাদন করিবে; ( আর একরূপ তিনজনই উপস্থিত থাকিলে প্রথমতঃ আধ্যাত্মিক জ্ঞানদাতাকে, তৎপরে বৈদিক জ্ঞানদাতাকে, তৎপরে লৌকিক জ্ঞানদাতাকে অভিবাদন করিবে ) ॥ ১১৭ ॥

ENGLISH.—One should salute first him from whom he may acquire worldly, vedic, or spiritual knowledge. (117).

सावित्रीमात्रसारोऽपि वरं विप्रः सुयन्त्रितः ।

नायन्त्रितस्त्रिवेदोऽपि सर्व्याशी सर्व्वविक्रयी ॥ ११८ ॥

PROSE.—सुयन्त्रितः सावित्रीमात्रसारः अपि विप्रः वरं अयन्त्रितः सर्व्व्याशी सर्व्वविक्रयी विवेदः अपि न ( वरम् ) ॥ ११८ ॥

KULLUKA.—सावित्रीति । सावित्रीमात्रवेत्तापि वरं सुयन्त्रितः शास्त्रनियमितो विप्रश्चादिभ्यः नायन्त्रितो वेदत्रयवेत्तापि निषिद्धभोजनादिशूलः प्रतिषिद्धविक्रेता च । एतच्च प्रदर्शनमात्रं सुयन्त्रितशब्देन विधानिषेधनिष्ठत्वस्य विवक्षितत्वात् ॥ ११८ ॥

GRAMMAR.—1. सुयन्त्रितः सम्यक् यन्त्रितः सुयन्त्रितः । 2. सावित्री-मात्रसारः सावित्री एव सावित्रीमात्रम् तदेव सारो यस्य सः सावित्रीमात्रसारः बहुव्रीहिः । 3. वरम् क्लीबे जनाक्प्रिये इत्यमरः अस्यप्रियार्थः वरशब्दः क्लीबे वर्ज्जते । qualifies विप्रः । 4. न यन्त्रितः अयन्त्रितः । 5. सर्व्वं अश्नातीति सर्व्व्याशी । सर्व्वं—अश्न + णिनि । 6. सर्व्वं कुतुमितं विक्रीणीति सर्व्वविक्रयी । सर्व्वं—विक्री + णिनि । by कर्मण्यीनिविक्रियः i. e. इनि is affixed to वि-को घातु preceded by accusative. कुतुमितं यद्दणं कर्त्तव्यं । 7. विवेदः त्रयो वेदाः सन्ति यस्य स विवेदः । बहुव्रीहिः । अक्षेधौत् अक्षेष्ट ।

Change of voice.—विप्रेण वरेण भूयते विवेदेन न वरेण भूयते ॥ ११८ ॥

BENGALI.—श्रवञ्चित अर्थात् नाश्रुञ्चित विधिनियमेष्वेव बभूञ्चित त्राकण प्राग्जोमाञ्ज क्षानिलेञ्च माञ्च इहेत्वेन, आत्र शिनि नाश्रुञ्चित विधिनियमेष्वेव मानेन ना, निर्विक्र वञ्चः श्रात्रेन करेन, निर्विक्र वञ्च विक्रय करेन, त्रिनि अग् वञ्चः उ मात्र एहे त्रिनिटि वेष क्षानिलेञ्च माञ्च इहेत्वे पात्रेन ना ॥ ११८ ॥

ENGLISH.—A Brahmin who knows but only the *Gayatri*, but who is thoroughly self-restrained is rather to be preferred ; but a Brahmin,—though he may know the three Vedas,—who is not self-restrained, who eats everything (i.e. prohibited food) and sells everything (i.e. prohibited things) is by no means to be preferred. (118).

शय्यासनेऽध्याचरिते श्रेयसा न समाविशेत् ।

शय्यासनस्थस्यैवैनं प्रत्युत्थायाभिवादयेत् ॥ ११९ ॥

PROSE.—श्रेयसा अध्याचरिते शय्यासने न समाविशेत् शय्यासनस्थः ( मुच्यते जायते ) प्रत्युत्थाय एनं अभिवादयेत् ॥ ११९ ॥

KULLUKA. — অথ্যেতি । অথ্যা চ আসনস্য অথ্যাসনং আতিরপ্রাচীনামিতি (ইন্দ্রকবছাবঃ) তস্মিন্ যেযসা বিদ্যাযধিকেন গুৰুণা অধ্যাপ্যরিতে অসাধারণেন সৌক্যে উত্তরকালমপি নাসীত । সযচ অথ্যাসনস্যো গুরাবাগতে উল্লাযাভিষাদনং কুর্যাত্ ॥ ১১৫ ॥

GRAMMAR. — 1. যেযসা কর্ণরি দ্বিতীয়া । প্রশস্য + ইন্দ্ৰসুঃ । 2. অধ্যাপ্যরিতে অধি - আঙ্ - অর + ক্তঃ কৰ্ম্মণি । 3. অথ্যাসনে অথ্যাস অসনস্য অথ্যাসনম্ আতিরপ্রাচীনামিতি ইন্দ্রকবছাবঃ তস্মিন্ অধিকরণে সপত্নী । গী + ক্যপ্ । আস + ল্যুট্ অধিকরণে । অশ্যিষ্ট আসিষ্ট । 4. সমাविशेत् সম্ - আঙ্ - विश + যাত্ । 5. অথ্যাসনস্যঃ অথ্যা চ আসনস্যঃ অথ্যাসনং ইন্দ্রকবছাবঃ অথ্যাসনে তিষ্ঠতীতি অথ্যাসনস্যঃ । অথ্যাসন - স্যা + কঃ । 6. প্রতুত্যায - প্রতি - উত্ - স্যা + ল্যপ্ সকারলোপঃ । 7. এনম্ অন্বাদেশে এনাदेशঃ । Acc. of অভিষাদয়েৎ ।

*Change of voice.* — সমাविशेत् অথ্যাসনস্যেণ অর্থ অভিষাদ্যেত ॥ ১১৫ ॥

BENGAL. — বিদ্যা ও বরসে শ্রেষ্ঠ গুরুজন যে শয্যা ও আসন নির্দিষ্টভাবে অধিকার করেন, সেই শ্রেষ্ঠ ব্যক্তি তাহা পরিভাগ করিবার পরেও বিদ্যা ও বরসে হীন-তর ব্যক্তি তাহাতে শয়ন বা উপবেশন করিবে না ; এবং বরঃ শয্যা বা আসনস্থ থাকি কালে তাদৃশ গুরুজন আগমন করিলে উখিত হইয়া তাঁহাকে অভিবাদন করিবে ॥ ১১৫ ॥

ENGLISH. — One should not sit on the very seat or bed occupied by his superiors, on the approach of superior, he if sitting on a seat or bed, should stand up by way of reception and salute him (by touching his feet). (119).

ऊर्हं प्राणा ज्युत्क्रामन्ति यूनः स्थविर आयति ।

प्रत्युत्थानाभिवादाभ्यां पुनस्तान् प्रतिपद्यते ॥ १२० ॥

PROSE. — স্থবিরে আয়তি ( সতি ) যূনঃ প্রাণাঃ ऊर्हं উত্ক্রামন্ति ( যুবা ) প্রত্যুত্থানাবিবাदाभ्याम् पुनः तान् प्रतिपद्यते ॥ ১২০ ॥

KULLUKA. — অস্বার্থবাদমাচ্ ऊर्হমিতি । যজ্ঞাত্ ণুনোঃ স্যবয়সৌ বধৌবিদ্যা-দিনা স্থবিরে আয়তি আগচ্ছতি সতি প্রাণা ऊर्हं উত্ক্রামন্ति দেহাভিনিগম্ণমিচ্ছন্তি তান্ ইত্যস্ব প্রত্যুত্থানাবিবাदाभ्यां पुनः मुस्यान् करोति तस्मादइत्यस्य प्रत्युत्थानाभिवादनं कुर्यात् ॥ ১২০ ॥

GRAMMAR.—1. স্থবিরে যস্য চ ভাবেন ভাবলক্ষণমিতি সপ্তমী । স্মা +  
কিরচ্ । 2. আযতি আ-ই+গত । সপ্তমী পুৰুষস্বৰ্ণে চ ভবতি । অগাৎ ।  
3. যুন্: শ্রেণে পক্ষী । যুবন্ যুবা যুন্: । 4. বাণা: Verb সপ্তকালনি ।  
5. উত্-ক্রম+অনি লট্ । অক্রমীত্ । 6. প্রত্যুত্থানচ অভিবাদ্য প্রত্যু-  
ত্থানামিবাভ্যো তাভ্যাম্ করণে তৃতীয়া । 7. তান্ Acc. of প্রতিপদ্যতে ।

*Change of voice.*—প্রাণো: সপ্তকম্যনে ( যুনা ) ন প্রতিপদ্যন্তে ॥ ১২০ ॥

BENGALI—বিদ্যা ও বৃদ্ধসে বৃদ্ধির (জ্যোত) ব্যক্তি আগমন করিলে অজবশক  
ব্যক্তিরা প্রাণ দেহ হইতে বহির্গমন করিতে চাহে, আগত জ্যোত ব্যক্তিকে প্রত্যাখ্যানপূর্বক  
অভিবাदन করিলে কনিষ্ঠের প্রাণ পুনর্বার সূস্থ হয়। অতএব জ্যোতকে প্রত্যাখ্যান ও  
অভিবাदन করি:ন ॥ ১২০ ॥

ENGLISH.—When an old man approaches, the vital breath of  
a youthful person moves upward (to pass out as it were). By  
rising up (for reception) and saluting (him) he gets it back (quieted  
down). (120).

অভিবাदनশীলস্য নিত্যং বৃদ্ধোপসেবিনঃ ।

চত্বারি সম্যবর্জন্তে আয়ুর্বিদ্যা যশো বলম্ ॥ ১২১ ॥

PROSE.—নিত্যং অভিবাदनশীলস্য বৃদ্ধোপসেবিনঃ আয়ু: বিদ্যা যশ: বলং চত্বারি  
সম্যবর্জন্তে ॥ ১২১ ॥

KULLUKA.—ইত্যথ ফলবাহু অভিবাदनশীলসেতি । উচ্যায় সর্বদা বৃদ্ধাভি-  
বাदनশীলস্য বৃদ্ধসেবিনঃ আয়ু:প্রজ্ঞাযশোবলানি চত্বারি সম্যক্ প্রকর্ষণ  
বর্জন্তে ॥ ১২১ ॥

GRAMMAR.—1. নিত্যম্ adv. connected with verbs in অভি-  
বাदनশীলস্য and বৃদ্ধোপসেবিনঃ । 2. অভিবাदनশীলস্য অভিবাदनং শীলং স্বभावো  
যস্য স: তস্য বহুব্রীহি: । 3. বৃদ্ধোপসেবিন: বৃদ্ধান্ উপসেবনে ইতি বৃদ্ধোপসেবী তস্য  
বৃদ্ধ-উপ-সেব+ণিনি: । 4. আয়ু: । 5. বিদ্যা । 6. যশ: । 7. বলম্  
same case with চত্বারি used as noun. 8. চত্বারি 'its verb  
সম্যবর্জন্তে ।

*Change of voice.*—আয়ুশা বিদ্যাযা যশসা বলেন চতুর্भि: সম্যবর্জ্যতে ॥ ১২১ ॥

BENGALI—সতত বৃদ্ধগণের অভিবাदनক ও সেবাকারী ব্যক্তিরা আয়ু, বিদ্যা, যশ  
ও বল এই চারিটিই বৃদ্ধি পায় ॥ ১২১ ॥

ENGLISH.—The duration of life, knowledge, fame and strength. these four,—go on increasing of him who is ever in the habit of saluting and respectfully serving the old. (121).

अभिवादात् परं विप्रो ज्यायांसमभिवादयन् ।

असौनामाहमस्मीति स्वं नाम परिकीर्तयेत् ॥ १२२ ॥

PROSE.—ज्यायांसं अभिवादयन् विप्रः अभिवादात् परं असौनामा अहं अस्मीति स्वं नाम परिकीर्तयेत् OR.....असौ नाम अहं अस्मीति..... ॥ १२२ ॥

KULLUKA.—सम्प्रत्यभिवादनविधिमाह अभिवादात्परमिति । ब्रह्ममभिवादयन् विप्रमभिवादात् परम् अभिवादये इति शब्दोच्चारणानन्तरम् अमुकनामाहमस्मीति स्वं नाम परिकीर्तयेत् स्वकीयनामविशेषमुच्चारयेत् । अतो नामशब्दस्य विशेषपरत्वात्-स्वनामविशेषोच्चारणानन्तरमभिवादनवाक्ये नामशब्दोऽपि प्रयोज्य इति मीमांसिणोविन्द-राजयोरभिधानप्रमाणम् । अतएव गातमः स्वनाम प्रोच्चाहमभिवादय इत्यभिवदन् । सांख्यायनोऽप्यसावहन्मा इत्यात्मनो नामादिशेदित्युक्तवान् । यदि च नामशब्दयथार्थत्वात् प्रयोगस्तदा अकारयस्य नामोऽन्ते इत्यभिधानात् प्रत्यभिवादनवाक्ये नामशब्दोच्चारणं स्यात् नच तत् कस्यचित् सम्मतम् ॥ १२२ ॥

KULLUKA EXPLAINED.—अभिवादात्परम् = “अभिवादये इति शब्दोच्चारणानन्तरम्” After uttering the words I salute. “असौ-नामा has been taken by Kulluka as an irregular compound word, and he explains it as “अमुकनामा” नाम may however be taken separately, but then the desired meaning cannot be deduced.

GRAMMAR.—1. ज्यायांसम् Acc. of अभिवादयन् ब्रह्म + ईयसु । 2. विप्रः Nom. to the verb कीर्तयेत् । 3. अभिवादात् अन्यारादिति पञ्चमी in connection with परम् । 4. असौ-नामा अहः नाम यस्य सः असौ-नामा (Irregular) बहुव्रीहिः । Or असौ अहम् and take नाम as separate, अव्ययम् which means अमुकेन नावा प्रसिद्धः अहम् । 5. स्वं qualifies नाम Acc. of परिकीर्तयेत् । 6. परिकीर्तयेत्—परि- कृत्—णिच् स्तौणे + यात् । कीर्तयति अचोक्तत्वं अचिकीर्तन् । कीर्तते ।

Change of voice.—अभिवादयता विप्रेष असौ-नामा मया कृत्यते इति नाम्ना कीर्तते ॥ १२२ ॥

BENGALI.—ब्राह्मणादि वर्षजस्य वृद्धके अतिवादन करिवार काले “अतिवादन करितेहि” এই মল উচ্চারণ করিবার আবাবহিত গত্রেই “আমি অমুকনামী (বাচ্চ) হই” ইহা বলিয়া নিজের নাম উচ্চারণ করিবে। (অর্থাৎ “অতিবাধন করি, আমি বজ্রবন্ত নন্দী” একুণ বলিবেন ॥ ১২২ ॥

ENGLISH.—A Brahmin saluting an old man should after salutation utter his own name thus, “I am so and so, i.e., my name is so and so.” (122).

नामधेयस्य ये केचिदभिवादं न जानते ।

तान्प्राज्ञोऽहमितिब्रूयात्स्त्रियःसर्वास्तथैवच ॥ १२३ ॥

PROSE.—ये केचित् नामधेयस्य अभिवादं न जानते ; प्राज्ञः तान् ( अभिवादये )

अहमितिब्रूयात् सर्वाः स्त्रियः तथैव ब्रूयात् ॥ १२३ ॥

EXPL.—ये केचित् अभिवादाः जनाः नामधेयस्य उच्चारितस्य अभिवादं अभि-  
वादये एवमशर्माह इत्यस्य अर्थं संस्कृतानभिज्ञत्वात् न जानते वोक्तं न शक्नुवन्ति तान्  
अभिवादनीयान् जनान् प्राज्ञः विद्वान् अहमिति अर्थात् अभिवादये अहं इतिमात्रं  
न तु स्त्रीयनानोच्चारणपूर्वकम् ब्रूयात् तथा अभिवादनीयाः सर्वाः स्त्रियः ब्रूयात्  
अभिवादनकाले इत्यर्थः ॥ १२३ ॥

KULLUKA. — नामधेयस्येति । नामधेयस्य उच्चारितस्य सतो ये केचिदभिवादाः  
संस्कृतानभिज्ञतया अभिवादार्थं न जानन्ति तान् प्रत्यभिवादानेऽप्यसमर्थत्वात् प्राज्ञ  
इत्यभिवादशक्तिविज्ञोऽभिवादयिता अभिवादयेऽहमित्येवं ब्रूयात् स्त्रियः सर्वास्तथैव  
ब्रूयात् ॥ १२३ ॥

GRAMMAR. — 1. केचित् Nom. to the verb जानते । 2. नामधेयस्य  
शेवे षष्ठी । नाम + धेय स्त्रार्थे । 3. अभिवादम् Acc. of जानते । अभि + वद +  
अच् । 4. प्राज्ञः जानातीति ज्ञः विशेषणश्च प्राज्ञः स्त्रार्थे अच् । 5. तान् गौणकर्त्रे  
of ब्रूयात् ब्रूयातीर्हकर्मकत्वात् अहमिति वाक्यार्थः मुख्यं कर्म । 6. सर्वाः  
qualifies स्त्रियः । 7. स्त्रियः गौणं कर्म of ब्रूयात् । In the accusative  
case plural we have स्त्रीः as well as स्त्रियः by वामशसोः i. e. अनि  
असि च विभक्तौ स्त्रीशब्दस्य इयङ् वा स्यात् । स्त्री स्त्रियम् — स्त्रियौ, स्त्रियः स्त्रीः ।  
8. ब्रूयात् । ब्रू + यात् । ण्वीप् ।

Change of voice.—येः केचित् अभिवादः न ज्ञायते ते प्राज्ञेन अहमिति  
उच्येरन् सर्वाः स्त्रियः तथा उच्येरन् ॥ १२३ ॥



BENGALI.—যদি অভিবান্দনীয় ব্যক্তি উচ্চারিত ন্যায়সম্বোধনে অভিবান্দনের অর্থ বুঝিতে না পারেন, তবে তাঁহাকে “আমি অভিবান্দন করি” এইমাত্র বলিবে; অভিবান্দন যোগ্য স্ত্রীলোকদিগকেও একরূপ বলিবে ॥ ১২০ ॥

ENGLISH.—A wise man should address those who do not understand the meaning of the same so uttered, in the following form:—“I bow to you”. And he should address all women (deserving of respect) in the same way. (123).

ভোঃশব্দং কীৰ্ত্তয়েদন্তে স্বস্য নাম্নোঃমিবাদনে ।

নাম্নাং স্বরূপभावो हि भोभाव ऋषिभिः स्मृतः ॥ १२४ ॥

PROSE.—অমিবাদনে স্বস্য নাম্নাঃ অন্তে ভোঃশব্দং কীৰ্ত্তয়েৎ, ভোभावঃ হি ঋষিभिঃ নাম্নাং স্বরূপभावঃ স্মৃতঃ ॥ ১২৪ ॥

KULLUKA.—ভোঃ শব্দমিতি অমিবাদনে যত্রাস প্রযুক্তং তস্থান্ভে ভোঃ শব্দং কীৰ্ত্তয়েৎ অমিবাৎসম্বোধনায়ম্ অতএবাঙ্চ নাম্নামিতি ভো ইত্যস্য গো भावः सत्ता साऽमिवात्तनाम्नां स्वरूपभाव ऋषिभिः स्मृतः । तस्मादेवमभिवादनवाक्यम् अभिवादये शुभशर्माहर्मास्त्र भोः ॥ १२४ ॥

KULLUKA EXPLAINED.—নাম্নাং = “অমিবাৎতনাম্ভাম্” অমিবাৎতনীয়স্য “নাম্নাং স্বরূপभावঃ” স্বরূপস্য অবস্থানিশিষ্যঃ অতোহন ভোঃ শব্দঃ অমিবাৎতনীয়জনস্য নাম্নাঃ প্রতিনিধিরিষ । ভোঃশব্দপ্রয়োগেন অমিবাৎতনং অমিবাৎতস্য জনস্য নাম্না এব আচ্ছাদনং ভবেৎ ।

GRAMMAR.—1. অমিবাৎতনে বিষয়াধারে সতমো । 2. স্বস্য শিষ্যে বহী । 3. নাম্নাঃ শিষ্যে বহী । 4. অন্তে অধিকরণে সতমো । 5. ভোঃ শব্দম্ Acc. of কীৰ্ত্তয়েৎ ভোঃ ইতি শব্দঃ । ভোঃশব্দঃ কৰ্ম্মধারয়ঃ । তম্ । 6. ভোभावঃ ভোঃ ইত্যস্য भावः भोभावः बह्वीसमासः । Same case with स्वरूपभावः । भोस् is the word. It becomes भोः । भोः + भावः = भोभावः by हलि सर्वेषाम् अर्थात् सर्वेषां मतं न हलि परं स स्थानीय रुकारजात यकारस्य लोपः स्यात् । किन्तु भोः अच्युत becomes भोरु अच्युत and then भोयच्युत । भोः देवाः यकार drops we get भो देवाः । 7. भोःशब्दम् भोः इति शब्दः भोःशब्दः कर्मधारयः । तम् । भोस् + शब्दः = भोः शब्दः भोः remains as it was, because श is not अच् वदे भो भगो अघो अवर्णपूर्वस्य योऽग्निः । 8. ऋषिभिः कर्तरि द्वितीया । 9. नाम्नाम् शिष्ये बह्वी । 10. स्वरूपभावः स्व रूपं स्वरूपं तस्य भावः ।

*Change of voice.*—भोःशब्दः कीर्त्तयत । भोभावेन...स्वरूपभावेन स्मृतेन भूयते ॥ १२४ ॥

BENGALI.—अभिवादनकाले अभिवादनकारी वाक्त्रि निज नामेर पत्रे छोः नाम उच्चारण करिवे, केनना ब्रविगण बलिशाहेन, अभिवादाने छोः शब्देर सत्ता अति-पावनीय वाक्त्रि नानेर रूप विशेष बलिशा गथा । अठएव अभिवादनकाले “अभि-वादाने अमुक शर्माहमस्मि छोः” ऐकरूप बलिबे ॥ १२४ ॥

ENGLISH.—In (the time of) saluting, one should mention the word “Bhoh,” (oh), after having uttered his own name. The existence or mention of the word “Bhoh” is looked upon by sages as a representative of the name (of the person addressed). (124).

आयुष्मान् भव सौम्येति वाच्यो विप्रोऽभिवादने ।

अकारश्चास्य नाम्नोऽन्ते वाच्यः पूर्वोच्चरः प्रुतः ॥ १२५ ॥

PROSE.—अभिवादने ( कृते सति ) विप्रः आयुष्मान् भव सौम्येति वाच्यः, अस्य नाम्नः अन्ते अकारश्च पूर्वोच्चरः प्रुतः कार्यः ॥ १२५ ॥

EXPL.—अभिवादने अभिवादकेन अभिवादने कृते सति, विप्रः अभिवादकः विप्रादिः, आयुष्मान् विरायः, भव सौम्य शोभन इति वाच्यः वक्तव्यः अभिवादनोद्येन वर्त्तन, अस्य अभिवादकस्य नाम्नः अन्ते वर्त्तमानः अकारः अकारादिस्वरः, अन्ते अग्रन्ते सति पूर्वोच्चरः व्यञ्जनात् पूर्ववर्त्ती स्वरः प्रुतः विमाताविशिष्टः कार्यः करणीयः । अकारश्च अन्ते स्वरमात्रं उपलक्षितम् ॥ १२५ ॥

KULLUKA.—आयुष्मानिति । अभिवादने कृते प्रत्यभिवादयित्वा अभिवादको विप्रादिः आयुष्मान् भव सौम्येति वाच्यः । अस्य अभिवादकस्य यन्नाम तस्यान्ते योऽकारादिः स्यो नाम्नःकारान्तस्त्वनियमाभावात् स प्रुतः कार्यः स्वरापेक्षये-दकाराद्यन्तत्वं व्यञ्जनात्पि नास्ति सम्भवात् पूर्वं नामगतमच्चरं संज्ञितं यस्य स पूर्वोच्चरः तेन नागन्तरपक्षे चाकारादिः स्वरः प्रुतः कार्यः । एतच्च वाक्यस्य टेः प्रुतः उदात्त इत्यस्यानुवृत्तौ प्रत्यभिवादे अशुद्ध इति प्रुतं स्वरम् पाणिनिः स्मृतमुक्तवान् । व्याख्यातश्च वृत्तिकृता वामनेन टेरिति किं व्यञ्जनात्स्वैव टेः प्रुतो यथा स्यादिति तस्यादोदृष्टं प्रत्यभिवादनवाक्यम् आयुष्मान् भव सौम्य शुभशर्क्यन् एवं चयिष्यस्व वलवर्क्यन् एवं वैश्यस्य वसुभूते । प्रुतो राजन्विशं वेति कात्यायनवचनात् अविश-वैश्योः पक्षे प्रुतो न भवति । शूद्रस्य प्रुतो न कार्यः, अशुद्ध इति पाणिनिवचनात् । स्त्रियामपि निषेध इति कात्यायनवचनात् स्त्रियामपि प्रत्यभिवादनवाक्ये न प्रुतः गोविन्दराजसु ब्राह्मणस्य नास्ति शर्कोपपदं नित्यं प्रागभिवाद्य प्रत्यभिवादनवाक्ये आयु-

आयु भव सीव्य मद्र इति निष्पपदीदाहरणसीपपदीदाहरणानभिज्ञत्वमेव नि-  
ज्ञापयति । धरणीधरोऽपि आयुष्यान् भव सीव्येति सम्बुद्धिविभक्त्यान् मनुवच-  
पश्यन्नपि असम्बुद्धिप्रथमैकवचनानाम् अनुज्ञशर्था इत्युदाहरणं विषयपर्युपेक्षणी-  
एव ॥ १२५ ॥

KULLUKA EXPLAINED. — Panini's Grammar is held as a  
स्मृतिः, Sankaracharya on more than one occasion cites Pani-  
ni's Sutras as "इति पाणिनि स्मृतेः ।" Hence Kulluka Bhatta cites  
Panini and Katyayana as supplementing Manu's code here.  
Manu lays down "नास्ति अन्ते अकारः पूर्वोचरो वा यथाप्राप्तं द्रुतः कार्यः ।"  
Panini lays down वाक्यस्य टिः द्रुत उदात्तः प्रत्यभिवादेऽगुद्रे । i. e. when  
a Sudra is not the saluter, the टिः of the सम्बोधनवाक्य should  
be द्रुतः and उदात्तः । Brittikar explains टिः as व्यञ्जनान्तस्मैव टिः स्वरान्त-  
तु स्वर एव टिः । Panini prohibits द्रुतता as to the Sudra, Katya-  
yana prohibits द्रुतता in the case of females also. द्रुतता of a  
Khatritya and Vaishya saluter's name is optional. Thus Manu  
and Panini together make the injunctions complete.

आयुष्यान् भव देवदत्तः<sup>3</sup> । आयुष्यान् भव इन्द्रवर्धनः<sup>3</sup> । आयुष्यान् भव इन्द्र-  
पालितः<sup>3</sup> । The figure 3 indicates द्रुतता, underlining indicates उदात्त  
स्वरता । It will be द्रुत and उदात्त both. अकारः here indicates  
vowels generally.

.GRAMMAR.—1. आयुष्यान् आयुष् + मतप् । २-उचि जित् । विशेष-  
विशेषण of त्वम् understood. 2. सीव्य सम्बोधनेव इति प्रथमा । 3. वाच्यः  
अच् + ण्यत् । शब्दसंज्ञायां वाक्यम् । कर्मणि ; गौण कर्म being विप्रः which  
is उक्त or expressed by ण्यत् here. मुख्यं कर्म वाक्यार्थे इतिशब्दगम्यः ।  
4. अभिवादान्ते भावे समसो । 5. अस्य जेवे षष्ठी refers to अभिवादकस्य  
understood. 6. नास्तिः जेवे षष्ठी । 7. अन्ते अधिकरणम् of विद्यमानः  
क्रिया understood which is connected with अकारः । 8. अक्षारः  
Acc. of वाच्यः अ + कारः । 9. पूर्वोचरः पूर्व अक्षरं संज्ञितं यस्य स पूर्वोचरः  
qualifies अकारः which means स्वरमात्रम् । 10. द्रुतः द्रु + त्तः कर्षणि ।  
द्रुतः is defined उच्चारोऽङ्गस्यदीर्घद्रुतः i. e. vowels which may be

measured short, long and prolated just like उ as uttered by a cock when crowing “उ-ऊ-ऊ” are called respectively उ, दीर्घ and वृत्त । Hence we have अ-आ-अ, इ-ई-इ. We may note here that according to Panini the vowels are classified as वृत्त, दीर्घ वृत्त, उदात्त अनुदात्त स्वरित, and मानুসামিক, নিরনুসামিক । They are altogether 132 in number. We have ১৮ অ, ১৮ ই, ১৮ উ, ১৮ ঋ, ১২ এ as it has no दीर्घ, ১২ ঐ, ১২ ঔ, ১২ ঋ as they have no वृत्त । Thus there are 132 vowels, of these only वृत्त is referred to in the text. Therefore it is inaccurate to say that there are only 14 vowels as stated in Kaláp “तच्चादौ अनुर्द्धं स्वराः” । This was done to meet ordinary cases.

*Change of voice.* — वाच्यেन विप्रैश्च भूयते... अकारिणः पूर्वोत्तरिणः वृत्तेन वाच्येन भूयते ॥ १२५ ॥

BENGALI.—অভিবাদন করা হইলে, অভিবাণ্য ব্যক্তি অভিবাদনকারীকে হে সৌম্য দীর্ঘাণুঃ ইও এই কথা বলিবেন, এবং অভিবাদনকারীর নাম স্বরাস্ত হইলে নামের অন্ত্য স্বর, এবং নাম বাঞ্ছনাস্ত হইলে অন্ত্য বঞ্ছনবর্ণের পূর্ববর্তী স্বর দ্রুত উচ্চারণ করিবেন । (অভিবাদনকারী ত্রাক্ষণ হইলে বলিবে “আয়ুযান্ তব শুভশশ্নু<sup>৩</sup>,” কত্রিয় হইলে “আয়ুযান্ তব বলবশ্নু<sup>৩</sup>,” বৈষ্ণব হইলে বলিবে “আয়ুযান্ তব বশ্বভূ<sup>৩</sup>,” কত্রিয় ও বৈষ্ণব নামে নিকল্পে দ্রুত হইবে না । অভিবাদনকারী শূদ্র ? স্ত্রীলোকের নামান্তর কোমল ও দ্রুত উচ্চারণ করিয়া প্রত্যভিবাদন করিবে না । প্রত্যভিবাদন বাক্যে অভিবাদকের নাম ও গোত্র উল্লিখিত না হইলে দ্রুত হইবে না । আয়ুযান্ এষি । বিজ্ঞাতি অভিবাদকের নামের পরিবর্তে ভোঃ শব্দ ব্যবহার করিলে ভোঃ দ্রুত হইবে । আয়ুযান্ এষি ভোঃ ।) ১২৫ ॥

ENGLISH.—When salutation is made, a Brahmin should be addressed in return thus :—“May you have a long life, good one” and the final vowel such as a &c., of his name, and (in the case of the name ending in a consonant) the vowel preceding last consonant should be pronounced as a prolated vowel. (125).

यो न वेत्तमभिवादस्य विप्रः प्रत्यभिवादनम् ।

अभिवाद्यः स विदुषा यथा मुदस्तायैव सः ॥ १२६ ॥

PROSE.—यः विप्रः अभिवाद्स्य प्रत्यभिवादनं न वेति स विदुषा न अभिवाद्यः  
यथा शुद्धः स तथा एव ॥ १२६ ॥

KULLUKA.—यो न वेत्तीति । यो विप्रोऽभिवादनस्यानुरूपं प्रत्यभिवादनं न जानाति असावभिवादनविदुषापि स्वनामोच्चारणायुक्तविधिना शुद्ध इव नाभिवाद्यः । अभिवादनद्वयमिति शब्दोच्चारणमावन्तु वरणगृहणादिभ्यस्त्वनिर्घिहं प्रागुक्तत्वात् ॥ १२६ ॥

GRAMMAR. - 1. अभिवादनस्य शिष्ये षष्ठी । 2. प्रत्यभिवादनम् Acc. of वेत्ति ।

*Change of voice.*—येन विप्रैः...प्रत्यभिवादनं न विद्यते तेन अभिवायेन न यथा शूद्रेण तेन तथा भूयते ॥ १२६ ॥

BENGALI.—সে ব্যক্তি অভিবাদনের অনুরূপ প্রত্যভিবাদন জানেনা বিধান ব্যক্তি তাহাকে উক্ত নিয়মে অভিবাদন করিবেন না, শূদ্র যেক্রপ তাহাকে সেইরূপ জানে চরণস্পর্শ না করিয়া আনি অভিবাদন করি এই কথা মুখে উচ্চারণ করিয়া একটু অবনত হইবে মাত্র ॥ ১২৩ ॥

ENGLISH.—A Brahmin who does not know how to return the salutation should not be greeted by a learned man. He is as good as a *Sudra*. (126).

ब्राह्मणं कुशलं पृच्छेत् जज्ञबभूवनामयम् ।

वेश्यं क्षेमं समागम्य शूद्रमारोग्यमेव च ॥ १२७ ॥

PROSE. — समागम्य (समानवयस्कं अनभिवादकं अपि) (अवरवयस्कं अनभिवादकं ब्राह्मणं च) कुशलं, चतुर्वयस्कं अनामयं वैश्यं क्षेमं, शूद्रं आरोग्यं पृच्छेत् ॥ १२७ ॥

KULLUKA.—ब्राह्मणमिति । समागम्य समागमे कृते अभिवादनमवरवयस्कं समानवयस्कम् अभिवादनमपि ब्राह्मणं कुशलं क्षत्रियमनामं वैश्यं क्षेमं शूद्रमारोग्यं पृच्छेत् । अतएव आपस्तम्बः कुशलमवरवयसं समानवयसं वा विप्रं पृच्छेत्, अनामं क्षत्रियं क्षेमं वैश्यम् आरोग्यं शूद्रम्, अवरवयसमभिवादान् वयस्यसमभिवादनमपीति, मन्थर्मेवापस्तम्बः स्फुटयति अथ । गोविन्दराजन्तु प्रकरणात् प्रत्यभिवादनकस्यैव कुशलादिप्रश्नाच्च, तन्न अभिवादकेन सह समागम्यस्यार्थेप्राप्तत्वात् समागम्येति निष्प्रयो-जनानुवादप्रसङ्गात् । अथ कुशलक्षेमशब्दयोरनामशारोग्यपदयोश्च समानार्थत्वाच्च-विशिष्टोच्चारणमेव विवक्षितम् ॥ १२७ ॥

GRAMMAR.—1. समागम्य सम् - चा - गम + ल्यप् । 2. ब्राह्मणम् । 3. चतु-

वसुम् । 4. वैश्यम् । 5. शूद्रम् All नीचकर्त्र्य of पृच्छेत् । चत् । वन्धवी यस्य स चत्तुवन्धुः निरुद्धचत्तु इति । सुख्यार्थः अत्र चत्तुयमावम् । 6. कुशलम् । 7. अनामयम् । 8. क्षेमम् । 9. आरोग्यम् All मुख्यकर्त्र्य of पृच्छेत् आनयस्य अभावः अनामयः अभिवाद इतिवत् अव्ययीभावेन सह तत्पुरुषस्य विकल्पः अव्ययीभावे अनामयम् । न विद्यते रोगो यस्य स अरोगः बहुव्रीहिः । तस्य भावः आरोग्यम् । अरोग + यञ् । 10. पृच्छेत् प्रच्छ + यात् । अप्राचीत् ।

*Change of voice.*—ब्राह्मणः कुशलम् चत्तुवन्धुः अनामयम् वैश्यः क्षेमम् शूद्रः आरोग्यम् पृच्छेत् ॥ १२७ ॥

BENGALI.—नगागम इहेबार परे अतिवापन ना करिलेओ समानवपन एवः अतिवापन अवपन ब्रह्मणके कुशल, अतिवापन अनामय, वैश्वके क्षेम एवः शूद्रके आरोग्य जिज्ञासा करिवे । (अर्थात् कुशल, अनामय, क्षेम ओ आरोग्य मन् एकार्थ-शब्द इहेलेओ भिन्न भिन्न वर्णके आलोकात् भिन्न भिन्न नञे नञन जिज्ञासा करिवे) ॥ १२७ ॥

ENGLISH.—After meeting, a Brahmin should be inquired about his health with the word *Kusala* (welfare); a Kshatriya with the word *anamaya* (want of disease); a *Vaisya* with the word, *Kshema* and a *Sudra* with the word *Arogya* (the state of being free from diseases). (127).

अवाच्यो दौक्षितो नाम्ना यवोयानपि यो भवेत् ।

भोभवत्पूर्वकन्वेनमभिभाषेत धर्मवित् ॥ १२८ ॥

PROSE.—यवोयान् अपि यः दौक्षितः भवेत् ( सः ) नाम्ना अवाच्यः, धर्मवित् एनं भोभवत्पूर्वकं अभिभाषेत ॥ १२८ ॥

KULLUKA.—अवाच्य इति । प्रत्यभिवादनकाले अन्वदा च दौक्षणीयातः प्रत्यवाच्यव्यञ्जनात् कनिष्ठोऽपि दौक्षितो नाम्ना न वाच्यः । किन्तु भोभवत्पूर्वकं दौक्षितादिशब्दैस्तत्कर्षाभिधाधिभिरेव धार्मिकोऽभिभाषेत । भो दौक्षित इदं कुह भवता यजमानेन इदं क्रियतामिति ॥ १२८ ॥

GRAMMAR.—1. यवोयान् युवन् + ईयसु । 2. दौक्ष् + णः or दौक्षा + इतच् । 3. नाम्ना प्रकृत्यादिभ्यस्तृतीया । 4. अवाच्यः न वाच्यः प्रसज्यप्रतिषेधस्य समासः । 5. धर्मवित् धर्मं वेत्तीति धर्मवित् उपपद समासः धर्म + विद + क्तिप् । 6. एनम् अन्वादेशे एनादिशः Acc. of अभिभाषेत । 7. भो भवत्पूर्वकम् Adv. added to अभिभाषेत । भोच भवत् च पूर्व यस्मिन् तद् वया स्नात् तथा ।

बहुव्रीहिः । भोस् शब्दस्य सकारस्य लोपः इति परे इति विसर्गाभावः ।

४. अभिभाषेत अभि - भाव + ईत ।

*Change of voice.*—यवौयसा...येन दीक्षितेन भूयते तेन नाम्ना चवाच्येन भूयते धर्मविदा अथ अभिभाष्येत ॥ १२८ ॥

BENGALI.—ब्रह्मे कनिष्ठे वाङ्मि दीक्षित इहिले ( अर्थात् कोन पञ्च शेष करिष्य अवबुध ज्ञान करिले ) एतादृशवादन कालेई इहेक, कि अञ्च समयेई इहेक, ताहार नाम उच्चारण करिष्य कथा बनिबे ना, किञ्च धार्मिक वाङ्मि এইরূপ वाङ्मিকে ভো ও ভবৎ শব্দ উচ্চারণে সম্ভাষণ করিবেন; যথা “ভো দীক্ষিত, বঙ্গমান মহাপ্র, এরূপ কল্পন,” এইরূপ বলিবে ॥ ১২৮ ॥

ENGLISH.—A person who has got initiated into a sacrifice should not be called by his name, though he may be junior in age. A pious man conversant with rules should address him with the words “Bhoh” (oh), and “Bhavat” (your Honour). (128).

परपत्नी तु या स्त्री स्यादसम्बन्धा च योनिः ।

तां ब्रूयाद्भवतीत्येवं सुभगे भगिनीति च ॥ १२९ ॥

PROSE.—या स्त्री परपत्नी योनिः च असम्बन्धा तां भवति इत्येवं सुभगे भगिनी इति च ब्रूयात् ॥ १२९ ॥

KULLUKA.—परपत्नी इति । या स्त्री परपत्नी भवति असम्बन्धा च योनिः इति स्वस्मादिर्न भवति तामनुप्रयुक्तसम्बाधकत्वात् भवति सुभगे भगिनीति वा. वदेत् । परपत्नीयङ्गत्वात् कन्यायां नैष विधिः । स्वसुः कन्यादेस्त्वायुषत्यादिपदैरभिभाषणम् ॥ १२९ ॥

GRAMMAR.—1. परपत्नी परस्य पत्नी परपत्नी । पत्युर्गुं यज्ञसंयोगे इति मुक् ऊँप् । रूपं नदीशब्दवत् । शूद्रस्य तु पत्नीष पत्नी यज्ञसंयोगाभावात् । रूपं पत्नी पत्नीयौ पत्नीयः इत्यादि । गव - पति + नी निपातनात् ( Bhattoji ). 2. असम्बन्धा न विद्यते सम्बन्धः यस्याः सा बहुव्रीहिः । 3. योनिः करणे लतीया । 4. ताम् गौणं कर्म of ब्रूयात् । 5. सुख्यं कर्म भवतीत्येवम् सुभगे भगिनीति च इति वाक्यार्थः । 6. भवति सम्बोधने प्रथमा । भा + उवतु भवती । भू + शब्द = भवन्ती । 7. सुभगे सु भोभनो भगः ऐश्वर्ये यस्याः सा सुभगा । सम्बोधने । 8. भगिनि भग + इनि + ऊँप् । सम्बोधने प्रथमा । भगिनीति ग-ञ्जीलमिति शीहोदनिस्त्वे प्राप्तम् । वस्तुतस्तु भगशब्दः सुख्यार्थे तथापि गान्धीशब्दं गत इति शीहोदनि स्वेवावगम्यते । एवं भगवदादिशब्दाश्च ।

*Change of voice.*—পরপরা যথা সম্বন্ধযা সূচ্যেত সা.....  
 হুচ্যেত ॥ ১২৫ ॥

BENGALI.—যে স্ত্রী পরের পত্নী অথচ যিনি ভগিনী অভূতি সম্বন্ধস্থিত নহেন, সম্ভাষণকালে তাহাকে “ভবতি” “সুভাগে” অথবা “ভগিনি” বলিয়া সম্বোধন করিবে। বাহ্য পরিণয় হয় নাই সেই কস্তার প্রতি এক্ষণ সম্বোধন করিবে না। ভগিনীর কস্তা অভূতিকে আবৃত্তি অভূতি শব্দে সম্বোধন করিবে ॥ ১২৫ ॥

ENGLISH.—A woman, who is another man's wife, and is not related by birth, should be addressed as “respected madam,” “good lady” or “sister” (129).

মাতুলাংশ পিতৃব্যংশ স্বশুরানৃতিজো গুরুন্ ।

অসাবহমিতি ব্রূয়াৎ প্রত্যুত্থায় যবীয়সঃ ॥ ১২০ ॥

PROSE.—যবীয়সঃ মাতুলান্ পিতৃব্যান্ অ স্বশুরান্ কৃতিজঃ গুরুন্ প্রত্যুত্থায়  
 অসৌ অহম্ ইতি ব্রূয়াৎ ॥ ১২০ ॥

KULLUKA.—মাতুলাংশেতি। মাতুলাদীন্ আগতান্ কনিষ্ঠান্ আসনাদুত্থায়  
 অসাবহমিতি বদেৎ নামিবাদ্যেৎ অসাবিতি স্বনামনির্দেশঃ। সুখিষ্টাঃ সন্তু গুরু  
 ইত্যুপকৃত্য জ্ঞানব্রহ্মতপোব্রহ্মণীরাপি হারীতৈন গুরুত্বকীর্তনাত্ তথেষ কনিষ্ঠযোরাপি  
 সম্ভবাত্ তদ্বিশয়োঃ গুরুশব্দঃ ॥ ১২০ ॥

GRAMMAR.—1 যবীয়সঃ যুবন্ + ইয়সুঃ। (Qualifies মাতুলান্ &c. &c.)  
 2. মাতুলান্ Acc. of ব্রূয়াৎ। মাঢ + ডুলব্। মাতুর্ভাটা। 3. পিতৃব্যান্  
 পিতুর্ভাটা পিতৃব্যঃ। পিতৃ + ব্যত্। By পিতৃব্য মাতুল মাতামহ পিতামহাঃ।  
 4. স্বশুরান্ য (আয়) — অশৃঙ্ ধাতু + চরন্ by জাবশেরাসৌ। স্বশুরঃ।  
 5. কৃতিজঃ কৃতু + যজ + জিপ্ কৃতুমতৌ বা যজন্তৌতি কৃতিজঃ তান্। 6. গুরুন্  
 Acc. of ব্রূয়াৎ। 7. প্রতি — উত্ — স্যা + ল্যপ্। 8. অসৌ qualifies অহম্  
 Nom. to the verb মবাসি understood। 9. ইতি মুখ্য কৰ্ম্ম of ব্রূয়াৎ।

*Change of voice.*—যবীয়াসঃ মাতুলাঃ পিতৃব্যাঃ স্বশুরাঃ কৃতিজাঃ  
 গুরুঃ.....ইতি চত্বেরন্ ॥ ১২০ ॥

BENGALI.—যঃকনিষ্ঠে মাতুল, পিতৃব্য, স্বশুর, পুত্রোহিত, ও জ্ঞানব্রহ্ম উপো-  
 বৃত্ত ভরত আগমনে গাজোখান করিয়া আমি অসুখ এইরূপে নিজের নাম উচ্চারণ  
 করিবে কিছু পাদ গ্রহণ পূর্বক অভিবাদন করিবে না ॥ ১২০ ॥

ENGLISH.—One should rise up for reception and say ‘I am so  
 and so’ (but not touch the feet of) maternal uncles, father’s



brothers, fathers-in-law, priests and preceptors who are junior in age. (130).

मातृषसा मातुलानी ऋश्रूरथ पितृषसा ।

सम्पूज्या गुरुपत्नीवत् समास्ता गुरुभार्यया ॥ १३१ ॥

PROSE. — मातृषसा मातुलानी पितृषसा ऋश्रूरथ गुरुपत्नीवत् पूज्या ( यतः ) ताः गुरुभार्यया समाः ॥ १३१ ॥

KULLUKA. — मातृषसेति । मातृषसादथो गुरुपत्नीवत् प्रत्युत्थानाभिवाद-  
नासनदानादिभिः सम्पूज्याः । अभिवादनप्रकरणादभिवादनमेव सम्पूजनं विज्ञायते  
इति समास्ता इत्यवोचत् गुरुभार्यासमानत्वात् प्रत्युत्थानादिकमपि कार्यं  
मित्यर्थः ॥ १३१ ॥

GRAMMAR.—1. मातृषसा मातृषसा पक्षे मातृषसा । षष्ठा विकल्पे  
चलुक् by विभाषा स्वसृपत्योः । षष्ठी having स्वसृ and पति after it elides  
optionally in a compound. Thus मातृषसा and मातृषसा are both  
compounds. मातृषसा here स् becomes ष by मातृपितृभ्यां स्वसा i. e.  
स becomes ष when स्वसृ is compound with मातृ and पितृ and  
षष्ठी is not retained. But when षष्ठी drops optionally and it is  
a compound still we have मातृःस्वसा and मातृःषसा by मातृःपितृभ्यां-  
सन्वतरस्याम् ; in such चलुक् समास स becomes ष optionally when  
placed after माता and पिता । When there is no compound, we  
have मातृःस्वसा, पितृःस्वसा in which case no question of षत्व arises.  
2. Similarly पितृषसा—we have (a) पितृःस्वसा पितृषसा पितृः—स्वसा,  
पितृः—षसा । 3. मातुलानी मातृर्भाता मातुलः मातृ + तुलच् । मातुलस्य पत्नी  
मातुलानी चातुक् by इन्द्र वरुणभव &c. &c. डीष् by पुंयोगादाख्यायाम् । 4. ऋश्रूर-  
थश्रूरस्य पत्नी ऋश्रूरः । ऋश्रूर + ऊङ् then ऋश्रूरस्त्रोकाराकार लोपश्च । 5. गुरु-  
पत्नीवत् गुरोः पत्नी गुरुपत्नी षष्ठी समासः पत्युर्गुण्यश्चसंयोगे इति स्त्रियां पत्नी ऊीप् ।  
गुरुःपतिर्यस्या इति विशदितुं बहुव्रीहौ गुरुपत्नी or गुरुपतिः but that is not  
the meaning here. गुरुपत्नी + वति तेनतुल्यं क्रियाच्चेद्वतिरिति । 6. सं-  
पूज्याः सम् - पूज् + य + कर्त्तृणि । 7. ता Nom. to भवन्ति understood.  
8. गुरुभार्यया-द्वतीया by तुल्यार्थे रतुलोपमाभ्यां द्वतीया अन्यतरस्याम् । पक्षे  
षष्ठी । Connected with तुल्यार्थक word समाः गुरोर्भार्या गुरुभार्या षष्ठी  
समासः । भ + षत् भार्यः भरणीय स्त्रियां भार्या ।

*Change of voice.*—मातृव्यस्या.....संपूज्याभिः भूयते । ताभिः...  
समाभिः भूयते ॥ १३१ ॥

BENGALI.—बानी, मातृलानी, गिनि ও শাউড়ীকে জননীও পিতৃগণপুত্রক প্রণাম  
করিলে; কেননা ইহারা সকলেই মাতার তুল্য ইহারা আশ্রয়ন করিলে অত্যাশ্রয়ন  
করিলে ॥ ১৩১ ॥

ENGLISH.—A mother's sister, a maternal uncle's wife, mother-  
in-law, and father's sister are to be respected like the wife of a  
Guru or a teacher of the Vedas...They are equal to the wife of a  
Guru. (131).

भ्रातृभार्यापिसंग्राह्या सवर्णाहन्त्यहन्त्यपि ।

विप्रोथ तूपसंग्राह्या ज्ञातिसम्बन्धियोषितः ॥ १३२ ॥

PROSE.—सवर्णा भ्रातृभार्या अहनि अहनि अपि उपसंग्राह्या ज्ञाति-  
सम्बन्धियोषितः न विप्रोथ उपसंग्राह्याः ॥ १३२ ॥

KULLUKA.—भ्रातृभार्यात् । भ्रातृः सजातीयो भार्या ज्येष्ठा, पुत्राप्रकरणात्  
उपसंग्राह्या पादयोरभिवाद्या अहन्त्यहनि प्रत्यहमेव अपिर्वाद्ये ज्ञातयः पितृपक्षाः  
पितृपक्षद्वयः सम्बन्धिनो मातृपक्षाः श्वशुरादयः तेषां पत्न्याः पुनर्विप्रोथ्य प्रवासान्  
प्रवासानमेव अभिवाद्याः न तु प्रत्यहं नियमः ॥ १३२ ॥

GRAMMAR.—1. सवर्णा समानो वर्णो यस्या सा सवर्णा । बह्व्रीहिः  
समानस्य सः by “ज्योतिर्जन पदरातनाभिनामगोवरूपस्थानवर्णवयोवचनवत्सु”  
एषादगसु उत्तरपदैषु समानस्य सः स्यात् । The four original castes  
are called वर्ण । The mixed castes are जाति and not वर्ण ।  
Here वर्ण is used in the secondary sense जाति । The  
injunction applying to all the twice-born castes whether  
original or mixed i. e. to ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, सूत्राभिषिक्त, माहिष्य  
and अश्वज primarily. Vide Manu X. 14. One's brother  
may have an असवर्णा wife i. e. wife taken from a lower वर्ण  
which was sanctioned by law. Vide सवर्णायै द्विजातीनां प्रशस्ता  
दारकश्चेति । कामतस्तु प्रवृत्ताना मिमाः स्युः क्रमगो वराः । शूद्रैव भार्या शूद्रस्य

স্বা স্বা স্বা স্বা বিব্রঃ জুতে । তে, স্বাদেব রাশ্রয় তাথ স্বাণায়জ্ঞানঃ । Manu III. 12. 13. i. e. The three twice-born castes should first marry females of equal caste, after which the following are good wives in order. A Sudra will have a Sudra wife only. A Vaishya may have a Sudra and a Vaishya ; a Khatriya may have a Sudra, a Vaishya and a Khatriya ; a Brahmin may have a Sudra, a Vaishya, a Khatriya and a Brahmin wife. But it is recommended that a Brahmin should never marry a Sudra, though allowed (Manu X. 14.). A younger brother is to salute the wife of his elder brother every day in the morning provided she is a wife equal in caste. 2. भार्या qualified by सवर्णा । Derived. 3. सातुः शिषे षष्ठी । साज् + ढल् उवादिः । 4. उप-संयाज्ञा उप-सम्-यद् + ष्यत् कर्मणि । 5. विप्रोष्य-वि-प्र-वम् + ल्यप् । अवातसीत् । 6. अहनि अहनि वीक्षायां द्विकृतिः अधिकरणे सप्तमी । 7. ज्ञातिसम्बन्धियाधितः ज्ञातयश्च सम्बन्धिनश्च ज्ञातिसम्बन्धिनः तेषां योषितः ( इन्त and षष्ठी समास ) । Acc. of उपसंयाज्ञाः whose nominative दत्तীয়ान्त is understood. 8. उप-सम्-यद् + ष्यत् ।

*Change of voice.*—भार्यया उपसंयाज्ञया भूयते । ज्ञातिसम्बन्धियोषिदभिः उपसंयाज्ञाभिः भूयते ॥ १३२ ॥

BENGALI.—(জ্যেষ্ঠ ভ্রাতার মহাতীক্ষা স্ত্রীকে প্রতিদিনই অভিবাদন করিবে, কিন্তু পিতৃপক্ষীয়, মাতৃপক্ষীয় ও বহুরপক্ষীয় ভ্রাতা নারীগণকে বিশেষ হইতে আগিয়াই অভিবাদন করিবে, অতাহ অভিবাদনের নিয়ম নাই, কিন্তু অতাহ অভিবাদন করিতে বাধ্য নাই ॥ ১৩২ ॥

ENGLISH.—An (elder) brother's wife who is of the same caste (as her husband) should be greeted every day. But the wives of kinsmen and other relations should be greeted after returning from a sojourn. (132).

पितुर्भगिन्यां मातुश्च ज्यायस्याश्च स्वसूर्यपि ।

मातृवद्वृत्तिमातिष्ठेन्माता ताम्यो गरीयसी ॥ १३३ ॥

PROSE.—पितुः मातुः च भगिन्यां ज्येष्ठस्याम् स्वस्वसरि अपि मातृवत् वृत्तिं प्राप्तिं ॥ माता ( पुनः ) ताभ्युः गरीयसी ॥ १३३ ॥

KULLUKA.—पितृभगिन्यामिति । पितृभ्यामुच्य भगिन्यां ज्येष्ठस्याद्यात्मनो भगिन्यां मातृवत्वृत्तिमातिष्ठेत् माता पुनस्तस्या गुरुतमा । ननु मातृत्वसा मातृत्वानी-त्यनेनैव गुरुपदोक्तं पूज्यत्वमुक्तं किमधिकमनेन बोध्यते । उच्यते इदमेव माता ताभ्यो गरीयसीत्यनेन पितृत्वसानुज्ञायां दत्तायां माता च विरोधे मातृगता अनु-ष्ठेयते । अथवा पूर्वं पितृत्वसादेवमातृवत् पूज्यत्वमुक्तम् अनेन तु स्नेहादिवृत्तिरप्य-तिदिश्यते इत्यपुनरुक्तिः ॥ १३३ ॥

GRAMMAR.—1. पितुः । 2. मातुः शेषे वृत्ती । 3. भगिन्याम् अधिक-करणे सप्तमी । 4. ज्येष्ठस्याम् qualifies स्वस्वसरि प्रशस् + ईयसु । 5. स्वस्वसरि सा स्वमा स्वस्वसा पुंवत् । तस्याम् अधिकरणे सप्तमी । 6. मातृवद् वृत्तिम् मातरि इव मातृवत् अथयम् मातृवत् वृत्तिः मातृवद्वृत्तिः कर्मधारयः ताम् Acc. of प्रातिष्ठेत् । 7. आङ् - स्या + धात् । 8. ताभ्युः पञ्चमी विभक्ते इति विभागे पञ्चमी । 9. गरीयसी गुरु + ईयसु ।

Change of voice.—वृत्तिः आस्थीयेत माता गरीयसा भूयते ॥ १३३ ॥

BENGALI.—पितात्र ओ मातात्र भगिनो एव निजत्र ज्येष्ठो नशेनत्रात्र अति मातात्र ज्येष्ठेति वातहार करिबे ; माता ईहात्रेन ईहंतेओ वरुणुन ओहंतेओ जानिबे । ईहात्रेन आका ईहंतेओ मातृ आका बनवती ॥ १३३ ॥

ENGLISH.—One should behave towards a father's sister, a mother's sister, and his own elder sister in the same way as towards his mother, who is superior to them all. (133).

दशाब्दाख्यं पौरसख्यं पञ्चाब्दाख्यं कलाभूताम् ।

त्राब्दपूर्वं श्रोत्रियाणां सत्येनापि स्वयोनिषु ॥ १३४ ॥

PROSE.—पौरसख्यं दशाब्दाख्यं, कलाभूतां ( सख्यं ) पञ्चाब्दाख्यं श्रोत्रि-याणां त्र्यब्दपूर्वं स्वयोनिषु सत्येन अपि ( भवति ) ॥ १३४ ॥

KULLUKA.—दशाब्दाख्यमिति । दश अब्दा आख्या यस्य तद्दशाब्दाख्यम् अयमर्थः एकपुरवासिनां वत्यमाणविद्यादिगुणरहितानाम् एकस्य दशभिरब्दैर्ज्येष्ठत्वे सत्यपि सख्यमाख्यायते पुरयद्दत्तं प्रदर्शनार्थं तेनेकयःमादिनिवासिनामपि स्यात् ।

ଗୀତାଦିକଳାଭିଜ୍ଞାନାଂ ପଞ୍ଚବର୍ଷପର୍ଯ୍ୟନ୍ତଃ ସଂସ୍ଥାଂ ଶ୍ରୋତ୍ରୀୟାଣାଂ ଶ୍ରାବ୍ୟପର୍ଯ୍ୟନ୍ତଂ ସପିଣ୍ଡେଷୁ ଅନ୍ୟନ୍ତାନ୍ତ୍ୟେ-  
ନୈବ କାଳିନଃ ସହ ଶଂସ୍ୟମ୍ ଅପିରିବାର୍ଥେ ସର୍ବେଦୀକକାଳାଦୂର୍ହଂ ଐଷ୍ଟବ୍ୟବହାରଃ ॥ ୧୨୪ ॥

GRAMMAR.—1. ପୁରସ୍ତ ଇଦଂ ପୌରମ୍ । ପୌରଂ ସଂସ୍ୟମ୍ ପୌରସଂସ୍ୟଂ କର୍ମଧାରୟଃ ।  
ସଂସ୍ୟାର୍ଥାତଃ ସଂସ୍ୟମ୍ । ସଂସ୍ତି + ଯ । Or ପୌରାଣାଂ ପୁରବାସିନାଂ ସଂସ୍ୟଂ । Its  
ବିଧିଏ ବିଶେଷଣମ୍ is ଦଶାବ୍ଦାତ୍ମକମ୍ । 2. ଦଶାବ୍ଦାତ୍ମ୍ୟମ୍ ଅପୌ ଦଦାତୀତି ଅବ୍ଦଃ ଉପପଦ  
ସମାସଃ । ବତ୍ସରଃ । ଅପ -- ଦା + କଃ । ଦଶମଂସ୍ୟାୟୁକ୍ତା ଅବ୍ଦାଃ ଦଶାବ୍ଦାଃ ସମାହାରେ କୃତେ ତୁ  
ଦଶାବ୍ଦୀ ଶ୍ୟାତୁ ଦଶାବ୍ଦା ଇତ୍ୟାଶ୍ୟା ଯସ୍ୟ ତତ୍ ଦଶାବ୍ଦାତ୍ମ୍ୟମ୍ ବହୁବ୍ରୀହିଃ । Or ଦଶ ଅବ୍ଦାଃ  
ଯସ୍ୟ ତତ୍ ଦଶାବ୍ଦମ୍ ଦଶାବ୍ଦଂ ଇତ୍ୟାଶ୍ୟା ଯସ୍ୟ ତତ୍ ଦଶାବ୍ଦାତ୍ମ୍ୟମ୍ । 3. କଳାଧ୍ୟତାମ୍  
ଶେଷେ ଷଷ୍ଠୀ connected with ସଂସ୍ୟମ୍ understood କଳା ଦ୍ରବ୍ୟଗୀତାଶ୍ୟା ତାଂ  
ବିଷୟତୀତି କଳାଧ୍ୟତଃ ଉପପଦ ସମାସଃ । ତେଷାମ୍ । 4. ପଞ୍ଚାବ୍ଦାତ୍ମ୍ୟମ୍ ପଞ୍ଚ ଅବ୍ଦଃ  
ଯସ୍ୟ ତତ୍ ପଞ୍ଚାବ୍ଦଂ ପଞ୍ଚାବ୍ଦଂ ଆତ୍ମା ଯସ୍ୟ ତତ୍ qualifies ସଂସ୍ୟମ୍ । 5. ଶ୍ରୋତ୍ରୀୟାଣାଂ  
ଶେଷେ ଷଷ୍ଠୀ । କୁନ୍ଦୀଽଅଧୀତି ଇତି ଶ୍ରୋତ୍ରୀୟଃ କୁନ୍ଦମ୍ + ଚ ନିପାତନାତ୍ । ପଞ୍ଚେ କୁନ୍ଦମ୍ସଃ ।  
by ଶ୍ରୋତ୍ରୀୟକ୍ତୁନ୍ଦୀଽଧୀତି । 6. ଶ୍ରାବ୍ୟପୂର୍ବମ୍ ବିଶେଷଣା ଅବ୍ଦାଃ ଶ୍ରାବ୍ୟାଃ । ମଧ୍ୟପଦଲୀପୌ  
କର୍ମଧାରୟଃ । ଶ୍ରାବ୍ୟା ପୂର୍ବେ ଯସ୍ୟା ତତ୍ ଶ୍ରାବ୍ୟପୂର୍ବମ୍ । ବହୁବ୍ରୀହିଃ qualifies ସଂସ୍ୟମ୍ ।  
7. ସ୍ବଯୋନିଷ୍ ଅଧିକରଣେ ସମ୍ପର୍କୀ । 8. ସ୍ବତ୍ତ୍ବେନ ସୁ ଅତିଶୟନ ଅନ୍ତର୍ଃ ସ୍ବତ୍ତ୍ବଃ ।  
ମହତ୍ବାଦିଭ୍ୟ ଷ୍ଟତୀୟା ।

*Change of voice.*—ଦଶାବ୍ଦାତ୍ମ୍ୟେନ ପୌରମୁଖ୍ୟେନ...ପଞ୍ଚାବ୍ଦାତ୍ମ୍ୟେନ — ଶ୍ରାବ୍ୟ-  
ପୂର୍ବ୍ୟେନ ଭୃଶ୍ୟତି ॥ ୧୨୪ ॥

BENGALI.—ଏକ ନଗରବାସୀ ଲୋକମାନଙ୍କର ମଧ୍ୟେ ବିଦ୍ୟା ଓ ଧନାଦିବାତା ମଧ୍ୟେ  
ନା ଥାକିଲେ ବରମ୍ବେ ଦଶ ବର୍ଷର ମଧ୍ୟାନ୍ତ ନୁନାବିକା ହୁଏ ମଧ୍ୟମ୍ବର ମଧ୍ୟା ହୁଏ, ଶ୍ରୀତବାଦିଜ୍ଞ  
ଆଲୋଚନାଦିମାନଙ୍କର ମଧ୍ୟେ ବର୍ଷର ମଧ୍ୟାନ୍ତ ବର୍ଷର ନୁନାବିକାଂ ମଧ୍ୟମ୍ବର ମଧ୍ୟା ଜାଣିବେ,  
ବେଦାଦିମାନଙ୍କର ମଧ୍ୟେ ତିନି ବର୍ଷର ମଧ୍ୟାନ୍ତ ବର୍ଷର ମଧ୍ୟେ ଥାକିଲେ ଓ ତାହାର ମଧ୍ୟମ୍ବର ମଧ୍ୟା,  
ମଣିଷମାନଙ୍କର ମଧ୍ୟେ ବର୍ଷର ମଧ୍ୟାନ୍ତ ନୁନାବିକା ମଧ୍ୟା ହୁଏ । ଏ ନିରମିତ୍ତ ସମୟର ମଧ୍ୟେ ଜୋଡ଼  
କରିବେ ବାବହାର କରିବେ । ୧୨୪ ॥

ENGLISH.—Friendship among inhabitants of the same city or  
town or co-villagers may be said to subsist even at the disparity  
of age by ten years ; among members bearing the same art, such as  
music, dancing &c. it may be said to subsist even at the disparity  
of age by five years ; among students of the Vedas at the disparity  
of age by three years ; and among persons related by birth it may  
exist when the difference is (only) of a small time. (134).

ब्राह्मणं दशवर्षन्तु शतवर्षन्तु भूमिपम् ।

पितापुत्रौ विजानीयाद्ब्राह्मणस्तु तयोःपिताः ॥ १३५ ॥

PROSE.—दशवर्षं ब्राह्मणं शतवर्षं भूमिपं पितापुत्रौ विजानीयात् तयोस्तु ब्राह्मणः पिता ( भवति ) ॥ १३५ ॥

KULLUKA.—ब्राह्मणमिति । दशवर्षं ब्राह्मणं शतवर्षं पुनः स्ववियं पिता-  
पुत्रौ जानीयात् । तयोर्मध्ये दशवर्षोऽपि ब्राह्मण एव अक्षिप्त्य शतवर्षस्यापि पिता  
तस्मात् पितृवदसौ तस्य मान्यः ॥ १३५ ॥

GRAMMAR.—1. दशवर्षम् दश वर्षाणि वर्गमि यस्य स दशवर्षः बहुव्रीहिः  
तन् qualities ब्राह्मणम् । 2. शतवर्षम् पूर्व्वत् qualifies भूमिपम् ।  
3. भूमिपम् Acc. of विजानीयात् भूमि-पा + कः । 4. तयोः निर्धारणे षष्ठौ ।

Change of voice.—दशवर्षः ब्राह्मणः शतवर्षः भूमिपः पितापुत्रौ ज्ञायेयाताम् ।  
ब्राह्मणेन...पिता भूयते ॥ १३५ ॥

BENGALI.—এক দশবর্ষ ব্রাহ্মণ ও শতবর্ষ ব্রাহ্মণের উভয়েক  
পিতা পুত্র বলিয়া জানিবে ; যে উভয়ের মধ্যে ব্রাহ্মণের পিতা বলিয়া জানিবে ॥ ১৩৫ ॥

ENGLISH.—Let a Brahmin of ten years of age, and a Kskatriya  
of hundred years, be looked upon as father and son ; of the two  
the Brahmin is (as respectable as) the father. (135).

वित्तं वन्धुर्व्ययः कर्म विद्या भवति पञ्चमी ।

एतानि मान्यस्थानानि गरीयो यदुयदुत्तरम् ॥ १३६ ॥

PROSE.—वित्तं वन्धुः वयः कर्म (चतुर्थम्) विद्या पञ्चमी भवति । एतानि  
मान्यस्थानानि ( भवन्ति ) यत् यदुत्तरं ( तत् ) गरीयः ॥ १३६ ॥

KULLUKA.—वित्तमिति वित्तं व्याघाज्जिह्वं धनं, वन्धुः पितृव्यादिः वयोऽधिक-  
वयस्कृतः, कर्म श्रौतं आर्चनं, विद्या वेदार्थतत्त्वज्ञानम् एतानि पञ्च मान्यत्वकारणानि ।  
एषां मध्ये यदुयदुत्तरं तत्तत्पूर्व्वस्थानं श्रेष्ठमिति बहुमान्यमैतत्के वलावलमुक्तम् ॥ १३६ ॥

GRAMMAR.—1. वित्तम् विद् रुधादि + क्तः भावे वित्तम् । पञ्चे कर्मोद्दी  
विग्रम् । विद्यतेरपि विद्गः वेत्तेस्तु विदितः । 2. वन्धुः वन्ध् + उन् ।  
3. वयः वज + चतुन् । 4. पञ्चमी पञ्चाणां पूरुषः पञ्चमः ङीप् पञ्चमी ।

6. विद्या विद् + कप् । प्रातिपदिकायै प्रथमा । 6. मान्यस्थानानि मान्यानि स्थानानि मान्यस्थानानि । कर्मधारयः । 7. यदुत्तरम् यस्मात् उत्तरम् यदुत्तरम् पञ्चमी समासः or (a) यत् and (b) उत्तरम् two words. (a) is an अव्यय meaning यस्मात् अन्तरादिति पञ्चमी । (b) उत्तरम् परम् । 8. गरीयः अनिशयेन गुरु गरीयः गुरु + ईयस् ।

*Change of voice.*—वित्तेन वन्धना वयसा पञ्चम्या विद्याया भूयते एतैः मान्यस्थानैः भूयते । येन यदुत्तरं ( तेन ) गरीयसा भूयते ॥ १२६ ॥

BENGALI.—छात्रार्जित धन, मित्रवादादि मयक, अधिकवद्वक्तृता ও কর্ম এই চারি এলাকায় এঁর পাঁচটি মান্যতার কারণ আছে ; এঁর পাঁচটির মধ্যে যেটি বাহ্যিক পরে উক্ত ইংলিশের মতো উঠে অধিক মাজ, অর্থাৎ ধন ইংলিশের ময়ক, ময়ক ইংলিশের বয়স, বয়স ইংলিশের কর্ম, কর্ম ইংলিশের বিদ্যা অধিক মাজ । বয়সমাজ মিলিত ইংলিশের এইরূপে মাজতার বলাবল জানিতে ॥ ১৩৬ ॥

ENGLISH.—Wealth, kinmanship, age, work or profession, and, the fifth, learning—these are the causes of respectability. What is stated next is superior (to what is stated before). (136).

पञ्चानां त्रिषु वर्णेषु भूयांसि गुणवन्ति च ।

यत्र स्युः सोऽत्र मानार्हः शूद्रोऽपि दशमीगतः ॥ १२७ ॥

PROSE.—त्रिषु वर्णेषु पञ्चानां यत्र भूयांसि ( यत्र ) गुणवन्ति च स्युः सः अत्र मानार्हः । दशमीं गतं शूद्रः अपि ( विज्ञानां मानार्हः ) ॥ १२७ ॥

KULLUKA.—पञ्चानामिति । त्रिषु वर्णेषु ब्राह्मणादिषु पञ्चानां विनादीनां मध्ये यत्र पुरुषे पूर्वमप्यनेकं भवति स एवोत्तरस्मादपि मान्यः । तेन वित्तवन्धनयुक्तो वयोऽधिकान्मान्यः एवं विद्यादितययुक्तः कर्मवतो मान्यः वित्तादिचतुष्टययुक्तो विदुषो मान्यः । गुणवन्ति चेति प्रकर्षवन्ति तेन दशमीरेव वित्तादिसत्त्वे प्रकर्षो मानहेतुः । शूद्रोऽपि दशमीमवस्थां नवव्यधिकां गतो विज्ञानानामपि मानार्हः शतवर्षाणां दशधा-विभागे दशमावस्था नवव्यधिका भवति ॥ १२७ ॥

KULLUKA EXPLAINED.—“तेन दशमीरेव वित्तादिसत्त्वे प्रकर्षो मानहेतुः” । This is the explanation of “गुणवन्ति” i. e. when two are rich, old &c. &c. preference will be given in favour of him who exceeds the other in these qualifications. तेन ( तस्मात् ) दशोः

एव ( इयोरिव ब्राह्मणयोः अविद्ययोः वैश्ययोर्वा ) विनादिसत्ते ( धनादिसत्ते सति )  
प्रकथः ( तत्तद्विषयकं आधिक्यं ) मानहेतुः ( मान्यत्वकारणम् ) ।

GRAMMAR.—1. वक्षे चधिकरणे मप्रमौ । 2. पञ्चानाम् निर्धारणे षष्ठी ।  
3. भूयामि qualifies मान्यस्थानानि understood वृत् + ईयस् । 4. गुणवन्ति  
( qualifies मान्यस्थानानि ) means आधिक्ययुक्तानि । गुण + मत्प् । प्रत्य-  
माया वह्नचनम् । 5. मानार्हः मानं अर्हतीति मानार्हः मान - अर्ह + अष्  
उपपद समासः । 6. दशमीम् Acc. of गतः ।

*Change of voice.*—यत् भूयोभिः गुणवद्भिः भूयते तेन मानार्हेण भूयते  
दशमीं गतेन शब्देण अपि भूयते ॥ १३७ ॥

BENGALI.—ब्राह्मण, क्षत्रिय ও দেবতা এই তিন वर्গের মধ্যে যে ব্যক্তি  
ধনাদি পাঁচটি গুণের পূর্ণ পূর্ণ অথবা একাধিক সংখ্যার বর্জমান থাকে সে ব্যক্তি পর পর  
একটি গুণবৃদ্ধ ব্যক্তি হইতে থাকে ইত্যেব । ( ব্রাহ্মণ ধন ও বক্রতা গুণ আছে তিনি  
নরেশিক ব্যক্তি হইতে থাকে ; ধন, বক্রতা ও ব্রহ্মণ এই তিন গুণবৃদ্ধ ব্যক্তি কর্তব্য  
ব্যক্তি হইতে থাকে ; ধনাদি চারিটি গুণনিমিত্তে ব্যক্তি নিম্নোক্ত হইতে থাকে ) । আর  
( দুইজন ধনী, দুইজন সম্বন্ধবিত্ত, দুইজন অধিক ব্রহ্ম, দুইজন বিদ্বান্ উপস্থিত  
থাকিলে ) সেটে সেটে গুণ ব্রাহ্মণ অধিক আরেক উচ্চতর মধ্যে তিনিই অধিক থাকে ।  
১০ বৎসরের অধিক বৃদ্ধ হইলে শূণ্ড ব্রহ্মণের থাকে হয় ॥ ১৩৭ ॥

ENGLISH. - Among the three (higher) castes he is deserving of  
respect in whom are found a good many superior virtues out of  
these five. A *Sudra* too reaching the tenth decade (of his age) is  
respectable. (137).

चक्रिणो दशमीस्थस्य रोगिणो भारिणः स्त्रियाः ।

ज्ञातकस्यच राज्ञश्च पत्न्या देयो वरस्य च ॥ १३८ ॥

PROSE.—चक्रिणः दशमीस्थस्य रोगिणः भारिणः स्त्रियाः ज्ञातकस्य राज्ञः च  
वरस्य च पत्न्या देयः ॥ १३८ ॥

KULLUKA. — अयमपि पुत्राप्रकारः प्रसङ्गादुच्यते चक्रिण इति । अक्युक्त-  
रथादिमानादस्य नवत्यधिकवयसो रोगार्तस्य भारयोगितस्य स्त्रियाः अचिरनिवृत्तसमा-  
जर्जनस्य देशाधिपस्य विवाहाय प्रस्थितस्य पत्न्यात्मकस्य । त्यागार्थत्वाच्च ददातेन  
अनुधी ॥ १३८ ॥



KULLUKA EXPLAINED.—“अचिरनिवृत्त समावर्त्तनस्य” अचिरं अनति-  
पूर्व निवृत्तं सम्पन्नं समावर्त्तनं गुरुगृहात् आगमनकालीनं कर्त्तव्यं यस्य तस्य । This  
is the explanation of स्नातकः । स्नातकः means a गृहस्थाश्रमी । ज्येष्ठा-  
श्रमी गृहमेधी गृहस्थः स्नातको गृहीति हेमचन्द्रः । Here स्नातकः means  
a new गृहस्थाश्रमी ।

GRAMMAR.—1. चक्षिणः शेषे षष्ठौ । 2. दशमीस्थस्य दशम्यां तिष्ठतीति  
दशमी + स्था + क्त उपपद समामः । 3. रोगिणः कृत् + घिग्यन् । 4. भार +  
इति तस्य भारिणः । 5. स्नातकस्य । 6. राज्ञः । 7. वरस्य सर्व्वे शेषे षष्ठौ ।  
8. दैव्यः दा + व ।

*Change of voice....* पथा देवेन मृत्यते ॥ १३८ ॥

BENGALI.—छक्रयुक्त गाने आत्रोक्षणकारी, नखई बसतरेर अधिक बरह,  
रोगार्ड, भारवाही, रोगी, उक्तकथ श्रुते आत्रागत गृहस्थ, राजा व वरक पथ छड़िनी  
मिश्र एकपात्रे मृतिशो वाहेवे ॥ १३८ ॥

ENGLISH.—Let one (stand aside and) give the path to a person  
driving in a wheeled carriage to a person who has reached the  
tenth decade of his age, who is diseased, who is carrying a burden,  
to a female, to a *Snataka* (a Brahmin who has just entered the 2nd  
stage of life the household stage), to a king; and to a bride-  
groom. (138).

तेषान्तु समवेतानां मान्यौ स्नातकपार्थिवौ ।

राजस्नातकयोश्चैव स्नातकोनृपमानभाक् ॥ १३९ ॥

PROSE.—समवेतानां तेषां स्नातकपार्थिवौ मान्यौ राजस्नातकयोश्च स्नातकः  
नृपमानभाक् ( भवति ) ॥ १३९ ॥

KULLUKA.—तेषामिति । तेषामेकत्र मिलितानां देशधिपस्नातकौ मान्यौ  
राजस्नातकयोरेपि स्नातक एव राजापेक्षया मान्यः अतो राजशब्दोऽव पूर्व्वश्लोके च न  
केवलमतिथिजातिवचनः अतिथिजात्याश्च वा ब्राह्मणं दशवर्षेन्तित्यनेन ब्राह्मणमात्रस्य  
मान्यत्वाभिधानात् स्नातकयज्ञणीवैयर्थ्याच्च ॥ १३९ ॥

GRAMMAR.—1. सम् - अव - इ + क्तः । 2. तेषां निर्द्धारणे षष्ठौ ।  
3. स्नातकश्च पार्थिवश्च स्नातकपार्थिवौ द्वन्द्वः । स्ना + क्तः + क्तः । पृथिवी + अव ।

६. राजमानभाक् राज्ञः मानः राजमानः राजमानं भजति राजमानभाक् उपपद-  
समासः । राजमान - भज + ल्विः ।

*Change of voice.*—स्वातक पार्थिवार्थां मान्याभ्यां भूयते । स्वातकीन रूप-  
मानभाजा भूयते ॥ १२८ ॥

BENGALI.—पूर्वोक्त समस्त वाक्छि मिलित इहेने उग्रयो राजा ও রাজক  
এই দুইজন অবশিষ্টের মাঝ ইहेবেন ; [এইলে রাজা শব্দে কেনন ক্ষত্রিয় জাতীয় নহে,  
রাজা থাকই বুঝিতে ইহেবে, কেননা ক্ষত্রিয় ইহেতে যে রাজকও মাঝ তাহা পূর্বে বলা  
গিয়াছে] ; রাজা ও রাজক এই উভয়ের মধ্যে রাজক রাজার মাঝ ॥ ১২৮ ॥

ENGLISH.—Among all these taken together the *Snataka* and  
the king are respectable. And of the *Snataka* and the king, the  
*Snataka* is deserving of respect from the king. (139).

उपनीय तु यः शिष्यं वेदमध्यापयेद्विजः ।

सकल्यं सरहस्यञ्च तमाचार्यं प्रचक्षते ॥ १४० ॥

PROSE.—यः विजः तु शिष्यं उपनीय सकल्यं सरहस्यं वेदं अध्यापयेत् तं  
आचार्यं प्रचक्षते [ मुनयः ] ॥ १४० ॥

KULLUKA.—आचार्यादिशब्देरिह शास्त्रे प्राथम्यवहारात् आचार्यादिशब्दाश्च-  
माह उपनीयेति । यो ब्राह्मणः शिष्यमुपनीय कल्परहस्यसंज्ञितां वेदशास्त्रां सर्वान-  
ध्यापयति तमाचार्यं पृथ्वी मुनयो वदन्ति । कल्पो यज्ञविद्यारहस्यं उपनिषत् । वेद-  
संज्ञाऽप्युपनिषदा प्राधान्यविवक्षया पृथक्-निर्देशः ॥ १४० ॥

GRAMMAR.—1. यः qualifies विजः । 2. विजः द्वि-जन + उः ।  
3. शिष्यम् Acc. of उपनीय and अध्यापयेत् । शास् + क्यप् । 4. उपनीय  
उप-नी + क्यप् । 5. सकल्यम् कल्पेन सह वर्तमानः सकल्यः बहुव्रीहिः तम् ।  
कल्पसर्व सामवेदाङ्गं येन यज्ञकरणविषयक उपदेशः कथ्यते । 6. सरहस्यम्  
रहस्येन गूढेन उपनिषदा इत्यर्थः वर्तमानः सरहस्यं तम् qualifying वेदम् । 7. वेदम्  
मुख्यं कर्म of अध्यापयेत् शिष्यं कर्म by गति वृद्धि प्रत्यवसान etc. etc. शिष्यो  
वेदं अधीते शिष्यं वेदं अध्यापयति कर्मसंज्ञाप्रयोज्यम् । 8. अध्यापयेत् षधि-इङ्  
-षिच्-यात् । षिचि आत्मन् कौङ्जीनां कौ इति । पुक् । लुङ् अध-  
जीगपत् अध्यापिपत् । 9. आचार्यम् Acc. of प्रचक्षते । आङ्-चर + खत्  
गुरी । अथवा तु यत्प्रत्ययः by चर राङि चागुरी अर्थाद् गुरुभिन्नार्थे आङ्-चर

+ ଯମ ଆଚାର୍ଯ୍ୟଃ ଦିଶଃ । ଗୁରୌ ତୁ ଆଚାର୍ଯ୍ୟଃ ( ଧ୍ୟାତୁ ) ଗୁରୁଃ । Bhatto. ୭. ପ୍ରସ-  
ସ୍ତେ ମ - ଚକ୍ ଲଟ୍ ଅନ୍ତେ ।

*Change of voice.*—ଯେନ ହିଜ୍ଜେନ ଶିଷ୍ୟଃ ସେଦଂ ଅଧ୍ୟାପ୍ସେତ ସ ଆଚାର୍ଯ୍ୟଃ  
ସ୍ଥାପ୍ୟତେ ॥ ୧୪୦ ॥

BENGALI.—(ଏ ଶ୍ରୀକ୍ଷମ୍ ବିଦ୍ୟାୟ ଉପନୟନ ଲାଭାନ କରତ ଡାହାକେ ଗୁରୁ ଗମ୍ଭୀରମ୍  
ବିଷୟକ୍ ଶାସ୍ତ୍ର ଓ ଉପନିଷଦ୍ ନାମକ୍ ଗୁରୁ ବିଦ୍ୟାର ମହିତ୍ ମନସ୍ତ୍ ବେଦଶାସ୍ତ୍ର ପାଠ କରାନ ଡାହାକେ  
ଗୁରୁଗଣ ଆଚାର୍ଯ୍ୟ ବଲେନ ॥ ୧୪୦ ॥

ENGLISH.—They call him an *acharya* or teacher who investing  
his pupil with the sacred thread teaches him the Vedas together  
with the injunctions about sacrifices, and the deeper or occult  
sense of the Veda (*i.e.* the Upanishadas). (140).

एकदेशन्तु वेदस्य वेदाङ्गान्यपि वा पुनः ।

योऽध्यापयति वृत्तार्थमुपाध्यायः स उच्यते ॥ ୧୪୧ ॥

PROSE.—ଯଃ ତୁ ବ୍ରହ୍ମର୍ଥେ ବେଦସ୍ୟ ଏକଦେଶଂ ବେଦାଙ୍ଗାନି ବା ପୁନଃ ଅଧ୍ୟାପୟତି ସ  
ଉପାଧ୍ୟାୟଃ ଉଚ୍ୟତେ ॥ ୧୪୧ ॥

KUILUKA.—ଏକଦେଶମିତି । ବେଦସ୍ୟେକଦେଶଂ ମତ୍ତଂ ବ୍ରାହ୍ମଣସ୍ୟ, ବେଦରହିତାନି  
ବ୍ୟାକରଣାଦୀନି ଅଙ୍ଗାନି, ଯୋ ବ୍ରତ୍ତାର୍ଥମଧ୍ୟାପୟତି ସ ଉପାଧ୍ୟାୟ ଉଚ୍ୟତେ ॥ ୧୪୧ ॥

GRAMMAR.—1. ବ୍ରହ୍ମର୍ଥମ୍ ବ୍ରତ୍ତୟେ ଇଦମ୍ ବ୍ରହ୍ମର୍ଥମ୍ । 2. ବେଦସ୍ୟ ଶିଷ୍ଟେ ସମ୍ପ୍ରାୟଃ ।  
3. ବେଦାଙ୍ଗାନି ବେଦାନାଂ ଅଙ୍ଗାନି ବେଦାଙ୍ଗାନି । ଶିଷ୍ଟା କଲ୍ୟୋ ବ୍ୟାକରଣଂ ନିରୁକ୍ତଂ ଜ୍ୟୋତିଷଂ  
ଗଣଃ । କ୍ଷୁଦ୍ରମାଂ ବିଷିତି ସ୍ତେବ ସଢ଼ହୋ ବେଦ ଉଚ୍ୟତେ । 4. ଉପାଧ୍ୟାୟଃ ଉପ - ଅଧି -  
ଇଡ଼ + ଘଞ୍ ।

*Change of voice.*—ଯେନ ଏକଦେଶଂ ବେଦାଙ୍ଗାନି ବା ( ଶିଷ୍ୟଃ ) ଅଧ୍ୟାପ୍ୟତେ ॥ ୧୪୧ ॥

BENGALI.—ଯିନି (ସମ୍ପ୍ରାୟେ ଏକାଂଶ ଅଥବା ବେଦରହିତ କେବଳ ବ୍ୟାକରଣାଦି ଅଂଗ  
ଜ୍ୟୋତିଷାନିର୍ବାହକେର ଲକ୍ଷ୍ମ ଗଢ଼ାହିତା ଆଦିକେନ ଡାହାକେ ଉପାଧ୍ୟାୟ ବଲେ ॥ ୧୪୧ ॥

ENGLISH.—He who teaches for his livelihood a part of the  
Veda or the branches of learning subsidiary to the Veda is called  
an *Upadhyaya* or preceptor. (141).

निषेकादीनि कर्माणि यः करोति यथाविधि ।

सम्भावयति चाग्नेନ स विप्रो गुरुव्यस्यते ॥ ୧୪୨ ॥

PROSE.—यः यथाविधि निषेकादीनि कर्माणि करोति अग्नेन च सम्भावयति सः विप्रः गुरुः उच्यते ॥ १४२ ॥

KULLUKA.—निषेकादीनौति । निषेको गर्भाधानं तेन पितुरयं गुरुत्वो-  
पदेशः गर्भाधानादीनि संस्कारकर्माणि पितुरुपदिष्टानि यथाशाम् यः करोति अग्नेन  
च संवर्द्धयति स विप्रो गुरुकच्यते ॥ १४२ ॥

GRAMMAR.—1. विधिसमतिक्रम्य यथाविधि । 2. निषेकः आदिष्येषां  
तानि । 3. सम्भावयति सम्-भू+णिञि ।

Change of voice.—कर्माणि क्रियन्ते सम्भाव्यन्ते तं विप्रं गुरुं ब्रुवन्ति ॥ १४२ ॥

BENGALI.—यिनि यथानिश्चये निषेकादि कर्म सम्पादन कर्तन, एवम् अग्नेश्वर  
अतिशय कर्तन (सुते पित्रादि गुरु तले ॥ १४२ ॥

ENGLISH.—The Brahmin who does in due from the rites begin-  
ning with the ceremony of impregnation, and rears up with food  
is called *Guru* or father. (142).

अग्न्याधेयं पाकयज्ञानग्निष्टोमादिकान् मखान् ।

यः करोति वृत्तो यस्य स तस्य त्विगिहोच्यते ॥ १४३ ॥

PROSE.—वृत्तः यः यस्य अग्न्याधेयं पाकयज्ञान् अग्निष्टोमादिकान् मखान्  
करोति इह स तस्य त्वित्वात् उच्यते ॥ १४३ ॥

KULLUKA.—अग्न्याधेयमिति । आहुवनीश्राययान्पादकं कर्म अग्न्याधेयम् ।  
षट्कादीन् पाकयज्ञान्, अग्निष्टोमादीन् यज्ञान्, क्षतवरणो यस्य यः करोति स तस्य  
त्विगिहोच्यते इति धेयते ब्रह्मचारिभक्त्यनुपपुक्तमपि त्वित्वात्त्वत्त्वमाचार्यादि  
वहःत्वजोऽपि मान्यत्वं दर्शयितुं प्रसङ्गादुक्तम् ॥ १४३ ॥

GRAMMAR.—1. वृत्तः वृत्+क्तः । अवारोत् अवरिष्ट अवरोष्ट अवृत ।  
वृत् ( दीर्घः ) वृणाति वृणीते अवारोत् अवारिष्ट अवरोष्ट अवूर्ष्ट । 2. अग्न्याधेयम्  
आहु-धा+यः भावे आधानम् इत्यर्थः । अग्ने राधेयम् षष्ठी समासः । 3.  
पाकस्य यज्ञान् । 4. अग्नेः क्षीमः अग्निष्टोमः पत्वम् । स आदिष्येषाम् तान् ।  
5. मखान् Acc. of करोति । 6. अतो यजतीति त्वित्वात् । अतु-यजः  
+क्विप् ।

*Change of voice.*—ত্বেন যেন অগ্নাধিযং পাকযজ্ঞাঃ অগ্নিষ্টোমাদয়ঃ মজ্জাঃ  
ক্রিয়ন্তে তং ঋত্বিনং বুবন্নি ॥ ১৪৩ ॥

BENGALI.—যথানিগ্রহে নিম্নে ইহেণ যিনি যাহার আশ্রমীশদি অগ্নি-উৎপাদক  
কর্ম, অগ্নিকাদি পাকযজ্ঞ, ও অগ্নিষ্টোমাদি যজ্ঞ কার্য করিয়া থাকেন, তিনি তাহার  
অধিক (পূরোহিত) হন। (উল্লেখ্য যে ঋত্বিনির্দেশে জ্বলে পূরোহিতের সংখ্যা বলা  
নিষ্ঠাশ্রয়, তাহে পূরোহিত ও আচাযের ছাত্র মাথ ইহা দেখাইবার জন্য পূরোহিতের  
লক্ষণ বলা ইহেণ) ॥ ১৪৩ ॥

ENGLISH.—He who being requested (and engaged) does for  
another the rite of consecrating the fire, the *paka* sacrifices, and the  
sacrifices, *agnistoma* and others is called his priest. (143).

য আত্মণোত্মবিতথং ব্রহ্মণা অবণাবুমৌ ।

ম মাতা স পিতা জ্যেস্তন্ন দৃষ্টেত্ কদাচন ॥ ১৪৪ ॥

PROSE. — যঃ অবিতথং ব্রহ্মণা উমৌ অবণৌ আত্মণৌ স মাতা স পিতা জ্যেঃ  
তং কদাচন ন দৃষ্টেত্ ॥ ১৪৪ ॥

KULLUKA.—য আত্মণৌতীতি । য উমৌ কণৌ অবিতথমিতি বর্ণস্বর-  
বৈগুণ্যরহিতেন সত্যরূপে বর্দে নাপূরয়তি স মাताপিতা च ज्येः महोपकारकत्वमु-  
द्योगात् अयमव्यपका मातापितृशब्दाच्च; तत्रापकुर्व्यात् कदाचनेति गृहीतेऽपि  
বর্দে ॥ ১৪৪ ॥

GRAMMAR. — 1. ন বিতথং যথা জ্ঞাত তথা । 2. তম্ Acc. of দৃষ্টেত্ ।  
It ought to have been তস্মৈ in connection with দৃষ্টেত্ ( কৃষদৃষ্টেয়া  
স্বার্থানাং যং প্রতি বোধঃ ) here কোপ is not the meaning, but অপকার  
is the meaning. Hence মাথ্যামৌখ্যং ইতিবত্ দ্বিতীয়া ।

*Change of voice.* — যেন.....অবণৌ আত্মণৌ তেন মাতা পিতা জ্যেয়েন  
ভূয়তে স...দৃষ্টেত ॥ ১৪৪ ॥

BENGALI.—বিনি প্রকৃত স্বর ও উচ্চারণযুক্ত বৈদ্য দ্বারা উচ্চৈর্ধ্ব পূর্ণ করিয়া  
যেন, তিনি মহোপকারী বনিয়া পিতা ও মাতা হন; যেপ্রশংসার পরেও কখন তাঁহার  
অপকার করিবে না ॥ ১৪৪ ॥

ENGLISH.—He who fills the two ears with the Veda (recited)  
properly and without defect is father and mother (both). Never  
should a man injure him. (144).

उपाध्यायान् दशाचार्य्य आचार्याणां शतं पिता ।

सहस्रन्तु पितृमाता गौरवेणातिरिच्यते ॥ १४५ ॥

PURSE.—आचार्य्यः दश उपाध्यायान् ( अपेक्ष्य ) पिता आचार्याणां शतं ( अपेक्ष्य ) माता सहस्रं पितृन् ( अपेक्ष्य ) गौरवेण अतिरिच्यते ॥ १४५ ॥

KULLUKA.—उपाध्यायानीति । दशोपाध्यायपेक्ष्य आचार्य्यः । आचार्य्यशतमपेक्ष्य पिता, सहस्रं पितृन्पेक्ष्य माता गौरवेणातिरिक्ता भवति । अत उपनयनपञ्चकमाश्रित्वाभावाध्यापयिता आचार्य्योऽभिप्रेतः तमपेक्ष्य पितृदत्तकर्षः । उत्पादकब्रह्मदातोर्गौरवेण सुख्याचार्य्यस्य पितरमपेक्ष्य उत्कर्षं वक्ष्यतीत्यभिप्रेतः ॥ १४५ ॥

GRAMMAR.—1. आर्-पर + गन्तु आचार्य्यः । 2. उप-अधि + इ + प्रत् । 3. सहस्रम् qualifies पितृन् । शतं सहस्रं are singular but qualify plural number as their singular indicates plurality ; Acc. of अपेक्ष्य क्रिया understood. 4. गौरवेण करणे द्वितीया । 5. अतिरिच्यते अति-रिच् + लट् ने । कर्मकर्तारि ।

Change of voice.—आचार्य्येण दश उपाध्यायान् अपेक्ष्य.....पिता...माता... अतिरिच्यते ॥ १४५ ॥

Note.—भोदनः पद्येने this कर्मकर्तारि प्रयोग may be changed into भारवाच । भोदनेन पद्यते । [ Bhatto ].

BENGALI.—आचार्य्य दशजन উপাध्यायকে, पिता एकशत आचार्य्यকে, माता एक सहस्र पिताকে গৌরবে অতিক্রম করেন ॥ १४५ ॥

ENGLISH.—In point of honour and respect an *acharya* exceeds ten *Upadhyays* ; father excels a hundred *acharyas* ; and mother surpasses a thousand fathers. (145).

उत्पादकब्रह्मदातोर्गरीयान् ब्रह्मदः पिता ।

ब्रह्मजन्महि विप्रस्य प्रेत्य चेह च शाश्वतम् ॥ १४६ ॥

PROSE.—उत्पादकब्रह्मदातोः ( पितोः मध्ये ) ब्रह्मदः पिता गरीयान् विप्रस्य ब्रह्म-जन्म हि प्रेत्य च इह च शाश्वतम् भवति ॥ १४६ ॥

KULLUKA.—उत्पादकीति । जनकाचार्य्यौ इत्यपि पितरौ जन्मदातृत्वात्

तथोपाचार्यपिता गुरुतरः । यथादिप्रस्य ब्रह्मयज्ञार्थं जन्म उपनयनजन्यसंस्काररूपं परलोके इह लोके च शाश्वतं नित्यं ब्रह्मप्राप्तिफलकत्वात् ॥ १४६ ॥

GRAMMAR.—1. उत्पादकश्च ब्रह्मदाता च उत्पादकब्रह्मदातारौ तथोः । ब्रह्मणो दाता ब्रह्मदाता षष्ठीसमासः । तज्ज्ञाभ्यां कर्त्तरोति दादृशब्देन षष्ठी-  
समासनिषेधेऽपि शेषषष्ठ्या समासस्तु घटनिर्मातुरितिवत् कैयटमतमनुसृत्य समासः ।  
2. ब्रह्म—दा+क । उपपद समासः । 3. गरीयान् गुरु+ईयसु । 4. विप्रस्य  
शेषे षष्ठी । 5. ब्रह्मजन्म ब्रह्मणः ब्रह्मयज्ञार्थं जन्म ब्रह्मजन्म षष्ठी समासः ।  
6. प्रेत्य प्र—इ+ल्यप् । Finite verb हितम् understood. 7. शाश्वतम्  
शश्वत्+चच् qualifies ब्रह्मजन्म ।

*Change of voice.*—ब्रह्मदेन पिता गरीयसा भूयते । ब्रह्मजन्मना शाश्वतेन  
भूयते ॥ १४६ ॥

BENGALI.—जनक ও আচার্য উভয়েই পিতা ; কিন্তু জনক পিতা হইতে বেদপ্রদ  
পিতা অধিকতর ন্যায় ; কেননা ত্রাক্ষণের পক্ষে বেদপ্রদানের জন্য উপনয়নরূপ অঙ্গই  
উৎকালে ও পরকালে ত্রাক্ষণস্থির দ্বারত্বরূপ বলিয়া নিত্য ॥ ১৪৬ ॥

ENGLISH.—Of the two, viz. the generator, and the initiator  
into the Veda, the latter, the teacher of the Veda, is a superior  
father. For, the birth (or sacrament appropriate) to the reception  
of the Veda is eternal for a Brahman, both here and here-  
after. (146).

कामात्माता पिता चैनं यदुत्पादयतो मिथः ।

सम्भूतिं तस्य तां विद्याद्यद्योनावभिजायते ॥ १४७ ॥

PROSE.—माता पिता च मिथः कामात् एनं यत् उत्पादयतः, यत् ( अयं )  
योनी अभिजायते, तां तस्य सम्भूतिं ( पशुसाधारण्यं ) विद्यात् ॥ १४७ ॥

KULLUKA.—कामादिति । मातापितरौ यदेनं बालकं कामवशीनाभ्योऽयम्  
उत्पादयतः सध्वमार्त्वं तत्तस्य पश्चादिमाधारणं यद्योनी मातृकुट्वावभिजायते, अङ्ग-  
प्रत्यङ्गानि लभते ॥ १४७ ॥

*Note.*—The text is very elliptical. The full sentence is  
माता पिता च मिथः कामात् यत् एनं उत्पादयतः, अतः अयं यत् मातृयोनी जायते  
तत् अस्य सम्भूतिं पशुसाधारण्यं सम्भूतिमार्त्वं विद्यात् ॥ १४७ ॥

GRAMMAR.—1. कामात् द्विती पञ्चमी । 2. मिथः अन्यथम् means परस्परं । 3. एनम् अन्दादेशे एनादेशः । 4. योनौ अधिकरणे सप्तमी । उत्पत्तिस्थाने मठरे इत्यर्थः । जायते जन लट् ते । अजनि ; वर्जते इत्यर्थः । 5. सम्भूतिम् Acc. of विद्यात् । 6. ताम् विधेयप्राधान्यात् स्त्रीत्वम् it refers to the meaning of माता...उत्पादयतः and यत्.....जायते which is expressed by यत् which again is reproduced by ताम् ।

Change of voice. — माता पिता च अयं यत् उत्पादयते, यत् अनेन योनां जन्वते सा तस्य सम्भूतिः ( पशुसाधारणी ) विद्यते ॥ १४७ ॥

BENGALI.—पिता माता परस्पर कामवशतः ये पुत्र उत्पन्न करेन, पुत्र ये मातृगर्भे वाकिंसा अजप्रतात्र जात्र करे सैकप उत्पत्ति पशुप्रभृतिरुद्देशा धारक, ऐ जन्मद्वारा पशु प्रभृतिर मन्त्रे कोन प्रभेद जन्म ना ॥ १४७ ॥

ENGLISH.—That a man is given birth to by the parents out of mutual passion, that he grows in the womb (of the mother)—know this procreation to be common with the beasts. (147).

आचार्यस्तस्य यां जातिं विधिवद्देवपारगः ।

उत्पादयति सावित्रा सा सत्या साजराभरा ॥ १४८ ॥

PROSE.— वेदपारगः आचार्यः विधिवत् सावित्रा तस्य यां जातिं उत्पादयति सा सत्या सा अजरा अभरा ( भवति ) ॥ १४८ ॥

KULLUKA.—आचार्यः इति । आचार्यः पुनर्वेदज्ञोऽसौ मातृवकस्य यां जातिं यज्जन्म विधिवत् सावित्रेति साङ्गोपनयनपूर्वकसावित्रानुवचनेनोत्पादयति सा जातिः सत्या अजरा अभरा ब्रह्मप्राप्तिकलकत्वात् उपनयनपूर्वकस्य वेदाध्ययनतदर्थ-ज्ञानानुष्ठानैर्निष्कामस्य मोक्षलाभात् ॥ १४८ ॥

KULLUKA EXPLAINED. — “वेदाध्ययनतदर्थज्ञानानुष्ठानैः निष्कामस्य मोक्ष-लाभात्” वेदानां अर्थज्ञानं तदुक्तकर्षणां अनुष्ठानानिच तैः कामो नश्यति तेन च अथवसिद्धौ मोक्ष इति उपनयनमेव मुख्यं जन्म नित्यं तत्, मोक्षसाधनत्वात् । एवञ्चोपनयनार्थवादीश्रमिति ।

GRAMMAR.—1. विधि + वति । 2. वेदपारगः वेदानां पारः वेदपारः सं गच्छतीति वेदपारगः or पारं गच्छतीति पारगः । वेदानां पारगः वही ।



३. आचार्यः आच्-चर+रत्न । ४. सावित्रा करवे तृतीया । ५. जातिम् Acc. of उत्पादयति । जन+जिन् आतिम् । उत्पत्तिम् । ६. उत्पादयति-उत्-पद+ञिच् लट् ति । उत्पादयति=करोति उत्पत्तिं उत्पादयति would be meaningless. ७. सत्या qualifies सा । अस+जह=रुत् । मत्+यत् तच्चेदितम् । ८. अजरा न विद्यते जरा-वाङ्मयं यथाः सा अजरा बहुव्रीहिः । ९. अमरा म्रियते इति मरः स्त्रियां मरा पचाद्यच् । न मरा अमरा ।

*Change of voice.*—वेदपारमेण आचार्येण...वा जातिः उत्पादयते तथा सत्या अजराया अमराया भूयते ॥ १४८ ॥

BENGAL.—मनत्रं वेदक आचार्य गणानिष्ठेन जेननश्च ३ सावित्रीनां चारि चारिकर ये जग्नं धान करेन मेई जग्नं एकप्रदं बजिरी अजरा '३' अमरा बलिषा गयी । १४८ ॥

ENGLISH.—But the birth or regeneration which an *Acharyo* who has reached the end of the Vedas brings about in due form by means of the *gayatri* is true, pure, undecaying and without death. (148)

अल्पं वा बहु वा यस्य श्रुतस्योपकरोति यः ।

तमपीह गुरुं विद्याच्छ्रुतोपक्रियया तथा ॥ १४९ ॥

PROSE.—यस्य यः अल्पं बहु वा ( कृत्वा ) श्रुतस्य उपकरोति तथा श्रुतोपक्रियया तं अपि इह ( तस्य ) गुरुं विद्यात् ॥ १४९ ॥

EXPL.—यस्य अधीयानस्य यः उपाध्यायः अल्पं बहु भूयः वा कृत्वा श्रुतस्य श्रुतेन इत्यर्थं उपकरोति हितं साधयति तथा श्रुतोपक्रियया वेददानरूपोपकारिणं हेतुना तम् अपि अंशेन शिक्षयितारमपि इह शास्त्रे गुरुनिर्वाचनविषयकं तस्य गुरुं विद्यात् जानीयात् ॥ १४९ ॥

KULLUKA.—अल्पं वेति । श्रुतस्य श्रुतेनेत्यर्थः । उपाध्यायी यस्य शिष्यस्याल्पं वा बहु वा कृत्वा श्रुतेनोपकरोति तमपीह शास्त्रे तस्य गुरुं जानीयात् । श्रुतेनोपक्रियया तथा श्रुतोपक्रियया ॥ १४९ ॥

KULLUKA EXPLAINED.—“उपाध्यायः” The word यः of this sloka refers to उपाध्यायः and not to आचार्यः because the words “अल्पं वा बहु वा” indicate a part of the Vedas only ; and a teacher of a part has been named उपाध्यायः ।

GRAMMAR.—1. यस्य । 2. बहु Acc. of कृत्वा understood ।  
3. युतस्य युतेन इत्यर्थः । द्वितीयाख्येन षष्ठी विवक्षया । 4. यस्य शेषे षष्ठी  
in connection with उपकरोति । कर्मादीनामपि सम्बन्धमात्रविवक्षया षष्ठी एव  
एषोदकस्य उपस्कुरुते पक्षे द्वितीया समुपक्रुते । 5. युतोपक्रियया युतस्य उप-  
क्रिया युतोपक्रिया तथा द्वितीया । 6. उप-कृ+ञ् । उपक्रिया ।

*Change of voice....*येन.....उपक्रियते सः गुरुः विद्येत ॥ १४६ ॥

BENGALI.—बिनि ब्रह्मोपदेश द्वारा, बाशर अल्ले इडक अथवा अधिकडे इडक  
उपकार सम्पादन करेन, तनि सेडे ब्रह्मोपदेशरूप उपकरण द्वारा ताशर उक्त ईहा  
शानिवे ॥ १४६ ॥

ENGLISH.—Whoever does some benefit, great or small, by  
instruction in the Veda is to be known as a *Guru* on account of  
that benefit by means of the Veda. (149).

ब्राह्मस्य जन्मनः कर्त्ता स्वधर्मस्य च शासिता ।

बालोऽपि विप्रो ब्रह्मस्य पिता भवति धर्मतः ॥ १५० ॥

PROSE.—ब्राह्मस्य जन्मनः कर्त्ता स्वधर्मस्य च शासिता विप्रः बालः अपि  
ब्रह्मस्य धर्मतः पिता भवति ॥ १५० ॥

KULLUKA.—ब्राह्मस्येति । ब्रह्मश्रवणार्थं जन्म ब्राह्मसुपनयनं स्वधर्मस्य शासिता  
वेदार्थव्याख्याता तादृशोऽपि बालो ब्रह्मस्य ज्येष्ठस्य पिता भवति धर्मत इति पितृधर्मात्-  
स्मिन्ननुष्ठानात् ॥ १५० ॥

GRAMMAR.—1. ब्राह्मस्य qualifies जन्मनः ब्रह्मण्+अण् । अजातौ  
वक्तारलोपः । 2. स्वधर्मस्य षष्ठी in connection with ब्रह्मस्य शासिता ।  
No prohibition of षष्ठी by नानोक्त्याय्य इति । १

*Change of voice...*कर्त्ता...शासिता.....विप्रेण बालीन.....पित्रा  
श्रयते ॥ १५० ॥

BENGALI.—ए ब्राह्मण ब्राह्मजन्म अर्थात् उपनयन दान करेन, एवं स्वधर्मस्य  
धर्मात् वेदस्य बाध्या करेन, तनि बालक इहेलेও धर्माशुसार बरौकोछेन पिता  
न ॥ १५० ॥

ENGLISH.—Even a young Brahmin who is the author of  
regeneration or Vedic birth, and who can direct and rule as to one's  
own duties is lawfully the father of an old man. (150).

अध्यापयामास पितुन् शिशुराङ्गिरसः कविः ।

पुत्रका इतिहोवाच ज्ञानेन परिगृह्य तान् ॥ १५१ ॥

PROSE.—शिशुः कविः आङ्गिरसः पितुन् अध्यापयामास, तान् ज्ञानेन परि-  
गृह्य पुत्रका इतिह उवाच ॥ १५१ ॥

KULLUKA.—प्रकृतानुरूपार्थवादमाह अध्यापयामासेति । आङ्गिरसः पुत्रो  
वालः कविर्विद्वान् पितुन् गौणान् पितृव्यतत्पुत्रादीनधिकवयसोऽध्यापितवान् तान्  
ज्ञानेन परिगृह्य शिष्यान् कृत्वा पुत्रका इति आजुहाव इतिहेत्यव्ययं पुराहण-  
सूचनार्थम् ॥ १५१ ॥

GRAMMAR.—1. आङ्गिरसः अङ्गिरसः पुत्रः आङ्गिरसः । गोत्रप्रत्ययस्य  
लृक् बहुवचने अङ्गिरसः तदगोत्रापत्यानि । अङ्गिरस् + अण् । 2. कविः विद्वान् ।  
कु + इन् । 3. ज्ञानेन करणं तृतीयः । 4. इतिह it has been taken as  
a single अव्यय । However it may be split up as इति and ह ।  
ह indicates traditional history.

Change of voice—शिशुना कविना आङ्गिरसेन पितरः अध्यापयामासिरे  
ते पुत्रका इतिह ऊचिरे ॥ १५१ ॥

BENGALI.—पूर्वकाले अङ्गिरसः पुत्रं तत्राने कनिष्ठे इष्टेयां पित्रुला पित्रुवा  
ए अधिकवयस्य उतपुत्र अङ्गिरसि तेन पाठं कदाङ्गिरसिलेन, एव उतादिगके ज्ञान  
घात्रा अहं करिष्य अर्थेन शिष्या करिष्य पुत्रगणं बलिषा आश्रान करिष्याहिलेन ॥ १५१ ॥

ENGLISH.—The wise son of Angiras, while a child, taught his  
(father-like) uncles ; and taking them to be his disciples on account  
of his (superior) wisdom and knowledge addressed them, so the  
story goes, as “my boys.” (151).

ते तमर्थमपृच्छन्त देवानागतमन्यवः ।

देवाश्चैतान्समेत्योचुर्न्याय्यं वः शिशुरुक्तवान् ॥ १५२ ॥

PROSE.—आगतमन्यवः ते देवान् तं अर्थं अपृच्छन्त देवाः च समेत्य एतान् ऊचुः  
शिशुः न्याय्यं वः उक्तवान् ॥ १५२ ॥

KULLUKA.—ते तमर्थमपृच्छन्तेति । ते पितृतुल्याः पुत्रका इत्युक्ता अनेन  
आतन्नीयाः पुत्रकशब्दार्थं देवान् पृष्ठवन्तः देवाश्च पृष्टा मिलित्वा एतान्बोधन् युष्मान्  
यम् शिशुः पुत्रशब्देनोक्तवान् तदुक्तम् ॥ १५२ ॥

- GRAMMAR.—1. आगतमन्त्रवः आगतः मन्त्रः कीधोयेषां ते षड्व्रीहिः । 2. अर्थम् मुख्यं कर्म of अपृच्छन् । 3. देवान् गौणकर्म of अपृच्छन् । 4. देवाः Nom. to the verb ऊचुः । 5. एतान् गौणकर्म of ऊचुः । 6. व्यायम् व्याधात् अनपेतं व्यायम् । व्याध + धत् । 7. वः गौणकर्म of उक्तवान् । 8. अपृच्छन् प्रच्छ लङ् अन् । प्राचां निरङ्कुशत्वादात्मनेपदम् ।

*Change of voice.*—आगतमन्त्रभिः ईः देवाः तं अर्थं अपृच्छन् देवैः एते ऊचिरे व्यायं धूर्तं शिशुनीक्ताः ॥ १५२ ॥

BENGALI.—पूजक शब्दे सन्निहित इहेरा सेहे भित्तूला भित्तूवादि शब्दजन कृत इहेरा देवतामित्रेन निकट पूजक शब्देन अर्थ प्रख्याप्ता करेन ; देवतागण एकत्र मिलित इहेरा ताशनिगके बलिदाहिलेन, शिशु आवाकपेहे शोभादिगके पूजक बलिदा सन्निधान करियाहे ॥ १५२ ॥

ENGLISH.—They with anger rising (in their heart) asked the gods about the (just) application of the term (i.e. the form of address). And the gods meeting together told them that the child had justly called them so. (152).

अन्नो भवति वै बालः पिता भवति मन्त्रदः ।

अन्नं हि बाल मित्याहुः पितेत्येवतु मन्त्रदम् ॥ १५३ ॥

PROSE.—अन्नः वै बालः भवति, मन्त्रदः पिता भवति हि अन्नं बाल इति, मन्त्रदं पिता इत्येव आहः ॥ १५३ ॥

KULLUKA.—अन्न इति । वैशब्दोऽवधारणे अन्नएव बालो भवति नत्वन्वयवाः मन्त्रदः पिता भवति मन्त्रग्रहणं वेदोपलक्षणार्थं यो वेदमध्यापयति व्याचष्टे स पिता ॥ १५३ ॥

GRAMMAR.—1. बालः विधेय विशेषण of अन्नः । 2. पिता विधेय विशेषण of मन्त्रदः । 3. बालम् same case with अन्नं no connection with इति which means एवम् i. e. अन्यथेन न अभिधानम् । 4. पिता इति अत्र निपातेनाभिधानात् प्रथमा ।

*Change of voice.*—अन्नेन बालेन भूयते, मन्त्रेण पिता भूयते, अन्नः बालः इति मन्त्रदः पिता इत्युच्यते ॥ १५३ ॥

BENGALI.—वे ব্যক্তি ধূর্য, বয়োজ্যেষ্ঠ ইহেলো সে ব্যক্তিকে বালক বলে, যে ব্যক্তি বৈদ্য অধ্যয়ন করান তিনি অন্নঃকনিষ্ঠ ইহেলো পিতা হন ; কেননা পাণ্ডিত্যগণ অল্প ব্যক্তিকে বালক এবং বয়োপক্ষেপ্তকে পিতা বলেন ॥ ১৫৩ ॥

ENGLISH.—One devoid of knowledge or experience is a child ; and one who imparts instruction into the Vedas is a father. They call an inexperienced or ignorant man a child, and the initiation into the Vedas a father. (153).

न हायनैर्न पलितैर्न वित्तेन न वन्धुभिः ।

ऋषयश्चक्रिरे धर्मं योऽनूचानः स नो महान् ॥ १५४ ॥

PROSE.—ऋषयः धर्मं चक्रिरे न हायनैः न पलितैः न वित्तेन न वन्धुभिः ( किन्तु ) यः अनूचानः स ( एव ) नः महान् ( भवति ) ॥ १५४ ॥

KULLUKA.—यस्मात् पुर्व्वेऽपि सुनयोऽत्र बालमित्यूचुः सन्तश्च पितृत्वेवा-  
नवन् इत्यर्थहेतुमाह न हायनैरिति । न बहुभिर्व्वर्षेण केशश्मश्रुलोमभिः शुक्लैः न  
बहुना धनेन न पितृव्यत्वादिभिर्व्वन्धुभावेः समुदितैरप्येतैर्न महत्त्वं भवति किन्तु  
ऋषय इमं धर्मं कृतवन्तः यः साङ्गवेदाध्येता सोऽस्माकं महान् सम्मतः ॥ १५४ ॥

GRAMMAR.—1. हायनैः &c. हेतौ तृतीया । 2. अनूचानः अनूचानो  
विनोते स्मात् साङ्गवेदविषयके इत्यमरः । वेदस्य अनुवचनं कृतवान् अनूचानः अनु-  
पूर्व्व्यात् वचैः कर्त्तरि कानच् । By उपेयिवाननाश्वाननूचानश्च । निपातनात् ।  
3. नः निर्द्धारणे षष्ठी ।

*Change of voice.*—ऋषिभिः धर्मः चक्रे etc. ॥ १५४ ॥

BENGALI.—कनिगण निशय करिग्राहिलेन, वयस द्वारा, कि केशादिर पकता  
द्वारा, कि धनद्वारा कि पित्र्वादादिसम्पत्त द्वारा अथवा এই সকল মিলিত শুণ্য দ্বারা  
মহত্ব হইবে না, কিন্তু যিনি সাঙ্গ বেদে পণ্ডিত তিনিই আমাদের মধ্যে মহৎ শক্তি  
যাচি ॥ ১৫৪ ॥

ENGLISH.—Greatness is due not to years, not to the whiteness of hair or beard, not to wealth, and not to relationship. The sages laid down it as a rule that he who could teach the Vedas together with their subsidiary branches of study was great among them. (154).

विप्राणां ज्ञानतो ज्यैष्ठं क्षत्रियाणान्तु वीर्य्यतः ।

वैश्यानां धान्यधनतः शूद्राणामिव जन्मतः ॥ १५५ ॥

PROSE.—विप्राणां ज्ञानतः, क्षत्रियाणां तु वीर्य्यतः, वैश्यानां धनधान्यतः,  
शूद्राणां एव जन्मतः ज्यैष्ठं ( भवति ) ॥ १५५ ॥

KULLUKA.—विप्राणामिति ब्राह्मणानां विदया चविद्यायां पुनर्वीर्येण वैश्यानां धान्यवस्त्रादिधनेन शूद्राणामेव पूर्वजन्मना ग्रेहत्वम् । सर्व्वेव तृतीयार्थे तसिः ॥ १५५ ॥

GRAMMAR.—1. विप्राणाम् श्रवे षष्ठी । 2. ज्ञानतः करणे तृतीया स्थाने तसिः । 3. वीर्य्यतः । 4. धान्यधनतः धान्यानि च धनानि च धान्यधनानि तैः पूर्व्ववत् तसिः । 5. जन्मतः जन्मना इत्यर्थः । 6. ज्यैष्ठम् ज्यैष्ठस्य भावः । ज्यैष्ठ + चण् ।

*Change of voice.*—ज्यैष्ठेन ( भूयते ) ॥ १५५ ॥

BENGALI.—छानि द्वारा ब्राह्मणदिनेर मध्ये, पत्राक्षर द्वारा कश्त्रिदिनेर मध्ये एव वरन द्वारा शूद्रदिनेर मध्ये घोष्ठइ जये ॥ १५५ ॥

ENGLISH.—Among Brahmans seniority is acquired by (or due to) knowledge ; among Kshatriyas by strength, among Vaisyas by wealth and property, and among Sudras by birth. (155).

न तेन वृद्धो भवति येनास्य पलितं शिरः ।

यो वै युवाप्यधीयानस्तं देवाः स्थविरं विदुः ॥ १५६ ॥

PROSE.—येन अस्य शिरः पलितं तेन वृद्धः न भवति, युवा अपि यः अधीयानः देवाः तं स्थविरं विदुः ॥ १५६ ॥

KULLUKA.—न तेनेति । न तेन वृद्धो भवति येनास्य युक्तकेशं शिरः किन्तु युवापि सन् विद्वान् तं देवाः स्थविरं जानन्ति ॥ १५६ ॥

GRAMMAR.—1. येन द्विती तृतीया । 2. वृद्धः वृध + क्तः कर्तरि । वृद्धते अवर्द्धिष्ट वृधे । 3. अधीयानः अधि - इङ् + शानच् । अधीते अव्येष्ट अव्ययीष्ट । 4. देवाः Nom. to विदुः । 5. स्थविरं विधेयविशेषणम् of तम् । 6. विदुः विद् + लृच् विदोस्तु वा इति पञ्चे लटि लिङ्गादेशः ।

*Change of voice.*—न भूयते । युना येन अधीयानेन भूयते स देवैः स्थविरः विद्यते ॥ १५६ ॥

BENGALI.—যে কারণে বৃদ্ধক গণিত হয়, সে কারণে লোককে বৃদ্ধ বলে না, কিন্তু বরষে যুবা হইলেও যিনি বেদাদিশাস্ত্রজ্ঞ সেবতাপণ তাহাকেই বৃদ্ধ বলেন ॥ ১৫৬ ॥

ENGLISH.—One does not become old by the fact that his head has turned grey. The gods know him to be old who, though young, is read in the Vedas (156).

यथा काष्ठमयो हस्ती यथा चर्ममयो मृगः ।

यश्च विप्रोऽनधीयानस्तयस्ते नाम विभ्रति ॥ १५७ ॥

PROSE.—यथा काष्ठमयः हस्ती यथा चर्ममयः मृगः यश्च विप्रः अनधीयानः ते तयः नाम विभ्रति ॥ १५७ ॥

KULLUKA.—यथा काष्ठमय इति । यथा काष्ठघटितो हस्ती, यथा चर्म-  
निर्मितो मृगः यश्च विप्रो नाधीते तय एते नाममात्रं दधति ननु हस्तादिकार्यं  
शत्रुवधादिकं कर्तुं समन्ते ॥ १५७ ॥

GRAMMAR.—1. काष्ठमयः काष्ठ + मयट् । विकाराद्ये मयट् । 2. चर्म-  
मयः do. 3. विभ्रति मृज् + भ्रति लट् । अभाषोत् अमृत ।

Change of voice.—तैः विभिः नाम भ्रियते ॥ १५७ ॥

BENGALI.—काष्ठनिर्मित हस्ती ও চৰ্মনিৰ্মিত মৃগ যেৰূপ শত্ৰুবধাদি কাৰ্য  
সম্পাদন কৰিতে পাৱে না, যে তাম্ৰণ শাণ্ডৰু না ইন তিনিও সেইৰূপ তাম্ৰণেৰ কোন  
কাৰ্য সম্পাদন কৰিতে পাৱেন না ; এই তিনিটিই কেবল সেই সেই নাম ধাৱণ কৰে  
যাক ॥ ১৫৭ ॥

ENGLISH.—As a wooden elephant, and as a deer made of  
leather, so a Brahman not reading the Vedas—these three hold  
the name or title only. (157).

यथा षण्डोऽफलः स्त्रीषु यथा गौर्गवि चाफला ।

यथाचाक्षोऽफलंदानं तथाविप्रोऽन्तचोऽफलः ॥ १५८ ॥

PROSE.—यथा षण्डः स्त्रीषु अफलः यथा गौः गवि च अफला, यथा चाक्षे  
दानं अफलं तथा अन्तचः विप्रः अफलः ॥ १५८ ॥

KULLUKA.—यथा षण्ड इति । यथा नपुंसकं स्त्रीषु निष्फलं, यथा स्त्रीगवौ  
गव्यामेव निष्फला, यथा च अन्ते दानमफलं तथा ब्राह्मणोऽप्यनधीयानो निष्फलः  
श्रौतस्मार्थकस्मान्नैतथा तत्फलरहितत्वात् ॥ १५८ ॥

GRAMMAR.—1. षण्डः नपुंसकम् nominative भवति understood.  
2. गौः feminine. 3. अफला qualifies गौः । 4. अन्तचः न विद्यते अन्त-  
मन्ताः यस्मिन् सः अन्तचः सृक् पूर्णधूपयामास्ये इति समासान्तः च प्रत्ययः ।  
Bhatto says अन्तचवद्भावप्येतथैव । नैह अन्तच् समा ।

*Change of voice.*—বল্লেণ অফলেন ; গবা...অফলয়া, দানেন...অফলেন  
ভূযতে তথা অশ্বচেন বিপ্রেণ অফলেন ভূযতে ॥ ১৫৮ ॥

BENGALI.—যেমন বপুঃসক ব্যক্তি স্ত্রীতে কোন সম্বান উৎপাদন করিতে পারে না,  
যেমন স্ত্রীস্রীস্রী নো অস্ত্র প্রাপ্তিতে সম্বান উৎপাদন করিতে পারে না, যেমন অস্ত্র  
ব্যক্তিকে দান করিলে কোন ফল উৎপন্ন হয় না, সেইরূপ বেদহীন ব্রাহ্মণ কোন ফল  
দান করে না ॥ ১৫৮ ॥

ENGLISH.—As a eunuch is useless with regard to women, as a  
cow is useless with regard to another cow ; as a gift made to a  
foolish or ignorant person is useless ; so a Brahman without the  
knowledge of the Vedas is useless. (158).

अहिंसयैव भूतानां कार्यं श्रेयोऽनुशासनम् ।

वाक् चैव मधुरा श्रद्धा प्रयोज्या धर्ममिच्छता ॥ १५९ ॥

PROSE.—ধর্ম ইচ্ছতা অহিংসয়া এব ভূতানাং শ্রেয়োঃশাসনং কার্যমধুরা  
শ্রদ্ধা বাক্য চ প্রযোজ্য ॥ ১৫৯ ॥

KULLUKA.—अहिंसयैवेति । भूतानां शिक्षायां प्रकरणात् श्रेयोऽर्थमनु-  
शासनमनतिहिंसया कर्तव्यं रज्ज्वा वेददत्तेन वेत्यहंसाया अभ्यनुष्ठानात् । वाणी  
च मधुरा प्रीतिजननी श्रद्धा या मोक्षैक्यं सा शिक्षाशिक्षायै धर्मवृत्तिमिच्छता  
प्रयोज्य ॥ १५९ ॥

GRAMMAR.—1. धर्मम् Acc. of इच्छता । 2. इच्छता qualifies  
अध्यापकेन understood. 3. भूतानाम् refers to शिक्षायाम् । 4. श्रेयो-  
शासनम् श्रेयोऽर्थं अनुशासनं श्रेयोऽनुशासनम् मध्यपदलोपी कर्मधारयः । 5. न  
हिंसा पीडनं अहिंसा तथा । 6. श्रद्धा श्रद्ध+क्खः औषादिः । qualifies  
वाक् ।

*Change of voice.*—श्रेयोऽनुशासनेन कार्यम् भूयते मधुरया श्रद्धया वाचा  
प्रयोज्यया भूयते ॥ १५९ ॥

BENGALI.—যে অধ্যাপক ধর্ম ইচ্ছা করেন তিনি শিষ্যগণকে রজ্জ্ব বা বেণুদল  
দ্বারা বন্ধ হিঃসায়ুক্ত শাসন করিবেন, এবং মধুর বৃহ ও প্রীতিজনক বাক্য প্রয়োগ  
করিবেন ॥ ১৫৯ ॥

ENGLISH.—A preceptor wishing to abide by law and virtue  
should give instruction for the benefit of his students without doing



injury (by way of punishment) to them. And he should use sweet and mild words. (159).

यस्य वाङ्मनसे शुद्धे सम्यग्गुप्ते च सर्व्वदा ।

स वै सर्व्वमवाप्नोति वेदान्तावगतं फलम् ॥ १६० ॥

PROSE.—यस्य वाङ्मनसो शुद्धे सर्व्वदा सम्यक् गुप्ते च स वै सर्व्वं फलं वेदान्तावगतं अवाप्नोति ॥ १६० ॥

KULLUKA.—इदानीं पुरुषमावस्य फलं धर्म्यं वाङ्मनससंश्रममाह न चध्याप-  
यितुरेव यस्येति । यस्य वाङ्मनसोभयं शुद्धं भवति वागवृत्तादिभिरदुष्टा मनस्य रागद्वेषादि-  
भिरदूषितं भवति एते वाङ्मनसे निषिद्धविषयप्रकरणे सर्व्वदा यस्य पुनः सुरक्षिते भवतः  
स वेदान्तावगतं सर्व्वं फलं सर्व्वशूलसर्व्वशलादिरूपं मोक्षलाभादवाप्नोति ॥ १६० ॥

GRAMMAR.—1. वाङ्मनसे वाक् च मनस्य वाङ्मनसे इन्द्रः । अचतुरादि-  
सूत्रेण निपातनात् सिद्धम् । 2. वेदान्तावगतम् वेदान्ते अवगतं वेदान्तावगतम् ।  
If read वेदान्तोपगतम् meaning the same.

Change of voice.—वाङ्मनसाम्नां शुद्ध्याम् गुप्ताभ्यां च भूयते तेन सर्व्वं फलं  
अवाप्यते ॥ १६० ॥

BENGALI.—गोशत्र नांका त्रिधादि चोत्रा एवः मन रागद्वेषादित्र चोत्रा अङ्गहे  
एवः निषिद्ध विषय इहेते श्रुत्किञ्च, त्रिनि योक्तनाडानन्दर वेषाच्छनाञ्ज पत्रिगीठ  
मर्षश्रुञ्च ओ मर्षश्रुञ्चदि मयञ्च फलनाञ्च करेन ॥ १६० ॥

ENGLISH.—He whose mind and speech are pure and are al-  
ways carefully guarded reaps all the fruit known in the Vedanta or  
Upanishads. (160).

नारुनुदः स्वादार्त्तोऽपि न परद्रोहकर्मधोः ।

ययास्योद्विजते वाचा नालोक्षांतामुदीरयेत् ॥ १६१ ॥

PROSE.—वार्त्तः अपि नारुनुदः न स्वात् परद्रोहकर्मधोः न ( स्वात् ) यया  
वाचा अस्य ( परः ) उद्विजते तां अलोक्षां ( वार्त्तं ) न उदीरयेत् ॥ १६१ ॥

KULLUKA.—अयमपि पुरुषमावस्येव धर्म्यो नाध्यापकस्येत्याह नारुनुद इति ।  
वार्त्तः पौङ्गितोऽपि नारुनुदः स्वात् न मर्षपीडाकरं तत्तदूषणमुदाहरत् । तथा परस्य  
द्रोहोऽपकारस्तदर्थं कर्मवृद्धिश्च न कर्त्तव्या । तथा यया वाचा आस्यपरो व्यवर्त्ते तां  
मर्षमृशमवालोक्षां स्वर्गादिप्राप्तिविरोधिनीं न वदेत् ॥ १६१ ॥

GRAMMAR. — 1. বানঃ: বা + ক্ত: । 2. অহনুদঃ: অহনু তুদ + খন্ সন্ । উপপদ সমাসঃ । 3. পরদ্রোহকর্মধী: দ্রোহমূল্য কর্ম ধীষ দ্রোহকর্মধিযী পরস্য দ্রোহকর্মধিযী যস্য স পরদ্রোহকর্মধী: বহুব্রীহি: । 4. বাচা করষী ততীয়া । 5. অলোক্যাম লোকায স্বর্গাদিলোকায দ্বিতা লোকা নলোকা তাম্ । qualifies তাম্ । 6. উদীরয়েত্ উত্ - ইর + ণিচ্ + যাত্ ।

*Change of voice.* — বাণেন অপি অহনুদেন ন মুযেত, পরদ্রোহকর্মধিযা অ ন মুযেত, সা অলোকা ন উদীর্যেত ॥ ১৬১ ॥

BENGALI.—একান্ত পীড়িত হইলেও অস্ত্রের বর্ষণীড়ানায়ক কোন দোষের উল্লেখ করিবে না, অস্ত্রের জোহগ্ননক চিন্তা ও কর্ম করিবে না, যে বাক্য দ্বারা অস্ত্র দ্বাষ্টি উদ্বেগ পায় তাহা স্বর্গপ্রাপ্তির বিরোধিনী তাহা উচ্চারণ করিবে না ॥ ১৬১ ॥

ENGLISH.—Though distressed, one should not be caustic or acrimonious (in his remarks) ; and his thought and action should not be directed to the injury of others. And he should not utter words which do not secure heaven, and by which another is aggrieved or afflicted. (161).

সম্মানাৎব্রাহ্মণো নিত্যমুদ্বিজত বিধাদিব ।

অমৃতস্যেব চাকাঙ্ক্ষেদবমানস্য সর্বদা ॥ ১৬২ ॥

PROSE. — ব্রাহ্মণ: বিধাদিব সম্মানাৎ নিত্য উদ্বিজে সর্বদাত অমৃতস্যেব অবমানস্য চ আকাঙ্ক্ষিত্ ॥ ১৬২ ॥

KULLUKA. — সম্মানাৎব্রাহ্মণো ব্রাহ্মণ: সম্মানাৎ বিধাদিব সর্বদৌদ্বিজত সম্মানে প্রীতি ন কুর্যাৎ । অমৃতস্যেব সর্বদ্ব্যাহ্নীকাৎব্রাহ্মণস্যাকাঙ্ক্ষিত্ অবমান্যে পরেণ ক্রতেপি অসামান্যেব খেদং ন কুর্যাৎ । মানাবমানহৃদস্বিত্ত্বলমেনে বিধীয়তে ॥ ১৬২ ॥

GRAMMAR. — 1. বিধাদিব ইবেন সমাস: বিমল্যলৌপস্ব । অথার্থক-ধাতো: প্রথোগে অপাদানল্যাত্ পশ্বমী । 2. অমৃতস্যেব পূর্ববৎ সমাস: শ্রীষত্ববিবক্ষয়া বহী । 3. অবমানস্য শ্রীষত্ববিবক্ষয়া বহী কর্মস্থানি । 4. আকাঙ্ক্ষিত্ আ - কাঙ্ক্ষ + যাত্ ।

*Change of voice.* — ব্রাহ্মণেন উদ্বিজ্যেত । আকাঙ্ক্ষিত্ ॥ ১৬২ ॥

BENGALI.—ব্রাহ্মণ নিত্যই বিববৎ সম্মান হইতে ভয় পাইবেন এবং অমৃতের দ্বারা অবমাননার আকাঙ্ক্ষা করিবেন । ( অবমান প্রাপ্ত হইয়া খেদ প্রাপ্ত হইবেন না ) ॥ ১৬২ ॥

ENGLISH.—A Brahman should always be afraid of respect and honour as of poison ; and he should always look forward to dishonour as to ambrosia. (162).

सुखं ह्यवमतः शेते सुखञ्च प्रतिबुध्यते ।

सुखं चरति लोकेऽस्मिन्नवमन्ता विनश्यति ॥ १६३ ॥

PROSE.—अवमतः हि सुखं शेते सुखं प्रतिबुध्यते सुखं अस्मिन् लोके चरति अवमन्ता विनश्यति ॥ १६३ ॥

KULLUKA.—अवमानसहित्वत्वे हेतुमाह सुखं ह्यवमतः शेते इति । यस्मादवमाने परेण तत् खेदमकुर्व्वाणः सुखं निद्राति अन्धधा अवमानदुःखेन दृष्टमानः कथं निद्रां लभते कथञ्च सुखम् प्रतिबुध्यते प्रतिबुध्यते कथं लोके सुखं कार्येषु चरति । अवमानकर्ता तेन पापेन विनश्यति ॥ १६३ ॥

GRAMMAR. — 1. सुखं क्रियाविशेषणम् । 2. अवमतः अवमन + क्तः कर्मणि लभ्यते सेने अवमन्त । 3. अव + मन् + टन् अवमन्ता ।

Change of voice.—अवमनेन श्यते, प्रतिबुध्यते चर्धते, अवमन्ता विनश्यते ।

BENGALI.—बौद्धान्क अवमानित कर्ता इयं तिन श्रुथे श्रम करेन, श्रुथे जाश्रुत हन, छुवन श्रुथे विचरण करेन, किञ्च ये अवमान करे से नाश प्राप्त हर ॥ १६३ ॥

ENGLISH.—Being dishonoured he lies down happily and quietly ; awakes happily, and roams about in the world happily ; but he who dishonours comes to ruin. (163).

अनेन क्रमयोगेन संस्कृतात्मा द्विजः शनैः ।

गुरौ वसन् सच्चिनुयाद्ब्रह्माधिगमिकं तपः ॥ १६४ ॥

PROSE.—अनेन क्रमयोगेन संस्कृतात्मा द्विजः गुरौ वसन् शनैः ब्रह्माधिगमिकं तपः सच्चिनुयात् ॥ १६४ ॥

KULLUKA.—अनेनेति । अनेन क्रमकथितोपायेन जातकर्मादिना उपनयनपर्यन्तेन संस्कृती द्विजो गुरुकुले वसन् शनैरन्तर्या वेदयज्ञार्थं तपोऽभिहितताभिधास्यमाननिग्रमकलापरूपम् अनुतिष्ठेत् विध्यन्तरसिद्धस्यापि अयमनुवादोऽध्ययनाङ्गत्वबोधनाय ॥ १६४ ॥

GRAMMAR.—1. क्रमयोगेन करणे तृतीया । 2. संस्कृतात्मा संस्कृत. आत्मा येन सः । 3. गुरौ गुरुगृहे अधिकारणे सप्तमी । 4. सच्चिनुयात् सम् - चि + यात् ।

5. ব্রহ্মাধিগমিকং অধিগমঃ প্রাপ্তিঃ প্রযোজনমস্ব ইতি অধিগমিকং । তদস্ব প্রযোজনমিতি ঠক্ । ব্রহ্মণঃ অধিগমিকং ইতি ব্রহ্মাধিগমিকং qualifies তপঃ । 6. তপঃ Acc. of সম্ভিন্য়ান্ ।

*Change of voice.*—সংস্কৃতাশ্রমো দ্বিজেন...বসতা...তপঃ সম্ভীষেত ॥ ১৬৪ ॥

BENGALI.—দ্বিজাতিগণ পূর্বোক্ত শ্রমালী অনুসারে সাতকর্ম্মাদি সংস্কার দ্বারা সংস্কৃত হইয়া গুরুকুলে বাসকরতঃ ধীরে ধীরে বেদগ্রহণক্রমে উক্ত ও ব্রহ্মাশ্রম ব্রতাদিক্রমে তপস্বী মনস্করিতেন ॥ ১৬৪ ॥

ENGLISH.—A twice-born having purified and reformed his ownself in the order said above, and living with or in the house of his preceptor, should slowly lay up austerities whereby the knowledge of the Scriptures can be attained. (164).

তপোবিশেষৈর্বিবিধৈব্রতৈশ্চ বিধিচোদিতৈঃ ।

বেদঃ কৃত্বান্নোঃধিগমন্তব্যঃ সরহস্যো দ্বিজশ্রমো ॥ ১৬৫ ॥

PROSE.—দ্বিজশ্রমো তপোবিশেষৈঃ বিধিচোদিতৈঃ বিবিধৈঃ ব্রতৈশ্চ কৃত্বান্নঃ সরহস্যঃ বেদঃ অধিগমন্তব্যঃ ॥ ১৬৫ ॥

KULLUKA.—অধ্যয়নাক্রমেণ স্পষ্টয়তি তপোবিশেষৈরिति । তপোবিশেষৈর্নিয়ম-কলাপৈর্বিবিধৈর্ব্রতৈশ্চৈব অশ্রয়মাণস্তাচানঃ ইত্যাদিমুক্তৈঃ সীবেতিমাংস্ত নিয়মা-নিত্যাদিমিচ্ছন্ত্যমানৈরপি ব্রতৈশ্চোপনিষদ্বাদানাবিকাদিমিচ্ছন্ত্যধির্দেজিতৈঃ স্মৃৎস্মাবিহিতৈঃ সমন্যো বেদো মন্বত্রাদ্রাণাত্মকঃ উপনিষৎকোঃপ্যধ্যন্তব্যঃ রহস্যসুপনিষৎ প্রাধান্য-স্বাপনায় পৃথঙ্নির্দেহ ॥ ১৬৫ ॥

GRAMMAR.—1. তপোবিশেষৈঃ । 2. ব্রতৈঃ করণে তৃতীয়া । 3. দ্বিজশ্রমো করণি তৃতীয়া । 4. সরহস্যঃ রহস্যেন সহ বর্ণমানঃ সরহস্যঃ qualifies বেদঃ । 5. কৃত্বান্নঃ সকলঃ qualifies বেদঃ । কৃত্ব + ক্শ্চঃ by কৃত্বান্নার্থা ক্শ্চঃ ।

*Change of voice.*—বেদেণ অধিগমন্তব্যেন ভূষ্যতে ॥ ১৬৫ ॥

BENGALI.—ব্রাহ্মণাদি দ্বিজাতিজন্ম নিয়মগালনরূপে তপস্বী দ্বারা, এবং বিধিবিহিত ব্রতানুষ্ঠানদ্বারা উপনিষৎ সহ যন্ত্রব্রাহ্মণাক্ষক সমস্ত বেদ অধ্যয়ন করিতেন ॥ ১৬৫ ॥

ENGLISH.—The entire Veda together with its esoteric teachings (the Upanishadas) should be mastered by a twice-born by means of special forms of penance and various vows directed by formal injunctions. (165).

वेदमेव सदाभ्यस्येत्तपस्तप्सान् द्विजोत्तमः ।

वेदाभ्यासो हि विप्रस्य तपःपरमिहोच्यते ॥ १६६ ॥

PROSE.—द्विजोत्तमः तपः तप्सान् वेदं एव सदा अभ्यस्येत् हि इह वेदाभ्यासः विप्रस्य परं तपः उच्यते ॥ १६६ ॥

KULLUKA.—यत्र नियमानामङ्गत्वमुक्तं तत् कृतस्वस्वाध्यायाध्ययनमनेन विधत्ते वेदमेवेति । तपस्तप्सान् चरिष्यन् द्विजो वेदमेव यद्वर्षार्धमावर्तयेत् यस्माद्वेदाभ्यास एव विप्रादेरिह लोके प्रकृतं तपो मुनिभिरभिधीयते ॥ १६६ ॥

GRAMMAR.—1. अभ्यस्येत् अभि अस दिवादि + यात् । आस्यत् लुङ् । 2. तपस्यन् तप् + स्यट् । 3. द्विजेषु उत्तमः । 4. वेदस्य अभ्यासः । 5. परम् qualifies तपः ।

Change of voice.—वेदः अभ्यस्येत तप्स्यता द्विजोत्तमेन । वेदाभ्यासं परं तपः वक्ति ॥ १६६ ॥

BENGALI.—যে বিজ্ঞ তপস্শা করিতে ইচ্ছা করেন, তিনি বেদগ্রন্থের উদ্দেশ্যে নর্য্যতা ব্রত অবলম্বন করিবেন, কেননা ইহলোকে ব্রাহ্মণদিগ বিজ্ঞাতির পক্ষে বেদাভ্যাসকে পরম তপস্শা বলিয়া মুনিগণ নির্দেশ করিয়াছেন ॥ ১৬৬ ॥

ENGLISH.—A Brahman who would practise austerities should always repeat (or recite) the Veda. For the recitation of the Vedas is said to be the best penance for a Brahman. (166).

आ ह्यैव स नखायेभ्यः परमं तप्यते तपः ।

यः सग्वापिद्विजोऽधोते स्वाध्यायं शक्तितोऽन्वहम् ॥ १६७ ॥

PROSE.—यः द्विजः सग्वो अपि अन्वहं शक्तिः स्वाध्यायं अधोते सः आ नखायेभ्यः परमं तपः तप्यते ॥ १६७ ॥

KULLUKA.—स्वाध्यायाध्ययनस्तुतिरिधं आ ह्येवेति । इह्यह्दः परमशब्दामि-  
हितस्यापि प्रकर्षस्यातिशयसूचकः स द्विज आ नखायेभ्य एव चरचनस्वपर्यन्तं सर्वदेह-  
व्यापकमेव प्रकृततमं तपस्तप्यते यः सग्वापि कुसुममालाधार्यपि प्रत्यहं यथाशक्ति  
स्वाध्यायमधीते । सग्वपोत्यनेन वेदाध्ययनाय ब्रह्मचारिनियमव्यागमपि स्तुत्यर्थं दर्शयति ।  
तप्यते तप इति तपस्तपःकर्मकस्ये वेति यमात्मनेपदं भवतः ॥ १६७ ॥

GRAMMAR.—1. नखायेभ्यः नखानां अशापि तैभ्यः आङ् योने पचमी । 2. तप्यते यक् आत्मनेपदश्च कर्ता कर्मवच्च by तपस्तपः कर्मकस्यैव । तापसः तपः

তপ্যতে অর্জয়তৌর্থ্যঃ । অতঃ । ৩. স্বয়ী স্বজ + যিনিঃ । ৪. স্বাধ্যায়ং Acc. of অধীতে । ৫. শক্তিঃ তসিঃ দ্বিতীয়া স্যানে । ৬. অন্বেদন্ অহনি অহনি অন্বেদন্ অন্বেয়ীভাবঃ । সমাসান্ত টচ্ by অনয় অনন্তাৎ অন্বেয়ীভাবাৎ টচ্‌স্ত্যাৎ ।

*Change of voice*—তেন পরমং তপঃ তপ্যতে সম্বিনা যেন দ্বিজেন.....স্বাধ্যায়ঃ অধীযতে ॥ ১৬৩ ॥

BENGALI.—উদ্ধারিত্রীর নিরমলজ্বনপূর্ক ক মালাধারণ করিত্রীও যিনি প্রভাহ যথা- নক্ষি বেদ অধ্যয়ন করেন তিনি নখাগ্র হইতে সমস্ত শরীর দ্বারা প্রকৃষ্ট উপজ্ঞা করিত্রী পাঠকন ॥ ১৬৭ ॥

ENGLISH.—That twice-born, who, though wearing garlands, reads the Veda every day according to his might, practises the best penance affecting his whole body up to the tip of the foot-nails. (167).

যোঃনধীত্য দ্বিজো বেদানন্যত্র কুরুতে শ্রমম্ ।

স জীবন্নেব শূদ্রত্বমাশু গচ্ছতি সান্বয়ঃ ॥ ১৬৮ ॥

PROSE. — যঃ দ্বিজঃ বেদং অনধীত্য অন্যত্র শ্রমং কুরুতে স জীবন্ এব সান্বয়ঃ আশু শূদ্রত্বং গচ্ছতি ॥ ১৬৮ ॥

KULLUKA.—যোঃনধীত্যেতি । যো দ্বিজো বেদমনধীত্য অন্যদার্থশাস্ত্রাদী শ্রমং যদ্বাতিশয়ং করোতি স জীবন্নেব পুণ্যপীতাদিমহিতঃ শৌণ্ড শূদ্রত্বং গচ্ছতি । বেদমনধী-  
ত্ব্যপি স্মৃতিবেদাঙ্কাদ্যয়নে বিরোধাভাবঃ । অতএব শব্দলিখিতৌ ন বেদমনধীত্যান্য  
বিদ্যামধীতীতান্যতবেদাঙ্কস্মৃতিভ্যঃ ॥ ১৬৮ ॥

GRAMMAR.—1. অন্বয়েন সহ বর্তমানঃ সান্বয়ঃ ।

*Change of voice.* — যেন দ্বিজেন...শ্রমঃ ক্রিয়তে...তেন জীবতা সান্বয়েন শূদ্রত্বং গম্যতে ॥ ১৬৮ ॥

BENGALI.—যে দ্বিজ বেদ অধ্যয়ন না করিয়া অর্থশাস্ত্র প্রভৃতি পাঠে পরিশ্রম করে সে জীবিতাবস্থায়ই সমগ্ৰে অতি মন্দর শূদ্র হইয়া পড়িবে । (বেদ অধ্যয়ন না করিয়া বেদান্ত ও স্মৃতি অধ্যয়ন করিলে এক্ষণ দোষ হয় না) ॥ ১৬৮ ॥

ENGLISH.—That twice-born, who without reading the Veda bestows his labours on other branches of study, does soon become in the very life reduced to the state or condition of a Sudra, together with his family. (168):

मातुरग्रेऽधिजननं द्वितीयं मौञ्जीवन्धने ।

तृतीयं यज्ञदीक्षायां द्विजस्य श्रुतिचोदनात् ॥ १६८ ॥

PROSE. — द्विजस्य अग्रे अधिजननम् मातुः, द्वितीयं अधिजननं मौञ्जीवन्धने, तृतीयं अधिजननं यज्ञदीक्षायां श्रुतिचोदनात् ॥ १६८ ॥

KULLUKA. — द्विजानां तत्र तत्राधिकारश्रुतेर्द्विजत्वनिरूपणार्थमाह मातुरग्रे इति । मातुः सकाशादादौ पुरुषस्य जन्म, द्वितीयं मौञ्जीवन्धने उपनयने व्यापीः संज्ञाच्छन्दमोर्वह्नमिति, क्रस्वः । तृतीयं ज्योतिष्टोमादिश्रुतदीक्षायां वेदश्रवणात् । तथाच श्रुतिः पुनर्व्यां यद्वत्विजः यज्ञियं कुर्वन्ति यद्दीक्षयन्तीति । प्रथम-द्वितीय-तृतीय-जन्मक्षणसंज्ञेर्द्वितीयजन्मस्तुत्यर्थं द्विजस्येव यज्ञदीक्षायामप्यधिकारान् ॥ १६८ ॥

GRAMMAR. — 1. मातुः अपादाने पञ्चमी । 2. मौञ्जीवन्धने अधिकरणे सप्तमी । मौञ्जी has become मौञ्जि as accounted for by Kulluka. 3. श्रुतिचोदनात् श्रुतेः चोदनम् प्रेरणं श्रवणमित्यर्थः । द्विती पञ्चमी । 4. अग्रे अधिकारणे सप्तमी or प्रथमार्थे सप्तमी अग्रे अधिजननम् = अयं (प्रथमम्) अधिजननम् ।

Change of voice. — अधिजननेन भूपते.....द्वितीयेन भूपते.....तृतीयेन भूपते ॥ १६८ ॥

BENGALI. — माता इहेउ विजगपेर अथम जन्म ह्य, उपनयनकाले द्वितीय जन्म ह्य, आतिष्ठोमादि यज्ञकाले त्रैविज्य वन्धः तृतीय जन्म ह्य । १६८ ॥

ENGLISH. — The first birth of a twice-born is from his mother ; the second birth takes place at the time of fastening the girdle of the Munja grass ; and the third birth takes place on account of listening to the Vedas at the time of initiation into a sacrifice (169).

तत्र यद्वज्रजन्मास्य मौञ्जीवन्धनचिह्नितम् ।

तत्रास्य माता सावित्री पिता त्वाचार्य उच्यते ॥ १७० ॥

PROSE. — तत्र अस्य मौञ्जीवन्धनचिह्नितं यत् वज्रजन्म तत्र अस्य सावित्री माता आचार्यस्तु पिता उच्यते ॥ १७० ॥

KULLUKA. — तत्रेति । तेषु विषु जन्मसु मध्ये यदेतद्वज्रजन्म इत्यर्थं जन्म उपनयनसंस्काररूपं मेखलावन्धनोपलक्षितं तत्रास्य मातृवत्कस्य सावित्री माता आचार्यस्य पिता मातापितृसम्पादत्वाज्जन्मनः ॥ १७० ॥

GRAMMAR.—1. মৌলীবন্ধনে চিহ্নিতম্ । 2. ব্রহ্মজন্ম ব্রহ্মবহুস্বার্থে  
নম্ ব্রহ্মজন্ম মধ্যপদলোপে কর্মধারয়ঃ । 3. তব সমমী ।

*Change of voice.*—যে মৌলীবন্ধনচিহ্নিতেন ব্রহ্মজন্মনা ভূয়তে...সাবিত্রী  
মাতরং আচার্য্যং পিতরং বন্তি ॥ ১৩০ ॥

BENGALI.—বিশেষর উক্ত তিনটি জন্মের মধ্যে উপনয়নকালে যেখলাবন্ধনচিহ্নিত  
যে দ্বিতীয় জন্ম হয়, সেই জন্মের কালে সাবিত্রীই ইহার মাতা এবং আচার্য্যই ইহার পিতা  
বলিয়া গণ্য হন ॥ ১৩০ ॥

ENGLISH.—In the second of these births which is marked by  
the fastening of the girdle of the Munja grass and which is due to  
initiation into the Veda, Gayatri is his mother, and the *acharya* is  
said to be his father. (170).

বেদপ্রদানাদাচার্য্যং পিতরং পরিচক্ষতে ।

ন হ্যস্মিন্ যুজ্যতে কর্ম কিঞ্চিদা মৌলিবন্ধনাৎ ॥১৩১॥

PROSE.—বেদপ্রদানাৎ আচার্য্যং পিতরম্ পরিচক্ষতে, অস্মিন্ হি আমৌলি-  
বন্ধনাৎ কিঞ্চিৎ কর্ম ন যুজ্যতে ॥ ১৩১ ॥

KULLUKA.—বেদপ্রদাদিতি । বেদাধ্যাপনাদার্থ্যং পিতরং মন্বাদযো বদন্তি  
পিতৃবন্ধনোপকারফলান্নাৎ যীর্ণং পিতৃত্বং মহোপকারমিব দর্শয়তি ন হ্যস্মিন্নিতি । যজ্ঞা-  
দস্মিন্মাধ্যবকং প্রাপ্যনয়নান্নাৎ কিঞ্চিৎ কর্ম যীর্ণং স্মার্ত্তশ্চ ন সম্বধ্যতে ন তবাধিক্রিয়ত  
কৃত্যর্থঃ ॥ ১৩১ ॥

GRAMMAR.—1. বেদপ্রদানাৎ বেদস্য প্রদানম্ তস্মাৎ হেতৌ পশ্যমী ।  
2. মৌলীবন্ধনাৎ আচ্ যোগে পশ্যমী । আপোঃ সংশ্লিষ্টদ্ব্যর্থবহুলমিতি ব্রহ্মত্বম্ ।

*Change of voice.*—আচার্য্যঃ পিতা পরিচ্ছ্যয়তে ॥ ১৩১ ॥

BENGALI.—উপনয়নের পূর্বে কোন কর্মে অধিকার জন্মে না; আচার্য্যকে  
অনান করিয়া (এ সকল কর্মে অধিকার অশানরূপ) উপকার করিয়া থাকেন বলিয়া  
যদি মুনীগণ আচার্য্যকে গোণ পিতা বলিয়া থাকেন ॥ ১৩১ ॥

ENGLISH.—They call the *acharya* as father on account of his  
imparting instruction in the Veda. No work of any kind is enjoined  
or set down in reference to a twice-born until the fastening of  
the girdle of the Munja grass. (171).



नाभिव्याहारयेद्ब्रह्म स्वधानिनयनादृते ।

यूद्रेण हि समस्तावदुयावद्दे न जायते ॥ १७२ ॥

PROSE.—आ मौञ्जीवन्मनात् स्वधानिनयनात् ऋते ब्रह्म न अभिव्याहारयेत्, यावत् वेदे न जायते तावत् हि ( असी ) यूद्रेण समः ॥ १७२ ॥

KULLUKA.—नाभिव्याहारयेदिति । आ मौञ्जीवन्मनादित्यनुवर्तते प्रागुप-  
नयनादेदं मोक्षारयेत् स्वधाशब्देन शास्त्रमुच्यते तन्निनीयते निष्पाद्यते येन मन्त्रजातेन तद-  
वर्जयित्वा मृतपितृको नवश्राद्धादौ मन्त्रानुच्चारयेत् तद्व्यतिरिक्तं वेदं मोदाहरेत् यस्माद्  
स्वावहेदं न जायते तावदसौ यूद्रेण तुल्यः ॥ १७२ ॥

GRAMMAR.—1. स्वधानिनयनात् स्वधा इत्यव्ययं स्वधा शब्दं तस्य निनयनम्  
सम्पादनं येन तत् स्वधानिनयनम् तस्मात् ऋते शब्दयोगे पञ्चमौ । 2. यूद्रेण तुल्यार्थक  
शब्दयोगे द्वितीयः । 3. वेदे अधिकरणे सप्तमौ 4. अभिव्याहारयेत् अभि- वि-  
आ- ह + णिच् + यात् । स्वार्थे णिच् ।

Change of voice.—ब्रह्म न अभिव्याहार्येत । समेन भूयते...न तेन  
जायते ॥ १७२ ॥

BENGALI.—উপনয়নের পূর্বে আঁক ভিত্ত অঙ্ক কোন সময় বেণ উচ্চারণ করিবে  
না, যে পর্যন্ত উপনয়ন দ্বারা বিভীত অঙ্ক না হয়, তাবৎকাল যুদ্রের সমানই  
থাকে ॥ ১৭২ ॥

ENGLISH.—Prior to the fastening of the girdle of the Munja  
grass one should not utter the Veda except the *mantras* by which  
the Sradha ceremony is done. For as long as he is not initiated  
into the Veda he is as good as a Sudra. (172).

कृतोपनयनस्यास्य व्रतादेशनमिच्छते ।

ब्रह्मणो ग्रहणञ्चैव क्रमेण विधिपूर्वकम् ॥ १७३ ॥

PROSE.—कृतोपनयनस्य अस्य क्रमेण विधिपूर्वकं व्रतादेशनं ब्रह्मणः ग्रहणञ्चैव  
इच्छते ॥ १७३ ॥

KULLUKA.—कृतोपनयनस्तेति । यस्मादस्य माणवकस्य समिधमाधेहि मा  
दिवा स्नाप्नोतित्यादिव्रतादेशं वेदस्याध्ययनं मन्त्रब्राह्मणकर्मणाध्यधमाणस्त्वाचान् इत्यादि  
विधिपूर्वकमुपनौतस्त्वोपदिक्षते तस्मादुपनयनात् पूर्वं न वेदमुदाहरेत् ॥ १७३ ॥

GRAMMAR. — 1. ক্রতৌপনয়নস্য ক্রতং উপনয়নং যস্য স তস্য । 2. ব্রতাদেশনম্ ব্রতস্য আদেশনম্ । 3. ব্রহ্মচারিঃ বেদস্য কৰ্ত্তব্যকৰ্ম্মণোঃ ক্রতৌতি বচী ।

*Change of voice.*—ব্রতাদেশনং যদ্ব্যং ইচ্ছন্তি ॥ ১৩২ ॥

BENGALI.—উপনৌত ব্যক্তিৰ এতি কৰণঃ বিধিগূৰ্ব্বক তত, পান ও বেদাধ্যয়ন বিহিত আছে। অতএব উপনয়নেন গূৰ্ব্বক বেদ উচ্চারণ কৰিব নী ॥ ১৩২ ॥

ENGLISH.—The commands as to the observance of vows and the gradual initiation into the Veda according to due form are desired in respect of him when investing with the sacred thread has been done. (173).

यद्यस्य विहितं चर्म यत् सूत्रं या च मेखला ।

यो दण्डो यस्य वसनं तत्तदस्य व्रतेष्वपि ॥ १३४ ॥

PROSE.—যস্য যত্ চৰ্ম্ম যত্ সূত্ৰং বিহিতং যা চ মেখলা বিহিতা যঃ দণ্ডঃ বিহিতঃ যস্য বসনং বিহিতং অস্য ব্রতেষু অপি তস্মিন্ বিহিতম্ ॥ ১৩৪ ॥

KULLUKA.—যদ্যস্মেতি । যস্য ব্রহ্মচারিণো যানি চৰ্ম্মসূত্রমেখলাদণ্ডবস্ত্রাণি উপনয়নকালে মৃদ্বাণি বিহিতানি তানি গাঢ়াদিকব্রতেষুপি নবানি কৰ্ত্তব্যানি ॥ ১৩৪ ॥

GRAMMAR.—1. তন্ তত্ সামান্যে নপুংসকম্ ।

*Change of voice.*—যেন...চৰ্ম্মায়া যেন সূত্রেণ যয়া চ মেখলায়া..... ভূয়তে তেন তেন ভূয়তে ॥ ১৩৪ ॥

BENGALI.—উপনয়নকালে যে ব্রহ্মচারীর বস্ত্রপ চৰ্ম্মসূত্র মেখলা দণ্ড ও বস্ত্র বিহিত আছে, সেই ব্রহ্মচারী গোদানাদি ব্রতকালেও সেই সেই রূপ চৰ্ম্মাদি ধারণ কৰিবে ॥ ১৩৪ ॥

ENGLISH.—In practising vows one should use the same thread, the same hide, the same girdle and the same staff as have been enjoined for him at the ceremony of investing with the sacred thread. (174).

सेवेतेमांस्तु नियमान् ब्रह्मचारी गुरौ वसन् ।

सन्धियम्येन्द्रियग्रामं तपोवृद्धयर्थमात्मनः ॥ १३५ ॥

PROSE.—ব্রহ্মচারী ইन्द्रিয়গ্রামং সন্দিয়ম্য গুরৌ বসন্ আত্মনঃ তপোবৃদ্ধয়র্থম্ ইমান্ নিয়মান্ তু সেবেত ॥ ১৩৫ ॥

KULLUKA.—सेवेतेति । ब्रह्मचारी गुरुसमीपे वसन् इन्द्रियसंयमं कृत्वाक-  
गतादृष्टदृश्यमिमात्रियमाननुतिष्ठेत् ॥ १७५ ॥

GRAMMAR.—1. ब्रह्मचारी ब्रह्म वेदं चरतीति ब्रह्मचारी उपपद समासः ।  
2. इन्द्रियसंयमम् Acc. of संनियम्य । 3. संनियम्य सम् + नि यम् ल्यप् भयंसीत् ।  
4. तपोवृत्तार्थम् तपसो वृत्तिः तपोवृत्तिः तस्यै इदम् तपोवृत्तार्थम् अर्थेन समासः  
विशेष्यलिङ्गताच्च Adv. 5. गुरो आचारे समीपे । 6. सेवेत सेव + ईत ।  
असेविष्ट ।

*Change of voice.*—ब्रह्मचारिणा इमे नियमाः सेवेरन् ॥ १७५ ॥

BENGALI.—ब्रह्मचारी ईन्द्रियसंयमपूर्वकं उग्रगृहं वागकवृत्तः निमिषत्र उपपञ्चा  
वृत्तिर ज्ञानं वक्तव्यं नियमं कृत्वा अनुष्ठेयं कर्तव्यम् ॥ १७५ ॥

ENGLISH.—A student of the Veda, living with his preceptor,  
should, after having controlled the group of his senses observe  
the following rules for the sake of the welfare of his own pen-  
ance. (175).

नित्यं स्नात्वा शुचिः कुर्याद्देवर्षिपितृतर्पणम् ।

देवताभ्यर्चनञ्चैव समिदाधानमेव च ॥ १७६ ॥

PROSE.—(ब्रह्मचारी) नित्यं स्नात्वा शुचिः सन् देवर्षिपितृतर्पणं देवताभ्यर्चनं च  
समिदाधानं एव च कुर्यात् ॥ १७६ ॥

KULLUKA.—नित्यमिति प्रत्यहं स्नात्वा देवर्षिपितृभ्य उदकदानं प्रतिमादिषु  
हरिहरादिदेवपूजनं साथं प्रातश्च समिद्धं स कुर्यात् । यस्तु गौतमीये स्नाननिर्घो  
ब्रह्मचारिणः सुखस्नानविषयः अतएव बौधायनः नाप्सु, प्राघमानः स्नायात् । विष्णुनाम  
कालद्वयमभिषेकाधिकार्यकारणमस्तु, दृष्टव्यमन्यनमिति ब्रूवाणेन वारह्यं स्नान-  
मुपदिष्टम् ॥ १७६ ॥

GRAMMAR.—1. स्नात्वा स्ना + क्ताच् अस्नासीत् । 2. देवर्षिपितृतर्पणम्  
देवश्च ऋषिश्च पितरश्च देवर्षिपितरः तेषां तर्पणम् । दृप् + ल्युट् । अतार्पंसीत्  
अनाप्सीत् अतर्पित् अदत्तत् । 3. देवतानां देवप्रतिमानां अर्चयन्म् । 4. समिधां  
आधानम् समिदाधानम् । वर्धामुरश्कार आदधौत इत्यादि जैमिनिसूत्रोक्ताधानव्य-  
प्रयोगान् अभ्यासानमेव विवक्षितं तस्मादुक्तम् समिद्धोऽं कुर्यादिति ।

*Change of voice.*—(ब्रह्मचारिणा)...क्रियेत ॥ १७६ ॥

BENGALI.—ব্রহ্মচারী প্রভৃৎ ত্রানকরত শুচি ইহৈশ দেবতা, ষষি ও গিড়লোকর  
তর্পণ করিবে, হ্রিহ্রিহ্রিষি দেবশক্তিয়ার অর্চনা করিবে এবং সার ও প্রাণ্ডি কাঠেবার  
হোম করিবে ॥ ১৭৬ ॥

ENGLISH.—A student of the Veda should bathe every day,  
offer palmfuls of water to the gods, the rishis, and the manes,  
perform the worship of gods and offer fuel to the sacrificial  
fire. (176).

বর্জয়েন্মধু মাংসঞ্চ গম্ভং মাংসং রমান্ স্ত্রিয়ঃ । ১৭৭

শুক্লানি যানি সর্বাণি প্রাণিনাশ্চৈব হিংসনম্ ॥ ১৭৮ ॥

PROSE.—(ব্রহ্মচারী) মধু মাংসং গম্ভং মাংসং রমান্ স্ত্রিয়ঃ যানি সর্বাণি  
শুক্লানি তানি প্রাণিনা হিংসনং চ বর্জয়েৎ ॥ ১৭৮ ॥

KULLUKA.—বর্জয়েদিতি । 'চৌত্র' মাংসঞ্চ ন খাদেৎ গম্ভঞ্চ কর্পূরশব্দন-  
কান্টরিকাদি বর্জয়েৎ এষাঞ্চ গম্ভানাং যথাসম্ভবং মনুষ্যমনুলেপনঞ্চ নিষিদ্ধং মাংসঞ্চ  
ন ধারয়েৎ চত্বিংশতমাংশ গৃহাণেৎ ন খাদেৎ স্ত্রিয়শ্চ নাপেয়াৎ যানি স্বমাবনৌ মধুরাদি-  
শ্চামানি কালবশেত উদকশাসাদিতা চাস্থ্যতানি তানি শুক্লানি ন খাদেৎ । প্রাণিন  
হিংসাং ন কুর্যাদি ॥ ১৭৮ ॥

GRAMMAR.—1. শুক্লানি Acc. of বর্জয়েৎ ।

Change of voice.—মধু মাংসং গম্ভং মাংসং রমান্ স্ত্রিয়ঃ...(তানি)...হিংসনং  
চ বর্জয়েৎ ॥ ১৭৮ ॥

BENGALI.—ব্রহ্মচারী মক্ষিকাকাত মধু ও মাংস খাইবে না, কর্পূর ও চন্দনাদি  
দ্রব্যে ঘাণ ভক্ষা ভাণ্ডা ভক্ষণ করিবে না, ঘাণ অমূল্যেতা ভাণ্ডা অমূল্যেতা ও ঘাণ  
স্বাভাবিক ভাণ্ডা আচ্ছাদন করিবে না, বাজা পরিধান করিবে না, উগ্ররস শুড়ানি খাইবে না,  
ত্রাণঃসর্গ করিবে না, ঘাণ্ডা স্বভাবতঃ মধুর কিন্তু কলে ভিজান থাকিবশতঃ অন্ন ইহৈশ  
নিগ্রাহে এমন ভ্রম খাইবে না, এবং প্রাণিহিংসা করিবে না ॥ ১৭৭ ॥

ENGLISH.—He should forbear from (taking) honey, meat, sweet  
scents, garlands, sweet and pungent drinks, intercourse with  
women, all sour gruel or acid liquid; and the killing or injuring of  
animals. (177)

অম্ব্যক্ষমস্তনস্বাচক্ষীকপানশ্চৈবধারণম্ ।

কামং ক্রোধঞ্চ লোভঞ্চ নর্শনং গীতবাদনম্ ॥ ১৭৯ ॥

(The slokas from 177 to 179 form one sentence, all the accusatives there being governed by the verb वर्जयेत् । We however take them separately for the sake of convenience.)

PROSE.—अभ्यङ्गं अक्षोः अञ्जनं उपानच्छत्रधारणं कामं क्रोधञ्च लोभं च नर्तनं गीतवादनं च (वर्जयेत्) ॥ १७८ ॥

KULLUKA.—अभ्यङ्गमिति । तैलादिना शिरःसङ्घृतदेहमर्दनलक्षणं कञ्जलादिभिश्च अक्षुषीरञ्जनं पादुकायाम्बुदस्य च धारणं कामं मैथुनातिरिक्तविषयामिलाषातिशयं मैथुनस्य स्निध्य इत्यनेनैव निषिद्धत्वात् । क्रोधलोभद्वयगीतवीणापद्यवादि वर्जयेत् ॥ १७८ ॥

GRAMMAR.—1. अभ्यङ्गम् अभि + अञ्ज + घञ् । 2. अक्षोः कर्तृकर्मणोः कर्तौति षष्ठी । 3. उपानच्छत्रधारणम् उपानत् च छत्रं च उपानच्छत्रे तथो धारणम् । 4. गीतवादनम् गीतसहितं वादनम् मध्यपदलोपि कर्मधारयः ।

Change of voice.—अभ्यङ्गः...कामः क्रोधः लोभः...वर्ज्येत ॥ १७८ ॥

BENGALI.—(उक्तकारो) डेउनादिधारि मलुक इहेउ छत्र पर्याख मर्दन, कञ्जलादि धारि छत्र अञ्जन, पादुका ও ছত্রधारण, বিষয়ভিলাষ, লোভ, মূতা, গীত ও বাঁদা পরিভাগ করিবে ॥ ১৭৮ ॥

ENGLISH.—He should forbear from smearing the body with oil, painting the eyes with collyrium, using shoes and umbrella, desire for enjoyment, anger, covetousness, dancing, singing and playing on musical instruments. (178).

यूतञ्च जनवादञ्च परीवादं तथानृतम् ।

स्त्रीणाञ्च प्रेक्षणात्ममुपघातं परस्य च ॥ १७९ ॥

PROSE.—यूतं च जनवादं च परीवादं तथा अनृतम् स्त्रीणां प्रेक्षणात्ममुपघातं परस्य (वर्जयेत्) ॥ १७९ ॥

KULLUKA.—यूतञ्चेति । असादिक्रीडां जनैः सह निरर्थकवाक्कलङ्गं परस्य दोषवादं स्वभाभिधानं स्त्रीणाञ्च मैथुनेच्छया सानुसंगेण प्रेक्षणातिङ्गने परस्य आपकारं वर्जयेत् ॥ १७९ ॥

GRAMMAR.—1. यूतम् दिष + ऋः भावे । 2. जनवादः is a technical word meaning जनरवः ; मित्यसमासः । 3. न नृतम् अनृतम् तस्यनुङ-

যোনি বৃদ্ধি। ৪. স্ত্রীস্বাম্য কৰ্ম্মসি বধী। ৫. প্রেমবালম্ প্রেমবচ বালম্  
প্রেমবালম্ সমাহার ইত্যঃ। অদ্রব্যবাসিত্বিপি জাতি ব্রাহ্মণ্যমিতি সমাসঃ।  
৬. উপঘাতম্ উপ—হন + ঘন্।

*Change of voice.*—দ্যুতং জনবাদঃ পরিবাদঃ অদ্রব্যং...প্রেমবালম্ উপঘাতঃ  
বজ্রোত ॥ ১৩৫ ॥

BENGALI.—অক্রান্তি জীড়া, লোকের সঙ্গে বৃথা বা কলহ, পরের দোষপ্রকাশ,  
মিথ্যা কথা, বৈষম্যবোধ সাধারণে জ্ঞানোৎপাদন ও আলিঙ্গন ও পরের অপকার পরি-  
ভোগ করিবে ॥ ১৭৯ ॥

ENGLISH.—He should forbear from gambling, petty quarrels  
with people, calumniating, speaking lies, wistfully looking at  
women and embracing them, and harm to others. (179).

एकः शयीत सर्वत्र न रेतः स्कन्दयेत् क्वचित् ।

कामादि स्कन्दयन् रेतो दिनस्ति व्रतमात्मनः ॥ १८० ॥

PROSE.—(ব্রহ্মচারী) সর্বত্র একঃ শয়িত ক্বচিৎ রेतঃ ন স্কন্দয়েৎ, কি  
কামাত রेतঃ স্কন্দয়ন্ আত্মনঃ ব্রতঃ দ্বিনসি ॥ ১৮০ ॥

KULLUKA.—একঃ ইতি। সর্বত্র নীচশয্যাধাবেকাকৌ শয়নং কুর্যাত্ ইচ্ছয়া  
ন স্কন্দয়ন্তীতি পাতয়েৎ যক্ষাদিচ্ছয়া স্তম্বেহনাৎ যক্ষপাতনং স্কন্দয়ন্তীতি ব্রতলোপ  
আবকৌষিমাশয়িচং কুর্যাত্ ॥ ১৮০ ॥

GRAMMAR.—1. শয়ীত শী + ইত। অশয়িত। 2. ক্বচিৎ ক্চিৎ শব্দাত  
সম্বন্ধে জ্ঞাদেশঃ। 3. স্কন্দয়েৎ স্কন্দ—চিচ্—যাত্। 4. দ্বিনসি দ্বিসং ধাতু  
অভিসীত। ত্রিভিঃ।

*Change of voice.*—একেন শয্যেত। রेतঃ ন স্কন্দেত। ব্রতং দ্বিনসি  
স্কন্দয়তা ॥ ১৮০ ॥

BENGALI.—সর্বত্র নীচ শয্যাতে একাকী শয়ন করিবে, ইচ্ছাপূর্বক ব্রতঃখলন  
করিবে না, কেন না ইচ্ছাপূর্বক শুক্লপাতন করিলে অকীর ব্রত নষ্ট হয় এবং ভগবান  
আশঙ্কিত করিতে হয় ॥ ১৮০ ॥

ENGLISH.—In all places he should lie down alone, and should  
nowhere emit the seminal fluid. For, emitting wilfully the semi-  
nal fluid, he puts an end to his vow. (180).

स्वप्नेऽसिक्ता ब्रह्मचारी द्विजः शुक्रमकामतः ।

स्नात्वा कर्मसर्चयित्वा त्रिः पुनर्भामित्यृचं जपेत् ॥ १८१ ॥

PROSE.—ब्रह्मचारी द्विजः स्वप्ने अकामतः शुक्रं सिक्ता स्नात्वा अर्चयेत् अर्चयित्वा पुनः मार्मिकं कर्म त्रिः जपेत् ॥ १८१ ॥

KULLUKA.—स्वप्ने इति । ब्रह्मचारी स्वप्नादावनिच्छेदा रितः सिक्ता कृतस्नानश्चन्दनाद्यनुर्लपनपुण्यधर्पादभिः मध्येमध्यर्चा पुनर्मार्मिकान्द्रयम् इत्येतां कर्मं वारतयं पठेत् । इदमतः प्रथयितम् ॥ १८१ ॥

GRAMMAR.—1. सिक्ता - मिच् + क्ताच् । 2. अकामतः दतीयायास्तसिः । 3. स्नात्वा स्ना + क्ताच् । 4. अर्चयित्वा अर्च क्ताच् । 5. त्रिः adv. 6. पुनर्भामिति या क्त्वा सा पुनर्मामित्याक् तां Acc. of जपेत् ।

Change of voice.—पुनर्मामित्याक् जप्येत ब्रह्मचारिणा द्विजेन ॥ १८१ ॥

BENGALI.—उक्तछात्रो उक्तछात्रि विषयं यदि अत्रावश्यं अनिच्छापूर्वकं प्रेतः प्रेतन कवेन, उदे चान करिषा गकादि शारां २५५ अर्चना करतः पुनर्भामि एतुं हेतुवत् एते वक्त्रं उदे चान करिषा करिषा, एते मन्त्राष्टौ एते गोपेन आश्रितः ॥ १८१ ॥

ENGLISH.—A twice-born student of the Veda, emitting unwittingly the seminal fluid in dream, should, after bathing, worship the sun and mutter thrice the hymn :—"Let the senses come back to me &c..." (181).

उदकुम्भं सुमनसो गोशक्तभृत्तिकाकुशान् ।

आहरेदद्यावदर्थानि भैक्ष्यन्नाहरहश्चरेत् ॥ १८२ ॥

PROSE.—(ब्रह्मचारी द्विजः) उदकुम्भं सुमनसः गोशक्तभृत्तिकाकुशान् यावदर्थानि आहरेत् भैक्ष्यं च अहरहः चरेत् ॥ १८२ ॥

KULLUKA.—उदकुम्भमिति । जलकलसपुष्पगोमयसत्तिकाकुशान् यावदर्थानि यावद्भिः प्रयोजनानि आचार्यस्य तावन्वाचार्यार्थमाहरेत् । अतएव उदकुम्भमित्यत्र एकत्वमप्यविवक्षितं प्रदर्शनकृतं अन्वदद्याचार्योपयुक्तमुपहरेत् भैक्ष्यं प्रत्यहमर्जयेत् ॥ १८२ ॥

GRAMMAR.—1. उदकुम्भं कुम्भः तम् संज्ञायां उदादेशः । 2. सुमनसः स्त्रियः सुमनसः पुष्पमित्यमरः बहुवचनान्तरः । 3. गोः वक्तुं च सत्तिकां च कुशां

বসন্তেতর ইত্যঃ Acc. governed by আহারেত্ । 4. যাবদর্শানি যাবান্ অর্থঃ  
প্রযোজনং যेषাং তানি যাবদর্শানি সামান্যে নপুংসকম্ । 5. অহরহঃ বৌদ্ধায়াং দ্বিক্রিতিঃ  
অন্যন্ত সংযোগে দ্বিতীয়া ।

*Change of voice.*—উদকম্ভঃ সুমনসঃ গৌশক্ৰমৃচ্চিকাকুশাঃ যাবদর্শানি  
আহ্নিযেবন্ ভৈত্যং অর্থ্যেত ॥ ১৮২ ॥

BENGALI.—উদকজন, পুষ্প, প্রাণহ, বৃত্তিকা ও কুশ যতগুলি প্রয়োজন ততগুলি  
মগ্ন প্রস্তুত আহরণ করিবে, (প্রয়োজন যত অল্পাচ্ছন্ন যত সংগ্রহ করিবে) এবং প্রাতিদিন  
ভিক্ষা সংগ্রহ করিবে ॥ ১৮২ ॥

ENGLISH.—He should draw (for his preceptor) water in  
pitchers, pluck flowers, bring cow-dung, earth, and kusagrass, as  
much as is necessary ; and should go about everyday begging  
alms. (182)

বেদ্যস্তৈরহীনানাং প্রশস্তানাং স্বকর্ম্মসু ।

ব্রহ্মচারীয়াহরৈভৈত্যং গৃহেভ্যঃ প্রযতোঃস্বহম্ ॥ ১৮৩ ॥

PROSE.—ব্রহ্মচারী বেদ্যস্তৈঃ অহীনানাং স্বকর্ম্মসু প্রশস্তানাং গৃহেভ্যঃ স্বহম্  
প্রযতঃ ভৈত্যং আহারেত্ ॥ ১৮৩ ॥

KULIUKA.—বেদ্যস্তৈরহীনানাং স্বকর্ম্মসু দ্ব্যর্শনাং গৃহেভ্যঃ  
প্রযতঃ ব্রহ্মচারী সিদ্ধান্তে ভিক্ষাসমূহমাহারেত্ ॥ ১৮৩ ॥

GRAMMAR. — 1. বেদ্যস্তৈঃ বেদোক্তৈঃ যজ্ঞৈঃ পূর্ব্বসংগতসমীনার্থকলহনিপুণ-  
মিশ্রশ্রম্ভৈঃ ইত্যনেন জনার্থক শব্দযোগে ততীয়াশ্রাপকাত্ জনার্থে ততীয়া । 2. স্ব-  
কর্ম্মসু বিষয়াদিকরণে সনমৌ । 3. গৃহেভ্যঃ অপাদানে পশ্চমৌ । 4. স্বহম্  
অহনি অহনি স্বহম্ বৌদ্ধায়াং অস্বয়ীভাবঃ সমাসানঃ স্বন্ ।

*Change of voice.*—ব্রহ্মচারিণা ভৈত্যং আহ্নিযেত ॥ ১৮৩ ॥

BENGALI.—বাহার বৈদিক যজ্ঞগৌন নহেন, ও কর্তব্যকর্মে প্রস্তুত সেইরূপ  
আহ্নিযেবন্ গ্রহ ইহঁতে ব্রহ্মচারী প্রতিদিন সংযতচিত্তে সিদ্ধান্তে ভিক্ষাসমূহ আহরণ  
করিবে ॥ ১৮৩ ॥

ENGLISH.—A student of the Veda, pure and self-controlled,  
should everyday collect his food by begging from the houses of  
such persons as are skilled and praised in their own profession,  
and are not devoid of Vedic sacrifices. (183).



गुरोः कुले न भिक्षेत न श्रातिकुलबन्धुषु ।

अलामे त्वन्यगेहानां पूर्वं पूर्वं विवर्जयेत् ॥ १८४ ॥

PROSE.—गुरोः कुले न श्रातिकुलबन्धुषु न भिक्षेत, अन्यगेहानां तु अलामे  
पूर्वं पूर्वं विवर्जयेत् ॥ १८४ ॥

KULLUKA.—गुरोः कुल इति । आचार्यस्य श्रातिसपिण्डेषु बन्धुषु च मातुला-  
दिषु न भिक्षेत तद्व्यवहृत्यतिरिक्तभिषाद्योग्यग्रहामावे शोकेभ्यः पूर्वं पूर्वं वर्जयेत् ।  
ततश्च प्रथमं बन्धुं भिक्षेत तत्रालामे श्रातौ न तत्रालामे गुरोरपि श्रातौ न भिक्षेत ॥ १८४ ॥

GRAMMAR.—1. श्रातिकुलबन्धुषु श्रातिकुले बन्धुषु च । 2. अन्येषां  
गेहानाम् अन्यगेहानाम् कर्णेषु षष्ठी । 3. पूर्वं पूर्वं Acc. of विवर्जयेत्  
बोद्धव्यां हि ।

*Change of voice.*—भिक्षेत ; पूर्वं पूर्वं विवर्जयेत् ब्रह्मचारिणा ॥ १८४ ॥

BENGALI.—छत्र वःने, सपिण्डमिगेर वःने अथवा छत्र बाडूनामिव बहूकुले  
छिका करिबे ना, किछ अछ गृह ना पाओरा गेले पूर्ब पूर्ब गृह परित्याग करिबे ।  
अर्थात् अछ बाडी ना पाईले अथवा छत्र बाडूनामिगृहे तत्परा सपिण्डगृहे, तत्परा  
छत्रवःने छिका करिबे ॥ १८४ ॥

ENGLISH.—He should not beg from the family of his preceptor,  
and from the family of his kinsmen, and relatives. If other houses  
are not available, then he should avoid (in succession) those that  
are mentioned first in order. (184).

सर्वं वापि चरेदग्रामं पूर्वोक्तानामसन्धवे ।

नियम्य प्रयतो वाचमभिग्रस्तांस्तु वर्जयेत् ॥ १८५ ॥

PROSE.—पूर्वोक्तानां असन्धवे प्रयतः वाचं नियम्य सर्वं वापि ग्रामं चरेत्  
अभिग्रस्तान् तु वर्जयेत् ॥ १८५ ॥

KULLUKA.—सर्वं वेति । पूर्वं वेदयत्रैरङ्गीनानामित्यनेनोक्तानामसन्धवे  
सर्वं वा ग्राममुक्तानुसरहितमपि शुचिर्न्यानी भिक्षेत महापातकाद्यभिग्रस्तां स्मरेत् ॥ १८५ ॥

GRAMMAR.—1. असन्धवे भावे सप्तमी । 2. वाचम् Acc. of नियम्य ।  
3. अभिग्रस्तान् अभि—ग्रन् + क्तः कर्णेषु ।

*Change of voice.*—अभिग्रस्ताः वर्ज्यारम् ॥ १८५ ॥

BENGALI.—যদি পূর্বেকি বিলম্বণ বিশিষ্টে ব্যক্তি বা থাকে, তাহা হইলে উক্তাত্ত্রী সংযতভাবে যৌন অবলম্বন করিয়া সমুদ্র গ্রাম ভিত্তি করিবে, কিন্তু মহাপাতকপ্রসূ ব্যক্তিগণকে পরিত্যাগ করিবে ॥ ১৮৫ ॥

ENGLISH.—If the houses said above be not available then he should go about the whole village, self-controlled, and controlling his speech ; but he should avoid those who are guilty of high crimes. (185).

দূরাদাহৃত্য সমিধঃ সন্নিদধ্যাদিহায়সি ।

সায়ং প্রাতঃ শুভ্রয়াৎ তাভিরগ্নিমতন্দ্রিতঃ ॥ ১৮৬ ॥

PROSE.—দূরাৎ সমিধঃ আহৃত্য বিহায়সি সন্নিদধ্যাত্ অতন্দ্রিতঃ সন্ তাভিঃ সায়ং প্রাতঃ অগ্নিঃ শুভ্রয়াৎ ॥ ১৮৬ ॥

KULLUKA.—দূরাদিতি । দূরাদেব অপরিস্ফুটতবৃদ্ধিঃ সমিধমামীয আকাশে ধারাবাহকৈঃ পটলাদী স্থাপয়েত্, তাভিষ সমিধিঃ সায়ম্প্রাতরনগ্নে হোমং কুর্যাৎ ॥ ১৮৬ ॥

GRAMMAR.—1. আহৃত্য আঙ্ হ+স্থপ্ । অহীষীত্ । 2. সমিধঃ Acc. of আহৃত্য and সন্নিদধ্যাত্ । 3. নি-চা+য়াৎ অধাত্ অধিত্ । 4. শুভ্রয়াৎ হু+য়াৎ । অহীষীত্ ।

Change of voice.—সমিধঃ সন্নিধীযেত্ । অতন্দ্রিতে অগ্নিঃ জ্বয়েত ॥ ১৮৬ ॥

BENGALI.—দূরস্থিত বৃক্ষাদি হইতে কাঠ আনয়ন পূর্বক অনা বৃত্ত স্থানে রাখিয়া দিবে, এবং সেই কাঠ দ্বারা অনলমভাবে সারং ও প্রাতঃকালে অগ্নিতে হোম করিবে ॥ ১৮৬ ॥

ENGLISH.—He should collect fuel from far off places and place it in open air ; and with it kindle the fire morning and evening, and offer burnt offerings without being idle. (186).

অকৃত্বা মৈত্ৰচরণমসমিধ্য চ পাবকম্ ।

অনাতুরঃ সপ্তরাত্রমবকীর্ণিত্রতং চরেত্ ॥ ১৮৭ ॥

PROSE.—অনাতুরঃ সন্ সপ্তরাত্রং মৈত্ৰচরণং অকৃত্বা পাবকং চ অসমিধ্য অবকীর্ণিত্রতং চরেত্ ॥ ১৮৭ ॥

KULLUKA.—अहत्वेति भिचाहारं साधन्मातः समिद्धोममरोगो नैरनर्थेण सप्तरात्रमहत्वा दुःखत्रतो भवति ततश्चावकीर्णं प्रायश्चित्तं कुर्यात् ॥ १८७ ॥

GRAMMAR.—1. भैक्षचरणम् भैक्षस्य चरणं करणम् । 2. पावकम् Acc. of असमिध्य । 3. असमिध्य न समिध्य असमिध्य । सम् - इत्थ + ल्यप् । इन्धे इंधाचक्रे णिधिष्ट । 4. न आतुरः अनातुरः । 5. सप्तरात्रम् सप्तानां रात्रीणां समाहारः (द्विगुः) सप्तरात्रम् । अहःसार्वाहर्कद्वयं सप्तरात्रपुण्याच्च रात्रे रिति अः । संख्यापूर्व्यं रात्रं क्लृप्तमिति नपुंसकता, नतु समाहारनपुंसकता समाहारनपुंसकतां याधते इति भट्टोजिद्वचनात् । सप्तरात् संख्यापूर्व्यमिति वार्तिकं प्रथमम् । कान्धाध्वनो रिति द्वितीया । 6. अवकीर्णं व्रतम् Acc. of चरेत् अवकीर्णनाम् व्रतम् । 7. अव - कृ + क्तः भावे । ततः इति ।

*Change of voice.*—अवकीर्णव्रतं चर्येत ॥ १८७ ॥

BENGALI.—ब्रह्मचारी ब्राह्मचारी न इहेषां यदि कर्मावत माउ दिन डिक्कुर आहार न करे ओ अश्रिते अश्रित न देखे, छट छह त्रि व्रत लोण इय एव त्रिहारे लोणिलुचकण अवकीर्णव्रत करिते इय ॥ १८७ ॥

ENGLISH.—He should observe the expiatory vow known as *avakirivrata*; if he, without being unwell does not beg alms and kindle the fire for full seven nights (187).

भैक्षेण वर्त्तयेन्नित्यं नैकाद्यादी भवेद्व्रती ।

भैक्षेण व्रतिनो वृत्तिरूपवाससमा स्मृता ॥ १८८ ॥

PROSE.—व्रती एकाद्यादी न भवेत् नित्यं भैक्षेण वर्त्तयेत् व्रतिनः भैक्षेण वृत्तिः उपवाससमा स्मृता ॥ १८८ ॥

KULLUKA.—भैक्षेणेति । ब्रह्मचारी न एकाग्रमयात् किन्तु बहुगृह्याहृत-भिचासमूहेन प्रत्यहं जीवेत् । यथात्रिचासमूहेन ब्रह्मचारिणो वृत्तिरूपवाससमा स्मृतिभिः स्मृता ॥ १८८ ॥

GRAMMAR.—1. एकाद्यादी पक्षस्य गृह्यस्य अन्नं अन्नं शौचं यस्य सः । एकाग्र - अद् + णिनिः । 2. भैक्षेण करणे व्रतीया । 3. वर्त्तयेत् व्रत णिच् घात् । 4. व्रतं विद्यते यस्य व्रती तस्य । इति । 5. उपवाससमा व्रतीया समासः ।

*Change of voice.*—व्रतिना एकाद्यादिना न वर्त्तयेत । व्रती उपवाससमया स्मृत्या मूयते ॥ १८८ ॥

BENGALI.—ব্রহ্মচারী একজনের অন্ন ভোজন করিতে না, কিন্তু প্রতিদিন বহু-  
জনের গৃহস্থিত ভিক্ষার দ্বারা জীবনধারণ করিতে ; ভিক্ষার দ্বারা জীবনধারণকে ব্রহ্ম-  
চারীর পক্ষে উপবাসতুল্য বলিয়া মুনিগণ নির্দেশ করিয়াছেন ॥ ১৮৮ ॥

ENGLISH.—One taking the vow of a student should always  
subsist upon alms, and he should not eat the food collected from  
one person. It is held that subsistence on alms is equal to  
fasting. (188).

ব্রতবদেবদৈবত্বে পিত্রে কর্ম্মণ্যর্থ্যর্ষিবত্ ।

কামমম্ব্যর্থিতোঽশ্রীয়াদব্রতমস্য ন লুপ্যতে ॥ ১৮৯ ॥

PROSE.—ব্রতী দেবদৈবত্বে কর্ম্মণি অম্ব্যর্থিতঃ ব্রতবত্, অথ পিত্রে কর্ম্মণি অম্ব্যর্থিতঃ  
ঋষিবত্ কামং অশ্রীয়াত্ (তত্র একান্নভোজনেন) অস্য ব্রতং ন লুপ্যতে ॥ ১৮৯ ॥

KULLUKA.—ব্রতবদিতি । পূর্ব্বনিষিদ্ধ-স্বৈকান্নভোজনস্যায়ং প্রতিপন্নত্বঃ দেব-  
দৈবতৌ কর্ম্মণি দেবতোদেষ্টেন শাস্ত্রেঽম্ব্যর্থিতৌ ব্রহ্মচারী ব্রতবদিতি ব্রতবিরুদ্ধমধুমাংসাদি-  
বর্জিতমেকসাপ্যন্ত্রং যথেষ্টং মুজ্জীত । অথ পিতৃদেষ্টেন শাস্ত্রেঽম্ব্যর্থিতৌ ভবতি তদা  
ঋষিবতিঃ সম্বৎসরস্যব্রতত্বাৎ স ইব মধুমাংসবর্জিতমেকসাপ্যন্ত্রং যথেষ্টং মুজ্জীত  
ইতি । স এবার্থো বৈদগ্ধ্যানোকঃ তথাপি ভৈলবৃদ্ধিনিগ্রমরূপং ব্রতমস্য কুর্মে ন ভবতি ।  
শাস্ত্রবল্ক্যোপি শাস্ত্রেঽম্ব্যর্থিতস্বৈকান্নভোজনমাহ । ব্রহ্মচর্য্যে স্থিতৌ নৈকমন্নমদাদনা-  
পদি । ব্রাহ্মণঃ কামমশ্রীয়াচ্ছাস্ত্রে ব্রতমপৌদয়ন্বিতি । বিশ্বরূপেণ তু ব্রতমস্য ন  
লুপ্যত ইতি পশ্যতা ব্রহ্মচারিণৌ মধুমাংসমভক্ষণমেনে ন মনুবধনে ন বিধীয়ত ইতি  
ব্যাস্যাতম্ ॥ ১৮৯ ॥

GRAMMAR.—1. দেবদৈবত্বে দেব এব দৈবং যস্মিন্ তৎ দেবদৈবতং তস্মৈ বৃট্  
দেবদৈবত্বম্ যত্ প্রত্যয়ঃ । দৈব ইত্যর্থঃ । 2. পিতৃ পিতৃ + যত্ । Both qualify  
কর্ম্মণি । 3. ব্রতবত্ ব্রতে ইব ব্রতবত্ বতি or ব্রত + মতৃপ্ ব্রতবত্ র্যথাহ্যাত্ তথা ।  
4. ঋষিবত্ ঋষি + বতি Both adv. 5. কামং পর্যাগ্ যথা স্যাৎ তথা ।  
6. অশ্রীয়াত্ অশ + যাত্ । আশীত্ । 7. ব্রতম্ কর্ম্মকট্ । 8. লুপ্যতে কর্ম্ম-  
কর্ত্তরি প্রयोगঃ ।

Change of voice.—অম্ব্যর্থিতেন....অস্মৈত ব্রতেন...লুপ্যতে ॥ ১৮৯ ॥

BENGALI.—ব্রহ্মচারী দেবতা উদ্দেশ্যে অমুষ্ঠিত আক্ষে নিষিক্ত হইলে ব্রতবৎ  
অর্থাৎ ব্রতবিরুদ্ধ মধুমাংসাদি ভোগ করিয়া, ইচ্ছানুরূপ আকৃষ্টি ভোজন করিতে  
পারেন, এবং পিতৃলোক উদ্দেশ্যে অমুষ্ঠিত আক্ষে নিষিক্ত হইয়া ঋষিবৎ মধুমাংসাদি

পূর্ববৎ পরিভাগ করিয়া বথেষ্ট ভোজন করিবেন ; ঐ উত্তর স্থলে এক জনের অন্ন ভোজনে বাধা নাই ; কেন না ঐ স্থলে একাত্তরাদী হইলে ত্রুট লোপ হয় না ॥ ১৮৯ ॥

ENGLISH.—Being invited or requested he may on the occasion of an offering towards the god partake of food consistently with his vow ; and on the occasion of an offering towards ancestors or the manes he may partake of food to his satisfaction like a *Rishi*. Thereby (though taking the food given by one) his vow is not broken or defiled. (189).

ব্রাহ্মণস্যৈব কর্ম তদুপদিষ্টং মনৌষিभिः ।

রাজন্যবৈশ্যযোস্তু বং নৈতৎ কর্ম বিধীয়তে ॥ ১৯০ ॥

PROSE.—মনৌষিभिঃ ব্রাহ্মণস্যৈব এতৎ কর্ম উপদিষ্টম্ । एवं तु राजन्य-  
वैश्ययोः एतत् কর্ম न विधीयते ॥ ১৯০ ॥

KULLUKA.—ব্রাহ্মণস্যৈবেতি । ব্রাহ্মণ্যচ্চিযযিষা তথাযানিষ ব্রাহ্মচারিষা  
মৈষ্যচর্যবিধানাত্ ব্রতবদিত্যনেন তদুপবাদরূপমেকান্নভোজনম্ উপদিষ্টং অচ্চিযবৈশ্যযো-  
ষপি প্রসক্তমনেন পর্য্যুদ্যতে যদেকান্নভোজনরূপং কর্ম তদব্রাহ্মণস্যৈব বৈদার্যিষির্বিধিতং  
অচ্চিযবৈশ্যযোঃ পুনর্নৈতৎ কর্মোতি শ্রু্যতে ॥ ১৯০ ॥

GRAMMAR.—1. মনসঃ ইয়া মনৌষা যক্সাদিত্যাত্ । মনৌষা + ইনিঃ ।  
কর্তরি দ্বিতীয়া । 2. ব্রাহ্মণস্য সম্বন্দ্যমাণ বিবচয়া বচী ।

Change of voice.—একৈন কর্মেণা উপদিষ্টেন শ্রু্যতে । এতৎ কর্ম ন  
বিদধতি মনৌষিভিঃ ॥ ১৯০ ॥

BENGALI.—পণ্ডিতগণ কেবল ব্রাহ্মণজাতীয় ব্রহ্মচারীর পক্ষেই একজনের অন্ন  
ভোজন উত্তরস্থলে উপদেশ করিয়াছেন, কিন্তু কত্রিয় ও বৈশ্যজাতীয় ব্রহ্মচারীর পক্ষে একগণ  
একাত্তরভোজন উপদেশ করেন নাই ॥ ১৯০ ॥

ENGLISH.—The sages have advised such a procedure of action  
with regard to a Brahman ; but such an act is not allowed in res-  
pect of a Kshatriya or a Vaisya. (190).

চোদিতো গুরুণা নিত্যমপ্রচোদিত এব বা ।

কুর্যাদধ্যয়নে যজ্ঞমাচার্য্যস্য হিতেষু চ ॥ ১৯১ ॥

PROSE.—गुरुणा चोदितः अप्रचोदितः एव वा नित्यं अध्ययने आचार्यस्य हितेन च यत्नं कुर्यात् ॥ १८१ ॥

KULLUKA.—चोदित इति । आचार्यस्य प्रेरितो वा न प्रेरितः प्रत्यहमध्ययने बद्धितेन च उद्योगं कुर्यात् ॥ १८१ ॥

GRAMMAR.—1. गुरुणा कर्त्तरि, तृतीया । 2. प्रचोदितः अप्रचोदितः कर्मणि कः । 3. यत्नम् Acc. of कुर्यात् ।

*Change of voice.*—चोदितेन अप्र चोदितेन वा यत्नः क्रियेत ॥ १८१ ॥

BENGALI.—গুরু বলিয়া পিন বা নাই পিন এতাহ অধ্যয়নেও গুরুর হিতাশুঠানে যত্ন করিবে ॥ ১৮১ ॥

ENGLISH.—Whether commanded or not commanded by his preceptor he should always make efforts for his study and for the good of his preceptor. (191).

शरीरञ्चैव वाचञ्च बुद्धीन्द्रियमनांसि च ।

नियम्य प्राञ्जलिस्तिष्ठेद्बोचमाणो गुरोर्मुखम् ॥ १८२ ॥

PROSE.—शरीरं च एव वाचं च बुद्धीन्द्रियमनांसि च नियम्य गुरोः मुखं बोचः माणः प्राञ्जलिः तिष्ठेत् ॥ १८२ ॥

KULLUKA.—शरीरञ्चेति । देहवाग्बुद्धीन्द्रियमनांसि नियम्य कृताञ्जलिः गुरुमुखं पश्यं लिष्ठेत् नोपविशेत् ॥ १८२ ॥

GRAMMAR.—1. बुद्धीन्द्रियमनांसि बुद्धिश्च इन्द्रियाणि च मनश्च इन्द्रः । Acc. of नियम्य । 2. प्राञ्जलिः प्रवक्षः अञ्जलिः येन प्राञ्जलिः । 3. मुखं Acc. of बोचमाणः । 4. बोचमाणः वि- ईच कर्त्तरि शानच् । ईषते ऐचिष्ट ।

*Change of voice.*....बोचमाणेन प्राञ्जलिना स्थीयेत ॥ १८२ ॥

BENGALI.—শরীর, বাচ্য, বুদ্ধি, মন ও ইন্দ্রিয় সংগত করত গুরুর মুখের দিকে দৃষ্টি করিয়া অঞ্জলিবন্ধন পূর্বক অবস্থান করিবে, বিনা অশ্রুপতিতে উপবেশন করিবে না ॥ ১৮২ ॥

ENGLISH.—Having controlled his body, speech, the senses of knowledge, and mind, he with folded palms should remain standing looking towards the face of his preceptor. (192).

नित्यमुद्धृतपाणिः स्यात् साध्याचारसुसंयतः ।

आस्यतामिति चोक्तःसन्नासीताभिमुखं गुरोः ॥ १८३ ॥

PROSE.—नित्यं उद्धृतपाणिः साध्याचारः सुसंयतः स्यात् आस्यतामिति उक्तः सन् गुरोः अभिमुखं आसीत् ॥ १८३ ॥

KULLUKA.—नित्यमिति । सततमुत्तरीयादङ्घ्रिकृतदक्षिणबाहुः शोभनाचारः वस्तावतदेहः आस्यतामिति गुरुणोक्तः सन् गुरोरभिमुखम् यथा भवति तथा आसीत् ॥ १८३ ॥

GRAMMAR.—1. उद्धृतः पाणिर्नेन स उद्धृतपाणिः । 2. साधुः आचारो यस्य स साध्याचारः । 3. मुखं लट्योक्त्य अभिमुखं अव्ययीभावः । 4. आम् + ईत् । आसिष्ट ।

*Change of voice.*—उद्धृतपाणिता.....भूयेत् । आस्येत् ॥ १८३ ॥

BENGALI.—যক্ষস্রো মওত উদ্ধৃতোষ উদ্ধৃত মক্ষিণ হস্ত বাহির্গ কদিশা আশ্রিত, সতত আচরণবিশিষ্টে হুয়েন, সতত বস্তাবস্ত্রী আশ্রিত আশ্রিত এনঃ সতত উদ্ভূতবান কন ইহা নালনে উদ্ভূত দিকঃ মুখ আশ্রিত উপবেশন করিবে ॥ ১৮৩ ॥

ENGLISH.—He should always have his right hand out of his upper garment, should be of good conduct, and well-controlled ; and should sit in front of his preceptor when asked to sit down. (193).

हीनान्नवस्त्रवेशः स्यात् सर्वदा गुरुसन्निधौ ।

उत्तिष्ठेत् प्रथमश्चास्य चरमञ्चैव संविशेत् ॥ १८४ ॥

PROSE.—गुरुसन्निधौ सर्वदा हीनान्नवस्त्रवेशः स्यात् । अस्य प्रथमं च उत्तिष्ठेत् चरमञ्च एव संविशेत् ॥ १८४ ॥

KULLUKA.—हीनान्नवस्त्रेति । सर्वदा गुरुसमीपे गुरुपेक्षया अपक्वष्टान्न-वस्त्रप्रसाधनो भवेत् गुरोश्च प्रथमं रात्रिशेषे अथनादुत्तिष्ठेत् प्रदोषे च गुरौ सुप्ते पश्चाच्छ्रियोत् ॥ १८४ ॥

GRAMMAR.—1. हीनान्नवस्त्रवेशः अन्नञ्च वस्त्रं च वेशश्च अन्नवस्त्रवेशः । हीना निरुद्धतराः अन्नवस्त्रवेशाः गुरुपेक्षया यत्न सः । 2. प्रथमं अथे इत्यर्थः Adv. 3. चरमं पश्चात् इत्यर्थः Adv.

*Change of voice.*—हीनान्नवस्त्रवेशेन भूयते । उज्जीयेत...संविद्येत ॥ १८४ ॥

BENGALI.—सर्वपाई छत्र मनीषे छत्र अपेक्षा निकटे अन्न, वस्त्र ও অসাধন অঙ্গ  
করিবে, ছত্রর অগ্রেই শয্যা ভাগ করিবে, ছত্রর পক্ষাৎ শয়ন করিবে ॥ ১৯৪ ॥

ENGLISH.—In the presence of his preceptor his food, cloth and  
dress should always be of an inferior kind. He should get up from  
his bed first and lie down after his preceptor (had done so). (194).

प्रतिश्रवणसम्भाषे शयानो न समाचरेत् ।

नासीनो न च भुञ्जानो न तिष्ठन् न पराङ्मुखः ॥ १८५ ॥

PROSE.—न शयानः न आसीनः न च भुञ्जानः न तिष्ठन् न पराङ्मुखः (गुरोः)  
प्रतिश्रवणसम्भाषे समाचरेत् ॥ १८५ ॥

KULLUKA.—प्रतिश्रवणंति गुरोः प्रतिश्रवणसाक्षाद्गीकरणं सम्भाषणञ्च शय्यायां  
भुजः आसीनोपविष्टो भुञ्जानोतिष्ठन् विमुखश्च न कुर्यात् ॥ १८५ ॥

GRAMMAR.—1. शयानः शो + शानच् कर्त्तरि । अग्रयिष्ट । 2. आस् +  
शानच् आसीनः । 3. भुज + शानच् कर्त्तरि । 4. पराङ् मुखं यस्य सः बहुव्रीहिः ।  
5. प्रतिश्रवण सम्भाषे प्रतिश्रवणं प्रतिश्रवः अङ्गीकार इत्यर्थः । सम्भाषाच्च इन्द्रः ।

*Change of voice.*—शयानेन आसीनेन भुञ्जानेन तिष्ठता पराङ्मुखेन प्रति-  
श्रवणसम्भाषे न चर्ष्येयाताम् ॥ १८५ ॥

BENGALI.—শয়ান অবস্থায় থাকিয়া, কি উপনিষ্টে হইয়া, কিংবা আহার করিতে  
করিতে, কি দণ্ডায়মান থাকিয়া, কি অঙ্গদিকে মুখ রাখিয়া ছত্রর আঁজা অংশ বা ছত্রর  
পক্ষে মস্তাবণ করিতে না ॥ ১৯৫ ॥

ENGLISH.—He should not receive orders from and talk to his  
preceptor, lying down, or sitting down, or at the time of taking  
food, or standing, or with his face turned away. (195).

आसीनस्य स्थितः कुर्यादभिगच्छंस्तु तिष्ठतः ।

प्रत्युद्गम्य त्वाव्रजतः पश्चाद्वावस्तु धावतः ॥ १८६ ॥

PROSE.—आसीनस्य स्थितः, तिष्ठतः अभिगच्छन्, आव्रजतस्तु प्रत्युद्गम्य,  
धावतः पश्चात् धावन् प्रतिश्रवणसम्भाषे कुर्यात् ॥ १८६ ॥



KULLUKA.—कथमर्चिं कुर्यात्तदाह आसीनस्येति । आसीनोपविष्टस्य गुरो-  
राग्रा ददतः स्वयमासनादुत्थितः तिष्ठती गुरोरादिगतः तदभिमुखं कतिचित् पदानि  
गत्वा, यदा गुरुरागच्छति तदाप्यभिमुखं गत्वा, यदा गुरुर्धावन्नादिशति तदा तस्य  
पश्चाद्भावनं प्रतिश्रवणसम्भावे कुर्यात् ॥ १८६ ॥

GRAMMAR.—1. धावन् स घातोः शीघ्रगतौ धौ इत्यादेशः । शब्द ।

*Change of voice.*—स्थितेन अभिगच्छता धावता प्रतिश्रवणसम्भावे क्रिये-  
ताम् ॥ १८६ ॥

BENGALI.—शुक्र उपविष्टे इहेरा आजा करिले शिवा आसन इहेते उठिशा, शुक्र  
पठान्नमान इहेरा आसन करिले शिवा शुक्रर अभिमुखे अग्रसर इहेरा, शुक्र आसिते  
आसिते आसन करिले शिवा ठाहार अभिमुखे अड्डान्नगमन करिशा, शुक्र धावित इहेरा  
आजा करिले शिवा ठाहार पक्षां पक्षां धावित इहेरा आजा अहण ३ मन्दावण  
करिषे ॥ १८६ ॥

ENGLISH.—He should stand up and receive orders from and  
talk to his preceptor seated on a seat ; move towards him and  
receive orders from him when the preceptor is standing ; when  
the preceptor is coming he should go up to him by way of  
reception and receive orders, while the preceptor is walking  
fast, he should run after him and receive orders or talk to  
him. (196).

पराङ्मुखस्याभिमुखो दूरस्थस्यैव चान्तिकम् ।

प्रथम्य तु शयानस्य निदेशे चैव तिष्ठतः ॥ १८७ ॥

PROSE.—पराङ्मुखस्य (गुरोः) अभिमुखः (स्थितः) दूरस्थस्य चान्तिकं एव  
शयानस्य प्रथम्य निदेशे तिष्ठतः प्रथम्य एव (प्रतिश्रवणसम्भावे कुर्यात्) ॥ १८७ ॥

*Note.*—196 and 197th slokas form one sentence. We  
have taken them separately.

KULLUKA.—पराङ्मुखस्येति । पराङ्मुखस्य गुरोरादिगतः सम्मुखस्यो  
दूरस्थस्य गुरोः समीपमागत्य शयानस्य गुरोः प्रथम्य प्रज्ञो भूत्वा निदेशे निकटे एवतिष्ठती  
गुरोरादिगतः प्रज्ञोभूयेव प्रतिश्रवणसम्भावे कुर्यात् ॥ १८७ ॥

GRAMMAR.—1. निदेशे निकटे इत्यर्थः । 2. अन्तिकम् Acc. of एव ।  
3. एव आङ् + इण् + ल्यप् ।

BENGALI.—গুরু অত্যধিক ক্রিয়া আদেশ করিলে তাহার সম্মুখে বাইরা, গুরু দূর হইয়া অনুমতি করিলে তাহার নিকটে বাইরা, গুরু শয়ন করিয়া ও নিকটে আসিয়া আদেশ করিলে প্রণতিপূর্ব্বক গুরুর বাক্য অঙ্গীকার ও প্রতিসম্ভাষণ করিবে ॥ ১২৭ ॥

ENGLISH.—He should go in front of his preceptor while he is issuing orders with his face turned away, he should approach his preceptor to receive orders while he is at a distance. He should bow down and receive orders from and talk to his preceptor while lying down; and while his preceptor is standing near, he should bend down in salutation and receive orders and talk to him. (197).

নীচং শ্য্যাসনম্ভ্যাস্য সৰ্ব্বদা গুরুসন্নিধৌ ।

গুরোস্তু চতুর্বিধয়ে ন যথেষ্টাসনো ভবেৎ ॥ ১২৮ ॥

PROSE.—গুরুসন্নিধৌ অস্য শ্য্যাসনং সৰ্ব্বদা নীচং স্যাত, গুরোঃ চতুর্বিধয়ে ন যথেষ্টাসনঃ ভবেৎ ॥ ১২৮ ॥

KULLUKA.—নীচমিতি । গুরুসমীপে চাস্য গুরুশ্য্যাসনাপেক্ষা নীচে এত শ্য্যাসনে নিখং স্যাতাং যত্র চ দৈর্ঘ্যে সমাসীনঃ গুরুঃ পশ্যতি ন তত্র যথেষ্টচেষ্টাং বরষ-  
পসারাদিকাং কুৰ্য্যাত ॥ ১২৮ ॥

GRAMMAR. — 1. গুরোঃ সন্নিধিঃ গুরুসন্নিধিঃ তন্নিহ্ন । সম্ — নি — ধা + কি ।  
2. শ্য্যাসনম্ জাতিব্রাহ্মণ্যনামিতি সমাহারঃ শ্য্যাস্য চ আসনম্ভ্য শ্য্যাসনম্ ।  
3. যথেষ্টাসনঃ ইদং অনতিক্রম্য যথেষ্টং ততঃ অর্শ্বাদিভ্যঃ অচ্ । যথেষ্টং আসনং যস্য  
সঃ । বহুব্রীহিঃ । 4. চতুর্বিধয়ে চতুষ্ব্যঃ বিধয়ঃ তন্নিহ্ন চতুর্বিধয়ে ।

Change of voice.—নীচেন শ্য্যাসনেন ভূয়েত । যথেষ্টাসনেন ভূয়েত ॥ ১২৮ ॥

BENGALI.—গুরুর নিকটে শিষ্যের শয্যা ও আসন সর্বদা নীচ রাখিতে হইবে ; এবং গুরু দেখিতে পাইতেছেন এমন স্থানে উপবেশন করিলে শিষ্য ইচ্ছান্নিত হস্ত ও পাদ প্রসারণাদি করিবে না ॥ ১২৮ ॥

ENGLISH.—His bed and seat should always be low in the vicinity of his preceptor. And within the range of the sight of his preceptor he should not assume any posture at will. (198).

नोदाहरेदस्य नाम परोक्षमपि केवलम् ।

नचैवास्यानुकुर्वीत गतिभाषितचेष्टितम् ॥ १८८ ॥

PROSE.—परोक्षम् अपि अस्य केवलं नाम न उदाहरेत् न च एव अस्य गति-  
भाषितचेष्टितं अनुकुर्वीत ॥ १८८ ॥

KULLUKA.—नोदाहरेदिति । अस्य गुरोः परोक्षमपि उपाध्यायाचार्यादि-  
पूजावचनोपपदशब्दं नाम नोच्चारयेत् तथा गुरोर्गमनादिसदृशान्यात्मनो गमनादीनि  
उपहासबुद्ध्या न कुर्वीत ॥ १८८ ॥

GRAMMAR.—1. उदाहरेत् उत् - आङ् - ह + यात् । 2. नाम Acc. of  
(1) । 3. केवलम् qualifies नाम । 4. परोक्षम् अपञ्चोः परं परोक्षम् समासान्तः  
टच् । 5. गतिश्च भाषितश्च चेष्टितश्च जातिरप्राप्तिनामिति समाहारः । Acc. of  
अनुकुर्वीत ।

*Change of voice.*—नाम न उदाह्रियेत । गतिभाषितचेष्टितं न अनुक्रियेत ।

BENGALI.—शुद्धर गुरोरङ्गे उपाध्याय कि आचार्य ईडाधि पूजाशुक्क वाक्य  
नाम न करिय। शुद्धर नाम ग्रहण करिये ना ; एव उपाशम करियार उद्देशे कथन  
शुद्धर ग्रन्थ, वाक्य उ क्रिया अशुद्धर करिये ना ॥ १८८ ॥

ENGLISH.—Even in the absence of the preceptor he should not  
utter his name merely (without any epithet of honour); and he  
should not imitate (with a view to ridicule) his preceptor's gait,  
speech and movements. (199).

गुरोर्यत्र परीवादो निन्दा वापि प्रवर्त्तते ।

कर्णौ तत्र पिधातव्यौ गन्तव्यं वा ततोऽन्यतः ॥ २०० ॥

PROSE.—यत्र गुरोः परीवादः निन्दा वा अपि प्रवर्त्तते तत्र ( शिष्येण )  
कर्णौ पिधातव्यौ ततः अन्यतः वा गन्तव्यम् ॥ २०० ॥

KULLUKA.—गुरोर्यत्रेति । विद्यमानदीपस्याभिधानं परीवादः अविद्यमान-  
दीप्याभिधानं निन्दा यत्र ईशे गुरोः परीवादो निन्दा वा वर्त्तते तत्र स्थितेन शिष्येण  
कर्णौ कृतादिना तिरोधातव्यौ तस्माद्देशाद्देशान्नरं गन्तव्यम् ॥ २०० ॥

GRAMMAR.—1. परीवादः परि - वद् + घञ् । उपसर्गस्य घञि चमकु-  
ब्धेषु बहुलमिति दीर्घः । 2. पिधातव्यौ अपि - धा + तव्य । अकार of अपि

drops optionally by বচিভাগুরিরক্লীপং, অবাধ্যরূপসংগোঃ । আপছাদি  
হ্রস্বানামাং যথা বাচ্য নিশা দিশা । ৩. ততঃ অন্বারাহিতিপশ্চমৌ । ৪. অন্বতঃ  
সমম্ব্যাসসিঃ ।

*Change of voice.*—পরীবাদিন নিন্দয়া প্রহৃত্যে কর্ণাভ্যাং পিষাতব্যাব্য  
ভূষত...গল্যেভিঃ ভূষতে ॥ ২০০ ॥

BENGALI.—যে স্থানে গুরুর প্রকৃত বোলের উল্লেখ হয়, অথবা অবিস্ময়ান  
বোলের আকোপন হয়, সেস্থানে শিষ্য হয় দুই কর্ণ হস্ত দ্বারা আচ্ছাদন করিবে অথবা  
সেস্থান ছাড়িয়া অস্ত্র চলিয়া যাইবে ॥ ২০০ ॥

ENGLISH.—A disciple should either stop his ears or depart else-  
where from the place where the detraction or calumny of his  
spiritual preceptor takes place. (200).

পরীবাदात् खरो भवति श्वा वै भवति निन्दकः ।

परिभोक्ता कृमिर्भवति कीटो भवति मत्सरी ॥ ২০১ ॥

PROSE.—( শিষ্যঃ ) পরীবাদাত্ খরো ভবতি নিন্দকঃ শ্বা ভবতি পরি-  
ভোক্তা কৃমির্ভবতি মত্সরৌ কীটো ভবতি ॥ ২০১ ॥

KULLUKA.—ইদানীং শিষ্যকর্তৃকপরীবাদাদিফলমাহ পরীবাদাদিতি । গুরোঃ  
পরীবাদাত্ শিষ্যো মৃতঃ খরো ভবতি গুরানিন্দকঃ কুকুরো ভবতি পরিভোক্তা অনুচিনেত  
গুরুধনেনোপজীবকঃ কৃমির্ভবতি মত্সরৌ গুরোকৃৎপাসহনঃ কীটো ভবতি । কীটঃ  
কমিষ্যঃ ক্রিংশিত্ স্থলো ভবতি ॥ ২০১ ॥

GRAMMAR.—1. পরীবাদাত্ দ্বিতী পশ্চমৌ । 2. নিন্দকঃ—নিন্দ হিঁস্ হ  
ইত্যাদিনা নিন্দ + কৃ + ৩। 3. পরি—মুজ্ + ৬। 4. মত্সরৌ—মত্সরঃ + ইনিঃ ।  
মত্সরোঃস্বয়মহেধইত্যমরঃ । Here মত্সরঃ is used as a noun. (1) খরঃ ।  
(2) শ্বা । (3) কৃমিঃ । (4) কীটঃ are বিশেষ্যবিশেষণম্ of শিষ্যঃ understood.

*Change of voice.*—শিষ্যেণ খরেণ নিন্দকেণ যুনা পরিভোক্তা কৃমিণা  
কীটেণ মত্সরিণা ভূষতে ॥ ২০১ ॥

BENGALI.—শিষ্য গুরুর বিদ্যমানদোষকীৰ্ত্তন করিলে সরিষা পরজন্মে গর্ভত  
হয়, নিশা করিলে পরজন্মে কুকুর হয়, অস্ত্রায়ত্তে গুরুর ধন দ্বারা জীবিকানির্ব্বাহ  
করিলে পরজন্মে কৃমি হয়, গুরুর অংশসা সহিতে না পালিলে পরজন্মে কৃমি হইতে  
কিছু অধিক স্থলকার্য কীট হয় ॥ ২০১ ॥

ENGLISH.—By reason of the detraction of his spiritual preceptor a disciple becomes a mule (after death) a calumniator (of his spiritual preceptor) becomes a dog (after death). One unduly depending on his spiritual preceptor for subsistence becomes a worm, and one jealous of the superiority of his preceptor becomes an insect (after death). (201).

দূরস্থো নার্ছ্যেদেন ন ক্রুদ্ধো নান্তিকে স্ত্রিয়া: ।

যানাসনস্থশ্চৈবৈনমবরুহ্যভিবাদয়েৎ ॥ ২০২ ॥

PROSE.—( শিষ্য: ) দূরস্থ: ( মনু ) এনং ন অর্ছয়েৎ, ক্রুদ্ধ: স্ত্রিয়া: অন্তিকে অ ন ( অর্ছয়েৎ ), যানাসনস্থ: অ অবরুহ্য এনং অভিবাদয়েৎ ॥ ২০২ ॥

KULLUKA.—দূরস্থ ইতি । দূরস্থ: শিষ্যীভ্যং নিযুজ্য সাক্ষ্যবস্ত্রাদিমা গৃহ' নার্ছয়েৎ স্বয়ং গমনাশক্তৌ ক্রুদ্ধ: কামিনীসমীপে অ স্থিতং স্বয়মপি নার্ছয়েৎ । যানাসনস্থশ্চৈবৈনং প্রত্যুত্থায়িত্বেনৈনং যানাসনাদুত্থানং বিহিতম্ অনেন তু যানাসনত্যাগ ইত্যপুনরুজ্জিত: ॥ ২০২ ॥

GRAMMAR.—1. দূর—স্থা + ক । 2. অর্ছয়েৎ অর্ছ্য ণিচ্ যাৎ । 3. ক্রুদ্ধ + ক্ত: কর্তরি । 4. যানং অ যানাসনশ্চ যানাসনং জাতিরপ্রাণিণামিতি । যানাসন—স্থা + ক । 5. অব—রুহ + ল্যপ্ । 6. অভি—বদ ণিচ্ যাৎ ।

Change of voice.—দূরস্থেন অর্থ...অর্ছ্যাত...ন ক্রুড়েণ যানাসনস্থেন অর্থ... অভিবাদয়েৎ ॥ ২০২ ॥

BENGALI.—শিষ্য নিভাঙ্ক অশক্ত না হইলে আন্তরে হস্তে প্রেরিত মালাদি দ্বারা গুরুর অর্চনা করিবে না, ক্রোধের বশীভূত থাকা অবস্থায় গুরুর অর্চনা করিবে না, স্ত্রীলোকের নিকটে গুরু অবস্থিত থাকিলে স্বয়ং ও মালাদি দ্বারা গুরুর অর্চনা করিবে না; শিষ্য যান কি আসনে অবস্থিত থাকা অবস্থায় গুরু দর্শন করিলে বানাসন হইতে নামিয়া গুরুকে অভিবাদন করিবে ॥ ২০২ ॥

ENGLISH.—Being at a distance, a disciple should not worship his preceptor (by sending presents through another); and while he is angry (whatever be the cause therefor) he should not worship his preceptor; neither should he worship his preceptor when he (the latter) is in the vicinity of (or in company of) a female. And if riding a conveyance or seated on a seat, he should come down and salute his preceptor. (202).

प्रतिवातेऽनुवाते च नासीत् गुरुणा सह ।

असंश्रवे चैव गुरोर्न किञ्चिदपि कीर्तयेत् ॥ २०३ ॥

PROSE. — (शिष्यः) प्रतिवाते अनुवाते च गुरुणा सह न आसीत् ; गुरोः असंश्रवे चैव किञ्चित् अपि न कीर्तयेत् ॥ २०३ ॥

KULLUKA. — प्रतिवात इति । प्रतिगतोऽभिमुखीभूतः शिष्यस्य यो गुरुदेशा-  
न्विष्टदेशमागच्छति स प्रतिवातः यः शिष्यदेशात् गुरुदेशमागच्छति सोऽनुवातः,  
ततः गुरुणा समं नासीत् तद्वान्वित्यमानः संश्रवो यत्र तस्मिन्प्रसंश्रवे गुरुर्यत्र न शृणोती-  
त्यर्थः तत्र गुरुगतमन्यगतं वा न किञ्चित् कथयेत् ॥ २०३ ॥

GRAMMAR. — 1. प्रतिवाते प्रतिगतः वातः प्रतिवातः । 2. अनुवाते  
अनुगतः वातः अनुवातः । उभयत्र प्रथमया प्रादि समासः । वातीति वातः ।  
अधिकरणे सप्तमी । 3. गुरुणा सह युक्ते अप्रधाने इति तृतीया । 4. असंश्रवे  
संश्रवः श्रवणम् । न संश्रवः असंश्रवः । नञ् समासः । अधिकरणे सप्तमी ।

*Change of voice.* — आस्येत । किञ्चित् न कीर्तयेत् । ॥ २०३ ॥

BENGALI. — ये ज्ञाने श्रुत्तर भिक्कु इहेते निषेध भिक्कु किंवा निषेध भिक्कु  
इहेते श्रुत्तर भिक्कु वातान यात्र एक्कण ज्ञाने बसिबे ना ; श्रुत्तु निहेत पानना एक्कण  
ज्ञाने बसिबे श्रुत्तु गत कि अश्रुत्तु कोन कथा बसिबे ना । २०३ ॥

ENGLISH. — A disciple should not sit with his preceptor in such  
a place where the wind blows from the direction of the preceptor  
to the disciple or where the wind blows from the direction of the  
pupil to the preceptor. And he should say nothing (regarding  
preceptor) behind his back, (literally not within hearing of the  
preceptor). (203).

गोऽश्वोऽध्यायनप्रासाद-सस्तरेषु कटेषु च ।

आसीत् गुरुणा साहं शिलाफलक-नीषु च ॥ २०४ ॥

PROSE. — गोऽश्वोऽध्यायनप्रासादसस्तरेषु कटेषु च शिलाफलकनीषु च गुरुणा साहं  
आसीत् ॥ २०४ ॥

KULLUKA. — गो इति । यानशब्दः प्रत्येकमभिसम्बध्यते, बलीवर्द्धयाने

घोटकयुक्ते यानि उष्ट्रयुक्तयाने रथशकटादी प्रासादोपरि ससरे कटे च दृषादिनिर्मिते शिलायां फलके च दाक्षवटितदीर्घासने मौकायाश्च गुरुणा सङ्ग चासीत् ॥ २०४ ॥

GRAMMAR.—1. गावश्च अश्वाश्च उष्ट्राश्च ते । इतरेतररथः । तेषां यानं प्रासादश्च सस्रश्च ते । तेषु । 2. कटेषु । 3. शिलाफलकनीषु शिला च फलकश्च मौषे शिलाफलकनावः तासु । सर्व्वत्र अधिकरणे समन्वौ । 4. गुरुणा एवं साकं सार्द्धं समं योगेऽपीति भट्टोजिवचनात् सार्द्धं योगे दृतीया ।

*Change of voice.* — आस्थित ॥ २०४ ॥

BENGALI.—किस्र गोवाधे, अश्वधाने, उष्ट्रवाधे, आसादरेर उपरि, दुधनिर्मित आसन ओ बाझुर अड्डिते एक्क मिनाउले, काठनिर्मित दीर्घासने ओ मौकाय सुन्नर मज्जे शिवा उपवेशन करिते गारे ॥ २०४ ॥

ENGLISH.—A disciple may sit along with his preceptor on carriages drawn by bullocks, horses or camels ; on the top of a palace, on a coach or sofa, on straw mattresses, and also on a slab of stone, a large plank of wood or a boat. (204).

गुरोर्गुरौ सन्निहिते गुरुवद्वृत्तिमाचरेत् ।

न चानिसृष्टो गुरुणा स्नान् गुरुनभिवादयेत् ॥ २०५ ॥

PROSE.—( जिह्वः ) गुरोः गुरौ सन्निहिते सति गुरुवत् इति आचरेत्, गुरुणा च अनिसृष्टः ( सन् ) स्नान् गुरुन् न अभिवादयेत् ॥ २०५ ॥

KULLUKA.—गुरोर्गुरौविति । आचार्यस्याचार्ये सन्निहिते आचार्य इव । तस्मिन्नपि अभिवादानादिकां इत्तिमनुतिष्ठेत् । तथा गुरुगृहे वसन् जिह्व आचार्यस्या-  
नियुक्तो न स्नान् गुरुन् मातृपितृव्यादीन् अभिवादयेत् ॥ २०५ ॥

GRAMMAR.—1. गुरोः शेषे षष्ठौ । 2. गुरौ भावे समन्वौ । 3. गुरुवत् गुराविव गुरुवत् तत्र तस्येव इति वतिः । 4. इत्तिम् Acc. of आचरेत् । 5. गुरुणा कर्त्तरि दृतीया । 6. न निसृष्टः आदिष्टः अनिसृष्टः । 7. स्नान् qualifies गुरुन् । 8. गुरुन् Acc. of अभिवादयेत् ।

*Change of voice.* — इत्तिः आचर्य्येत.....अनिसृष्टेन स्ने गुरुवः अभि-  
वाचयेत् ॥ २०५ ॥

BENGALI.—उक्तं उक्त उपरिष्ठ थाकिले वेन्नग सुन्नर अति सेहैन्नग ठीहोक्

অতিঃ আচরণ করিবে ; গুরুর সমীপে নিম্নের গিঠা গাঠা গিঠুবাদি গুরুজন উপস্থিত হইলে গুরু আদেশ না করিলে তাঁহাদিগকে অভিবাদন করিবে না । ২০৫ ।

ENGLISH.—When the preceptor of his preceptor comes near, a pupil should behave towards him as towards his own preceptor. And (while living with his preceptor) he should not salute his own parents and other superiors without being directed or ordered by his preceptor. (205).

বিদ্যাগুরুষ্বেতদেব নিত্যা ব্রুতিঃ স্বয়োনিষু ।

প্রতিষেধত্সু চাধর্ম্মান্ হিতস্বোপদিশত্স্বপি ॥ ২০৬ ॥

PROSE.—বিদ্যাগুরুষু স্বয়োনিষু অধর্ম্মান্ প্রতিষেধত্সু অ হিতং উপদিশত্সু অ এতন্ এব, নিত্যা ব্রুতিঃ ( বিধিগা ) ॥ ২০৬ ॥

KULLUKA.—বিদ্যেতি । আচার্য্যন্ত্যতিরিক্তা উপাধ্যায়াদযৌ বিদ্যাগুরুবঃ । নৈশ্চ তদেবেতি সামান্যোপক্রমঃ, কিন্তুদাচার্য্য ইব নিত্যা সার্ব্বকালিকৌ ব্রুতির্বিধিগা তথা স্বয়োনিষুপি পিতৃভ্রাতৃষু তদব্রুতিঃ তথা অধর্ম্মান্নিষেধত্সু ধর্ম্মতস্বস্বোপদিশত্সু গুরুব্রুতিত্বম্ ॥ ২০৬ ॥

GRAMMAR.—1. বিদ্যায়াং গুরুবঃ বিদ্যাগুরুবঃ তেষু । বিদ+কৃপ্ । 2. স্বয়োনিষু স্বা যোনিরিব যোনিষৌ তেষু । 3. অধর্ম্মান্ Acc. of প্রতিষেধত্সু ( অধর্ম্মা is defined in Kulluka's commentary 1st sloka chapter II.) ন ধর্ম্মাঃ অধর্ম্মাঃ তান্ । 4. হিতম্ Acc. of উপদিশত্সু । 5. এতন্ সামান্যে লপ্তসক্ৰম্, its বিধেয়বিশেষণম্ is ব্রুতিঃ ।

Change of voice.—এতেন এব ভূয়তে, নিত্যা ব্রুতিঃ বিধিগা ভূয়তে ॥ ২০৬ ॥

BENGALI.—আচার্য্য ব্যতিরিক্ত উপাধ্যায় প্রভৃতিকে বিদ্যাগুরু বলে; বিদ্যাগুরু, গিঠুবাদি স্ববংশীর লোক, অধর্ম্ম হইতে নিবারণকারী ব্যক্তি ও ধর্ম্মের উপদেশকারী ব্যক্তি, ইহাদের অতিঃ এইরূপই ব্রুতি জানিবে; কিরূপে? অর্থাৎ ইহাদের অতি সর্ব্বণ গুরুবৎ ব্যবহার করিবে ॥ ২০৬ ॥

ENGLISH.—Such a course of behaviour should be shown towards those who are preceptors by reason of imparting knowledge, towards one's respectable kith and kin, towards those who forbid to do evil and wrong, and towards those who advise what is good and beneficial. (206).



श्रेयःसु गुरुवद्भूतिं नित्यमेव समाचरेत् ।

गुरुपुत्रेषु चार्थेषु गुरोश्चैव स्वबन्धुषु ॥ २०७ ॥

PROSE.—श्रेयःसु चार्थेषु गुरुपुत्रेषु गुरोः च स्वबन्धुषु नित्यं गुरुवद्भूतिं समाचरेत् ॥ २०७ ॥

KULLUKA.—श्रेयःभूतिः । श्रेयःसु विद्यातपःसमूहेषु चार्थेष्विति गुरुपुत्रविशेषणं समानजातिषु गुरुपुत्रेषु गुरोश्च जातिष्वपि पित्र्यादिषु सम्बन्धे । गुरुवद्भूतिमनुतिष्ठेत् । गुरुपुत्रावाशिष्योऽधिकवयाश्च बोद्धव्यः । शिष्यवानसमानवयसामनन्तरं विशेषस्तत्कालमाश्रयान् ॥ २०७ ॥

GRAMMAR.—1. श्रेयःसु प्रत्यय + ईयसु = श्रेयसु । अधिकरणे समभौ । 2. चार्थेषु qualifies गुरुपुत्रेषु । 3. गुरुवत् गुरो इव गुरुवत् । or गुरुवत् या भूतिः सा गुरुवद्भूतिः ताम् । 4. भूतिम् Acc. of आचरेत् ।

Change of voice. — गुरुवद्भूतिः आचर्येत ॥ २०७ ॥

BENGALI.—विद्यां उ उपज्ञां द्वात्रां मनुस्मिनालो वाङ्मि, आर्थां अर्थां अधिकवयस्य निवा वाङ्मिनिष्ठ मन्त्रादीन् सुकृपुत्रं उ सुकृपुत्रं पित्र्वाग्नि आतिष्ठ अति निष्ठ सुकृपुत्रं वाक्-शस्त्रं करिष्ये ॥ २०७ ॥

ENGLISH.—Towards one's superiors, respectable sons of the preceptor and preceptor's own relations, one should ever adopt the same course of conduct as towards his preceptor. (207).

वालः समानजन्मा वा शिष्यो वा यज्ञकर्म्मणि ।

अध्यापयन् गुरुसुतो गुरुवन्मानमर्हति ॥ २०८ ॥

PROSE.—वालः समानजन्मा वा शिष्यः वा गुरुसुतः अध्यापयन् ( सन् ) यज्ञ-कर्म्मणि (समागतः) गुरुवन्मानं अर्हति ॥ २०८ ॥

KULLUKA.—वाल इति । कनिष्ठः स्वयं न्येहोऽपि वा शिष्योऽध्यापयन् अध्यापनसमर्थो न्येहोतवेद इत्यर्थः । स यज्ञकर्म्मणि अतिगुरुत्वात् यज्ञदर्शनार्थमागतो गुरुवत् पूजामर्हति ॥ २०८ ॥

GRAMMAR. — 1. गुरो यथा गुरुवत् यः मानः तम् ।

*Change of voice.*—बालिन समानकमना शिष्येण गुरुसुतेन अध्यापयता...  
गुरुवन्दनः अस्म्यति ॥ २०८ ॥

BENGALI.—सकृन्मुख कनिष्ठ इडेन, कि गमानवयस कि अधिकवयस इडेन, यदि  
तिनि शिषा इन, एव अथापनकार्ये मन्त्र्य इन, एके निमज्जित इहेरा निमगूहे आगिले  
एक एके पोरहिठो निगुरु इडेन कि ना इडेन, सक्रर छाय गमान पाहेवेन ॥२०८॥

ENGLISH.—The son of a preceptor, if capable of teaching (the  
Veda), deserves respect like the preceptor in the matter of burnt  
offering, he the junior in age, equal in age or a pupil. (208).

उत्सादनञ्च गात्राणां स्नापनोच्छिष्टभोजने ।

न कुर्याद्गुरुपुत्रस्य पादयोश्चावनेजनम् ॥ २०९ ॥

PROSE.—गुरुपुत्रस्य गात्राणां उत्सादनं स्नापनोच्छिष्टभोजने पादयोश्च  
अवनेजनं न कुर्यात् ॥२०९॥

KULLUKA.—आवाग्येवदित्यविशेषपूजायाम्नायां विशेषमाह उत्सादन-  
मिति । गावाणामुत्सादनमुत्तमं स्नापनम् उच्छिष्टस्य भक्ष्यं पादयोश्च प्रक्षालनं गुरु-  
पुत्रस्य न कुर्यात् ॥ २०९ ॥

GRAMMAR.—1. स्नापनं च उच्छिष्टस्य भोजनञ्च ते । स्ना - शिच् + ल्युट् ।  
2. अवनेजनम् - अव निज् + ल्युट् ।

*Change of voice.*—उत्सादनं.....अवनेजनं न क्रियेत,.....भोजने न  
क्रियेताम् ॥२०९॥

BENGALI.—सकृन्मुखे सक्रवः पूजा करिते इहेलेओ सक्रर छाय कथनओ सक्र-  
पुत्रेन शरीरे विलेपन वान, स्नापन, उच्छिष्टेभोजन ओ पादप्रक्षालन करिवेन ॥२०९॥

ENGLISH.—One should not anoint or rub the body of his  
preceptor's son, should not help him in bathing, or partake of the  
remains of his food, and should not wash his feet. (209).

गुरुवत् प्रतिपूज्याः स्युः सवर्णा गुरुर्योषितः ।

असवर्णास्तु सम्यूपज्याः प्रत्युत्थानाभिवादनैः ॥ २१० ॥

PROSE. — সবর্ষাঃ গুরুযোবিতঃ গুরুবৎ প্রতিপূজ্যাঃ স্তুঃ; অসবর্ষাঃ তু প্রত্যুত্থানাভি-  
বাদনৈঃ সম্পূজ্যাঃ ॥২১০॥

KULLUKA. — গুরুবদিতি । সবর্ষা গুরুপত্নাঃ গুরুবদাশাকরুণাদিনা পূজ্যা  
মবেযুঃ । অসবর্ষাঃ পুনঃ কৈবল্যৈঃ প্রত্যুত্থানাভিবাদনৈঃ ॥২১০॥

GRAMMAR. — 1. সমানঃ বর্ণঃ; যাসাং তাঃ সবর্ষা বহুব্রীহিঃ । 2. প্রত্যু-  
ত্থানাভিবাদনৈঃ প্রত্যুত্থানানিচ অবিবাদনানিচ তানি । তৈঃ করণে তৃতীয়া ।

Change of voice. — সবর্ষাभिঃ গুরুযোবিত্ভিঃ.....প্রতিপূজ্যাभिঃ ভূয়েত ।  
অসবর্ষাभिঃ সম্পূজ্যাপিঃ ভূয়েত ॥২১০॥

BENGALI. — গুরুর সঙ্গাভীয়া ভাষাটক গুরুবৎ পূজা করিলে, কিন্তু গুরুর অন্তর্গত  
কার্যটক অত্যাধীন ও পাদগ্রহণশূন্য অভিযান দ্বারা পূজা করিলে ॥ ২১০ ॥

ENGLISH. — The wives of a preceptor belonging to the same  
caste are to be respected and worshipped like the preceptor ; but  
those who do not belong to the same caste are to be respected by  
rising up in reception and salutation. (210).

अभ्यञ्जनं स्नापनञ्च गान्धीतसादनमेव च ।

गुरुपत्न्या न कार्याणि केशानाञ्च प्रसाधनम् ॥ २११ ॥

PROSE. — গুরুপত্ন্যাঃ অভ্যঞ্জনং স্নাপনং च गान्धीतसादनं एव च केशानां प्रसाधनं  
च ( शिष्येण ) न कार्याणि ॥ ২১১ ॥

KULLUKA. — অভ্যঞ্জনমিতি । তৈলাদিদা দেহাভ্যঙ্গং স্নাপনং গাভ্রাণাং শৌচর্চনং  
কেশানাঞ্চ মাথ্যাদিদা প্রসাধনম্ এতানি গুরুপত্ন্যা ন কর্তব্যানি কেশানামিতি  
প্রদর্শনমাত্রার্থং দেহস্যপি চন্দনাदिদা প্রসাধনং ন কुर্যেৎ ॥ ২১১ ॥

GRAMMAR. — 1. গুরোঃ পত্নী গুরুপত্নী তস্তাঃ স্ত্রীষে বস্তী । 2. অভি - অঙ্গ +  
লুট্ । 3. স্না + ণিচ্ + লুট্ । 4. গান্ধীতসাধনম্ গাভ্রস্ব ভূতসাধনম্ । 5. কেশা-  
নাম্ কর্ণাণি বস্তী । 6. প্র + সিধ্ ণিচ্ লুট্ ।

Change of voice. — অভ্যঞ্জেণ, স্নাপনেণ গান্ধীতসাধনেণ, প্রসাধনেণ.....ন  
কার্যৈঃ ভূয়েত ॥২১১॥

BENGALI. — ( শিষ্য গুরুপত্নীকে গুরুবৎ পরিচর্যা করিবার অঙ্গ উপস্থিতি হইলেও )  
শিষ্য কখনও গুরুপত্নীর শরীরে তৈলমর্দন করিলে না, গুরুপত্নীকে স্নান করাইবে না,  
গুরুপত্নীর শরীরে বিবেচন মিবে না, গুরুপত্নীর কর্ণে অগাধন করিয়া দিবে না ॥ ২১১ ॥

ENGLISH.—The anointing or rubbing, and besmearing (with oil or butter) of the body of a preceptor's wife the adorning of her hair, and helping her to bathe should not be done (by a pupil). (211).

गुरुपत्नी तु युवतिर्नाभिवाद्येह पादयोः ।

पूर्णविंशतिवर्षेण गुणदोषी विजानता ॥ २१२ ॥

PROSE.—गुणदोषी विजानता पूर्णविंशतिवर्षेण ( शिष्येण ) युवतिः गुरुपत्नी इह पादयोः न अभिवाद्या ॥ २१२ ॥

KULLUKA.—गुरुपत्नी त्विति । युवतिः गुरुपत्नी पादयोरुपसंगृह्य अभिवादनदोषगुणज्ञेन ज्ञेनेन नाभिवाद्या, पूर्णविंशतिवर्षेण यौवनप्रदश्रुतार्थं बालस्य पादयोरभिवादनमनिषिद्धं युनक्तु भूमावभिवादनं वक्त्यति ॥ २१२ ॥

GRAMMAR—1. गुणश्च दोषश्च गुणदोषी तौ Acc. of विजानता । 2. विजानता qualifies शिष्येण understood. 3. विंशतिः वर्षाणि यस्य सः विंशतिवर्षः बहुव्रीहिः पूर्णं विंशतिवर्षः पूर्णविंशतिवर्षः सहस्रमुपैति समामः । तेन qualifies शिष्येण । 4. युवतिः qualifies गुरुपत्नी युनक्ति युवती च । 5. पादयोः अधिकारणे समसौ । 6. अभि—वद—णिच् ल्यप् ।

Change of voice.—युवत्या गुरुपत्न्या न अभिवाद्याया भूयेत ॥ २१२ ॥

BENGALI.—पूर्ण विंशतिवर्षवशक अर्थात् युवा शिवाग्रज्जै अतिवानेन दोषगुण ज्ञरूप करतः कथनं युवति श्रुतगत्तोर पादस्पर्शपूर्वक अतिवादन करिने ना, किन्तु ब्रूमिदेई अतिवादन करिषे; किन्तु बालक शिष्य युवति श्रुतगत्तोर पादस्पर्श पूर्वक अतिवादन करिते पात्रे ॥ २१२ ॥

ENGLISH.—A disciple of full twenty years who knows the merits or demerits of an action should not touch the youthful wife of his preceptor in the feet in the act of saluting. (212).

स्वभाव एष नारीणां नराणामिह दूषणम् ।

अतोऽर्थाच्च प्रमाद्यन्ति प्रमदासु विपश्चितः ॥ २१३ ॥

PROSE.—इह नारीणां एवः स्वभावः (यत्) नराणां दूषणम्, अतः अर्थात् विपश्चितः प्रमदासु न प्रमाद्यन्ति ॥ २१३ ॥

KULLUKA.—स्त्रीणामयं स्वभावः यदिह प्रह्वारवेष्टया ज्योतींश्च पुरुषाणां दूषणम् । अतोऽर्थात् अस्माद्धेतोः पण्डिताः स्त्रीषु न प्रमत्ता भवन्ति ॥ २१३ ॥

GRAMMAR. — 1. नारीणाम् शेषे षष्ठी नरः स्त्रियां नारी । 2. नराणाम् कर्मणि षष्ठी कृद् योगे । 3. दूषणम् दुष + णिच् + ल्यट् । दुष्यति दूषयति । 4. अर्थात् हेतौ पञ्चमी अर्थः means प्रयोजनम् or हेतुः । 5. प - मद + चलि । 6. प्रमदासु अधिकरणे समसौ । 7. विपश्चितः Nom. to प्रमादयन्ति ।

*Change of voice.* — स्वभावेन एतेन दूषणेन भूयते.....विपश्चिदभिः न प्रमद्यते ॥ २१३ ॥

BENGALI.—श्रीभिर्देवत शब्दावई एहे गे तांशत्रा शनतावादि चारा पूज्यके मोहित करिशा दूषित करिणे ; अठएव विद्वान् बाङ्किगण ज्योतीकसङ्घके कथनई अनवहित इन न । २१३ ॥

ENGLISH.—This is the nature of women that men are here caused to fall off (from the right path). Hence for this reason learned men do not become careless in reference to women. (213).

अविद्वांसमलं लोके विद्वांसमपि वा पुनः ।

प्रमदा ह्युत्पथं नेतुं कामक्रोधवशानुगम् ॥ २१४ ॥

PROSE.—प्रमदाः लोके कामक्रोधवशानुगं अविद्वांसं विद्वांसं वा पुनः उत्पथं नेतुं शक्नुमः ॥ २१४ ॥

KULLUKA.—अविद्वांसमिति । विद्वांसं जितेन्द्रिय इति बुद्ध्या न स्त्रीसन्निधि-विधिः । यस्मादविद्वांसं विद्वांसमपि वा पुनः पुरुषं देहधर्मात् कामक्रोधवशानु-याधिर्न स्त्रियः उत्पथं नेतुं समर्थाः ॥ २१४ ॥

GRAMMAR. — 1. विद्वांसम् विद् - शब्दस्थाने बहु Acc. of नेतुम् । 2. न विद्वान् अविद्वान् तम् । 3. कामक्रोधवशानुगम् कामस्य क्रोधस्य तौ । तयोर्वशः कामक्रोध-वशः तम् अनुगच्छतीति कामक्रोधवशानुगः उत्पथं समासः । कामक्रोधवश अनु वस + षः । 4. उत्पथम् उत्पठट् : पथ्याः उत्पथः समासान्तः षः । तम् Acc. of नेतुम् नौ being द्विकर्मेक । 5. शक्नुमः समर्थाः शक्यम् ।

*Change of voice.*—প্রমদাভিঃ.....বিদ্বান্ অবিদ্বান্...অলম্ ভূয়তি ॥২১৪॥

BENGALI.—যাশি জিতেজির বিদ্বান্ এরূপ বর্ণ করিয়া ত্রৌ সন্নিধানে থাকিবে না ; কারণ পুরুষমাত্রই দেহধর্মবশতঃ কাম ও ক্রোধের বশীভূত ; অতএব বিদ্বান্‌ই হউন ; আর অবিদ্বান্‌ই হউন, তাহাদিগকে কামিনীগণ অনায়াসে উদ্বারগামী করিতে পারে ।২১৪।

ENGLISH.—Surely in this world a woman is quite competent to lead to evil ways an illiterate man and also even a learned man, obedient to the control of desires and anger. (214).

মায়া স্বস্বা দুহিতা বা ন বিবিক্তাসনো ভবেৎ ।

বলবানিন্দ্রিয়গ্রামো বিদ্বাসমপি কর্ষতি ॥ ২১৫ ॥

PROSE.—মায়া স্বস্বা দুহিতা বা বিবিক্তাসনঃ ন ভবেৎ বলবান্ ইন্দ্রিয়গ্রামঃ বিদ্বাসং অপি কর্ষতি ॥২১৫॥

KULLUKA.—অত আত্ম ভাবেতি । মায়া ভগিন্যা দুহিতা বা মির্জানমৃদাদৌ নামীত যতৌঃতিবল ইন্দ্রিয়গ্রামঃ শাস্ত্রনিয়মিতাত্মানমপি পুরুষং পরবশং কৰোতি ॥২১৫॥

*Note.*—There is a well-known story about this celebrated text of Manu. The story runs that on one occasion when reading this text Vyasa the author of Mahabharat could not agree with Manu, and changed “বিদ্বাসমপি কর্ষতি” into বিদ্বাসং মাযকর্ষতি ।” intending to convey that passion cannot sway the wise. After doing this the sage went to take his bath in a river. When on his way he found himself in the midst of a furious storm accompanied by rain. He saw near him a lonely temple and at once entered into it for shelter. The storm was raging in fury, rain was falling in torrents, it was almost dark. After entering the temple the sage while looking all around the lonely temple, suddenly perceived a beautiful lady lurking in a corner behind the phallic *lingam* occupying the centre of the temple. She no doubt entered the temple for the very reason which compelled the sage to enter it. But she was a paragon of beauty. Her

charms captivated the sage who entreated her but to no purpose. He then rose and tried to seize her, but she began to run around the lingam pursued by the sage. Then the sage conceived an idea of jumping over the eternal lingam to catch hold of her. When he was about to jump over to catch the lady the text of Manu “विश्वसमपि कर्षति” reverberated through the temple ! The storm, the rain, the temple, every thing vanished immediately.

GRAMMAR.—1. माता स्वसा दुहिता सहोदर्या तृतीया । 2. विविक्तं आसनं यस्य सः । 3. इन्द्रियाणां यामः सङ्घः । 4. कर्षति कृष लट् ति ।

*Change of voice.*—विविक्तासनेन न भूयेत । बलवता, इन्द्रिययामेण विहान् .....कर्षये ॥ २१५ ॥

BENGALI.—(अथ किं) माता, भगिनी एवं कन्यास मङ्गलं निर्वर्त्तनं गृहस्थिते वास करिष्ये नः ; केनना इन्द्रियसङ्घं अतीव बलवान्, उद्देशा विधान् बाङ्गिकेण आकर्षण कर्त्तु ॥ २१५ ॥

ENGLISH.—A man should not sit lonely with his mother, sister or daughter. (For) the powerful assemblage of organs of sense (and passions) drags away by force even a learned man. (215).

कामन्तु गुरुपत्नीनां युवतीनां युवा भुवि ।

विधिवद्वन्दनं कुर्यादसावहमिति ब्रुवन् ॥ २१६ ॥

PROSE.—युवा कामं भूमौ भूमौ अहं इति ब्रुवन् युवतीनां गुरुपत्नीनां विधिवत् वन्दनं कुर्यात् ॥ २१६ ॥

KULUKA.—कामन्त्विति । कामन्तु गुरुपत्नीनां स्वयमपि युवा यथोक्तविधिना भूमावभिवाद्ये असुकशर्माहं भवतीति ब्रुवन् पादबद्धं विना यथेष्टमभिवादनं कुर्यात् ॥ २१६ ॥

GRAMMAR.—1. गुरोः पत्नी पत्नी समासः । 2. युवतीनां qualifies गुरुपत्नीनाम् । 3. विधिवत् Adv. अव्ययम् ।

*Change of voice.*—ब्रुवता रूना वन्दनं क्रियेत ॥ २१६ ॥

BENGALI.—युवा शिवा युवती सक्रमणीयं गोप आर्न ना करिषा आशि :अयूक नर्दा  
अभिवादन करितेहि ईश कहिषा भूमिते विधिते हेछाशुमात्रे युवती सक्रमणीके वचना  
करिबे ॥ २१६ ॥

ENGLISH.—A youthful pupil should do salutation in due form  
to the youthful wife of his preceptor (by bowing down his head)  
on the ground, announcing himself that he is so and so. (216).

विप्रोष्य पादग्रहणमन्वहं चाभिवादनम् ।

गुरुदारेषु कुर्वीत सतां धर्ममनुस्मरन् ॥ २१७ ॥

PROSE.—( युवा ) सतां धर्म अनुस्मरन् विप्रोष्य गुरुपत्नीषु पादग्रहणं अन्वहं  
अभिवादनं च कुर्वीत ॥ २१७ ॥

KULLUKA.—विप्रोष्येति । प्रवामादागत्य सव्येन सव्यः स्पृष्टव्यो दक्षिणेन च  
दक्षिण इतरात्रविधिना पादग्रहणं प्रत्यहञ्च भूमावभिवादनं गुरुपत्नीषु युवा कुर्वीत शिष्टा-  
नामयमाचार इति जानन् ॥ २१७ ॥

GRAMMAR.—1. धर्मम् Acc. of अनुस्मरन् । 2. विप्रोष्य वि-प्र-  
वम् ल्यप् । 3. पादयोः ग्रहणम् । 4. अन्वहम् अहनि अहनि अन्वहम् अव्ययीभावः  
समामान्तः ङच् । 5. गुरुदारेषु गुणोः दाराः तेषु विधयाधारं सप्तमी । दारशब्दस्य  
पुंलिङ्गता बहुवचनान्तत्वं च । 6. कुर्वीत क्त + ईत ।

Change of voice.—अनुस्मरता पादग्रहणं चाभिवादनं क्रियेत ॥ २१७ ॥

BENGALI.—युवा शिवा विद्वान् इहेते आशिषा माधुगणेर आचार अशुमात्रे अथन  
मिन सक्रमणीयं गोप आर्न करिषा अभिवादन करिबे एव उगपत्र अतिमिन भूमितेई  
अभिवादन करिबे ॥ २१७ ॥

ENGLISH.—On coming back from a sojourn a youthful pupil  
may indeed touch the feet of his preceptor's youthful wife, remem-  
bering it to be the duty of the virtuous; but daily he should bow  
down (on the ground). (217).

यथा खनन् खनित्रेण नरो वार्यधिगच्छति ।

तथा गुरुगतां विद्यां शूश्रूषुरधिगच्छति ॥ २१८ ॥



PROSE.—यथा नरः खनिवेशं खनन् वारि अधिगच्छति तथा श्युषुः [गुरुगतां विद्यां अधिगच्छति ॥ २१८ ॥

KULLUKA.—उक्तस्य श्युषुषाविधिः फलमाह यथेति । यथा कश्चिन्मनुष्यः खनिवेशं भूमिं खनन् जलं प्राप्नोति एवं गुरुस्थितां विद्यां गुरुसेवापरः शिष्यः प्राप्नोति ॥ २१८ ॥

GRAMMAR.—1. खनिवेशं करणे ढतौया खन + इत् । 2. खनन् खन + ञट् । 3. वारि Acc. of अधिगच्छति । 4. श्युषुः श्यु - सन् + उ । 5. गुरु गता गुरुगता ताम् qualifies विद्याम् । 6. विद्याम् Acc. of अधिगच्छति ।

Change of voice.—नरेण खनता वारि अधिगम्यते श्युषुषा गुरुगता विद्या अधिगम्यते ॥ २१८ ॥

BENGALI.—(यत्र न श्युषु) खनिज खाना माटि खनन करिते करिते जल आउ हर ; (सेईकन मिवा कुकुर कुकुरा करिते करिते कुकुरत विना) आउ हर ॥ २१८ ॥

ENGLISH.—Just as a man gets water by digging up (the earth) by means of a spade, so a pupil attending and serving (his preceptor) acquires the learning possessed by his preceptor. (218).

मुण्डो वा जटिलो वा स्याद्यथा स्याच्छिखाजटः ।

नैनग्रामेऽभिनिस्त्रोचेत् सूर्योनाभ्युदियात्कचित् ॥ २१९ ॥

PROSE.—( ब्रह्मचारी ) मुण्डः वा जटिलः वा स्यात् अथवा शिखाजटः स्यात्, सूर्यः एनं ग्रामे क्वचित् न अभ्युदियात्, न अभिनिस्त्रोचेत् ॥ २१९ ॥

KULLUKA.—ब्रह्मचारिणः प्रकारतश्चमाह मुण्डो वेति । सुस्थितसमस्तशिरः-केशो वा जटावान् वा शिखेव वा जटा जाता यस्य अपरे शिरःकेशा सुस्थितास्तथा वा भवेत् एनं ब्रह्मचारिणं क्वचिद्ग्रामे निद्राणम् उत्तरत शयानमिति दर्शनात् सूर्यो नाभि-निस्त्रोचेत् नास्त्वमियात् ॥ २१९ ॥

GRAMMAR.—1. मुण्डः qualifies ब्रह्मचारी understood सुस्थते । मुण्ड् + घञ् । 2. जटा + इलच् । 3. शिखा एव जटा यस्य सः । 4. अभ्युदियात् अभि - उत् - इ + यात् । governs एनम् । 5. अभि - नि - त्रुच् + यात् । शोचति । गच्छति । governs एनम् ।

Change of voice.—ब्रह्मचारिणः मुखेन जटिलेन शिखाजटेन वा सूयेत, सूर्येण अयं न अभ्युदीयेत... २. अभिनिस्त्रोचेत् ॥ २१९ ॥

BENGALI.—बुद्धिउत्तमकहे इउन, किंवा कটাबूझ বসুকই ইউন, অথবা বুদ্ধি-  
যত্নক কিছু কটাঘর নিখামাজ খাবোই ইউন, ত্রক্ষণাশী কোন গ্রামে নিজিত থাকি অবহা  
র্য্যে যেন উদিত অথবা অস্তমিত না হইতে পারেন ॥ ২১০ ॥

ENGLISH.—A religious student of the Veda should have his head either clean shaved, or thick with matted hair ; or should have a tuft of hair interwoven like matted hair. And let not the sun rise up or go down upon him sleeping in any village (or town). (219).

तच्छेदभ्युदियात् सूर्यः शयानं कामचारतः ।

विस्त्रोचेद्वाप्यविज्ञानाज्जपन्नुपवसेद्दिनम् ॥ २२० ॥

PROSE.—सूर्यः कामचारतः शयानं तं चेत् अभ्युदियात् अविज्ञानात् अपि वा  
विस्त्रोचेत् जपन् दिनं उपवसेत् ॥ २२० ॥

KULLUKA.—अथ प्रायश्चित्तमाह तच्छेदिति । तच्छेत् कामतो निद्रां निद्रा-  
परवयत्वेनाज्ञानात् सूर्योऽभ्युदियात् अज्ञमियात्तदा सावित्रीं जपन् उभयवापि  
दिनमुपवसन् रात्रौ मुञ्च्यते । अभिनिर्मुक्तस्य उत्तरेऽहनि उपवासप्रपौ । अभिरभाज  
इति कर्मप्रवचनोपसंज्ञा ततः कर्मप्रवचनोपयुक्ते द्वितीया । सावित्रीजपस्तु गीतम-  
वचनात् तदाह गीतमः । सूर्याभ्युदितो ब्रह्मचारी तिष्ठेत् अहरभुञ्जानोऽभ्यसमितश्च  
रात्रिं जपन् सावित्रीम् । मनुगीतमवचनात् सूर्याभ्युदितस्तेव दिनाभोजनप्रप्राप्तौ  
अभ्यसमितश्च तु रात्राभोजनप्रपौ नैतत् अपेक्षायां व्याख्यासन्देहे वा मुख्यकारविहितमन्त्र-  
मन्त्रयामहे न तु स्फुटं मन्त्रं मुख्यकारदर्शनादन्यथा कुर्यात् । अतएव जपपेक्षायां  
गीतमवचनात् सावित्रीजपोऽभ्युपेय एव न तूभयव स्फुटं मन्त्रं दिनोपवासजपमपा-  
कुर्यात् । तस्मादभ्यसमितस्य भाजवगीतमीयप्रायश्चित्तविकल्पः ॥ २२० ॥

GRAMMAR.—1. कामचारतः प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानमिति द्वितीया । काम  
-चर + घञ् । 2. शयानम् - शी + शानच् । अशशित् । 3. जप + शब् ।  
4. दिनम् अथकसंयोगे द्वितीया । 5. उपवसेत् उप-वस्-घात् ।

Change of voice.—सूर्यश्च शयानः सः अभ्युदीयेत निस्त्रुचेत तेन जपता  
दिनं उपोष्येत ॥ २२० ॥

BENGALI.—কামাচারবশতঃ ত্রক্ষণাশী নিজিত থাকি অবহা  
র্য্যে যদি উদিত  
হন, অথবা অজ্ঞানবশতঃ নিজিত থাকি অবহা  
র্য্যে যদি  
উত্তর অবহা  
র্য্যে প্রারম্ভী জপ করিয়া একদিন উপবাস করিবে । অর্থাৎ সূর্যোদয়কালে

নিজিত থাকিলে সমস্ত দিন উপবাস করিয়া গায়ত্রীজপ করতঃ স্নান করিবে, এবং সূর্য অস্ত হইবার কালে স্নান করতঃ নিজিত থাকিলে অনশনে স্নান ও গায়ত্রীজপ করিয়া পরদিনে স্নান করিবে। গৌতমযতে নিজিত থাকা অবস্থায় সূর্য অস্তগমন করিলে স্নান করিতে উপবাস ও গায়ত্রীজপ বিহিত, পরদিনে নহে; কিন্তু ইহা শক্তির ভারতম্য অনুসারে বিকল্প বিধি বলিয়া জানিবে ॥২২০॥

ENGLISH.—If the sun rises up while he is sleeping wilfully, or if the sun goes down without his knowledge, he should fast for the day, muttering the *Gayatri*. (220).

সূর্য্যেণ অমিনিন্মুক্তঃ শয়ানোঃশ্চ্যুদিতঃ যঃ ।

প্রায়শ্চিত্তমকুর্বাণো যুক্তঃ স্যাম্মহতৈনসা ॥ ২২১ ॥

PROSE.—যঃ শয়ানঃ সন্ সূর্য্যেণ হি অমিনিন্মুক্তঃ অশ্চ্যুদিতঃ প্রায়শ্চিত্তমকুর্বাণো যঃ মহতা এনসা যুক্তঃ স্যাত্ ॥ ২২১ ॥

KULLUKA.—অস্য তু প্রায়শ্চিত্ত বিধির্যবাদনাৎ সূর্য্যেণেতি । সন্নাৎ সূর্য্য-  
অমিনিন্মুক্তোঃশ্চ্যুদিতঃ নিদ্রায়াঃ প্রায়শ্চিত্তমকুর্বাণো মহতা পাপেন যুক্তো নরকং গচ্ছতি  
তস্মাদ্বেযৌক্তপ্রায়শ্চিত্তং কুর্য্যাত্ ॥ ২২১ ॥

GRAMMAR.—1. যঃ উক্তং কথ্যং of অমিনিন্মুক্তঃ and অশ্চ্যুদিতঃ । 2. শয়ানঃ শী + শানচ্ । 3. সূর্য্যেণ কর্তরি ততোয়া । 4. প্রায়শ্চিত্তম্ Acc. of অকুর্বাণোঃ প্রায়শ্চিত্তম্ অস্মিনিন্মুক্তোরিতিস্কারানমঃ । 5. অকুর্বাণোঃ ন কুর্বাণোঃ অকুর্বাণোঃ । ক্তজ্ঞ শানচ্ কর্তরি কুর্বাণোঃ । 6. মহতা qualifies এনসা । 7. এনসা কর্তরি ততোয়া ।

Change of voice.—যেন শয়ানে সূর্য্যেণ অমিনিন্মুক্তেন অশ্চ্যুদিতেন সূর্য্যে...  
অকুর্বাণেন তেন যুক্তেন সূর্য্যে ॥ ২২১ ॥

BENGAL.—যিনি শয়ান হইয়া সূর্য্য কর্তৃক অশ্চ্যুদিত কি অমিনিন্মুক্ত হইয়া তিনি  
প্রায়শ্চিত্ত না করিলে মহাপাপ দ্বারা যুক্ত হইয়া নরকে গমন করেন ॥ ২২১ ॥

ENGLISH.—He, who has become defiled by the sun going down  
or rising up while he is asleep and does not do the expiatory rite,  
should become yoked to or charged with a great sin. (221).

শাশ্বতম্ প্রযতো নিত্যমুভে সন্ধ্যে সমাহিতঃ ।

শুচী দেবে অপনু জপ্যমুপাসীত যজ্ঞবিধি ॥ ২২২ ॥

PROSE.—नित्यं चाचम्य प्रयतः समाहितः शुचौ देशे जपन् यथाविधि उभे सन्धे उपासीत ॥ २२२ ॥

KULLUKA.—यथादुक्तप्रकारेण सन्धातिक्रमे महत् पापमत आह चाचम्येति । चाचम्य पवित्री नित्यमनन्यमनाः शुचिदेशे सावित्रीं जपन् उभे सन्धे विधिवदुपासीत ॥ २२२ ॥

GRAMMAR.—1. चाचम्य आङ् चम + ल्यप् । आचामति । चमसीत् । 2. प्र-यम + क्त । 3. सम्-चा-घा + क्त । 4. देशे आधिकारणे सप्तमी । 5. जप्यम् Acc. of जपन् । 6. विधिमनतिक्रम्य यथाविधि अव्ययीभावः । 7. सन्धे Acc. of उपासीत । सम्-छे + चङ् । 8. उप-चासु + ईत ।

Change of voice.—प्रयतेन समाहितेन.....जपता उभे सन्धे उपास्येयाताम् ॥ २२२ ॥

BENGALI.—निता आठमनपूर्वक अवत ३ मनाहित इहेहा नविजहाने गात्रजो लण करिते करिते उल्लस मका। उपासना करिते ॥ २२२ ॥

ENGLISH.—A religious student should (therefore) engage himself everyday in duly muttering in a pure place the *Gayatri* during both the twilights, with concentrated attention, after having rinsed his mouth and become pure. (222).

यदि स्त्री यद्यवरजः श्रेयः किञ्चित् समाचरेत् ।

तत् सर्वमाचरेद्युक्तो यत्र वास्य रमेन्ननः ॥ २२३ ॥

PROSE.—यदि स्त्री यदि अवरजः किञ्चित् श्रेयः समाचरेत्, यत्र वा चक्षु मनः रमेत्, तत् सर्वं युक्तः सन् समाचरेत् ॥ २२३ ॥

KULLUKA.—यदीति । यदि स्त्री मूढो वा किञ्चित् श्रेयोऽनुतिष्ठति तत्सर्वम् उद्युक्तोऽनुतिष्ठेत् यत्र च आश्रानिषिद्धे मनोऽस्य तुष्यति तदपि कुर्व्यात् ॥ २२३ ॥

GRAMMAR.—1. श्रेयः Acc. of समाचरेत् । 2. यत्र qualifies कश्चेति understood. 3. रमेत् रम + धात् । चक्षुको कित् करणं अनुदात्तलक्षणं आत्मनेपदं मनिव्यमिति प्रापनात् । चक्षु हावनुदात्तेतौ इत्यनन्तरं रहु ङीष्-यानि तुक्कत्वात् रम भातीरात्मनेपदं भगिन्त्यम् । रमते रमतीत्यपि कथितम् । अरंश्च अरंसीत ।

*Change of voice.*—स्त्रिया अवरजेन किञ्चित् श्रेयः समाचर्येत मनसा रम्येत, तत् सर्वं समाचर्येत ॥ २२३ ॥

BENGALI.—स्त्री अथवा नृपञ्च यदि কোন সরকারের অনুষ্ঠান করে, অথবা নাজে বাহা নিবন্ধ নহে একজন যে কোন সরকারে ত্রুটিত্রির মনে মনে খেলাভাঙ করে তাহা ত্রুটিত্রির সংঘট মনে সম্পাদন করিবে ॥ ২২৩ ॥

ENGLISH.—If a woman or a low-born person does something good ; the religious student of the Veda should practise all that with care ; or that which his mind takes delight in, (provided it is not against the Sastras). (223).

धर्मार्थावृत्त्यते अथः कामार्थौ धर्म एव च ।

अर्थ एवेह वा अथस्त्रिवर्ग इति तु स्थितिः ॥ २२४ ॥

PROSE.—इह धर्मार्थौ, कामार्थौ, धर्म एव, अर्थ एव वा श्रेयः उच्यते ; त्रिवर्ग एव श्रेयः इति तु स्थितिः ॥ २२४ ॥

KULLUKA.—श्रेय एव किं तद्दर्शयति धर्मार्थावृत्तिः । धर्मार्थौ श्रेयोऽभिधीयते कामहेतुत्वादिभिः केचिदाचार्या मनसो अन्ये अर्थकामौ सुखहेतुत्वात् धर्म एवेत्यपि अर्थकामयोरुपायत्वात् अर्थ एवेह लोके श्रेय इत्यन्ये धर्मकामयोरपि साधनत्वात् सम्यति स्मृतमाह धर्मार्थकामात्मकः परस्परविद्वद्भिः त्रिवर्ग एव पुरुषार्थतया श्रेय इति विनिश्चयः । एवञ्च बुभुक्षुन् प्रतुपदेशो न सुभुक्षुन् सुभुक्षुणान् मोक्ष एव श्रेय इति षष्ठे वक्तव्ये ॥ २२४ ॥

GRAMMAR.—1. धर्मः अर्थश्च धर्मार्थौ धर्मोद्विष्यिम इति त्वेष धर्मार्थौ अर्थधर्मौ इत्यपि स्यात् । इत्यः । Same case with श्रेयः । 2. कामार्थौ कामश्च अर्थश्च कामार्थौ अर्थकामौ वा same case with श्रेयः । 3. धर्मः । 4. अर्थः do. श्रेयः विधेयविशेषणम् of (1) (2) (3) and (4). 5. त्रिवर्गः त्रयाणां धर्मार्थकामानां वर्गः गणः त्रिवर्गः उद्देश्य of श्रेयः । 6. श्रेयः विधेय of त्रिवर्गः । 7. इति stands for the sentence उद्देश्य of स्थितिः । स्थिति विधेय of इति स्या + क्तिन् ।

*Change of voice.*—धर्मार्थौ अर्थकामौ, धर्मो अर्थो श्रेयः वक्ति । त्रिवर्गे एव श्रेयः इति स्थित्या सूचते ॥ २२४ ॥

BENGAL.—কেহ বলেন ধর্ম ও অর্থ কামের হেতুস্বরূপ, অতএব ধর্মার্থই শ্রেয়ঃ ; কেহ বলেন অর্থ ও কাম সুখের কারণ, অতএব অর্থকামই শ্রেয়ঃ ; কেহ বলেন ধর্মই অর্থকামের হেতু, অতএব ধর্মই শ্রেয়ঃ ; কেহ বলেন অর্থই ধর্ম ও কামের হেতু, অতএব অর্থই শ্রেয়ঃ ; কিন্তু যমুদ্র মত এই যে ধর্ম, অর্থ ও কাম পরস্পর অবিকল্পভাবে সেবিত এই তিনটিই শ্রেয়ঃ । কিন্তু এই নিয়ম ভোগীলোকের পক্ষে, মুক্তিকাজী লোকের পক্ষে মোক্ষই শ্রেয়ঃ ॥২২৪॥

ENGLISH.—Law (the Sastric injunctions—mandatory and prohibitory) and wealth are said by some to be the highest good ; others say that the satisfaction of desires and wealth are the supreme good ; (a third class) say that the observance of the Sastric injunctions is the greatest good ; (while a fourth class hold) that wealth is the highest bliss. But the true view or settled rule is that the threefold human pursuit (a harmonious combination of observance of Sastric injunctions, wealth, and satisfaction of desires) is the summum bonum of life. (224).

आचार्यो ब्रह्मणो मूर्तिः पिता मूर्तिः प्रजापतिः ।

माता पृथिव्या मूर्तिस्तु भ्राता खो मूर्तिरात्मनः ॥ २२५ ॥

PROSE.—আচার্য্যঃ ব্রহ্মণঃ মূর্তিঃ, পিতা প্রজাপতিঃ মূর্তিঃ, মাতা तु पृथिव्याः मूर्तिः, स्वः भ्राता आत्मनः मूर्तिः ॥ ২২৫ ॥

Note.—ইদং শরীরং কৌন্ঠেয় চেব মিত্বমিধীয়তে । ইতি জীতাবচনাৎ শরীরং চেবম্ । তজ্জানাতীতি চেবম্ ; শরীরাদিচ্ছাতা জীব ইত্যর্থঃ । স এবান আত্মব্রহ্মেণ কথিতঃ । তজ্জাত উক্ত আত্মনঃ চেবম্ভস্য ।

KULLUKA.—আচার্য্য ইতি । আচার্য্যো বেদান্বিতস্ব ব্রহ্মণঃ পরমাत्मनো মূর্তিঃ শরীরং পিতা দ্বিরপ্যমৰ্শস্ব মাতা च भारवात् पृथिव्यामूर्तिः ভ্রাতা च स्वः स्वৰ্থঃ চেবম্ভস্য তজ্জাদেবতারূপা এতে জাবমনন্যাঃ ॥ ২২৫ ॥

GRAMMAR.—1. स्वः qualifies भ्राता ।

Change of voice.—आचार्य्येच...मूर्त्या भूयते etc. ॥ ২২৫ ॥

BENGAL.—আচার্য্য বেদান্ত প্রতিপাদ্য ব্রহ্মের মূর্তিস্বরূপ, পিতা দ্বিরপ্যমৰ্শের মূর্তিস্বরূপ, মাতা পৃথিবীর মূর্তিস্বরূপ, মহোদয় ভ্রাতা স্বেরাজের মূর্তিস্বরূপ ; ইহারা চেবভাবরূপ, ইহাদিগকে কদাচ অবমাননা করিলে না ॥ ২২৫ ॥

ENGLISH.—The *Acharya* or preceptor is a visible form (or embodiment) of the Supreme Being (Brahman), father is a visible shape (or incarnation) of the Creator (Brahmā), mother is an embodiment of the Earth; and one's own (elder) brother is the embodiment of the (Divine) Soul. (225).

आचार्यश्च पिता चैव माता भ्राता च पूर्वजः ।

नार्त्तनाप्यवमस्तव्या ब्राह्मणेन विशेषतः ॥२२६॥

PROSE.—आचार्यश्च, पिता चैव, माता, पूर्वजः भ्राता, आर्त्तेन अपि न अवमस्तव्याः विशेषतः ब्राह्मणेन नावमस्तव्याः ॥ २२६ ॥

KULLUKA.—आचार्यश्चेति । आचार्यो जनको जननी च भ्राता च समर्था ज्येष्ठः पौष्टिनेनाप्यमो नावमानगोप्य विशेषतो ब्राह्मणेन ॥२२६॥

GRAMMAR.—1. आर्त्तेन qualifies जनेन understood कर्त्तरि द्वितीयाः 2. अवमस्तव्याः अव मन + तव्य । कर्त्तृषि । ब्राह्मणेन कर्त्तरि द्वितीया ।

*Change of voice.*—आचार्यश्च पिता माता पूर्वजेन भ्राता अवमस्तव्यैः शृण्वे ॥ २२६ ॥

BENGALI.—आचार्य, पिता, माता ও জ্যেষ্ঠ ভ্রাতাকে নিতান্ত অপমানিত হইয়াও অবমাননা করিতে না, বিশেষতঃ ব্রাহ্মণ কখনও ইহাঙ্গিকে অবমাননা করিতে না ॥ ২২৬ ॥

ENGLISH.—The preceptor (*Acharya*), father, mother, and elder brother should not be disrespected even by a distressed or diseased person, specially a Brahman. (226).

यं मातापितरौ क्लेशं सहेते सन्धवे नृणाम् ।

न तस्य निष्कृतिः शक्या कर्तुं वर्षशतैरपि ॥ २२७ ॥

PROSE.—मातापितरौ नृणां सन्धवे यं क्लेशं सहेते तस्य निष्कृतिः वर्षशतैः अपि कर्तुं न शक्या ॥ २२७ ॥

KULLUKA.—यस्यात् यमिति । नृणामपत्यानां सन्धवे गर्भाधाने सति अनन्तरं यं क्लेशं मातापितरौ सहेते, तस्य वर्षशतैरप्यनेकैरपि जन्माभिरावृत्तं कर्तुमशक्यम् । मातुसावत् कुली धारयदुःखं प्रसववेदनातिशयो जातस्य रक्तवर्धनकाष्ठस्य, पितुरपि

वाक्ये रक्षासु चर्चनदुःखम् उपनयनात् प्रभृति वेदतद्व्याख्यापनव्याख्यानादिके शक्तिश्च  
इति सर्व्वं सिद्धं तस्मात् देवतारूपा एते नावमनव्याः ॥२२७॥

GRAMMAR.—1. सन्धवे भावे सप्तमी । 2. नृवाम् कर्त्तरि षष्ठी कृदयोर्ये  
पक्षे नृवाम् by नृ च नृ इत्यस्य नामि वा दीर्घः स्यात् । 3. मातापितरौ माता च पिता  
च मातापितरौ । आनङ् by आनङ्कृतो इत्ये उत्तर पदे परे इत्य समासे ऋदन्मात् पूर्व्वं  
पदात् आनङ् स्यात् । पिता माता इत्यनेन एकशेषश्च । माता च पिता च माता-  
पितरौ पितरौ वा । 4. क्लेशम् Acc. of सङ्गते । 5. सह + आत् । असङ्गित ।  
6. निष्कृतिः निम्-कृ + क्रिन् । 7. शक्या शक + यत् कर्म्मणि । अशकत् ।  
8. वर्षभृतेः वर्षाणां शतानि तैः करणे वृत्तौ । ननु अपवर्गे फलप्राप्तेरभावात् ।

Change of voice....यः क्लेशः मातापितृभ्यां सङ्गते तस्य निष्कृत्या कर्त्तुं  
अशक्या न सूर्यते ॥ २२७ ॥

BENGALI.—गर्भाधान इहेवार पर इहेते माता ओ पिता सन्तानेर जन्म वे क्लेश  
सङ्ग करेन, से क्लेशजनित अण शत शत वयसरे शत क्लेशे ओ सन्तानगण परिशेष करिजे  
समर्थ हर ना । माता गर्ते धःत्रण, असव बेधना सहन, जात शिशुर रक्षण ओ वर्द्धनजनित  
क्लेश एव पिता उपनयन इहेते बेदादि अध्यापन ओ पोषणादि क्लेश सङ्ग करेन ।  
अतएव पिता ओ माता सेवतावरूप ठाहनिगके अवमानना करिवे ना ॥ २२७ ॥

ENGLISH.—The troubles which the parents suffer in the birth  
or production of men cannot be made amends for even in hundreds  
of years. (227).

तयोर्नित्यं प्रियं कुर्यादाचार्यस्य च सर्व्वदा ।

तेष्वेव विषु तुष्टेषु तपः सर्व्वं समाप्यते ॥ २२८ ॥

PROSE. — तयोः नित्यं आचार्यस्य च सर्व्वदा प्रियं कुर्यात्, तेषु विषु तुष्टेषु  
( सत्सु ) एव सर्व्वं तपः समाप्यते ॥२२८॥

KULLUKA.—तयोर्नित्यमिति । तयोर्मातापितरौः प्रत्यङ्माचार्यस्य च सर्व्वदा  
प्रीतिसुत्पादयेत् । यस्मात्तेष्वेव विषु प्रीतेषु सर्व्वं तपः आन्दायकादिकं फलशरीर  
सम्बन्ध प्राप्यते सावादिप्रत्युष्टेऽव सर्व्वस्य तपसः फलं प्राप्यते इत्यर्थः ॥२२८॥

GRAMMAR. — 1. तुष्टेषु तेषु भावे सप्तमी । 2. समाप्यते सन् आप्  
कर्म्मणि सट् ते ।

Change of voice—प्रियं क्रियेत । तपः समाप्तीति (विद्यः) ॥२२८॥



BENGALI.—অতএব প্রতিদিন যাঁতা পিঠার ও সর্ব্বদা জাচার্য্যের শিষ্যশাসন করিবে; এই তিনজন ভূহে হইলেই সমস্ত তপস্বী কল্যাণ হয় ॥২২৮॥

ENGLISH.—One should always do what is agreeable to them and to the preceptor. These three being pleased all penance is accomplished. (228).

তৈষাং ত্রয়াণাং শৃশ্রূষা পরমং তপ উচ্যতে ।

ন তৈরভ্যননুজ্ঞাতো ধর্ম্মসম্ব্যং সমাচরেৎ ॥ ২২৯ ॥

PROSE.—তৈষাং ত্রয়াণাং শৃশ্রূষা পরমং তপ: উচ্যতে তৈ: অননুজ্ঞাত: অন্য' ধর্ম্মং সমাচরেৎ ॥ ২২৯ ॥

KULLUKA.—তৈষানিতি । তৈষাং মাতাপিতৃব্যাব্যাসাং পরিষর্যা সর্ব্বং তপোমর্থং শ্রেষ্ঠম্ ইত্যেষ সর্ব্বতপ:ফলপ্রাপ্তি: । যদান্যমপি ধর্ম্মং কথঞ্চিৎ করোতি তদপ্যেতদ্বশানু-মতিব্যতিরিক্বেষ ন কুর্য্যাৎ ॥ ২২৯ ॥

GRAMMAR.—1. শৃশ্রূষা—শ্রু—মন+ষ। 2. তপ: বিধেয় বিশেষণম্ of শৃশ্রূষা। 3. তৈ: কর্ত্তরি দ্বিতীয়া। 4. ন অননুজ্ঞাত: অননুজ্ঞাত: অনু—জ্ঞা+ক্ত: কর্ম্মণি।

Change of voice.—শৃশ্রূষা:তপ: বক্তি। তৈ: অননুজ্ঞাতেন অন্য: ধর্ম্ম: ন সমাচর্য্যেত ॥ ২২৯ ॥

BENGALI.—যাঁতা পিঠা ও জাচার্য্য এই তিন জনের পরিতর্পণই পরম তপস্বী; যাঁহাদের অনুমতি ছাড়া অন্য কোন ধর্ম্মকাণ্ডও করিবে না ॥২২৯॥

ENGLISH.—To attend upon and serve these three is said to be the highest penance. One should not set about any other virtue without being permitted by them. (229).

ত এব হি ত্রয়ো লোকাস্ত এব ত্রয় শাস্ত্রমা: ।

ত এব হি ত্রয়ো বেদাস্ত এবোক্তাস্ত্রয়োঽম্বয়: ॥ ২৩০ ॥

PROSE.—তৈ এব হি ত্রয়: লোকা:, তৈ এব হি ত্রয়: শাস্ত্রমা:, তৈ এব হি ত্রয়: বেদা:, তৈ এব ত্রয়: অম্বয়: সক্তা: ॥ ২৩০ ॥

KULLUKA.—ত এবিতি বজ্রাতএব মাতাপিতৃব্যাব্যাসাব্যাসী লোকা লোকসমুদায়ি-

हेतुत्वात् कारणे कार्योपचारः, तएव ब्रह्मचर्यादिभाववयवस्था आश्रमाः गार्हपत्याश्रम-  
प्रदायकत्वात् तएव त्रयोवेदा वेदवयवप्रफलोपायत्वात् त एव हि त्रयोऽग्नेयोऽभिहिताः  
वेतासन्वायव्यादिकलदावत्वात् ॥ २३० ॥

GRAMMAR.—1. ते लक्ष्ये । 2. लोकाः विधेय विशेषणम् of ते ।

Note. — त्रिलोकौ - सूर्यलोकः, भुवर्लोकः स्वर्लोकः ।

Change of voice.—तैः एव त्रिभिः लोकैर्भूयते &c. &c. ॥ २३० ॥

BENGALI—तेहे तिन जनहे तिन लोक केनना ईश्वराहे त्रिलोकशास्त्र  
कारण; ईश्वराहे तिन आश्रम, केनना ईश्वराहे गार्हपत्यादि आश्रम प्रदान करेन;  
ईश्वराहे तिन वेद, केनना वेदवयव जपेन फलप्राप्तिर उपाय ईश्वराहे; ईश्वराहे  
गार्हपत्यादि अग्निवय, केनना अग्निवय द्वारा सम्पाना यज्ञेन फल ईश्वराहे दान  
करेन ॥ २३० ॥

ENGLISH.—They three are surely the three regions, they three  
are the three stages of life; they three are indeed the three Vedas;  
and they three are said to be the three fires. (230).

पिता वै गार्हपत्योऽग्निर्माताग्निर्दक्षिणः स्मृतः ।

गुरुराहवनीयस्तु साम्नित्रेता गरीयसी ॥ २३१ ॥

PROSE.—पिता वै गार्हपत्यः अग्निः, माता दक्षिणः अग्निः, गुरुः आहवनीयः  
अग्निः स्मृतः, सा अग्नित्रेता गरीयसी ॥ २३१ ॥

KULLUKA —पित्रेति वैशब्दोऽवधारणे । पितैव गार्हपत्योऽग्निः माता  
दक्षिणाग्निः आचार्य आहवनीयः सद्यसाग्नित्रेता श्रेष्ठतरा मृत्युर्धत्वाश्वास न वस्तुविरोधोऽत्र  
भावनीयः ॥ २३१ ॥

Note.—अग्निवत् गरीयस्तात् अघिलम् ननु साक्षात् अघिलम् अग्निमनुष्यो-  
भेदात् । तदाहः कुल्लुकभट्टाः संधमित्यादि ।

GRAMMAR.—1. गृहपतिना जितं युक्तः गृहपति + एत्यः । 2. आह—ह  
+ अनीयम् । 3. अघीनां त्रेता or अग्रय एव त्रेता । अग्निवयमिदं त्रेता इति अग्र-  
वचनात् । 4. गुरु + ईयस्तुः ।

Change of voice.—पिता गार्हपत्येन अग्निना भूयते इत्यादि ॥ २३१ ॥

BENGALI.—পিতাই গার্হপত্য অগ্নি, মাতাই দক্ষিণাগ্নি, গুরুই আহবনীয়া অগ্নি ; এই তিন অগ্নি ত্রয়োদশ ॥ ২৩১ ॥

ENGLISH.—Father is regarded as the *Garhapatya* fire ; mother as the *Dakshina* fire ; and the preceptor as the *Ahabaniya* fire. This threefold fire is more important than (the three actual fires). (231).

ত্ৰিষ্বপ্ৰমাণ্যন্তেযু ত্রীন্ লোকান্ বিজয়েদৃগৃহী ।

দীপ্যমানঃ স্ববপুষা দেবদ্বিবি মোদতে ॥ ২৩২ ॥

PROSE.—গৃহী এতেষু ত্ৰিষু অপ্রমাণ্যন্ ত্রীন্ লোকান্ বিজয়েৎ, স্ববপুষা দীপ্যমানঃ দেবদ্বিবি মোদতে ॥ ২৩২ ॥

KULLUKA.—ত্রিষ্বিতি । এতেষু ত্ৰিষু প্রমাণ্যকুল্যন্তে ত্রয়োদশী তাবৎ জঘন্ত্যেব যদৃগৃহোপি ত্রীন্ লোকান্ সংশ্রাপূর্ব্বকস্বান্নপদবিধিরনিত্যত্বাৎ বিপর্য্যায়োঁ জেরিত্যক্ষনে পদম, ত্রীন্ লোকান্ বিজয়েদিতি ত্ৰিষ্বাধিপত্যং প্রাপ্নোতি তথা স্ববপুষা প্রকাশমানঃ সূর্য্যাদিদিবদ্বিবি দৃষ্টো ভবতি ॥ ২৩২ ॥

GRAMMAR. — 1. ত্ৰিষু অধিকরণে সপ্তমৌ । ত্রিষ্বিতি ন পঞ্চমৌ প্রমাণ্যক-  
ষাণ্যপ্রয়োগেপি । তেন সহ ত্রিশব্দস্য সাচ্চাত্ যোগাভাবাত্ ধর্ম্মাৎ প্রমাণ্যতীতি অথ তু  
প্রমাণ্যেন ধর্ম্মস্য সাচ্চাত্ যোগঃ । 2. অপ্রমাণ্যন্ ন প্রমাণ্যন্ অপ্রমাণ্যন্ নম্ সমাসঃ ।  
ম - মদ + যতু । 3. লোকান্ Acc. of বিজয়েৎ । 4. বিজয়েৎ it should be  
বিজয়েত as জি becomes জাত্মনেপদী after বি and পরা । But সংশ্রাপূর্ব্বক-  
বিধিরনিত্যত্বাৎ ন জাত্মনেপদমত । 5. স্ববপুঃ স্ববপুঃ তেন কারণে দ্রষ্টব্য ।  
6. দীপ + ধানচ্ কাকরি । অদীপি অদীপিত । 7. দেব + বতি । দীপ্যতি দ্যোততে  
ইতি দ্বেবঃ । 8. দ্বিবি = অধিকরণে সপ্তমৌ । 9. মোদতে মৃদ + লট্ তে ।

Change of voice.—গৃহীত্বা অপ্রমাণ্যতা তথঃ লোকাঃ বিত্রীণরন্ দীপ্যমানেন  
সুযতে ॥ ২৩২ ॥

BENGALI.—এই তিনের প্রতি অবাধনুষ্ঠ ইহঁতে ত্রয়োদশী ও জিলোক জগ-  
করিবেই, এমন কি ত্রীশীও জিলোক জগ করেন এবং সূর্য্যাদিবৎ সৌপাশ্রয় নরোরে স্বর্ণে স্ব  
আশ্রয় হয় ॥ ২৩২ ॥

ENGLISH.—A householder who is not careless of these three  
can conquer the three worlds. Shining with his own body like  
the sun in the firmament he rejoices and becomes happy. (232).

इमं लोकं मातृभक्त्या पितृभक्त्या तु मध्यमम् ।

गुरुश्रुषया त्वेव ब्रह्मलोकं समनुते ॥ २३३ ॥

PROSE. — (मनुष्यः) मातृभक्त्या इमं लोकं पितृभक्त्या मध्यमं लोकं गुरुश्रुषया तु ब्रह्मलोकं एव समनुते ॥ २३३ ॥

KULLUKA. — इममिति । इमं भूलोकं मातृभक्त्या, पितृभक्त्या मध्यममन्तरलोचम्, आचार्यभक्त्या तु हिरण्यगर्भलोकमेव प्राप्नोति ॥ २३३ ॥

GRAMMAR. — 1. मातृभक्त्या मातुः भक्तिः मातृभक्तिः or मातरि भक्तिः इया करणे द्वितीया । 2. गुरुश्रुषया गुरोः श्रुषया इया करणेन । 3. ब्रह्मलोकः चतुर्थस्त्वस्य लोकः स्यादन्तम् Acc. of समनुते । 4. सम-अन-लट् ते । आशिष्ट ।

Change of voice. — अयं लोकः.....मध्यमः ब्रह्मलोकः अग्र्येन ॥ २३३ ॥

BENGALI. — मनुष्य गुरुश्रुषया द्वारा ब्रह्मलोक, पिताश्रुषया द्वारा अन्तरलोक एवं आचार्यश्रुषया द्वारा हिरण्यगर्भलोक प्राप्त ३३ ॥ २३३ ॥

ENGLISH. — One obtains this world by devotion to his mother, the middle world by devotion to his father, and the reason of Brahma by serving his preceptor. (233).

सर्वे तस्याहता धर्मा यस्यैते त्रय आहताः ।

अनाहतास्तु यस्यैते सर्वास्तस्याफलाः क्रियाः ॥ २३४ ॥

PROSE. — यस्य एते त्रयः आहताः तस्य सर्वे धर्माः आहताः, यस्य तु एते अनाहताः तस्य सर्वाः क्रियाः अफलाः ॥ २३४ ॥

KULLUKA. — सर्वे तस्येति । यस्येति त्रयः मातापिताचार्या आहता सत्कृताः तस्य सर्वे धर्माः फलदा भवन्ति । यस्येति चोऽनाहतास्तस्य सर्वाणि श्रौतकार्मकाणि निष्फलानि भवन्ति ॥ २३४ ॥

GRAMMAR. — 1. आहताः आह - ह + क्तः कर्मणि । आह्रियते । आहता । 2. न आहताः अनाहताः । 3. अफलाः न विद्यन्ते फलं दास्यं ताः बहुव्रीहिः ।

Change of voice. — यस्य त्रिभिः आहतेः भूयते तस्य सर्वे धर्माः आहतेः भूयन्ते यस्य एते अनाहतेः भूयते तस्य सर्वाणि क्रियाणि निष्फलाणि भूयन्ते ॥ २३४ ॥

BENGALI.—যিনি এই তিনকে সমাদর করেন তাঁহার সকল ধর্মই ফলপ্রসূ হয়, যিনি এই তিনকে অন্যায় করেন তাঁহার বৈদিক ও শাস্ত্রীয় সমস্ত কর্ম নিফল হয় । ২৩৪।

ENGLISH.—Whoever honours these three, honours also all virtues and duties. But all acts of him are fruitless by whom these three are disrespected. (234).

यावन्नयस्ते जीवेयुस्तावन्नान्यं समाचरेत् ।

तेष्वेव नित्यं शुश्रूषां कुर्यात् प्रियङ्गिते रतः ॥ २३५ ॥

PROSE. — তে যয়: যাবন্ জীবেয়ু: তাবন্ অন্যং ন সমাচরেৎ, নিত্যং প্রিয়ঙ্গিতে রত: তেষু এব শুশ্রূষাং কুর্যাৎ ॥ ২৩৫ ॥

KULLUKA.—যাবদ্বিতি । তে যযৌ যাবজ্জীবন্তি তাবদন্যং ধর্ম্যং স্নাতকোপ-  
নানুশিষ্টেৎ । তদনুজ্ঞয়া তু ধর্ম্যানুষ্ঠানং প্রামাণ্যমিত্যেব কিন্তু তেষুেব প্রত্যহং প্রিয়ঙ্গি-  
ত-পর: শুশ্রূষাং কুর্যাৎ, তদর্থং প্রীতিসাধনং প্রিয়ং ভোগজপাদিষন্ যাবত্যোনিষ্টসাধনং  
হিতম্ ॥ ২৩৫ ॥

Note. — প্রিয়ম্ is explained তদর্থং ইতি, হিতম্ is explained যাবত্যো-  
নিষ্টি ।

GRAMMAR. — 1. প্রিয়ঞ্চ তৎ হিতঞ্চ প্রিয়হিতম্ তন্নিব ।

Change of voice.—তৈ: ত্রিভি: জীবেত অন্য: ন সমাচর্যেত; রতেন  
শুশ্রূষা ক্রিয়েত ॥ ২৩৫ ॥

BENGALI.—এই তিনজন যাবৎ জীবিত থাকেন তাবৎকাল যত কোন ধর্মকাণ্ড  
করিবে না, কিন্তু এতাহ তাঁহাদের প্রিয়কাণ্ড ও হিতকর কাণ্ডে নিযুক্ত থাকিয়া তাঁহাদের  
শুশ্রূষা করিবে ॥ ২৩৫ ॥

ENGLISH.—One should do nothing else as long as these three would live, but he should serve them everyday, intent on what is agreeable and beneficial (to them.) (235).

तेषामनुपरोधेन पारत्रं यद्यदाचरेत् ।

तत्तन्निवेदयेत् तेषो मनोवचनकर्मभि: ॥ २३६ ॥

PROSE.—तेषां अनुपरोधेन मनोवचनकर्माभिः यत् यत् पारसं चाचरेत् तत्तत् तैभ्यः निवेदयेत् ॥ २३६ ॥

KULLUKA.—तेषामिति । तेषां अनुषाया अविरोधेन तदनुज्ञातो यदयन्मनो-  
वचनकर्माभिः परलोकफलं कर्मानुष्ठितं तन्मथैतदनुष्ठितमिति पद्यानेभ्यो निवेदयेत् ॥ २३६ ॥

GRAMMAR.—1. तेषाम् कर्माणि षष्ठो ह्रस्वयोगात् । 2. न उपरोधः व्याघातः  
अनुपरोधः उप-रुध + घञ् प्रकृत्यादिभ्य कृतीया । 3. मनश्च वचनञ्च कर्मा च तानि  
तैः करणे द्वितीया । 4. पारसम् पर + लृप् । परल + घञ् । 5. तत् तत् बोध्यायां  
विः । 6. तैभ्यः क्रियायङ्चमपि कर्माभ्यमिति अनुर्थी ।

*Change of voice.*—पारसं चाचर्येत.....तत् तत्.....निवेदयेत् ॥ २३६ ॥

BENGALI.—तांहाणेर শুভকার কোন অংশ ব্যাঘাত না করিয়া মন, বাণ্য অথবা  
কর্মবান্ধা পরলৌকিক ফলপ্রদ কোন কর্ম যদি কেহ করেন, তবে আমি এই এইরূপ কর্ম  
করিয়াছি এরূপ তাंহাণের নিকটে তিনি নিবেদন করিবেন ॥ ২৩৬ ॥

ENGLISH.—Whatever he may perpetrate in thought, in speech,  
and in act with a view to reap the fruit in the next world, without  
disturbing or interrupting his service to them, he should report it  
to them. (236).

त्रिष्वेतेष्विति कृत्यं हि पुरुषस्य समाप्यते ।

एष धर्मः परः साक्षादुपधर्मोऽन्य उच्यते ॥ २३७ ॥

PROSE.—हि एतेषु त्रिषु पुरुषस्य कृत्यं इति समाप्यते ( तस्मात् ) एषः साक्षात्  
परः धर्मः अन्यः उपधर्मः उच्यते ॥ २३७ ॥

KULLUKA.—त्रिष्विति । इतिशब्दः कान्तेऽ । हिशब्दो हेतौ । यस्मादे-  
तेषु त्रिषु अनुषिषेपु पुरुषस्य सर्व्वे श्रौतस्मार्त्त कर्माण्यं सम्पूर्णमनुष्ठितं भवति तत्कला-  
वाप्तेः तस्मादेष श्रेष्ठो धर्मः साक्षात् सर्व्वपुरुषार्थसाधनः । अन्यस्मिन्निहोवादिः  
प्रतिनियतस्वर्गादिहेतुरुपधर्मो जघन्यधर्म इति अनुषासुतिः ॥ २३७ ॥

GRAMMAR.—1. त्रिषु भावे समसो । 2. कृत्यं कृ + क्त्वाप् । 3. इति  
अव्ययम् means fully. 4. सम्-चाप + ते कर्माणि । 5. उपधर्मः उपगतः  
निष्पद्यः धर्मः उपधर्मः प्रादि समासः ।

*Change of voice.*—कृत्यं समाप्नोति एतेन परेष धर्मैश्च मूयते अन्ये उपधर्मैश्च  
यत्ति ॥ २३७ ॥

BENGALI.—তখন এই তিনজনকে শুদ্ধতা করিলেই পূর্বের সৌভাগ্যার্থীদিগি মঙ্গল ধর্ম সম্পূর্ণরূপে অমুঠান করা হয়, কেননা ইহারা কুটে কহেলেই ধর্মের কল্যাণ হয়, তখন ইহারাও সমস্ত পূর্বস্বার্থসাধক উৎকৃষ্টে ধর্ম, এবং বাক্যাদি অন্য ধর্মকে নিকৃষ্টে ধন ।  
বাগ । ২৩৭ ।

ENGLISH.—Because all the duties of a man are fully done when these three (are adored), it is directly the chief of all duties. Other duties are called secondary or minor duties. (237).

अह्मधानः शुभां विद्यामाददीतावरादपि ।

अन्यादपि परं धर्मं स्त्रीरबं दुष्कुलादपि ॥ २३८ ॥

PROSE.—अह्मधानः सन् अवरात् अपि शुभां विद्यां, अन्यात् अपि परं धर्मं दुष्कुलात् अपि स्त्रीरबं आददीत ॥ २३८ ॥

KULLUKA.—अह्मधान इति । अह्मायुक्तः शुभां दृष्टशक्तिं ग्राहकादिविद्याम् अवराच्छूदादपि गृहीयात् अन्यथाच्छालः तस्यादपि जातिस्वरादेर्विहितयोगप्रकर्षात् दुष्कुतशेषोपभोगार्थमवरात्छालजन्मनः परं धर्मं मोक्षोपायमात्मज्ञानमाददीत तथा मोक्षमनोपक्रम्य मोक्षधर्मं प्राप्यज्ञानं ब्राह्मणात् श्रियात् वैश्यात् गृहादपि गौवादभीक्ष्णं अह्मातव्यं अह्मधानेन नित्यम् यत्निजं प्रति जन्मसत्यविशेषता । मेधातिथिस्तु श्रुतिस्मृत्यपेक्षया परधर्म्या लौकिकः, धर्मशब्दो व्यवस्थायामपि युज्यते । यदि चाच्छालोऽप्यत्र प्रदंशे मा चिरंस्थाः मा चास्मिन्नस्मिन् ज्ञाया इति वदति तमपि धर्ममनुतिष्ठेत् । प्रागल्भ्यालौकिकं वस्तु परं धर्ममिति ब्रुवन् । चित्तं तथापि सर्वत्र ज्ञाथ्यो मेधातिथिः सताम् । स्त्रीरबम् आत्मपेक्षया निम्नजकुलादपि परिच्छेत् स्त्रीकुर्यात् ॥ २३८ ॥

GRAMMAR.—1. अत्—धा+मानच् । 2. अवरात् अपादाने पञ्चमी । 3. विद्याम् Acc. of आददीत । 4. अन्यात् अन्ते भवः अन्यः अन्यजः इत्यर्थः तस्यात् अपादाने पञ्चमी । 5. दुष्टं कुलं दुष्कुलं तस्यात् । 6. स्त्री एव रत्नम् स्त्रीरबम् तत् Acc. of आददीत । 7. आङ्—दा+ईत आददीत । आदित आदिवाताम् ।

Change of voice—अह्मधानेन शुभा विद्या, परःधर्मः.....स्त्रीरব্ণ আদীয়েত ॥ ২৩৮ ॥

BENGALI.—অস্বাভিত হইয়া গাঁজাফলি বিদ্যা গৃহ হইতেও গ্রহণ করিবে, জাঁতি-  
স্বর বোগবুদ্ধ পাগাবলেব ভোগার্থে চাতালানি কুলে জাঁতি ব্যক্তি হইতেও পরধর্ম অর্থাৎ  
আত্মজ্ঞান গ্রহণ করিবে, এবং নিজ হইতে নিকৃষ্টে কুলজাত উক্ত বজা বিবাহ  
করিবে । ২৩৮ ।

ENGLISH.—One should acquire with faith good knowledge from even an inferior person, learn excellent virtues from even one of the lowest caste and secure a gem of a woman even from a bad family. (238).

विषादप्यमृतं याज्ञं बालादपि सुभाषितम् ।

अमित्रादपि सद्वृत्तममेध्यादपि काञ्चनम् ॥ २३८ ॥

PROSE.—विषात् अपि अमृतं बालात् अपि सुभाषितं अमित्रात् अपि सद्वृत्तं अमेध्यात् अपि काञ्चनं याज्ञम् ॥ २३८ ॥

KULLUKA.—विषादिति । विषं यद्यमृतयुक्तं भवति तदा विषमपसार्थं तस्मादमृतं याज्ञं, बालादपि हितवचनं याज्ञं यद्यतोऽपि सज्जनवृत्तम् अमेध्यादपि सुवर्णादिकं यद्गीतव्यम् ॥ २३८ ॥

GRAMMAR.—1. विषात् । 2. बालात् । 3. अमित्रात् । 4. अमेध्यात् अपादाने पञ्चमो । 5. अमित्रात् अमित्रः शत्रुः तस्मात् मित्र शब्दस्तु बाल इति सूत्रेण नपुंसकम् । अमित्र शब्दस्तु पुलिङ्ग एव न मित्रं अमित्रः इति सिद्धान्तकौमुदीवचनात् । 6. सतां वृत्तम् सद्वृत्तम् । 7. न मेध्यां अमेध्याम् मेध + यञ् । 8. यङ् + क्तम् ।

Change of voice.—अमृतेन सुभाषितेन सद्वृत्तेन काञ्चनेन वाञ्छेन श्रूयते ॥ २३८ ॥

BENGALI.—विषामृत एकत्र मिश्रित থাকিলেও বিষ বাছিয়া অমৃত গ্রহণ করিবে, বালক হইতেও হিতবাক্য গ্রহণ করিবে, শত্রু হইতেও সচ্চরিত্র গ্রহণ করিবে, অপরিজ্ঞান হইতেও কাঞ্চন গ্রহণ করিবে ॥ ২৩৮ ॥

ENGLISH.—Nectar is to be accepted even from poison, a good saying even from a boy; good conduct even from an enemy, and gold even from an impure thing. (239).

स्त्रियो रत्नान्यथो विद्या धर्मः शौचं सुभाषितम् ।

विविधानि च शिष्यानि समादेयानि सर्व्वतः ॥ २४० ॥

PROSE.—स्त्रियः रत्नानि अथ विद्या धर्मः शौचं सुभाषितं विविधानि च शिष्यानि सर्व्वतः समादेयानि ॥ २४० ॥



KULLUKA. — স্থিয় ইতি। অথ স্ত্রাদৌনামনুজ্ঞানামপি দৃষ্টান্তলেনোপমদানং, যথা স্ত্রাদৌ নিকটকুলাদিভ্যো যচ্ছনে তথা অন্যান্যপি দ্বিতানি শিবলিঙ্গনাদীনি সর্বতঃ প্রতিবছীতব্যানি ॥ ২৪০ ॥

GRAMMAR. — 1. সমাদেয়ানি qualifying এতানি। সামান্যে নপুংসকম্ সন্ম - যা - দা + য। 2. সর্বতঃ সর্বল্লোকে অপাটানে পশমী।

Change of voice. — স্তৌমি: রবৈ: বিদ্যা ধর্মোশ শৌচেন সুমাদিতেন বিবিধৈ: জিহ্বৈ: সর্বতঃ সমাদেয়ৈ: মুযতে ॥ ২৪০ ॥

BENGALI. — জী, ব্রজ, বিদ্যা, ধর্ম, শৌচ, হিতবাচ্য এবং বিবিধ শিল্প শকলেন নিকট ইহেতেই গ্রহণ করিবে ॥ ২৪০ ॥

ENGLISH. — Women, gems learning, virtue, purity good saying and various fine or mechanical arts are to be accepted from all. (240.)

অব্রাহ্মণাদধ্যয়নমাপত্‌কালে বিধীয়তে।

অনুব্রজ্যা চ যুশুষা যাবদধ্যয়নং গুরো: ॥ ২৪১ ॥

PROSE. — অব্রাহ্মণাত্‌ আপত্‌কালে অধ্যয়নং বিধীয়তে, যাবত্‌ অধ্যয়নং তাবত্‌ গুরো: (অনিয়াদি:) যুশুষা অনুব্রজ্যা চ বিধীয়তে ॥ ২৪১ ॥

KULLUKA. — অব্রাহ্মণাদিতি। ব্রাহ্মণাদন্তো যৌ দ্বিজ: সমিযসদমাবে বৈশ্বো বা তস্মাদধ্যয়নমাপত্‌কালে ব্রাহ্মণাধ্যাপকাসমাবে ব্রাহ্মচারিণৌ বিধীয়তে। অনুব্রজ্যা দি-  
রূপা গুরো: যুশুষা যাবদধ্যয়নং তাবত্‌ কার্য্যে গুরুত্বেন পাদপ্রস্থালনৌচ্ছিষ্টপ্রীজ্ঞনাদিরূপা  
যুশুষা প্রসক্তা সা ন কার্য্যে তদর্থেন অনুব্রজ্যা চেতি শিখীতম্। গুরুত্বমপি প্রাবল-  
ধ্যয়ননিব সমিযস্যাচ্ছ ব্যাস:—মন্দদ: সমিযৌ বিদ্বৈ: যুশুষ্যোঃসুগমাদিনা। প্রাপ্তবিদ্যো  
ব্রাহ্মণস্য পুনরাস্য গুরু: স্মৃত: ॥ ২৪১ ॥

GRAMMAR. — 1. ন ব্রাহ্মণ: অব্রাহ্মণ: তদন্ত্বলং তদন্ত্বতা ইত্যম্‌ নজস্বন্দস্য তদন্ত্বলং অর্থ:। ব্রাহ্মণাত্‌ অন্য: অব্রাহ্মণ ইত্যর্থ:। আখ্যাতোপধোগে ইতি পশমী নিয়মপূর্ব্বকবিদ্যাম্বীকারপ্রকরণাত্‌। 2. আপদা কালৈ:। 3. গুরো: শিবে বহু। 4. অনু + ব্রজ + ক্যপ্‌।

Change of voice. — অধ্যয়নং বিধতে। যুশুষা অনুব্রজ্যা বিধতে ॥ ২৪১ ॥

BENGALI. — অগত্‌কালেই কেবল ব্রাহ্মণের অভাবে অব্রাহ্মণ দ্বিজ (কয় ও বৈদ্য) ইহেতে অধ্যয়ন করা বিহিত আছে এবং যাবৎকাল অধ্যয়ন করিবে তদন্ত্বকাল অজ্ঞান

বা বৈষ্ণৱ গুরুগণ ও গুজরা করিবে কিন্তু পাপপ্রকাশন ও উচ্ছিন্নে যোচনা করিবে না; পাঠ সমাপ্ত হইলে শিষ্য ব্রাহ্মণ গুরু হইবে এবং শিক্ষক কত্রিগ বা বৈষ্ণৱ শিষ্য ভূগা হইবে। ইহা উপকুলীন নামক ব্রাহ্মচারী অনুষ্ঠান করিবে, নৈষ্ঠিক ব্রাহ্মচারী তাহা করিবে না ॥ ২৪১ ॥

ENGLISH.—Reading (the Vedas) from one who is not a Brahman is enjoined in times of danger and distress. To follow and serve (such) a preceptor lasts as long as reading continues. (241).

নাম্নাশ্রমণে গুরৌ শিষ্যো বাসমাত্মনিকং বসেৎ ।

ব্রাহ্মণে চাননুচানে কাঙ্ক্ষন্ গতিমনুত্তমাম্ ॥ ২৪২ ॥

PROSE.—অনুত্তম গতি কাঙ্ক্ষান্ শিষ্যঃ অত্রাহ্মণে গুরৌ অননুচানে ব্রাহ্মণে অ গুরৌ আত্মনিকং বাসং ন বসেৎ ॥ ২৪২ ॥

KULLUKA.—ব্রাহ্মচারিত্বে নৈষ্ঠিকমপি অত্রাহ্মণাদধ্যয়নং প্রসক্তং প্রতিষেধতি নাম্নাশ্রমণ ইতি । আত্মনিকং বাসং যাবজ্জীবিকং ব্রহ্মবর্যং স্মিথাদিকৈ গুরৌ ব্রাহ্মণে বা সাঙ্ঘবেদান্যেতরি অনুত্তম গতি মোক্ষলব্ধমামিচ্ছন্ শিষ্যো নানুতিষ্ঠেৎ ॥২৪২॥

Note—There are two classes of Brahmacharins, one class after finishing their study return home and become householders ; the other class pass their whole life in study in the house of their preceptors. The former are called *upakurbanas*, and the latter the *naisthikas*.

GRAMMAR. — 1. ন বিদ্যনে উত্তমা বস্তুঃ সা অনুত্তমা তাম্ বহুব্রীহিঃ । 2. বসিন্ Acc. of কাঙ্ক্ষন্ । 3. শিষ্যঃ শাস্ত্ + কষ্প্ । 4. ন ব্রাহ্মণঃ অত্রাহ্মণঃ তচ্ছিন্ । 5. আত্মনিকম্ অলং অতিক্রান্তঃ অত্মনাঃ ( অত্মনা + ঠক্ ) অত্মনা-বিষয়কং আত্মনিকম্ qualifies বাসম্ । 6. বাসম্ Acc. of বসেৎ । 7. বসেৎ অনুতিষ্ঠেৎ । 8. অননুচানে ন অনুচানঃ অননুচানঃ তচ্ছিন্ qualifies ব্রাহ্মণে, উপেশিবাননাশ্রমানুচান ইতি নিপাতনান্ অনুপূর্য্যাত্ বসেঃ কর্তরি কানপ্ । “বেদস্যে অনুবচনং কৃতবান্ অননুচানঃ ।” Bhatto.

Change of voice. — অনুত্তম গতি কাঙ্ক্ষতা শিষ্যেণ আত্মনিকো বাসঃ ন শুশ্রীত ॥ ২৪২ ॥

BENGALI.—যে শিষ্য ব্রাহ্মণদ্বারা যোগগতিলাভ করিতে ইচ্ছা করে, সে কত্রিগাদি গুরুগৃহে অথবা সাক্ষ্যে অধিকারী ব্রাহ্মণগুরুগৃহে বাবজীবন নৈষ্ঠিক ব্রাহ্মচারী হইয়া বাস করিবেনা ॥ ২৪২ ॥

ENGLISH.—A pupil knowing the law should make no gifts (or benefit) to his preceptor before (he finishes his student-life). One who will bathe (*i.e.* take the vow of a *Snataka*) should fetch, being ordered by his preceptor, the preceptor's fee according to his might. (245).

चेवं हिरण्यं गामश्च कृत्रोपानहमासनम् ।

धान्यंशाकश्च वासांसि गुरवे प्रीतिमावहेत् ॥ २४६ ॥

PROSE. — चेवं हिरण्यं गां अथ कृत्रोपानहम् आसनं धान्यं शाकं च वासांसि गुरवे (दत्त्वा) प्रीतिं आवहेत् ॥ २४६ ॥

KULLUKA. — किं तत् तदाह चेतमिति । अग्न्या गुरुवर्धमाहरेदित्युक्तत्वात् चेचहिरण्यादिकं यथासामर्थ्यं विकल्पितं समुचितं वा गुरवे दत्त्वा तत्प्रीतिमर्जयेत् । विकल्पपक्षे आभूतोऽन्यामन्त्रे कृत्रोपानहमपि दद्याद्वह्निर्ह्येतात् समुचितदानं प्रदर्शनार्थं चेतत् सन्धवे चान्यदपि दद्यात् । अतएव लघुहारीतः—एकमप्यवरं यस्तु गुरुः शिष्ये निवेदयेत् । पृथिव्यां नास्ति तद्व्यं यद्वत्त्वा चानुशी भवेत् असन्धवे शाकमपि दद्यात् ॥ २४६ ॥

GRAMMAR. — 1. कृत्रोपानहम् कृतयुक्ता उपानत् कृत्रोपानत् ताम् । क्वं च उपानश्च इति कृत्रोपानहम् । समाहार इत्याद्यदवहानात् समाहारे इति टच् । Acc. of दत्त्वा understood. 2. गुरवे सम्प्रदाने चतुर्थी । 3. प्रीतिम् Acc. of आवहेत् ।

*Change of voice.*—प्रीतिः प्रीतिः ॥ २४६ ॥

BENGALI.—निश ( नष्टि अश्रुमात्रे ) अत्रके (रुज, स्पर्श, गौ, अथ, हज, पाङ्क, आसन, धान्, शाकं ओ चत्तं पान करिषा अत्रक प्रीति उरुपादन करिबे; नां पात्रिल हज पाङ्क निवे; अश्रुतः शाक निवे । २४६ ॥

ENGLISH.—He should minister to the satisfaction of his preceptor by giving him rice-field, gold ; cow, horse, umbrella and shoe, seat or stool, paddy, vegetables and cloths. (246).

आचार्यं तु खलु प्रेते गुरुपुत्रे गुणान्विते ।

गुरुदारे सपिण्डे वा गुरुवद्वृत्तिमाचरेत् ॥ २४७ ॥

PROSE.—आचार्यं खलु मृते ( सति ) गुरुवन्ति गुरुपुत्रे गुरुदारे सपिण्डे वा गुरुवद्वहति आचरेत् ॥ २४७ ॥

KULLUKA.—नैष्ठिकसाधनपदैश्च आचार्यं इति । आचार्यं मृते तत्पुत्रे नित्यादिगुरुयुक्ते तदभावे गुरुपत्न्यां तदभावे गुरोःसपिण्डे पितृव्यादी गुरुवत् शुश्रूषा-मनुतिष्ठेत् ॥ २४७ ॥

GRAMMAR.—1. आचार्यं भावे सममी । 2. गुरोरन्वितः गुरुवन्तिः तस्मिन् । 3. गुरोः दारः गुरुदारः तस्मिन् । दाराच्चतलाजाम्नां बहुत्वञ्च इति बहुत्वमपि चति-कालम् । 4. सपिण्डे समानः पिण्डो यस्य इति सपिण्डः तस्मिन् गुरोः इत्यन्वः । सपिण्डशब्दो रुद्धः ।

Change of voice.—गुरुवद्वहतिः आचर्यते ॥ २४७ ॥

BENGALI.—आचार्येण मृता इहेले उगपुत्र उरुपुत्र कि उरुपत्नी, कि उरु-पितृवादि मणिउर अति उरुवर आचरण करिबे ॥ २४७ ॥

ENGLISH.—When the Acharyya or preceptor is dead, the pupil should adopt the same course of conduct towards the well-qualified son of his preceptor, the wife of the preceptor, or the *sapinda* (a kinsman connected by the offering of the rice-ball or *pinda*) of his preceptor as towards his preceptor. (247).

एतेष्वविद्यमानेषु स्थानासनविहारवान् ।

प्रयुञ्जानोऽग्निशुश्रूषां साधयेद्देहमात्मनः ॥ २४८ ॥

PROSE.—एतेषु अविद्यमानेषु ( अग्नेः समीपे ) स्थानासनविहारवान् अग्नि-शुश्रूषां प्रयुञ्जानः आत्मनः देहं साधयेत् ॥ २४८ ॥

KULLUKA.—एतेष्विति । एतेषु त्रिषु अविद्यमानेषु सततमाचार्यस्त्वैवाग्नेः समीपे स्थानासनविहारैः साध्वंभ्रातरादी समिहोमादिना आग्नेः शुश्रूषां कुर्वन् आत्मनो देहमात्मदेहावच्छिन्नं जीवं ब्रह्मप्राप्तियोग्यं साधयेत् ॥ २४८ ॥

GRAMMAR.—1. एतेषु भावे सममी । 2. स्थानास्य आसनस्य विहारश्च स्थानासनविहाराः ततः मनुप् । 3. अग्नेः शुश्रूषा ताम् । Acc. of प्रयुञ्जानः । 4. प्रयुञ्जानः प्र-युज् कर्तरि शब्दम् । 5. देहम् Acc. of साधयेत् । 6. साधयेत् सिध्—सिध् + यात् ।

Change of voice.—स्थानासनविहारवता...प्रयुञ्जानेन देहः साधयेत् ॥ २४८ ॥

BENGALI.—दे मकन वाकि ना आकिले नैष्ठिक उक्ताग्री उरु अग्निमोपेहे

অবধান, উপদেশন ও বিহরণ করিও। অগ্নির চক্ষুরা করিতে করিতে নিজ দেহাবচ্ছিন্ন  
কৌরবে ব্রহ্মপ্রাপ্তির যোগ করিবে ॥ ২৪৮ ॥

ENGLISH.—In the absence of these, the pupil should take to a careful service and worship of the fires of his preceptor, by staying and sitting near and walking about them and (in this manner) should make his body fit for (absorption into the Brahman). (248).

এবং চরতি যো বিপ্রো ব্রহ্মচর্য্যমবিপ্রতঃ ।

স গচ্ছত্যুত্তমং স্থানং ন চেহ জায়তে পুনঃ ॥ ২৪৯ ॥

ইতি মানবে ধর্ম্মশাস্ত্রে ঋগুপ্রোক্তায়াং সংহিতায়াং  
দ্বিতীয়োঃধ্যায়ঃ ॥ ২ ॥

PROSE.—য: বিপ্র: एवं অবিপ্রত: ব্রহ্মচর্য্যং চরতি স: উত্তমং স্থানং গচ্ছতি ন  
চ ইহ পুন: জায়তে ॥ ২৪৯ ॥

KULLUKA.—এবং চরতীতি । যা সমাপ্তে: শরীরস্থিত্যনে যাবজ্জীবনমাচার্য্য-  
শ্রমুপযা মোচলকণং ফলসুপ্তম্ । ইদানীমাচার্য্যে স্ততেপি এষমিত্যনন্তরোক্তবিধিনা  
আচার্য্যপুত্রাদীনাং প্রাপ্ত্যন্তানো শ্রমুপকো যো নৈহিকো ব্রহ্মচর্য্যমস্বপ্নিতব্রতীঃ  
তিষ্ঠতি স উত্তমস্থানং ব্রহ্মলোক্যন্তিকলয়লকণং প্রাপ্নোতি ন চেহ সংসারে কৰ্ম্ম-  
বজ্রাদুতপত্তি লভতে ॥ ২৪৯ ॥

ইতি কুল্লুকমহাবিরচিতায়াং মন্বন্তরমুক্তাবল্লী মনুসংহিতায়াং দ্বিতীয়োঃধ্যায়ঃ ।

GRAMMAR.—1. অবিপ্রত: ন বিপ্রত: । প্র + ত। 2. ব্রহ্মচর্য্যম্ Acc. of  
চরতি । চর + ত্ + চর্য্যম্ ভাবে । ব্রহ্মচ: চর্য্যম্ ব্রহ্মচর্য্যম্ । 3. জায়তে — জন  
লট্ তে ।

Change of voice.—যেন বিপ্রঃ অবিপ্রতেন ব্রহ্মচর্য্যে চর্য্যতে তেন উত্তমং স্থানং  
গচ্ছতে ইহ ন জন্মতে ( জায়তে বা ) ॥ ২৪৯ ॥

BENGALI.—যে নৈহিক ব্রহ্মচারী এইরূপে অকৃতভাবে ব্রহ্মচর্য্য অনুষ্ঠান করে, সে  
উত্তম স্থান অর্থাৎ ব্রহ্ম লোক প্রাপ্ত হয়, এই সংসারে সে আর পুনর্বার জন্মগ্রহণ করে  
না ॥ ২৪৯ ॥

ENGLISH.—The Brahman, who observes the vow of religious  
studentship in this manner, without deflecting from the proper  
course, attains to an excellent state, and is not born again in this  
world. (249).





**PANBHU NATH SARKAR**